श्रमण

ŚRAMAṆA

(Quarterly Research Journal of Jain Studies)

Vol. 49 No. 4 - 9

APRIL - SEPTEMBER 1998

पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी

PĀRŚVANĀTHA VIDYĀPĪṬHA, VARANASI

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रमण

पार्श्वनाथ विद्यापीठ की त्रैमासिक शोध-पत्रिका

अंक ४-९ अप्रैल- सितम्बर १९९८

प्रधान सम्पादक

प्रोफेसर सागरमल जैन

सम्पादक

डॉ० शिवप्रसाद

प्रकाशनार्थ लेख-सामग्री, समाचार, विज्ञापन एवं सदस्यता आदि के लिए सम्पर्क करें

सम्पादक

श्रमण

पार्श्वनाथ विद्यापीठ

आई० टी० आई मार्ग, करौंदी

पो० आ०- बी० एच० यू०

वाराणसी 221005 (उ० प्र०)

दूरभाष : 316521, 318046

फैक्स : 0542- 318046

वार्षिक सदस्यता शुल्क

संस्थाओं के लिए	: रु० 150.00
व्यक्तियों के लिए	: रु० 100.00
इस अंक का मूल्य	: रु० 100.00

आजीवन सदस्यता शुल्क

संस्थाओं के लिए	: रु० 1000.00
व्यक्तियों के लिए	: रु० 500.00

नोट : सदस्यता शुल्क का चैक या ड्राफ्ट पार्श्वनाथ विद्यापीठ के नाम से ही भेजें।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रमण

श्रमण अतीत के झरोखे मे

संकलनकर्ता

डॉ० शिवप्रसाद
डॉ० विजय कुमार जैन
डॉ० सुधा जैन
डॉ० असीम कुमार मिश्र

प्रस्तुत अङ्क में

पृष्ठ

१. श्रमण : वर्षानुसार लेख सूची — १-१६०
२. श्रमण : लेखकानुसार लेख सूची — १६१-३४८
३. विद्यापीठ के प्रांगण में — १-४
४. जैन जगत — ५-८
५. साहित्य सत्कार — ८-१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रमण

वर्षानुसार लेख सूची

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
लोक कल्याण के लिए श्रमण संस्कृति	भिक्षु जगदीश काश्यप	१	१	१९४९	१९-२१
साम्यवाद और श्रमणविचारधारा	पृथ्वीराज जैन	१	१	१९४९	२२-२७
सबसे पहला पाठ	श्री कृष्णचन्द्राचार्य	१	१	१९४९	२८-३०
पार्श्वनाथ विद्याश्रम-एक सांस्कृतिक अनुष्ठान	पं० दलसुख मालवणिया	१	१	१९४९	३३-३४
मगध में दीपमालिका	मुनि कांतिसागर	१	१	१९४९	३७-४०
युद्ध और श्रमण	पं० कैलाश चन्द्र शास्त्री	१	२	१९४९	९-११
शास्त्र और शस्त्र	पं० सुखलाल जी	१	२	१९४९	१३-१५
अहिंसा और शस्त्रबल	आचार्य विनोबाभावे	१	२	१९४९	२४-२६
साम्प्रदायिक कदाग्रह	पृथ्वीराज जैन	१	२	१९४९	२७-३०
तर्क और भावना	काका कालेलकर	१	२	१९४९	३१-३२
अहिंसा का व्यापक अर्थ	लालजी राम शुक्ल	१	२	१९४९	३३-३६
धर्म का पुनरुद्धार और संस्कृति का नवनिर्माण	पं० दलसुख मालवणिया	१	३	१९५०	९-१३
प्रेम का अभ्यास	आचार्य विनोबा भावे	१	३	१९५०	२२-२३
मानव जीवन का आधार	पृथ्वीराज जैन	१	३	१९५०	२५-२७
सम्यकत्व की कसौटी	मोहनलाल मेहता	१	३	१९५०	२८-२९
प्राचीन भारत में संस्कृतियों का संघर्ष	आ० चन्द्रशेखर शास्त्री	१	३	१९५०	३३-३४
सेवा का अर्थ	मुनिश्री विद्याविजय जी	१	३	१९५०	३५-३८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
भिक्षुसंघ और समाज सेवा	भिक्षु जगदीश काश्यप	१	४	१९५०	१३-१६
सेवक	प्रो० इन्द्र	१	४	१९५०	१७-२३
सारनाथ-काशी की तपोभूमि	प्रो० चन्द्रिका सिंह उपासक	१	४	१९५०	२५-२८
श्रमण और ब्राह्मण	प्रो० इन्द्र	१	४	१९५०	२९-३२
जैनधर्म की देन	पी० एस० कुमारस्वामी राजा	१	४	१९५०	३३-३५
सेवाग्राम कुटीर का संदेश	डॉ० राजेन्द्र प्रसाद	१	४	१९५०	३६-३८
श्रमणसंस्कृति और नया संविधान	पृथ्वीराज जैन	१	५	१९५०	९-१५
दक्षिण हिन्दुस्तान और जैनधर्म	पं० दलसुख मालवणिया	१	५	१९५०	१७-१९
हमारा आज का जीवन	श्री रतनसागर जैन	१	५	१९५०	२७-३०
भगवान् महावीर और जातिभेद	पृथ्वीराज जैन	१	६	१९५०	११-१६
बुनियादी सुधार	उमाशंकर त्रिपाठी	१	६	१९५०	१७-२०
चरित्र के मापदंड	श्री इन्द्र	१	६	१९५०	२१-२२
स्त्री शिक्षा	कु० कांता जैन	१	६	१९५०	२३-२६
अहिंसा की साधना	काका कालेलकर	१	७	१९५०	११-१३
मृत्युञ्जय	मोहनलाल मेहता	१	७	१९५०	१४-१८
बौद्धधर्म	पं० दलसुख मालवणिया	१	७	१९५०	१९-२२
संस्कृति का प्रश्न	प्रो० विमलदास जैन	१	७	१९५०	२३-२७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
पारिवारिक जीवन सुखी कैसे हो ?	श्रीमती यमुनादेवी पाठक	१	७	१९५०	२९-३३
ईर्यापथ-प्रतिक्रमण	श्री धीरज लाल टोकरशी शाह	१	७	१९५०	३४-३६
जैनसाधना	पं० सुखलाल जी संघवी	१	८	१९५०	९-११
आर्यों से पहले की संस्कृति	श्री गुलाब चन्द्र चौधरी	१	८	१९५०	१३-१९
व्यक्ति और समाज	रतन पहाड़ी	१	८	१९५०	२०-२४
हजरतमुहम्मद और इस्लाम	पृथ्वीराज जैन	१	८	१९५०	२५-३१
संस्कृति का अर्थ	पं० फूलचन्द्र जी सिद्धान्तशास्त्री	१	८	१९५०	३३-३४
जैन आगमों का महत्त्व और अपना कर्तव्य	श्री अगरचन्द नाहटा	१	९	१९५०	९-१४
एक समस्या	पं० कैलाश चन्द्र जी	१	९	१९५०	२१-२५
सारनाथ के भग्नावशेष	श्री चन्द्रिका सिंह जी	१	९	१९५०	२६-३१
संस्कृति का आधार-व्यक्ति स्वातंत्र्य	प्रो० महेन्द्र कुमार जी न्यायाचार्य	१	९	१९५०	३३-३६
विकास का मुंख्यसाधन (क्रमश:)	पं० सुखलाल संघवी	१	१०	१९५०	१३-१८
जैनमूर्तिकला	श्री अवध किशोर नारायण	१	१०	१९५०	१९-२१
आचार्य विद्यानन्द	श्री गुलाब चन्द्र चौधरी	१	१०	१९५०	२४-२७
चातुर्मास	पं० दलसुख मालवणिया	१	१०	१९५०	२८-३०
विचारों पर नियन्त्रण के उपाय	प्रो० लालजी राम शुक्ल	१	१०	१९५०	३१-३५
विकास का मुख्य साधन	पं० सुखलाल जी	१	११	१९५०	११-१३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन और हिन्दू	पं० दलसुख मालवणिया	१	११	१९५०	१६-१७
पैंतालीस और बत्तीस सूत्रों की मान्यता पर विचार	अगरचन्द नाहटा	१	११	१९५०	२४-२९
पर्युषणपर्व	विमलदास जैन	१	११	१९५०	३१-४०
संस्कृति-एक विश्लेषण	श्री गुलाबचन्द्र चौधरी	१	१२	१९५०	१३-१६
वैराग्य के पथ पर	श्री हजारीमल जी बांठिया	१	१२	१९५०	१७-२५
सामायिक की सार्थकता	महासती उज्जवल कुमारी	१	१२	१९५०	२६
भारतीय समाज का आध्यात्मिक दर्शन	श्री देवेन्द्र कुमार	१	१२	१९५०	२७-२९
जैनत्व की कसौटी	श्री कृष्णचन्द्राचार्य	१	१२	१९५०	३१-३२
सदाचार ही जीवन हो	मुनि श्री रंगविजय जी	१	१२	१९५०	३५-३७
पंजाब में स्त्री शिक्षा	रामस्वरूप जैन	१	१२	१९५०	३८-४०
न्याय सम्पन्न विभव	पं० दलसुख मालवणिया	२	१	१९५०	९-१२
श्रमण संस्कृति का केन्द्र-विपुलाचल और उसका पड़ोस	श्री गुलाबचन्द्र चौधरी	२	१	१९५०	१५-२२
प्रायश्चित्त	श्री इन्द्र	२	१	१९५०	२३-२८
श्री तारण स्वामी	श्री देवेन्द्र कुमार	२	१	१९५०	२९-३२
इंसानियत के उत्तरदायित्वपूर्ण उसूल	श्री जेठमल बोथरा	२	१	१९५०	३३-३८
आचार्य कालक और 'हंसमयूर'	पृथ्वीराज जैन	२	१	१९५०	३९-४०
नारी के अतीत की झांकी-सतीप्रथा	गुलाबचन्द्र चौधरी	२	२	१९५०	११-१८
सौन्दर्य का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण	मोहनलाल मेहता	२	२	१९५०	२५-२८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
तलाक	श्री पृथ्वीराज जैन	२	२	१९५०	२९-३४
विजय	कु० सत्यवती जैन	२	२	१९५०	३५-३८
आत्महित बनाम परहित	पं० दलसुख मालवणिया	२	३	१९५१	९-११
नारी और त्यागमार्ग	पृथ्वीराज जैन	२	३	१९५१	१४-२०
संन्यास का आधार-अन्तर्मुखी प्रवृत्ति	मोहनलाल मेहता	२	३	१९५१	२३-२६
अतीत, धर्म और साधु संस्था	बरट्रेन्ड रसल	२	३	१९५१	३१-३४
सम्यग्ज्ञान और मिथ्याज्ञान	प्रो० इन्द्र	२	४	१९५१	११-१४
बीसवीं सदी का प्रथमार्ध: राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय	श्री गुलाबचन्द्र चौधरी	२	४	१९५१	१७-२४
पलायनवाद	श्री चुन्नीलाल वर्धमान शाह	२	४	१९५१	२५-२७
जंगम आगम संशोधन मंदिर	पं० दलसुख मालवणिया	२	४	१९५१	२८-३२
नेपाल का शाहवंश और उनके पूर्वज	मुनि कनक विजय	२	४	१९५१	३४-३८
परिग्रह मीमांसा	श्री रघुवीरशरण दिवाकर	२	५	१९५१	९-१४
जैनत्व या जैन चेतना	प्रो० विमलदास जैन	२	५	१९५१	२१-२६
लंदन में कतिपय अप्राप्य जैन ग्रन्थ	श्री अगरचन्द नाहटा	२	५	१९५१	२७-२९
भगवान् महावीर का जन्म और निर्वाणभूमि	श्री गुलाबचन्द चौधरी	२	६	१९५१	९-१२
महावीर का व्यक्तित्त्व	श्री हरजसराय जैन	२	६	१९५१	१३-१५
जैनधर्म और वर्ण व्यवस्था	पं० फूलचन्द्र जी सिद्धान्तशास्त्री	२	६	१९५१	१५-२३
युगपुरुष भगवान् महावीर	श्री पृथ्वीराज जैन	२	६	१९५१	२४-२७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
मंदिरों के झगड़े और जैन समाज	ऋषभदास रांका	२	६	१९५१	२८-३२
भगवान् महावीर का आदर्श और हम	श्रीमती कांता जैन	२	६	१९५१	३३-३६
अपरिग्रहवाद (क्रमशः)	श्री रघुवीरशरण दिवाकर	२	७	१९५१	९-१४
बनारस से जैनों का सम्बन्ध	पं० दलसुख मालवणिया	२	७	१९५१	१५-१८
जैन धर्म और वर्ण व्यवस्था	पं० फूलचन्द्र सिद्धान्त शास्त्री	२	७	१९५१	२०-२६
दो प्रेमियों की यह दीक्षा	मोहनलाल मेहता	२	७	१९५१	२७-२९
खोज सम्बन्धी कुछ अनुभव और समस्यायें	डॉ० धीरेन्द्र वर्मा	२	८	१९५१	९-१२
शीलव्रतग्रहण	श्री रघुवीरशरण दिवाकर	२	८	१९५१	१२-१३
आचार्य हेमचन्द्र	श्री गुलाबचन्द्र चौधरी	२	८	१९५१	१६-२४
स्वामी केशवानन्द	स्वामी सत्यस्वरूप जी	२	८	१९५१	२६-३१
आप सम्यग्दृष्टि हैं या मिथ्यादृष्टि	प्रो० इन्द्र	२	८	१९५१	३२-३६
धर्म के स्थान पर संस्कृति	काका कालेलकर	२	८	१९५१	३६
नारी की प्रतिष्ठा	श्री किशोरी लाल मशरूवाला	२	९	१९५१	४-८
भक्तिमार्ग का सिंहावलोकन	पं० दलसुख मालवणिया	२	९	१९५१	९-१५
सोमनाथ	श्री किशोरी लाल मशरूवाला	२	९	१९५१	१८-२३
गीता संज्ञक जैन रचनाएं	श्री अगरचन्द नाहटा	२	९	१९५१	२५-२७
यह धर्म प्राण देश है	श्री रघुवीरशरण दिवाकर	२	९	१९५१	२८-३०
जीवित साहित्य की वाणी	श्री विजय मुनि	२	९	१९५१	३६-३७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
क्या धन-सम्पत्ति आदि कर्म के फल हैं	पं० फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री	२	९	१९५१	३८-३९
अपरिग्रहवाद (क्रमशः)	श्री रघुवीरशरण अग्रवाल	२	१०	१९५१	१२-१४
श्री जैनेन्द्र गुरुकुल, पंचकूला	प्रो० इन्द्र	२	१०	१९५१	१५-२०
सफेद धोती	प्रो० महेन्द्र कुमार न्यायाचार्य	२	१०	१९५१	२१-२४
इतिहास की पुनरावृत्ति : एक भ्रामक धारणा	श्री गुलाबचन्द्र चौधरी	२	१०	१९५१	३१-३२
शाक विचार	श्री अत्रिदेव गुप्त विद्यालंकार	२	१०	१९५१	३३-३६
आत्म शोधन का महान पर्व-पर्युषण	अगरचन्द नाहटा	२	११	१९५१	७-१३
शुद्ध व्यवहार का आन्दोलन	श्री किशोरी लाल मशरूवाला	२	११	१९५१	१४-१८
सबसे बड़ा प्रश्न- मैं कौन हूँ ?	मुनि श्री रामकृष्ण जी महाराज	२	११	१९५१	१९-२३
धर्म का बीज और उसका विकास	पं० सुखलाल जी संघवी	२	१२	१९५१	९-१४
जैन मन्दिर और हरिजन	प्रो० महेन्द्र कुमार जैन न्यायाचार्य	२	१२	१९५१	१८-२४
विवाह और कन्या का अधिकार	सुश्री प्रेमकुमारी दिवाकर	२	१२	१९५१	२५-३०
शतावधानी रत्नचन्द्र पुस्तकालय	मोहनलाल मेहता	२	१२	१९५१	३१-३६
लखनऊ अभिभाषण	पं० सुखलाल जी संघवी	३	१	१९५१	३-२८
मुनि श्री पुण्य विजय जी के जैसलमेर भण्डार के उद्धार कार्य की रूपरेखा	पं० सुखलाल जी	३	१	१९५१	२८-३७
अखिल भारतीय प्राच्यविद्या महासम्मेलन	श्री गुलाबचन्द्र चौधरी	३	१	१९५१	३८-४४
साधु समाज और निवृत्ति	पं० दलसुख मालवणिया	३	२	१९५१	९-१२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
शिक्षा के साधन	श्री उमाशंकर त्रिपाठी	३	२	१९५१	१३-१७
अपरिग्रहवाद (क्रमशः)	श्री रघुवीरशरण दिवाकर	३	२	१९५१	१८-२०
प्रतिज्ञा	हुकुमचन्द सिंघई	३	२	१९५१	२१-२५
नारीजागरण	सुश्री प्रेमकुमारी दिवाकर	३	२	१९५१	२६-३१
इतिहास की पुनरावृत्ति-यथार्थदर्शन	प्रो० देवेन्द्र कुमार जैन	३	२	१९५१	३४-३६
जैन दर्शन	सुश्री हीराकुमारी	३	३	१९५२	९-१५
स्वामी समन्तभद्र जी	प्रो० पद्मनाभ जैनी	३	३	१९५२	१७-२३
शास्त्र की मर्यादा	पं० महेन्द्र कुमार न्यायाचार्य	३	३	१९५२	२५-२९
तर्क का क्षेत्र	प्रो० विमलदास जैन	३	३	१९५२	३१-३६
धर्म की उत्पत्ति और उसका अर्थ	श्री मोहन लाल मेहता	३	४	१९५२	९-१४
विद्यामूर्ति पं० सुखलाल जी	पं० दलसुख मालवणिया	३	४	१९५२	१५-१८
केवलज्ञान सम्बन्धी कुछ बातें	इन्द्र	३	४	१९५२	१९-२२
शैतान	खलील जिब्रान	३	४	१९५२	२३-३३
अपरिग्रहवाद (क्रमशः)	श्री रघुवीरशरण दिवाकर	३	४	१९५२	३४-३६
श्रद्धा का क्षेत्र	पं० दलसुख मालवणिया	३	५	१९५२	९-१२
हमारे समाज की भावी पीढ़ी	उदय जैन	३	५	१९५२	१६-१८
महाभिनिष्क्रमण	रसिक त्रिवेदी	३	५	१९५२	१९-२२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
कलकत्ता विश्वविद्यालय में संस्कृत का उच्च शिक्षण	म० म० विधुशेखर भट्टाचार्य	३	५	१९५२	२४-३२
किसकी जय	प्रो० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	३	५	१९५२	३३-३७
तप के प्रतीक महावीर	डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल	३	६	१९५२	८
भगवान् महावीर-उनके जीवन की विविध भूमिकायें	पं० सुखलाल संघवी	३	६	१९५२	९-१६
हमारे जागरण का शीर्षासन	मुनि सुरेश चन्द्र	३	६	१९५२	१७-२२
मंगलमय महावीर	प्रो० महेन्द्र कुमार न्यायाचार्य	३	६	१९५२	२३-२४
कलकत्ता विश्वविद्यालय में संस्कृत का उच्च शिक्षण	म० म० विधुशेखर भट्टाचार्य	३	६	१९५२	२७-३१
रुढ़िच्छेदक महावीर	पं० बेचरदास दोशी	३	६	१९५२	३२-३७
मुनियों का आदर्श त्याग	मुनि श्री आईदान जी महाराज	३	७-८	१९५२	७-८
जैन साहित्य निर्माण की नवीन योजना	डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल	३	७-८	१९५२	९-१२
पार्श्वनाथ विद्याश्रम	प्रो० विमलदास जैन	३	७-८	१९५२	१३-२३
अपरिग्रहवाद (क्रमशः)	श्री रघुवीरशरण दिवाकर	३	७-८	१९५२	२५-२९
आत्मा की महिमा	श्री जयभगवान जी एडवोकेट	३	७-८	१९५२	३०
यह मनमानी कबतक	श्री शैलेश	३	७-८	१९५२	३१-३३
जैनसमाज और वैशाली	पं० पन्नालाल धर्मालंकार	३	७-८	१९५२	३६-३८
सम्मेलन-संस्मरण	मुनि श्री सुशील कुमार जी	३	७-८	१९५२	३९-६०
साधुसमाज की प्रतिष्ठा	पं० कृष्णचन्द्राचार्य	३	७-८	१९५२	६१-६३
ज्ञान सापेक्ष है	प्रो० विमलदास जैन	३	९	१९५२	५-११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
ज्ञान की खोज में	मुनि श्री जयन्तीलाल जी	३	९	१९५२	१७-२१
संसार का इतिहास तीन शब्दों में	श्री महेन्द्र 'राजा'	३	९	१९५२	२२-२४
क्या मैं जैन हूँ ?	प्रो० दलसुख मालवणिया	३	१०	१९५२	९-१२
ओसवंश-स्थापना के समय संबन्धी महत्त्वपूर्ण उल्लेख	श्री अगरचन्द नाहटा	३	१०	१९५२	१५-१८
कवि की हुंकार	श्री जयभिक्खु	३	१०	१९५२	१९-२६
उज्जयिनी	श्री अमरचन्द	३	१०	१९५२	२७-३३
स्वरूप और पररूप	पं० सुखलाल जी संघवी	३	११	१९५२	५-१०
जैन परम्परा	मोहनलाल मेहता	३	११	१९५२	१३-१७
मृगतृष्णा	श्री जयभिक्खु	३	११	१९५२	१९-२६
नैतिक उत्थान और शिक्षण संस्थाएँ	प्रो० पृथ्वीराज जैन	३	११	१९५२	२७-३०
पल्लीवालगच्छीय शांतिसूरि का समय एवं प्रतिष्ठा	श्री अगरचन्द नाहटा	३	११	१९५२	३१-३३
बुझती हुई चिनगारियाँ	मुनि श्री सुशील कुमार शास्त्री	३	११	१९५२	३५-३७
समन्वय या सफाई	प्रो० देवेन्द्र कुमार जैन	३	१२	१९५२	७-१०
जैन साधु और हरिजन	श्री माईदयाल जैन	३	१२	१९५२	१४-१६
परिनिर्वाण	श्री जय भिक्खु	३	१२	१९५२	१७-२१
धर्म का तत्त्व	टॉल्सटाय	३	१२	१९५२	२२-२६
भारतीय त्यौहार	सुश्री मोहिनी शर्मा	३	१२	१९५२	२७-३०
नारी जीवन का आदर्श	डॉ० सन्तोष कुमार 'चन्द्र'	३	१२	१९५२	३१-३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
धर्म करते पाप तो होता ही है !	श्री प्रवाही	३	१२	१९५२	३५-३७
स्याद्वाद की सर्वप्रियता	श्री चन्द्रशंकर शुक्ल	४	१	१९५२	३-८
गांधी जी की दृष्टि में अहिंसा का अर्थ	नरेन्द्र गुप्त	४	१	१९५२	११-१२
मैं स्वयं	श्री जय भिक्खु	४	१	१९५२	१३-२१
मंजिल अभी दूर है	मुनि सुरेशचन्द्र शास्त्री	४	१	१९५२	२४-२६
क्या यही शिक्षा है	राजाराम जैन	४	१	१९५२	३०-३२
अपरिग्रहवाद (क्रमशः)	श्री रघुवीरशरण दिवाकर	४	२	१९५२	३-८
स्वप्न : एक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण	श्री मोहनलाल मेहता	४	२	१९५२	११-१५
पितृ हत्या का पुण्य	जय भिक्खु	४	२	१९५२	१६-२३
भगवान् महावीर की जन्मभूमि	भगवानदास केसरी	४	२	१९५२	२८-३५
असंयत जीव का जीना चाहना राग है	प्रो० दलसुख मालवणिया	४	३	१९५३	३-६
अपरिग्रहवाद (क्रमशः)	श्री रघुवीरशरण दिवाकर	४	३	१९५३	८-१२
पितृ हत्या का पुण्य	श्री जय भिक्खु	४	३	१९५३	१३-२१
जीवन-निर्माण	स्वामी समन्तभद्र जी	४	३	१९५३	२२-२६
भारतीय चिकित्सा शास्त्र	अत्रिदेव विद्यालंकार	४	३	१९९३	२९-३४
बंधन से अलंकार	सुश्री मोहनी शर्मा	४	४	१९५३	३-५
आलोचक	श्री विजयमुनि	४	४	१९५३	६-७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
क्रोध आदि वृत्तियों पर विजय कैसे	अरविंद	४	४	१९५३	८-१०
अपरिग्रहवाद	श्री रघुवीरशरण दिवाकर	४	४	१९५३	११-१५
साध्वी समाज से	मुनि श्री आईदानजी 'निर्मल'	४	४	१९५३	२१-२२
आरोग्य	पं० सुन्दरलाल जैन वैद्यरत्न	४	४	१९५३	२३-२५
काश ! मैं अध्यापिका होती !	सुश्री शरबती जैन	४	४	१९५३	२९-३२
महामानव की मानसिक भूमिका	प्रो० राजबली पाण्डेय	४	५	१९५३	३-६
संन्यास मार्ग और महावीर	पं० दलसुख मालवणिया	४	५	१९५३	७-११
जैन शिक्षण संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा	श्री धनदेव कुमार	४	५	१९५३	१३-१६
दौरे के संस्मरण	श्री हरजसराय जैन	४	५	१९५३	२३-२६
सच्ची साधना का प्रभाव	श्री राजाराम जैन	४	५	१९५३	२८-२९
महावीर और क्षमा	श्री भूपराज जैन	४	५	१९५३	३०-३४
भगवान् महावीर और वर्तमान युग	नरेशचन्द्र जैन	४	५	१९५३	३५-३६
मानवमात्र का तीर्थ	पं० सुखलाल जी	४	६	१९५३	१-२
भौतिकता और अध्यात्म का समन्वय	पं० दलसुख मालवणिया	४	६	१९५३	३-४
हम किधर बह रहे हैं ?	डॉ० इन्द्र	४	६	१९५३	५-१३
क्षमादान	जय भिक्खु	४	६	१९५३	१५-१९
प्राकृत साहित्य के इतिहास के प्रकाशन की आवश्यकता	श्री अगरचन्द नाहटा	४	६	१९५३	२१-२७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
हमारी यात्रा के कुछ संस्मरण	लाला हरजसराय जैन	४	६	१९५३	२८-३३
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति	पं० सुखलाल जी	४	७-८	१९५३	३-१०
जैन साहित्य का नवीन अनुशीलन	डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल	४	७-८	१९५३	११-१२
जैन साहित्य का नवीन संस्करण	वाल्टर शूब्रिंग	४	७-८	१९५३	१३-१४
जैन अनुसंधान का दृष्टिकोण	महेन्द्र कुमार न्यायाचार्य	४	७-८	१९५३	१५-१६
असाम्प्रदायिक जैन साहित्य	डॉ० पी० एल० वैद्य	४	७-८	१९५३	१७-२४
आगमों के सम्पादन में कुछ विचार योग्य प्रश्न	पं० बेचरदास दोशी	४	७-८	१९५३	२५-२९
महावीर से पहले का जैन साहित्य	डॉ० इन्द्र	४	७-८	१९५३	३०-३४
जैन पुराण साहित्य	पं० फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री	४	७-८	१९५३	३५-३८
कन्नड़ संस्कृति को जैनों की देन	प्रो० के० एस० धरणेन्द्रैया	४	७-८	१९५३	३९-४६
जैन कन्नड़ वाङ्मय	श्री के० भुजबलि शास्त्री	४	७-८	१९५३	४७-५१
जैसलमेर भण्डारं का उद्धार	मुनि पुण्य विजयं जी	४	७-८	१९५३	६३-७०
जैन व्याख्या पद्धति	पं० सुखलाल जी	४	७-८	१९५३	७१-७३
जैनज्ञान भंडारों के प्रकाशित सूची ग्रन्थ	श्री अगरचन्द नाहटा	४	७-८	१९५३	७३-७९
अहिंसा का महान नियम	श्री वासुदेवशरण अग्रवाल	४	९	१९५३	१-२
जैनी कौन	श्री अगरचंद नाहटा	४	९	१९५३	३-६
मूक साहित्य सेवी : श्री पन्नालाल जी	श्री माईदयाल जैन	४	९	१९५३	७-११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
घर जोड़ने की माया	डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी	४	९	१९५३	१७-२१
धर्म का मर्म	श्री सुबोध कुमार जैन	४	९	१९५३	२४-२९
आचारांग की दार्शनिक मान्यतायें	डॉ० इन्द्र	४	१०	१९५३	१-६
प्राचीन मथुरा में जैनधर्म का वैभव	डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल	४	१०	१९५३	७-११
जैनमूर्तिकला	डॉ० विनयतोष भट्टाचार्य	४	१०	१९५३	१३-१९
अहमदाबाद के भामाशाह	श्री जयभिक्खु	४	१०	१९५३	२१-२४
सिद्धसेन दिवाकर (क्रमशः)	डॉ० इन्द्र	४	१०	१९५३	२५-३१
जैन आगमों का मन्थन	डॉ० इन्द्र	४	१०	१९५३	३५-३७
अपभ्रंश के जैन साहित्य का महत्त्व	डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी	४	११	१९५३	१-३
कुभार्या	श्री जयभिक्खु	४	११	१९५३	४-१२
जैन लोक साहित्य : एक अध्ययन	श्री महेन्द्र राजा	४	११	१९५३	१३-२८
सिद्धसेन दिवाकर	डॉ० इन्द्र	४	११	१९५३	२९-३५
मलधारी अभयदेव और हेमचन्द्राचार्य	पं० दलसुख मालवणिया	४	१२	१९५३	१-१०
मेरी बम्बई यात्रा	डॉ० इन्द्र	४	१२	१९५३	११-१५
शिष्य मोह	श्री जयभिक्खु	४	१२	१९५३	१६-२८
जैन आगमों का मंथन	डॉ० इन्द्र	४	१२	१९५३	२९-३०
आचार्य जिनभद्र	(लेखक का नाम नही हैं)	५	१	१९५३	२-१०
जैनसाहित्य के इतिहास निर्माण के सूत्र	डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल	५	१	१९५३	११-१६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
शास्त्ररचना का उद्देश्य	पं० सुखलाल जी	५	१	१९५३	२४
जैन साहित्य के विषय में अजैन विद्वानों की दृष्टियाँ	डॉ० इन्द्र	५	१	१९५३	२५-२८
जैन ज्ञान भंडारों पर एक दृष्टिपात	मुनि पुण्यविजय जी	५	२	१९५३	१-७
जैन साहित्य का विहंगावलोकन	डॉ० इन्द्र	५	२	१९५३	८-१४
जैन साहित्य के संकेत चिन्ह	डॉ० इन्द्र	५	२	१९५३	३०-३८
आत्मा का बल	श्री किशोरीलाल मशरूवाला	५	३	१९५४	१-२
सम्यक् दृष्टि और मिथ्या दृष्टि	डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	५	३	१९५४	३-१०
सन्त एकनाथ के जीवनप्रसंग	डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	५	३	१९५४	११-१९
बीसवीं सदी का जैन साहित्य	श्री अगरचन्द नाहटा	५	३	१९५४	२०-२४
पितृहीन	डॉ० इन्द्र	५	३	१९५४	२५-२९
नारी का महत्त्व	मुनि श्री आईदान जी० महाराज	५	३	१९५४	३०-३६
विश्वशांति का आधार-गांधीवाद	श्री नरेन्द्र कुमार जैन	५	३	१९५४	३७-४०
जैन संस्कृति और मिथ्यात्व	पं० बेचरदास जी	५	३	१९५४	४०
कला का कौल	श्री मनुभाई पंचोली	५	४	१९५४	१-३
सम्यग्दृष्टि और मिथ्यादृष्टि	डॉ० इन्द्र	५	४	१९५४	४-११
वैशाली और भगवान् महावीर का दिव्य संदेश	श्री महावीर प्रसाद 'प्रेमी'	५	४	१९५४	१४-२३
वैशाली के गणतन्त्र की एक झांकी	डॉ० इन्द्र	५	४	१९५४	२८-३०
सिद्धिविनिश्चय और अकलंक	पं० दलसुख मालवणिया	५	४	१९५४	३१-३२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
भगवान् महावीर के गणधर	पं० दलसुख मालवणिया	५	५	१९५४	१-१०
सूत्रकृतांग में वर्णित मतमतांतर	डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	५	५	१९५४	११-२०
महात्मा हुसेन बसराई	डॉ० इन्द्र	५	५	१९५४	२१-२५
जैनकथा साहित्य का सार्वजनीन महत्त्व	मुनि जिनविजय जी	५	५	१९५४	२९-३८
अभय का अराधक	डॉ० इन्द्र	५	६	१९५४	१-८
चन्द्रवेध्यक आदि ४ सूत्र अनुपलब्ध नहीं हैं।	श्री अगरचन्द नाहटा	५	६	१९५४	१६-१७
मनुष्य की प्रगति के प्रति भयंकर विद्रोह	मुनि श्री आईदान जी महाराज	५	६	१९५४	१८-१९
संसार के धर्मों का उदय	डॉ० इन्द्र	५	६	१९५४	२०-२५
अविद पद शतार्थी	महो० विनयसागर जी	५	६	१९५४	२६-३०
जीवन-रहस्य	श्री भगवान लाल भांकड़	५	६	१९५४	३१-३४
नारी का स्थान घर है या बाहर ?	श्रीमती सत्यवती जैन	५	६	१९५४	३५
हमारा क्रांतिवारसा (क्रमशः)	पं० बेचरदास दोशी	५	७	१९५४	१-८
जिनधर्म का तमाशा	श्री अगरचन्द नाहटा	५	७	१९५४	९-११
गुरु नानक	डॉ० इन्द्र	५	७	१९५४	१२-२५
आस्तिक और नास्तिक	डॉ० इन्द्र	५	७	१९५४	२७-३०
अपने को जानिए	श्री देवेन्द्र कुमार	५	७	१९५४	३१-३३
सांपू सरोवर	श्री जयभिक्खु	५	७	१९५४	३४-३९
अमरवाणी	श्री अगरचन्द नाहटा	५	८	१९५४	१-४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
हमारा क्रांतिवारसा	पं० बेचरदास दोशी	५	८	१९५४	६-१५
नरसिंह मेहता	डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	५	८	१९५४	१७-२०
अपभ्रंश का काव्य सौन्दर्य	प्रो० सुरेशचन्द्र गुप्त	५	८	१९५४	२३-३०
महावीर की जय	डॉ० इन्द्र	५	८	१९५४	३१-३३
ग्रीष्म ऋतु का आहार-विहार,	वैद्यराज पं० सुन्दरलाल	५	८	१९५४	३४-३६
जैनधर्म का वैशिष्टय	प्रो० विमलदास कोंदिया	५	९	१९५३	३-१०
बौद्धधर्म का छठा धर्म संगायन	भिक्षु धर्मरक्षित	५	९	१९५३	१२-१८
संघर्ष करना होगा	श्री निर्मल कुमार जैन	५	९	१९५४	१९-२३
महावीर का साम्यवाद	सुन्दरलाल जैन	५	९	१९५४	२८-३१
शिशु की निद्रा	श्रीमती कमलादेवी	५	९	१९५४	३२-३४
बत्तीस प्रकार की नाट्यविधि	डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल	५	१०	१९५४	३-९
श्री आत्मारामजी और हिन्दी भाषा	श्री पृथ्वीराज जैन	५	१०	१९५४	११-१५
वर्षा ऋतु का आहार-विहार	वैद्यराज पं० सुन्दरलाल जैन	५	१०	१९५४	१६-१९
कालकाचार्य	श्री इलाचन्द जोशी	५	१०	१९५४	२३-२९
अगस्त की ऐतिहासिकता	श्री शरदचन्द्र मुखर्जी	५	१०	१९५४	३०-३२
काश्मीर की सैर (क्रमशः)	पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री	५	१०	१९५४	३३-३६
उपशमन का आध्यात्मिक पर्व	पं० दलसुख मालवणिया	५	११	१९५४	३-५
निर्युक्ति और निर्युक्तिकार	श्री मोहनलाल मेहता	५	११	१९९४	९-१५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
धर्मबन्धु हर्बर्ट वारन	अनु० कृष्णचन्द्राचार्य	५	११	१९५४	१६-२०
शास्त्रीय पैमाने	पं० मुनि श्री फूलचन्द्र जी 'श्रमण'	५	११	१९५४	२५-२८
काश्मीर की सैर	पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री	५	११	१९५४	२९-३०
मानव और शांति	श्री बैजनाथ शर्मा	५	११	१९५४	३१-३२
जैन संस्कृति	पं० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य	५	१२	१९५४	३-१३
हरिकेशीबल	श्री सुशील	५	१२	१९५४	१५-२४
काश्मीर की सैर	पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री	५	१२	१९५४	२५-२७
उपवास से लाभ	श्री अत्रिदेव गुप्त	५	१२	१९५४	२८-३०
महावीर का अन्तस्तल	श्री ज्योति प्रसाद जैन	५	१२	१९५४	३१-३४
'सत्यं' स्वर्गस्य सोपानम्	डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल	६	१	१९५४	३-४
भद्रबाहु का कालमान	मुनिश्री फूलचन्द्र जी	६	१	१९५४	६-८
दीपावली की जैन परम्परा	पं० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य	६	१	१९५४	९-११
संसार की सबसे बड़ी पुस्तकों की दुकान	फोयल्स	६	१	१९५४	१२-१७
संशयात्मक मनोवृत्ति और उससे छुटकारा,	(नाम उद्धृत नहीं है)	६	१	१९५४	२०-२५
यज्ञ का घोड़ा	श्री जयभिक्खु	६	१	१९५४	२६-३०
शुभकामना	प्रो० देवेन्द्र कुमार जैन	६	१	१९५४	३१-३३
क्या आप असुन्दर हैं ?	कु० रेणुका चक्रवर्ती	६	१	१९५४	३४-३८
जैनागमों में ज्ञानवाद	डॉ० मोहनलाल मेहता	६	२	१९५४	५-९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
कौन भूखे मरेगें	श्री पीटर फ्रीमैन	६	२	१९५४	१४-१७
शीत ऋतु का आहार-विहार	वैद्यराज पं० सुन्दरलाल जैन	६	२	१९५४	१९-२०
ऐसा क्यों	श्री धनदेव कुमार 'सुमन'	६	२	१९५४	२१-२६
अपने व्यक्तित्व की परख कीजिए	श्री महेन्द्र 'राजा'	६	२	१९५४	२७-२९
जैन साहित्य का इतिहास और इसकी प्रगति	पं० दलसुख मालवणिया	६	२	१९५४	३०-३९
दान सम्बन्धी मान्यता पर विचार	श्री अगरचन्द नाहटा	६	३	१९५५	३-१०
ईसाइयों का महापर्व-क्रिसमस	सुश्री निर्मला प्रीतिप्रेम	६	३	१९५५	१२-१६
भारतीय संस्कृति	डॉ० मंगलदेव शास्त्री	६	३	१९५५	१८-३१
भाष्य और भाष्यकार	श्री मोहनलाल मेहता	६	४	१९५५	४-१२
महात्मा कन्फ्यूशियस	श्री महेशशरण सक्सेना	६	४	१९५५	१४-१७
बसन्त ऋतु का आहार-विहार	वैद्यराज पं० सुन्दरलाल जैन	६	४	१९५५	१९-२०
बैलून में	मैक्स एडालोर	६	४	१९५५	२१-२८
एक आश्चर्यमय ग्रन्थ	डॉ० सूर्यदेव शर्मा	६	४	१९५५	२९-३२
विश्व कलेण्डर	श्री महेन्द्र कुमार जैन	६	४	१९५५	३३-३७
हिन्दू बनाम जैन	प्रो० महेन्द्र कुमार न्यायाचार्य	६	४	१९५५	३८-४०
पारसनाथ	श्री श्रीरंजन सूरिदेव	६	५	१९५५	३-५
दो क्रान्तिकारी जैन विद्वान्	श्री रतिलाल दीपचन्द देसाई	६	५	१९५५	७-१३
राजस्थानी जैन साहित्य	श्री अगरचन्द नाहटा	६	५	१९५५	१५-२२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
मानव	सुश्री पुष्पा धारीवाल	६	५	१९५५	२४-२६
सामुद्रिक विज्ञान (क्रमश:)	श्री विजयराज	६	५	१९५५	२७-२९
बर्मा में होली का त्यौहार	सुश्री निर्मला प्रीतिप्रेम	६	५	१९६५	३०-३२
प्रत्यालोचना-महावीर का अन्तस्तल	श्री कस्तूरमल बांठिया	६	५	१९५५	३३-३६
अहिंसा की युगवाणी	डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल	६	६-७	१९५५	३-४
भगवान् महावीर और उनका शान्ति संदेश	पं० रत्न श्री ज्ञानमुनिजी	६	६-७	१९५५	५-१७
भगवान् महावीर का मार्ग	पं० दुलसुख मालवणिया	६	६-७	१९५५	२०-२२
वर्धमान और हनुमान	श्री सूरजचंद 'सत्यप्रेमी'	६	६-७	१९५५	२३
महावीर का संदेश	श्री रघुवीरशरण दिवाकर	६	६-७	१९५५	२४-३४
भगवान् महावीर-जीवन और सिद्धान्त	श्री धर्मचन्द्र 'मुखर'	६	६-७	१९५५	३६-४०
भगवान् महावीर का व्यक्तित्व	डॉ० गुलाबचन्द्र चौधरी	६	६-७	१९५५	४१-४६
सन्मति महावीर और सर्वोदय	श्री महावीर प्रसाद प्रेमी	६	६-७	१९५५	५१-५३
अहिंसा	श्री मदनलाल जैन	६	६-७	१९५५	५५-५६
महावीर के ये उत्तराधिकारी !	मुनि सुरेशचन्द्र शास्त्री	६	६-७	१९५५	५७-६०
भगवान् महावीर की जीवन साधना	प्रो० देवेन्द्र कुमार जैन	६	६-७	१९५५	६२-६४
राजस्थानी जैन साहित्य	श्री अगरचन्द नाहटा	६	८	१९५५	४-९
स्त्री का स्वभाव	दादा धर्माधिकारी	६	८	१९५५	११-१३
विश्व कलेण्डर क्यों नहीं अपनाया जाय ?	प्रो० वेंकटाचलम	६	८	१९५५	१४-१८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
सच्चा वैभव	श्री एस० कान्त	६	८	१९५५	१९-३५
सामुद्रिक विज्ञान	श्री विजयराज	६	८	१९५५	३८-४०
भारतीय संस्कृति का दृष्टिकोण	डॉ० मंगलदेव शास्त्री	६	९	१९५५	३-१६
आत्म निरीक्षण	सुश्री शरबती देवी जैन	६	९	१९५५	२०-२३
मिथिलापति नमिराज	श्री सुशील	६	९	१९५५	२६-३४
रविन्द्रनाथ के शिक्षा सिद्धान्त और विश्वभारती	श्री शिवनाथ	६	१०	१९५५	३-७
हमारी भक्ति निष्ठा कैसी हो ?	श्री अगरचन्द नाहटा	६	१०	१९५५	८-९
चूर्णियां और चूर्णीकार	डॉ० मोहनलाल मेहता	६	१०	१९५५	१०-१४
सुदर्शन	गोकुलचन्द शास्त्री 'प्रवासी'	६	१०	१९५५	१५-१८
धर्मपुरुष और कर्मपुरुष	पं० फूलचन्द्रजी 'श्रमण'	६	१०	१९५५	२१-२२
सच्चरित्रता क्या है ?	महासती श्री सरलादेवी जी महाराज	६	१०	१९५५	२५-२६
चलिए और खूब चलिए	वैद्यराज पं० सुन्दरलाल जैन	६	१०	१९५५	२७-२९
लेखक और विश्वशान्ति	डॉ० एस० राधाकृष्णन्	६	१०	१९५५	३०-३२
दिवाभोजन ही क्यों ?	डॉ० महेशदान सिंह चौहान	६	१०	१९५५	३३-३४
अपने व्यक्तित्व की परख कीजिए	श्री जे० एन० भारती,	६	१०	१९५५	३५-३६
आधुनिक पुस्तकालय (क्रमशः)	श्री महेन्द्र 'राजा'	६	१०	१९५५	३७-४०
प्रतिक्रमण	स्वामी सत्यभक्त जी	६	११	१९५५	३-१२
पर्युषणपर्व की आराधना	पं० मुनि श्री फूलचन्द्रजी 'श्रमण'	६	११	१९५५	१४-१६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
पर्युषण मीमांसा	पं० प्रवर श्री कन्हैयालालजी म०(कमल)	६	११	१९५५	१७-२१
महापर्व संवत्सरी	ज्ञानमुनि जी महाराज	६	११	१९५५	२४-२८
संवत्सरी और आचार्य श्री सोहनलाल जी महाराज	श्री विज्ञ	६	११	१९५५	३०-३३
अस्पृश्यता और जैनधर्म	श्री बेचरदास दोशी	६	११	१९५५	३४-३८
अपने को परखिए	मुनि श्री सुरेशचन्द्र जी शास्त्री	६	११	१९५५	३९-४१
कल्पसूत्र का हिन्दी पद्यानुवाद	श्री अगरचन्द नाहटा	६	१२	१९५५	२-८
एकान्तपाप और एकान्तपुण्य	पं० दलसुख मालवणिया	६	१२	१९५५	११-१६
जिन्दगी किसे कहते हैं ?	प्रिंस क्रोपाटकिन	६	१२	१९५५	१७
नमस्कार मंत्र का मौलिक परम अर्थ	पं० सूरजचंद 'सत्यप्रेमी'	६	१२	१९५५	१८-२०
भारतीय संस्कृति का प्रहरी	कविरत्न श्री अमर मुनिजी	६	१२	१९५५	२६-२८
हम सौ वर्ष जी सकते हैं ?	श्री देवेन्द्र कुमार जैन शास्त्री	६	१२	१९५५	३१-३३
स्वामी विवेकानन्द	श्री शीतल चन्द्र चटर्जी	६	१२	१९५५	३४-३५
मन-निग्रह	श्री अभयमुनि जी महाराज	६	१२	१९५५	३६-३७
पुस्तकों की व्यवस्था (क्रमशः)	श्री महेन्द्रराजा	६	१२	१९५५	३८-४०
अब कहाँ तक ?	पं० बेचरदास जी जोशी	७	१	१९५५	८-१४
अधिमास और पर्युषणा	श्री कस्तूरमल बांठिया	७	१	१९५५	१७-२३
दीपमाला : एक आध्यात्मिक पर्व	पं० श्री ज्ञानमुनिजी महाराज	७	१	१९५५	२५-२८
श्रमण भगवान् महावीर की शिष्य संपदा	मुनि फूलचन्द जी 'श्रमण'	७	१	१९५५	३०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जीवन की अंतिम साधना	श्री सत्यदेव विद्यालंकार	७	१	१९५५	३१-३३
जैनधर्म : एक निर्वचन	श्री श्रीरंजन सूरिदेव	७	२	१९५५	३-६
लोकसाहित्य के आदि सर्जक-जैनविद्वान्	श्री अगरचन्द नाहटा	७	२	१९५५	९-१२
मैं मुक्ति चाहता हूँ	श्री भंवरमल सिंघी	७	२	१९५५	१३
कुषाणकालीन मथुरा की जैन सभ्यता	डॉ० एस० सी० उपाध्याय	७	२	१९५५	१७-१८
नया और पुराना	मुनि सुरेशचन्द्र जी शास्त्री	७	२	१९५५	२०-२२
मानव कुछ तो विचारकर	मुनि श्री महाप्रभ विजयजी महाराज	७	२	१९५५	२३-२४
सच्चा जैन	श्री यशोविजय उपाध्याय	७	२	१९५५	२५-२६
शिक्षा के दो रूप	श्री उमाशंकर त्रिपाठी	७	२	१९५५	२७
त्याग पूर्वक उपभोग करो	श्री इन्द्र	७	२	१९५५	२८-३१
पथ-भ्रष्ट	श्री अभय मुनि जी महाराज	७	२	१९५५	३३-३६
आधुनिक पुस्तकालयों में पुस्तक-सूची(क्रमशः)	श्री महेन्द्र राजा	७	२	१९५५	३७-३८
निह्नववाद	श्री मोहनलाल मेहता	७	३	१९५६	५-१२
विद्वदवर विनयसागर आद्यपक्षीय नहीं पिप्पलक शाखा के थे	श्री अगरचन्द नाहटा	७	३	१९५६	१७-१८
तृष्णा और उसका अन्त !	श्री ज्ञान मुनि जी महाराज	७	३	१९५६	१९-२०
महावीर भूले ?	श्री कस्तूरमल बांठिया	७	३	१९५६	२२-२९
शिक्षा का जहर	श्री उमाशंकर त्रिपाठी	७	३	१९५६	३०
चंदनबाला और मृगावती	श्री जयचन्द बाफणा	७	३	१९५६	३१-३२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन इतिहास की एक झलक	पं० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य	७	४	१९५६	३-८
जैन दर्शन की देन : अनेकांत दृष्टि	डॉ० मंगलदेव शास्त्री	७	४	१९५६	१३-१४
जैन रास साहित्य	श्री अगरचन्द नाहटा	७	४	१९५६	१५-१६
बाल संन्यास दीक्षा प्रतिबन्धक बिल उचित है।	प्रभुदास बालू भाई पटवारी	७	४	१९५६	१८-२३
पुस्तक सूची (क्रमशः)	महेन्द्र राजा	७	४	१९५६	२७-२९
दुर्बलता का पाप	श्री विनोद राय जैन	७	४	१९५६	३०-३४
जैन समाज के लिए नई दिशा	साहू शान्ति प्रसाद जी	७	५	१९५६	३-७
जैन आगमों की निर्युक्तियां	श्री मोहनलाल मेहता	७	५	१९५६	९-१२
संसार की चार उपमाएं	श्री प्रेमी जी	७	५	१९५६	१३-१४
ज्योतिर्धर दो जैन विद्वान्-हरिभद्र और यशोविजय	श्री अगरचन्द नाहटा	७	५	१९५६	१६-१९
अहिंसक मधु	श्री कस्तूरमल बांठिया	७	५	१९५६	२४-२९
भगवान् महावीर : एक श्रद्धांजलि	डॉ० मङ्गलदेव शास्त्री	७	६-७	१९५६	३-८
पुनीत स्मरण !	देवेन्द्र कुमार शास्त्री	७	६-७	१९५६	९
अहिंसक समाज की रचना	श्री जमनालाल जैन	७	६-७	१९५६	१०-१९
मानव संस्कृति और महावीर	प्रो० देवेन्द्र कुमार	७	६-७	१९५६	२२-२५
एक नया पुरोहितवाद	मुनि सुरेशचन्द्र शास्त्री	७	६-७	१९५६	२७-३१
जैनागमों में महावीर के जीवनवृत्त की सामग्री	श्री अगरचन्द नाहटा	७	६-७	१९५६	३४-३८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
भगवान् महावीर और अहिंसा	सुश्री शरबती जैन	७	६-७	१९५६	४०-४५
अहिंसक महावीर	पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री	७	६-७	१९५६	४८-५०
महावीर भूले !	प्रो० दलसुख भाई मालवणिया	७	६-७	१९५६	५१-५४
भगवान् महावीर	श्री मदनलाल जैन	७	६-७	१९५६	५५-५६
हरिजन मंदिर प्रवेश	श्री भगतराम जैन	७	६-७	१९५६	५८-६१
श्री पार्श्वनाथ विद्याश्रम	श्री हरजसराय जैन,	७	६-७	१९५६	६३-८०
प्राकृत विद्यापीठ, वैशाली		७	८	१९५६	३-१२
भगवान् बुद्ध	भदन्त आनन्द कौसल्यायन	७	८	१९५६	१३-२०
भारत की अहिंसक संस्कृति (क्रमशः)	मुनि श्रीरामकृष्ण जी म.सा.	७	८	१९५६	२१-२५
श्रमण जीवन का बदलता हुआ इतिहास (क्रमशः)	मुनि श्री आईदान जी	७	८	१९५६	३०-३५
जैनसाहित्य में कलिङ्ग	श्री अमरचन्द	७	९	१९५६	३-६
तीर्थंकरवाद	श्री कस्तूरमल बांठिया	७	९	१९५६	९-१६
भारत की अहिंसक संस्कृति	मुनि श्री रामकृष्ण जी म. सा.	७	९	१९५६	२०-२३
पुस्तक सूची	श्री महेन्द्र राजा	७	९	१९५६	२५-२६
श्रमण जीवन का बदलता हुआ इतिहास	मुनि श्री आईदान जी	७	९	१९५६	२९-३४
पुष्पदंत, क्या पुष्पभाट थे ?	प्रो० देवेन्द्र कुमार	७	१०	१९५६	३-५
यह अगस्त का महीना	श्री एम० के० भारिल्ल	७	१०	१९५६	७-९
प्राचीनजैन राजस्थानी गद्य साहित्य	श्री अगरचन्द नाहटा	७	१०	१९५६	११-१८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जब आप घर से अकेली निकलें	कु० रूपलेखा वर्मा	७	१०	१९५६	१९-२०
वर्षा ऋतु का आहार-विहार	वैद्यराज पं० सुन्दरलाल जैन	७	१०	१९५६	२३-२५
वैशाली और दीर्घप्रज्ञ भगवान् महावीर	प्रो० वासुदेवशरण अग्रवाल	७	१०	१९५६	२६-३५
जीवन की कला	उपाध्याय अमर मुनि	७	११	१९५६	३-६
पर्युषण का सामाजिक महत्त्व	जयन्त मुनि	७	११	१९५६	१०-१५
पर्युषण पर्व पर एक ऐतिहासिक दृष्टिपात	पं० मुनि श्री रामकृष्ण जी म०	७	११	१९५६	१७-२१
श्रमण जीवन में अधिकरण का उपशमन,	पं० मुनि कन्हैयालाल जी म० 'कमल'	७	११	१९५६	२३-२७
पर्युषण पर्व और आज की नारी	सुश्री शरबती देवी जैन	७	११	१९५६	३४-३५
पर्युषण पर्व पर दो महत्त्वपूर्ण धार्मिक अनुष्ठान	श्री अगरचन्द नाहटा	७	११	१९५६	३७-३९
पर्व और धर्मचर्या	श्री जयभगवान जैन	७	१२	१९५५	३-९
जैन ज्योतिष तिथि पत्रिका	श्री विज्ञ	७	१२	१९५६	११-१५
श्रमण संघ की शिक्षा का प्रश्न	पं० मुनि श्री सुरेशचन्द्र जी म०	७	१२	१९५६	१६-१७
भोजन और उसका समय	श्री अमृतलाल शास्त्री	७	१२	१९५६	१८-२०
अपरिग्रहवाद	मुनि श्री रामकृष्ण जी म. सा.	७	१२	१९५६	२१-२२
अहिंसा	श्री राजकुमार जैन भारिल्ल	७	१२	१९५६	२४-२९
ईमानदारी के वातावरण	डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल	७	१२	१९५६	३१-३५
वाग्भट्टालंकार	पं० अमृतलाल शास्त्री	८	१	१९५६	४-७
वज्रस्वामी	डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	८	१	१९५६	८-११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
अध्ययन : एक सुझाव	श्री महेन्द्र राजा	८	१	१९५६	१२-१४
'जी' की आत्मकथा	प्रो० देवेन्द्र कुमार जैन,	८	१	१९५६	१५-१७
धर्म और दर्शन (क्रमश:)	मुनि श्री सुशीलकुमार जी	८	१	१९५६	२०-२३
दीपावली : एक साधनापर्व	श्री श्रीरंजन सूरिदेव	८	१	१९५६	३३-३५
महावीर भूले ?	श्री कस्तूरमल बांठिया	८	२	१९५६	४-१५
जीवन के दो रूप-धन और धर्म	पं० मुनि श्री आईदान जी	८	२	१९५६	१६-१८
आर्यरक्षित	डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	८	२	१९५६	१९-२२
धर्म और दर्शन	मुनि श्री सुशीलकुमार जी	८	२	१९५६	२३-२८
टमाटर	आयुर्वेदाचार्य श्री सुन्दरलाल जैन	८	२	१९५६	२९-३१
दया-दान की मान्यता	श्री सतीश कुमार 'भैरव'	८	२	१९५६	३३-३६
प्रज्ञाचक्षु पं० सुखलाल संघवी	श्री धनपति टुंकलिया	८	२	१९५६	३७-३९
अहिंसा और शिशु	श्री ए० एम० योस्तन	८	३-४	१९५७	३-९
शिशु और संस्कृति	श्री एस० आर० स्वामी	८	३-४	१९५७	१०-१४
डॉ० मारीआ मॉन्तेसरि	श्री महेन्द्र राजा	८	३-४	१९५७	१८-२१
व्यावहारिक क्रियाएँ	कु० आरती पात्रा	८	३-४	१९५७	२३-२८
विद्यालय से माता-पिता का सम्बन्ध	श्रीमती सुशील	८	३-४	१९५७	२९-३२
मान्तेसरि शिक्षा पद्धति	कु० ऊषा मेहरा	८	३-४	१९५७	३८-४८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
बालक की व्यवस्था प्रियता	डॉ० मारीआ मॉन्तेसरि	८	३-४	१९५७	४९-५३
घरों में बच्चे	श्रीमती ब्रजेश कुमारी याज्ञिक	८	३-४	१९५७	५४-६०
मॉन्तेसरि शिक्षा के ५० वर्ष	श्री ए० एम० योस्तन	८	३-४	१९५७	६१-६६
मान्तेसरि आन्दोलन	श्री ए० एम० योस्तन	८	३-४	१९५७	६७-७९
शास्त्र वाचना की आज फिर आवश्यकता है	श्री कस्तूरमल बांठिया	८	५	१९५७	४-७
कविरत्न श्री अमरमुनि जी,	मुनि श्री कान्तिसागर जी	८	५	१९५७	८-१०
प्रभावशाली व्यक्तित्व	श्री कोमल जैन	८	५	१९५७	१२-१४
बच्चों की मूलभूत आवश्यकताएँ	कु० इला खासनवीस	८	५	१९५७	१५-२०
गंगा का जल लेय अरघ गंगा को दीनो	पं० जमनालाल जैन	८	५	१९५७	२३-२८
जैन कला प्रदर्शनी	श्री अगरचन्द नाहटा	८	५	१९५७	३६-३८
जनतंत्र के महान् उपासक भगवान् महावीर	डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	८	६	१९५७	३-७
आधुनिक विज्ञान और अहिंसा	श्री ज्ञानमुनि जी महाराज	८	६	१९५७	१०-१४
भगवान् महावीर का व्यक्तित्व	मुनि कन्हैयालाल जी 'कमल'	८	६	१९५७	१७-२३
भगवान् महावीर की धर्म क्रान्ति	प्रो० पृथ्वीराज जैन	८	६	१९५७	२६-३०
भगवान् महावीर की दिव्य देशना	पं० अमृतलाल शास्त्री	८	६	१९५७	३३-३४
वीरसंघ और गणधर	श्रीरंजन सूरिदेव	८	६	१९५७	३५-३८
महावीर ! आत्म विश्वास	श्री हरजसराय जैन	८	६	१९५७	४१-४२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
इन्द्रभूति गौतम	श्री विजयमुनि शास्त्री	८	६	१९५७	४३-४८
महावीर महान थे	प्रो० विमलदास कोंदिया	८	६	१९५७	५०-५२
अस्पृश्यता का पाप	श्री रामकृष्ण जैन	८	६	१९५७	५४-५५
आगम झूठे हैं क्या ?	पं० दलसुख मालवणिया	८	६	१९५७	५६-५९
शिक्षा और उसका उद्देश्य	श्री एस० आर० शास्त्री	८	७-८	१९५७	४-७
स्थूलभद्र	डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	८	७-८	१९५७	९-११
हमें सामाजिक मूल्यों को बदलना है	श्री जमनालाल जैन	८	७-८	१९५७	१३-१७
बौद्धग्रन्थों में जैनधर्म	डॉ० गुलाबचन्द्र जैन	८	७-८	१९५७	१८-२८
वहाबी विद्रोह	श्री महेन्द्र राजा	८	७-८	१९५७	३१-३४
श्रमण संस्कृति की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि	श्री मनोहर मुनि जी	८	७-८	१९५७	३५-३८
अक्षय तृतीया	श्रीमती कलादेवी जैन	८	७-८	१९५७	४०-४३
एक दुनिया और एक धर्म	श्री एस० एस० गुप्त	८	९	१९५७	४-७
डाक्टर अलबर्ट श्वीटजर	श्री माईदयाल जैन	८	९	१९५७	८-११
संस्कृति की दुहाई	श्री रिषभदास रांका	८	९	१९५७	१५-१८
हमारा उत्थान कैसे !	महासती सरला देवी जी	८	९	१९५७	२१-२३
मेघकुमार का आध्यात्मिक जागरण	श्री विजयमुनि	८	९	१९५७	२५-२७
धर्म निरपेक्ष या ईश्वर निरपेक्ष	श्री प्रभाकर गुप्त	८	१०	१९५७	४-८
समाजोन्नति सोपान के ग्यारह डंडे (क्रमशः)	महात्मा भगवानदीन	८	१०	१९५७	१०-१५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
आगम मर्यादा और संतों के वर्षावास	मुनि श्री आईदान जी	८	१०	१९५७	२६-३३
जीवितधर्म	डॉ० राधाकृष्णन	८	१०	१९५७	३४
किसके साथ क्या न खायें	पं० सुन्दरलाल जैन वैद्य	८	१०	१९५७	३५-३६
कषाय विजय का महापर्व	पं० मुनि श्री कन्हैयालालजी म०	८	११	१९५७	३-५
आज आत्म चिन्तन का दिन है	श्री सतीश कुमार	८	११	१९५७	६-८
पर्युषण और हमारा कर्तव्य	श्री अगरचन्द नाहटा	८	११	१९५७	९-१४
क्षमापना का आदर्श,	पं० श्री विजय मुनि, शास्त्री	८	११	१९५७	१५-१६
विकास के नये पहाड़े सीखिए	मुनि श्री नेमिचन्द्र जी	८	११	१९५७	२०-२३
समाजोन्नति सोपान के ग्यारह डंडे	महात्मा भगवानदीन	८	११	१९५७	३५-४०
आचांराग सूत्र (क्रमश:)	पं० दलसुख मालवाणिया	८	१२	१९५७	४-७
आचार्य : एक मधुर शास्ता,	उपाध्याय अमरमुनि	८	१२	१९५७	१२-१६
जैनधर्म विषयक भ्रांतियां	पं० बेचरदास जी दोशी	८	१२	१९५७	१९-२७
आचार्य प्रवर : आत्माराम जी महाराज	पं० श्री ज्ञानमुनि जी म०	८	१२	१९५७	३२-३४
आचारांग सूत्र (क्रमश:)	पं० श्री दलसुख मालवणिया	९	१	१९५७	७-९
धर्म : कल्याण का मार्ग	पं० मुनि श्री रामकृष्ण जी म०	९	१	१९५७	१६-१९
भावनाओं का जीवन पर प्रभाव	प्रो० धर्मेन्द्र कुमार कांकरिया	९	१	१९५७	२५-२६
मैं लंदन में हूँ।	श्री महेन्द्र राजा	९	१	१९५७	३१-३८
मंगल प्रवचन	डॉ० राजेन्द्र प्रसाद	९	२	१९५७	३-९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
आचारांगसूत्र (क्रमशः)	पं० श्री दलसुख मालवणिया	९	२	१९५७	१०-१२
आमिष भोजन मनुष्य का आहार नहीं है	स्व० आचार्य श्री जवाहर	९	२	१९५७	२६-२७
इसे दया धर्म कहें या और कुछ ?	श्री परमानन्द कुँवर जी कापड़िया	९	२	१९५७	२८-३०
सब जीवों को समान समझें	श्री मोरारजी देसाई	९	२	१९५७	३१-३३
लिखाई का सस्तापन	श्री अगरचन्द नाहटा	९	३	१९५८	३-५
श्रीकृष्ण की जीवन झाँकी	श्री विजयमुनि शास्त्री	९	३	१९५८	६-९
गाय का दूध	श्री अत्रिदेव विद्यालंकार	९	३	१९५८	१६-१८
आचारांगसूत्र (क्रमशः)	पं० दलसुख मालवणिया	९	३	१९५८	२३-२५
जीवन संग्राम	श्री भागचन्द जैन	९	३	१९५८	२६-२७
निरामिष भोजन : एक समस्या	डॉ० सम्पूर्णानन्द	९	३	१९५८	२८-३३
अहिंसा की तीन धारायें	पं० मुनि श्रीमल्ल जी म० सा०	९	३	१९५८	३४-३७
घृणा, प्रेम और स्वास्थ्य	श्रीमती प्रेमलता गुप्ता	९	४	१९५८	२
आचारांगसूत्र (क्रमशः)	पं० दलसुख मालवणिया	९	४	१९५८	३-६
योग और भोग	विजयमुनि शास्त्री	९	४	१९५८	७-८
श्रमणसंस्कृति के मौलिक उपादान	श्री वसन्तकुमार चट्टोपाध्याय अनु० कस्तूरमल बांठिया	९	४	१९५८	९-२१
विपाकसूत्र की कथाएं	श्री श्रीरंजन सूरिदेव	९	४	१९५८	२९-३४
श्री विनयचन्द्र दुर्लभ जी	मुनि श्री आईदान जी	९	४	१९५८	३५-३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
आचारांगसूत्र (क्रमश:)	पं० दलसुख मालवणिया	९	५	१९५८	३-६
काव्यकल्पलतावृत्ति	श्री अगरचन्द नाहटा	९	५	१९५८	१२-१५
आचार्य श्री मोतीरामजी	पं० श्री ज्ञानमुनि जी	९	५	१९५८	२०-२२
मंगल प्रवचन	पं० सुखलाल जी	९	५	१९५८	२३-२८
जैन साहित्य का सिंहावलोकन	पं० दलसुख मालवणिया	९	५	१९५८	३०-४०
सर्वोदय	श्री रमेशचन्द्र गुप्त	९	६-७	१९५८	१२-१६
नि:शस्त्रीकरण	मुनि आईदान जी	९	६-७	१९५८	१७-२२
साधु सन्तों की सेवा में	श्री साधक	९	६-७	१९५८	२५-२७
आचांरागसूत्र	पं० दलसुख भाई मालवणिया	९	६-७	१९५८	३४-३७
आचरण या शोधपीठ	पं० मुनि श्री श्रीमल्ल जी म०	९	६-७	१९५८	४१-४६
अपरिग्रह की नई दिशा	श्री जमनालाल जैन,	९	६-७	१९५८	४७-५०
जीवन कला की शोध करें	श्री सिद्धराज ढड्ढा	९	६-७	१९५८	५२-५५
भ० महावीर के उपदेश युगानुकूल हैं; लेकिन?	श्री लक्ष्मीनारायण	९	६-७	१९५८	५८-६२
घर न लौटा	श्री विजय मुनि	९	६-७	१९५८	६३-६५
जमाली का मतभेद	श्री मनोहरमुनि	९	६-७	१९५८	६६-६८
समता के प्रतीक महावीर	श्री ऋषभ दास रांका	९	६-७	१९५८	६९-७२
प्रतिज्ञा	मुनि श्री सन्तबाल	९	६-७	१९५८	७३-७४
आचारांग सूत्र	पं० दलसुख मालवणिया	९	८	१९५८	१-१५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
अन्न की समस्या	सतीश कुमार	९	८	१९५८	१७-२०
महावीर से दूर	श्री माईदयाल जैन	९	८	१९५८	२३-२४
आज का युग महावीर का युग है	डॉ० ओमप्रकाश	९	८	१९५८	३०-३४
मोक्ष	श्री शादीलाल जैन	९	९	१९५८	१८
अहिंसक शक्तियों का ऐक्य	सतीश कुमार	९	९	१९५८	२०-२५
आचारांगसूत्र	श्री दलसुख मालवणिया	९	९	१९५८	२६-२९
हम संभलें	श्री सिद्धराज ढड्ढा	९	९	१९५८	३३-३६
स्त्री जागृति और समन्वय की साधना	आचार्य विनोबा	९	९	१९५८	३७-४०
सार्वजनिक जीवन की शव-परीक्षा	श्री भंवरमल सिंघी	९	१०	१९५८	९-१२
जैनसाहित्यसेवा	डॉ० इन्द्र	९	१०	१९५८	१३-१५
हम अनेकान्तवादी हैं या एकान्तवादी ?	श्री कस्तूरमल बांठिया	९	१०	१९५८	१७-२०
जवाहर और विनोबा : दो धाराएँ	पं० कैलाशचंन्द्र शास्त्री	९	१०	१९५८	२२-२४
आचाराङ्गसूत्र	श्री दलसुख मालवणिया	९	१०	१९५८	२५-२७
भ० महावीर के जीवन की एक झलक	पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री	९	१०	१९५८	३०-३२
एक निवेदन	मुनि समदर्शी 'आईदान'	९	११-१२	१९५८	१४-१६
समन्वय आश्रम	सतीश कुमार	९	११-१२	१९५८	१७-२०
अब साधु समाज संभले	श्री शादीलाल जैन	९	११-१२	१९५८	२१-२२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
महावीर के उपदेश	प्रो० महेन्द्र कुमार 'न्यायाचार्य'	९	११-१२	१९५८	२५-२७
गांधी सिद्धान्त	प्रो० रामचन्द्र महेन्द्र	९	११-१२	१९५८	२८-२९
यह नई परम्परा करवट ले रही है	आंचार्य सर्वे	९	११-१२	१९५८	३०-३२
दान की आत्मकथा	श्री भग्न हृदय	९	११-१२	१९५८	३३-३६
नई समाज व्यवस्था	कुमार प्रियदर्शी	९	११-१२	१९५८	४२-५६
मूल में भूल	श्री ताजमल बोथरा	९	११-१२	१९५८	५७-५९
जैन धर्म	सिद्धराज ढड्ढा	९	११-१२	१९५८	६०-६३
जैनसाधु की भिक्षा विधि	सतीश कुमार	९	११-१२	१९५८	६४-६५
चौथी आगम वाचना का सवाल	श्री कस्तूरमल बांठिया	९	११-१२	१९५८	६८-७०
श्रमणसंस्कृति का भावी विकास	पं० कृष्णचन्द्राचार्य	९	११-१२	१९५८	७३-७४
भगवान् महावीर सामाजिक और आर्थिक क्रांति के जनक	मुनि श्री नेमिचन्द्र जी	१०	१	१९५८	९-१२
महावीर स्तुति	श्री अगरचन्द नाहटा	१०	१	१९५८	१३-१५
विपाकसूत्र की कहानियाँ	श्री श्रीरंजन सूरिदेव	१०	१	१९५८	१८-२०
अपरिग्रह के तीन उपदेष्टा	डॉ० गुलाबचन्द्र चौधरी	१०	१	१९५८	२२-२५
छद्मस्थानां च मतिभ्रम:	श्री कस्तूरमल बांठिया	१०	१	१९५८	२६-३०
गणधरवाद	डॉ० मोहनलाल मेहता	१०	२	१९५८	३-६
चाचा नेहरू या नेहरू मामा	श्री उमानीराम शर्मा	१०	२	१९५८	८-१०
अन्न का संकट	श्री सतीश कुमार	१०	२	१९५८	१२-१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
विपाकसूत्र की कथायें (क्रमशः)	श्री श्रीरंजन सूरिदेव	१०	२	१९५८	१७-२०
भ० राम से दीपमाला का क्या संबंध	श्री ज्ञानमुनि जी	१०	२	१९५८	२१-२४
जैन परम्परा	डॉ० इन्द्रचंन्द्र शास्त्री	१०	३	१९५९	९-११
प्राकृत और उसका साहित्य	श्री अगरचन्द नाहटा	१०	३	१९५९	१३-१९
विपाकसूत्र की कथाएँ	श्री श्रीरंजन सूरिदेव	१०	३	१९५९	२०-२६
पक्ष से ऊपर उठकर सोचें	श्री भ्रमर कुमार	१०	३	१९५९	२७-३०
जैन गीतों की परम्परा	श्री प्यारेलाल श्रीमाल	१०	४	१९५९	९-११
भारतीय दर्शनों में आत्मा	श्री बशिष्ठ नारायण सिन्हा	१०	४	१९५९	१९-२६
बोलने की कला सीखिए	श्री मनोहर प्रभाकर	१०	४	१९५९	३०-३३
समाजवाद, सर्वोदय और सत्याग्रह	श्री जैनेन्द्र कुमार	१०	५	१९५९	९-१६
सर्वोदय : गांधी का मार्ग	दादा धर्माधिकारी	१०	५	१९५९	१७-१९
ग्रामदान से ग्राम-स्वराज्य	श्री नेमिशरण मित्तल	१०	५	१९५९	२०-२४
ये मूल्य बदलें	श्री रामकृष्ण शर्मा	१०	५	१९५९	२५-२८
सर्वोदय और राजनीति	श्री सतीश कुमार	१०	५	१९५९	२९-३१
सर्वोदय और हृदयपरिवर्तन	श्री बशिष्ठ नारायण सिन्हा	१०	५	१९५९	३२-३४
शासन और सर्वोदय	श्री शीतल प्रसाद तायल	१०	५	१९५९	३५-३७
जैनसमाज और सर्वोदय	सन्त विनोबा	१०	५	१९५९	३८-३९
सर्वोदय-प्रदर्शनी	अनिल सेनगुप्ता	१०	५	१९५९	४०-४२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
अहिंसा की कसौटी का क्षण	श्री लक्ष्मीनारायण 'भारतीय'	१०	६	१९५९	७-८
प्रकाश पुंज महावीर	श्री माईदयाल जैन	१०	६	१९५९	९-१०
वीतराग महावीर की दृष्टि	श्री ज्ञानमुनि	१०	६	१९५९	११-१३
गुप्तकाल में जैनधर्म	डॉ० अमरचन्द मित्तल	१०	६	१९५९	१६-२२
हर क्षेत्र में अनेकान्त का प्रयोग हो	मुनि श्री नेमिचन्द्र जी	१०	६	१९५९	२४-२८
श्रमण महावीर का युग सन्देश	प्रो० विमलदास जैन	१०	६	१९५९	२९-३२
जीवनचरित्र ग्रन्थ	श्री अगरचन्द नाहटा	१०	६	१९५९	३५-३८
समता और समन्वय की भावना	डॉ० मोहनलाल मेहता	१०	६	१९५९	३९-४४
पहले महावीर निर्वाण या बुद्ध निर्वाण	श्री कस्तूरमल बांठिया	१०	७-८	१९५९	१०-२१
काम बनाम बात	श्री माईदयाल जैन	१०	७-८	१९५९	२२-२३
दासी की गाथा	श्री कृष्णचन्द्राचार्य	१०	७-८	१९५९	२४-२६
शॉ का सन्देश, मुझे भूल जाओ ?	पं० दलसुख मालवणिया	१०	७-८	१९५९	३२-३३
अहिंसा की प्रतिष्ठा का मार्ग	श्री हस्तिमल जी साधक	१०	७-८	१९५९	४३-४५
भगवान् महावीर का समन्वयवाद	डॉ० बशिष्ठ नारायण सिन्हा	१०	७-८	१९५९	४६-५०
अहिंसक भारत हिंसा की ओर	श्रीमती राजलक्ष्मी	१०	७-८	१९५९	५१-५५
शांति की बुनियाद	श्री सत्य सुमन	१०	७-८	१९५९	५७-५८
अधूरा समाजवाद	श्री सतीश कुमार	१०	७-८	१९५९	५९-६१
अपरिग्रह ही क्यों ?	कुमारी पुष्पा	१०	९	१९५९	१०-११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
ध्यान योग की जैन परम्परा	श्री सूरजचन्द्र 'सत्यप्रेमी'	१०	९	१९५९	१७-१८
समाज का कोढ़-जिम्मनवार	श्री प्यारेलाल श्रीमाल	१०	९	१९५९	१९-२२
क्या अणुव्रत आन्दोलन असाम्प्रदायिक है ?	मुनि समदर्शी	१०	९	१९५९	२३-२४
जीवन के दो पक्ष	कुमार प्रियदर्शी	१०	९	१९५९	२५-२६
राजस्थानी लोक कथाओं सम्बन्धी - साहित्य निर्माण में जैनों का योगदान	श्री अगरचन्द नाहटा	१०	९	१९५९	२९-३१
एक दु:खद अवसान	श्री रतन पहाड़ी	१०	९	१९५९	३८-३९
आध्यात्मिक साधना और उसकी परम्परायें	कुमारी इन्दुकला	१०	१०	१९५९	९-१६
वह बनजारा	महात्मा भगवानदीन	१०	१०	१९५९	१८-२१
जीवन की बुनियाद -विनय	श्री ज्ञानमुनि जी	१०	१०	१९५९	२४-२५
वेष का त्यागी	श्री माईदयाल	१०	१०	१९५९	२६-२७
बिना पैसे की यात्रा	सतीश कुमार	१०	१०	१९५९	२८-३१
नया विहान-नया समाज	श्री बद्रीप्रसाद स्वामी	१०	१०	१९५९	३२-३५
पर्युषण की सही आराधना	श्री हीराचन्द्र सूरि विद्यालंकार	१०	११	१९५९	६-८
पर्युषण एक चिन्तन	श्री लक्ष्मीनारायण भारतीय	१०	११	१९५९	९-१०
सामायिक और तपस्या का रहस्य	उपाध्याय अमरमुनि जी	१०	११	१९५९	११-१२
पर्वराज पर्युषण	पं० अमृतलाल शास्त्री	१०	११	१९५९	१५-१६
पर्युषण पर्व के आठ सन्देश	मुनि श्री नेमिचन्द्र जी	१०	११	१९५९	१७-२१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
एकता की ओर एक कदम	श्री रिषभदास रांका	१०	११	१९५९	२२-२४
पर्युषण पर्व का पावन सन्देश	श्री अगरचन्द नाहटा	१०	११	१९५९	२५-२६
क्षमा का आदर्श	पं० रत्न श्री ज्ञानमुनि जी	१०	११	१९५९	२९-३१
क्षमा पहला धर्म है	डॉ० कोमलचन्द जैन	१०	११	१९५९	३२-३४
जैन एकता	श्री भंवरमल सिंघी	१०	११	१९५९	३५-३७
क्षमा का पर्व	मुनि श्री समदर्शी जी	१०	११	१९५९	३८-३९
जैन त्यागी वर्ग के सामने एक विकट समस्या	पं० बेचरदास जी दोशी	१०	११	१९५९	४०-४५
अपरिग्रहवाद का यह उपहास क्यों ?	पं० श्री मृगेन्द्रमुनि 'वैनतेय'	१०	१२	१९५९	८-१०
इतिहास बोलता है	श्री सत्यदेव विद्यालंकार	१०	१२	१९५९	११-१६
पर्व की आराधना	उपाध्याय अमरमुनि	१०	१२	१९५९	१७-१९
आत्मशुद्धि और साधना का पर्व	श्री माईदयाल जैन	१०	१२	१९५९	२०-२१
जीवन में अनेकान्त	श्री मनोहर मुनि जी	१०	१२	१९५९	२६-२८
दिगम्बर आर्या जिनमती की मूर्ति	श्री अगरचन्द नाहटा	१०	१२	१९५९	३१-३२
राम की क्षमायाचना	पं० मुनि श्री कन्हैयालाल जी 'कमल'	१०	१२	१९५९	३३-३४
सरस्वती का मंदिर	डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल	११	१	१९५९	५-९
युद्ध और उसके साधनों को खतम करो	निकिता ख्रुश्चेव	११	१	१९५९	१३-१८
युवक के सामने एक प्रश्न चिन्ह	श्री अशोक ढड्ढा	११	१	१९५९	२१-२२
साहित्य भवन के निर्माण का शुभारंभ	सतीश कुमार	११	१	१९५९	२४-२७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
भगवान् महावीर का निर्वाणाब्द २५०० आ रहा है	श्री कस्तूरमल बांठिया	११	१	१९५९	२८-३२
जैन साहित्य और अनुसंधान की दिशा	श्री गोकुलचन्द	११	१	१९५९	३३-३५
जो विदा हो रहे हैं !	श्री जमनालाल जैन	११	२	१९५९	३-६
मानवतावादी समाज का आधार-अहिंसा	मुनि श्रीसुशील कुमार जी	११	२	१९५९	७-११
संन्यास की मर्यादा	आचार्य विनोबा	११	२	१९५९	१३-१४
वे आपको कितना चाहते हैं ?	श्रीयुत प्रवासी	११	२	१९५९	१५-१७
बुनियादी समस्या और उसका समाधान	श्री गंगाधर जालान	११	२	१९५९	१८-२३
तेलगू भाषा के अवधानी विद्वानों की परम्परा	श्री अगरचन्द नाहटा	११	२	१९५९	२४-२७
ऋषिभाषित का अन्तस्तल	श्री मनोहर मुनि	११	३	१९६०	७-८
संस्कृत कवियों के उपनाम	श्री जगन्नाथ पाठक	११	३	१९६०	१३-१७
आचार्य चण्डरुद्र	मुनिश्री लक्ष्मीचन्द्र जी	११	३	१९६०	१८-१९
जीवन सौरभ	चित्रभानु	११	३	१९६०	२०-२२
जीवन धर्म	श्री बशिष्ठ नारायण सिन्हा	११	३	१९६०	२३-२६
स्वच्छता: जीवन का अंग	किशोरीलाल मशरूवाला	११	३	१९६०	२७-२८
क्या जातिस्मरण भी नहीं रहा	श्री कस्तूरमल बांठिया	११	३	१९६०	२९-३४
बढ़ते कदम	श्री राजकमल चौधरी	११	४	१९६०	७-८
अहिंसा का क्रमिक विकास	पं० सुखलाल जी	११	४	१९६०	९-१५
सब धर्मों की मंजिल एक है	उपाध्याय श्री अमरमुनि,	११	४	१९६०	१६-१७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
सर्वधर्म समानत्व की कुंजी	श्री अमरमुनि जी	११	४	१९६०	१८
धर्म का बहिष्कार या परिष्कार	श्री अज्ञातशत्रु	११	४	१९६०	१९-२२
संघटन या विघटन	मुनि श्री नथमल जी	११	४	१९६०	२९-३१
अहिंसा-शोधपीठ	काका कालेलकर	११	४	१९६०	३४-३८
पंचसूत्री कार्यक्रम	श्री मनोहरमुनि	११	५	१९६०	७-८
जीवन का सही दृष्टिकोण	आचार्य दादा धर्माधिकारी	११	५	१९६०	९-११
भारतीय विचार प्रवाह की दो धारायें	डॉ० मोहनलाल मेहता	११	५	१९६०	१३-१९
जैन विद्वान् साहित्यिक परम्परा को अक्षुण रखें	श्री पूज्य जिनविजयसेनसूरि	११	५	१९६०	२०-२२
तेरापंथ सम्प्रदाय के हस्तलिखित ग्रन्थ संग्रहालय	श्री अगरचन्द नाहटा	११	५	१९६०	२३-२५
गुरुत्वाकर्षण से परमाणुशक्ति तक	श्री दुलीचन्द्र जैन	११	५	१९६०	३०-३४
भगवान् महावीर की देन	पं० अमृतलाल शास्त्री	११	६	१९६०	१२
अहिंसा का अवतार	श्री सुरेशमुनि	११	६	१९६०	१३
क्या महावीर सामाजिक पुरुष थे	डॉ० मोहनलाल मेहता	११	६	१९६०	१५-१६
जैनधर्म	श्री दिनकर	११	६	१९६०	१७-२३
भगवान् या सामाजिक क्रांतिकारी	श्री लक्ष्मीनारायण 'भारतीय'	११	६	१९६०	२५-२७
अहिंसा का व्यावहारिक रूप	पं० मुनि श्रीमल्ल जी	११	६	१९६०	२८-३१
जैन साहित्य की प्रतिष्ठा	श्री गोकुलचन्द्र जैन	११	६	१९६०	३२-३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
अहिंसा, संयम और तप	श्री जमनालाल जैन	११	६	१९६०	३५-३९
अपरिग्रह और आज का जैन समाज	मुनि श्री समदर्शी	११	६	१९६०	४१-४३
इस चर्चा को खतम कीजिए	श्री कस्तूरमल बांठिया	११	६	१९६०	४४-४७
राष्ट्र निर्माण और जैन	श्री माईदयाल जैन	११	६	१९६०	४९-५०
निशीथचूर्णि पर एक दृष्टि	श्री विजय मुनि	११	६	१९६०	५४-५८
ज्ञानार्णव (ग्रन्थ परिचय)	श्री अगरचन्द नाहटा	११	६	१९६०	५९-६२
महावीर का कार्य	श्री शंकरराव देव	११	७-८	१९६०	९-११
मानवता के दो अखंड प्रहरी	श्री भरतसिंह उपाध्याय	११	७-८	१९६०	१४-२०
मानव संस्कृति और महावीर	डॉ० देवेन्द्र कुमार जैन	११	७-८	१९६०	२१-२३
सम्यक् दृष्टिकोण सत्य पारखी दृष्टि	मुनिश्री श्रीमल्ल जी	११	७-८	१९६०	२५-२९
पुरुष और नारी	श्री सुबोध मुनि,	११	७-८	१९६०	३०-३१
विकास कीं तीन सीढ़ियाँ	श्री विमलदास जैन	११	७-८	१९६०	३२-३७
मनुष्य जन्म या मानवता	मुनिश्री कन्हैयालाल 'कमल'	११	७-८	१९६०	४१-४४
महाकवि हस्तिमल्ल	श्री भागचन्द जैन	११	७-८	१९६०	४७-४९
मानव साध्य है या साधन	प्रो० नेमिचरण मित्तल	११	९	१९६०	९-११
युद्ध के लिए जिम्मेवार कौन ?	आचार्य जे० सी० कुमारप्पा	११	९	१९६०	१३-१५
क्या थे ? क्या हैं ? क्या होना है ?	श्री कस्तूरमल बांठिया	११	९	१९६०	१७-२१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
प्रधानाचार्य या आचार्य	श्री सुरेशमुनि शास्त्री	११	९	१९६०	२३-२५
श्रमण संघ के सामने एक सवाल !	मुनिश्री कन्हैयालाल जी 'कमल'	११	९	१९६०	२६-२९
जैनाचार्य श्री काशीराम जी	श्री सुमन मुनि	११	९	१९६०	३०-३३
धार्मिक जीवन की प्रेरणा	उपाध्याय अमर मुनि	११	१०	१९६०	९-१२
धर्म और पुरुषार्थ	पं० सुखलाल जी	११	१०	१९६०	१४-१७
आहार शुद्धि के लिए क्या करें ?	मुनिश्री निर्मल कुमार	११	१०	१९६०	१९-२०
निगण्ठनातपुत्त	श्री भरतसिंह उपाध्याय	११	१०	१९६०	२१-२३
लोंकागच्छीय विद्वानों के तीन संस्कृत ग्रन्थ	श्री अगरचन्द नाहटा	११	१०	१९६०	२४-२८
दुविधा	श्री मधुप कुमार	११	१०	१९६०	३०-३१
कर्त्तव्य बोध	डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन	११	११	१९६०	७-८
अध्यात्म साधना कैसी हो	आचार्य विनोबा	११	११	१९६०	१०-१२
आध्यात्मिकखोज	पं० बेचरदास दोशी	११	११	१९६०	१३-१५
पाप क्या है ?	मुनिश्री श्रीमल्ल जी	११	११	१९६०	१९-२१
असमता मिटाने का उपाय	श्री उमेशमुनि	११	११	१९६०	२२-२३
स्वार्थी तो हम भी हैं ?	रामप्रवेश शास्त्री	११	११	१९६०	२४-२७
श्री किशनदास कृत 'उपदेश बावनी'	अम्बाशंकर नागर	११	११	१९६०	२८-३२
उपजीवी समाज	श्री भ्रमर जी सोनी	११	११	१९६०	३३-३५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
दिल मा दिवड़ो थाय	श्री अगरचन्द नाहटा	११	१२	१९६०	८-९
पैसों का मूल्य	श्री माता जी	११	१२	१९६०	१०-११
भ० महावीर के निर्वाण दिन का क्या - संदेश हो सकता है?	श्री लक्ष्मी नारायण 'भारतीय'	११	१२	१९६०	१३-१७
जीवन दृष्टि	पं० बेचरदास जी दोशी	११	१२	१९६०	१८-२०
भारतीय संस्कृति को भ० महावीर की देन	श्री कन्हैयालाल भुरड़िया	११	१२	१९६०	२७-२९
भ० महावीर का निर्वाणोत्सव !	मुनिश्री समदर्शी जी	११	१२	१९६०	३१-३३
हम दूसरों को दूसरों के ही दृष्टिकोण से समझें	श्री कस्तूरमल बांठिया	१२	१	१९६०	७-१२
जीव और जगत	पं० बेचरदास दोशी	१२	१	१९६०	१३-१५
सभ्यता और संघर्ष	भाई श्री बंसीधर जी	१२	१	१९६०	१७-२०
अपभ्रंश साहित्य : उपलब्धियाँ और प्रभाव	डॉ० देवेन्द्र कुमार	१२	१	१९६०	२१-२५
भीगी अखियाँ	श्री नवरत्न कपूर	१२	१	१९६०	२७-३०
आचार्य सोमदेवसूरि	श्री गोकुलचन्द्र जैन	१२	१	१९६०	३१-३३
केशी ने पूछा	श्री गोकुलचन्द्र जैन	१२	२	१९६०	११-१३
विश्वविज्ञान	पं० बेचरदास जी दोशी	१२	२	१९६०	१६-१९
पार्श्वनाथ के दो पट्टधर	श्री अमिताभ	१२	२	१९६०	२०-२१
नए अपवाद	मुनिश्री कन्हैयालाल जी 'कमल'	१२	२	१९६०	२२-२८
आदर्श गृहस्थी	श्रीमती कृष्णा मेहरोत्रा	१२	२	१९६०	२९-३१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
वैराग्यशतक	श्री अगरचन्द नाहटा	१२	२	१९६०	३२-३३
सन् १९६१	डॉ० नवरत्न कपूर	१२	३	१९६१	६-७
श्रमणों का युगधर्म	मुनिश्री नेमिचन्द्र जी	१२	३	१९६१	८-९
वनस्पति विज्ञान	श्री पं० बेचरदास दोशी	१२	३	१९६१	१०-११
वनस्पति की गतिशीलता	श्री कोमलचन्द्र शास्त्री	१२	३	१९६१	१२-१५
क्या लोकप्रियता योग्यता की निशानी है	श्री कोमलचन्द्र शास्त्री	१२	३	१९६१	१६-१८
सत्य और बापू	श्री रामप्रवेश शास्त्री	१२	३	१९६१	१९-२१
आचार्य हेमचन्द्र और उसकी साहित्यिक मान्यताएँ	डॉ० देवेन्द्र कुमार	१२	३	१९६१	२२-२७
सफलता के तीन तत्त्व	डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	१२	३	१९६१	२८-३०
जैन इतिहास लेखकों का आवाहन	श्री कस्तूरमल बांठिया	१२	३	१९६१	३१-३३
वचन-बोध	श्री भागचन्द्र जैन	१२	३	१९६१	३४-३६
वैदिक परम्परा	पं० बेचरदास दोशी	१२	४	१९६१	९-१४
शब्दों की शवपूजा न हो	मुनि श्री नथमल जी	१२	४	१९६१	१५-१९
ठोकर	श्री रतन पहाड़ी	१२	४	१९६१	२०-२२
अपरिग्रह अथवा अकर्मण्यता	श्री गोपीचन्द धारीवाल	१२	४	१९६१	२३-२५
जनजागरण और जैन महिलायें	श्रीरंजन सूरिदेव	१२	४	१९६१	२७-३१
महिलाओं की मर्यादा	श्रीमती शकुन्तला मोहन	१२	४	१९६१	३२-३३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
होली का व्यापक आधार	श्रीअमर मुनि	१२	५	१९६१	७-८
शास्त्र और सामाजिक क्रांति	पं० सुखलाल जी	१२	५	१९६१	९-१२
श्राप क्या ? वरदान क्या ?	प्रो० नेमिशरण मित्तल	१२	५	१९६१	१३-१४
एक अज्ञात जैनमुनि का संस्कृति दूतकाव्य-"हंसदूत"	श्री अगरचन्द नाहटा	१२	५	१९६१	१७-२१
पंजाबी में जैन साहित्य की आवश्यकता	श्री माईदयाल जैन	१२	५	१९६१	२२-२३
आचांराग का परिचय	मुनिश्री कन्हैयालाल जी 'कमल'	१२	५	१९६१	२७-३५
जीवन विकास की प्रेरणा : सहयोग	पं० श्री प्रकाश मुनि जी	१२	५	१९६१	३६-३८
तत्वोपदेष्टा महावीर	सुश्री कमला जैन	१२	६-७	१९६१	७-१०
परमार्थनिष्ठ महावीर	श्री हरजसराय जैन	१२	६-७	१९६१	११
तीर्थंकर महावीर	श्री कस्तूरमल बांठिया	१२	६-७	१९६१	१२-१४
प्रेमयोगी महावीर	मुनि श्री श्रीमल्ल जी	१२	६-७	१९६१	१५-१६
प्रणयी महावीर	श्री सतीश कुमार	१२	६-७	१९६१	१७-२०
प्रेरणादायी महावीर	श्री लक्ष्मीनारायण भारतीय	१२	६-७	१९६१	२१-२५
ध्यान योगी महावीर	मुनिश्री नथमल जी	१२	६-७	१९६१	२८-३०
युगदृष्टा महावीर	श्री साधक	१२	६-७	१९६१	३१-३७
अन्तरदृष्टा महावीर	श्री मनोहर मुनि जी	१२	६-७	१९६१	३८-४०
क्रांतिकारी महावीर	पं० बेचरदास दोशी	१२	६-७	१९६१	४१-४४
मातृ-वत्सल महावीर	श्री जमनालाल जैन	१२	६-७	१९६१	४५-४७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
महामानव महावीर	श्री भ्रमर कुमार	१२	६-७	१९६१	५०-५१
शीलपरायण महावीर	मुनिश्री कन्हैयालाल जी 'कमल'	१२	६-७	१९६१	५२-५३
ब्रह्मनिष्ठ महावीर	वैद्य अमरचन्द्र जैन	१२	६-७	१९६१	५४-५५
तपोधन महावीर	श्री वृजनन्दन मिश्रा	१२	६-७	१९६१	५६-५७
शांतिदूत महावीर	कुमारी ललिता जैन	१२	६-७	१९६१	५८
महावीर के समकालीन आचार्य	श्री गोकुलचन्द जैन	१२	६-७	१९६१	६५-६९
साधु शिक्षक बनें	श्री सुबोध मुनि	१२	६-७	१९६१	७०-७२
श्रीमद् भागवत में ऋषभदेव	श्री रमाकान्त झा	१२	६-७	१९६१	७३-७५
जैन साधुओं का संस्थारूपी परिग्रह	श्री माई लाल जैन	१२	८	१९६१	९-१०
विचार शक्ति	श्री माता जी	१२	८	१९६१	१२-१४
बसुमती महाकाव्य	श्री अगरचन्द नाहटा	१२	८	१९६१	१७-२०
बदलते सामाजिक मूल्य और हमारा चिन्तन	श्री गोकुलचन्द जैन	१२	८	१९६१	२१-२२
जैन दर्शन का शब्द विज्ञान	श्री मनोहर मुनि जी	१२	८	१९६१	२८-३१
वीतराग महावीर	श्री कृष्णचन्द्राचार्य	१२	९	१९६१	७-८
भारतीय दर्शनों की आत्मा	उपाध्याय श्री अमरमुनि	१२	९	१९६१	९-११
सुख की मूर्ति : दुख की परछाई	श्री मानकचन्द	१२	९	१९६१	१३-१४
भारतीय दर्शनों की समन्वय परम्परा	डॉ० देवराज	१२	९	१९६१	२१-२५
उपकारी पशुओं की यह दुर्दशा	पं० अमृतलाल शास्त्री	१२	९	१९६१	२६-२९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
महावीर के जीवन पर नया प्रकाश	श्री कस्तूरमल बांठिया	१२	९	१९६१	३१-३३
साधुसंस्था और लोकशिक्षण	मुनिश्री नेमीचन्द जी	१२	९	१९६१	३५-४०
'नौ' का अंक	डॉ० नवरत्न कपूर	१२	१०	१९६१	९-१६
महावीर का अन्तस्तल	श्री सूरजचन्द सत्यप्रेमी	१२	१०	१९६१	१७-१९
अभिमान बुरा है	श्री ज्ञानमुनि जी	१२	१०	१९६१	२२-२३
लोकशिक्षण के गुण व योग्यताएँ	मुनिश्री नेमिचन्द्र जी	१२	१०	१९६१	२४-२५
एक अज्ञात ग्रन्थ की उपलब्धि	श्री अगरचन्द नाहटा	१२	१०	१९६१	२९-३०
सात शत्रु, सात मित्र	श्री सच्चिदानन्द	१२	१०	१९६१	३१-३२
महातपस्वी श्री निहालचन्द्र जी	श्री मुनिलाल जैन	१२	१०	१९६१	३३-३८
पर्युषण : परिचय और व्याख्या	सुश्री शरबती जैन	१२	११	१९६१	९-११
पर्युषण पर्व का मतलब	भाई बंशीधर	१२	११	१९६१	१३-१४
पर्युषण : आंत्म चिन्तन से सामाजिक चिंतन की ओर	डॉ० देवेन्द्र कुमार जैन	१२	११	१९६१	१५-१७
पर्युषण और सामाजिक शुद्धि	मुनि श्री नेमिचन्द जी	१२	११	१९६१	१९-२२
पर्युषण और बौद्ध धर्म	श्री उदयचन्द जैन	१२	११	१९६१	२७-३०
पर्युषण और पश्चाताप	मुनि श्री कन्हैयालाल	१२	११	१९६१	३०
संवत्सरी	श्री समीर मुनि 'सुधाकर'	१२	११	१९६१	३१-३५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन आगम और विज्ञान	श्री कस्तूरमल बांठिया	१२	११	१९६१	३६-४०
सेठ भैरोंदान जी सेठिया	बीकानेर जैन संघ	१२	११	१९६१	४३-४५
गांधी जी और अहिंसा	श्री रामप्रवेश शास्त्री	१२	१२	१९६१	९-१३
पर्युषण: दस लक्षण	श्री गुलाबचन्द जैन	१२	१२	१९६१	१४-१५
सन्त श्री गणेशप्रसाद वर्णी	श्री कैलाश चन्द्र शास्त्री	१२	१२	१९६१	१६-१८
विज्ञान राजनीति के चंगुल में	श्री मनोहर मुनि शास्त्री	१२	१२	१९६१	२१-२२
वर्णी जी के स्मारक का प्रश्न ?	श्री गोकुल चन्द	१२	१२	१९६१	२३-२४
अस्वाद व्रत भी तप है	श्री अगरचन्द नाहटा	१२	१२	१९६१	२५-३१
संस्कृति क्या है ?	डॉ० नामवर सिंह	१२	१२	१९६१	३४-३९
सोमदेवसूरि और जैनाभिमत वर्ण-व्यवस्था	श्री गोकुलचन्द जैन	१३	१	१९६१	९-१४
विचारणीय प्रश्न	श्री समीर मुनि 'सुधाकर'	१३	१	१९६१	१९-२१
जीवन दृष्टि	श्री विश्व बन्धु	१३	१	१९६१	२५-२६
नई पीढ़ी और धर्म	श्री सागरमल जैन 'साथी'	१३	१	१९६१	३१-३४
एकदिव्य विभूति मालवीयजी	श्री वासुदेवशरण अग्रवाल	१३	२	१९६१	९-१०
श्रमण : एक व्याख्या	श्री महेन्द्र कुमार जैन	१३	२	१९६१	११-१३
समाज का धर्म	प्रो० देवेन्द्र कुमार जैन	१३	२	१९६१	२१-२३
महावीर की साधना और सिद्धान्त	कु० विजया जैन	१३	२	१९६१	२४-२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
मेरे संस्मरण : मालवीय जी	श्री त्रिलोचन पन्त	१३	२	१९६१	३३-३५
विश्व मानव महामना मालवीय	डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल	१३	३	१९६२	९-१३
महामना की महानता	प्रो० उदयचन्द्र जैन	१३	३	१९६२	२६-२८
अद्भुत भिखारी एवं महान दाता	प्रो० राजदेव त्रिपाठी	१३	३	१९६२	२९-३१
स्व० डॉ० भगवानदास	श्री गुलाबचन्द जैन	१३	३	१९६२	३८-४०
जैनसंस्कृति और विवाह	श्री गोकुलचन्द जैन	१३	४	१९६२	८-२१
जीवन की सच्ची क्रांति	मुनिश्री पद्मविजय जी	१३	४	१९६२	२५-२७
ज्योतिर्मय जीवन	श्री विजयमुनि शास्त्री	१३	५	१९६२	१७-२१
समन्वयकार : आचार्य श्री	मुनिश्री सन्तबाल	१३	५	१९६२	२३-२५
श्रुत और सेवा के प्रतीक: आचार्य श्री	महासती श्री ललित कुमारी जी	१३	५	१९६२	२७-२९
प्रथम और अन्तिम दर्शन	मुनिश्री शान्तिप्रिय शास्त्री	१३	५	१९६२	३०-३२
एक मधुर स्मृति	श्री हरजसराय जैन	१३	५	१९६२	३३-३५
आचार्य श्री का पुण्य जीवन	कमल जैन 'दीदी'	१३	५	१९६२	३६-३७
आचार्य श्री आत्माराम जी की आगमसेवा	श्री अगरचन्द नाहटा	१३	५	१९६२	४०
शास्त्रोद्धार की आवश्यकता	आचार्य आत्माराम जी	१३	५	१९६२	४१
श्रद्धांजली अर्पित करने वालों से	श्री सुरेशमुनि शास्त्री	१३	५	१९६२	४३-४५
अपरिग्रही महावीर	श्री जमनालाल जैन	१३	६	१९६२	४-७
बुद्ध और महावीर का परिनिर्वाण	श्री कस्तूरमल बांठिया	१३	६	१९६२	८-१६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
महावीर जयन्ती का अर्थ	भाई श्री बंशीधर जी	१३	६	१९६२	१९-२१
भगवान् महावीर जन्मकालीन परिस्थितियां	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	१३	६	१९६२	२२-२६
महावीर का दर्शन कराइए	डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	१३	६	१९६२	२९-३२
जैन संस्कृति और महावीर	श्री विजयमुनि शास्त्री	१३	६	१९६२	३३-४२
नई राहें	श्री माईदयाल जैन	१३	६	१९६२	४३-४५
भगवान् महावीर	श्री महेन्द्रराजा जैन	१३	६	१९६२	४७-५३
जैनधर्म में 'एकान्त नियतिवाद और सम्यक् नियति' का भेद	पं० फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री	१३	७-८	१९६२	६-८
मातृभाषा और उसका गौरव	डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल	१३	७-८	१९६२	९-१३
जैन शासन तेजस्वी कैसे बने	मुनिश्री नथमल जी	१३	७-८	१९६२	२१-२३
बुद्ध और महावीर का निर्वाण	श्री कस्तूरमल बांठिया	१३	७-८	१९६२	२५-३६
काव्य में लोकमंगल	श्री गंगासागर राय	१३	७-८	१९६२	४२-४४
महावीर का मंगल उपदेश	डॉ० हरिशंकर वर्मा	१३	७-८	१९६२	४९-५०
अनेकांत : अहिंसा का व्यापक रूप	डॉ० जगदीशचन्द्र जैन	१३	७-८	१९६२	५१-५२
श्रमण संघ के दस वर्ष	डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	१३	९	१९६२	१७-१९
आज का फैशन-धूम्रपान	श्री सरदारमल जैन	१३	९	१९६२	२२-२५
आगमों का आनुयोगिक वर्गीकरण	मुनिश्री कन्हैयालाल जी 'कमल'	१३	१०	१९६२	९-१२
श्रीमद् राजचन्द्र का परिचय	श्री रतिलाल दीपचन्द देसाई	१३	१०	१९६२	१३-१८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
प्राकृत भाषा के चार कर्मग्रन्थ	श्री अगरचन्द नाहटा	१३	१०	१९६२	२४-२५
क्षमापना दिन	श्री लक्ष्मीनारायण भारतीय	१३	११	१९६२	१-४
श्रमण संस्कृति में क्षमा	श्री कानजी भाई पटेल	१३	११	१९६२	९-१३
वीतराग की उपासना	श्री ज्ञानमुनि जी	१३	११	१९६२	२६-३०
धर्ममय समाज रचना की आधारशिला क्षमापना	मुनिश्री नेमिचन्द जी	१३	११	१९६२	३२-३६
गांधीजी : व्यक्तित्व और नेतृत्व	श्री श्रीप्रकाश	१३	१२	१९६२	१-३
जैन चेयर की आवश्यकता	श्री शरद कुमार 'साधक'	१३	१२	१९६२	४-५
अरविन्द का अनेकान्त दर्शन	श्री श्रीप्रकाश दुबे	१३	१२	१९६२	६-८
सुधार का मूलमंत्र	श्री जुगलकिशोर मुख्तार	१३	१२	१९६२	९-१६
जीवन तो संयम ही है	प्रो० दरबारी लाल कोठिया	१३	१२	१९६२	२१-२४
काव्य का प्रयोजन : एक विमर्श	श्री गंगासागर राय	१३	१२	१९६२	२५-२७
व्रत का मूल्य	डॉ० नेमिचन्द्र शास्त्री	१३	१२	१९६२	२९-३४
संथारा आत्महत्या नहीं है	श्री दलसुख मालवणिया	१३	१२	१९६२	३५-३९
हिंसा का बोलबाला	श्री ताराचन्द्र मेहता	१४	१	१९६२	६-७
भगवान् महावीर और दीवाली	डॉ० ज्योति प्रसाद जैन	१४	१	१९६२	८
भगवान् महावीर का निर्वाण	श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री	१४	१	१९६२	९-१३
उपाध्याय कवि श्री अमर मुनि	श्री विजय मुनि जी	१४	१	१९६२	१५-२३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
शीत ऋतु का आहार-विहार	वैद्यराज सुंदरलाल जैन	१४	१	१९६२	२४-२६
शान्तिपर्व का आचारदर्शन	श्री बशिष्ठ नारायण सिन्हा	१४	१	१९६२	२७-३७
अनेकान्त : अहिंसा	डॉ० जगदीशचन्द्र शास्त्री	१४	२	१९६२	७
दर्शन और धर्म	पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री	१४	२	१९६२	९-१३
भेद में अभेद का सर्जक स्याद्वाद	श्री छगनलाल शास्त्री	१४	२	१९६२	२६-२८
ख्याल का भविष्य	श्री प्यारेलाल श्रीमाल	१४	२	१९६२	२९-३३
धर्म और विद्या विकास का मार्ग	पं० सुखलाल जी	१४	३	१९६३	९-१७
धर्म क्षेत्रे हिम क्षेत्रे	श्री कानजी भाई पटेल	१४	३	१९६३	१९-२८
रोगों का इलाज	श्री दुर्गाशंकर द्विवेदी	१४	३	१९६३	२९-३२
जैनों ने भी युग का आह्वान सुना	श्री कस्तूरमल बांठिया	१४	३	१९६३	३३-३७
जैन परम्परा का आदिकाल (क्रमशः)	डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	१४	४	१९६३	९-१७
जैन और बौद्ध आगमों में विवाह विधि	श्री कोमलचन्द्र जैन	१४	४	१९६३	१८-२३
महात्मा भगवानदीन जी	श्री जमनालाल जैन	१४	४	१९६३	२३-२५
संसार की हिंसामय परिस्थिति और हम	श्री सतीश कुमार	१४	४	१९६३	२६-२९
स्मृति पुरुष : श्री पूज्य गणेश लाल जी महाराज	मुनिश्री श्रीमल्लजी,	१४	४	१९६३	३०-३२
श्री जिनवल्लभसूरि की प्राकृत साहित्य सेवा	श्री अगरचन्द नाहटा	१४	४	१९६३	३२-३५
समाजसेवी स्व० नन्हेमल जी जैन	श्री माईदयाल जैन	१४	४	१९६३	३५-३६
जैन परम्परा का आदिकाल (क्रमशः)	डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	१४	५	१९६३	९-१७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
होली	महात्मा भगवानदीन जी	१४	५	१९६३	१८-१९
सेठ रतनलाल जी	मुनि समदर्शी	१४	५	१९६३	२०-२५
हिन्दी जैन कवियों का आत्म-स्वातंत्र्य	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	१४	५	१९६३	२७-३०
साधना की अमर ज्योति	मुनि समदर्शी	१४	५	१९६३	४१-४७
भगवान् महावीर का अध्यात्म दर्शन	उपाध्याय श्री अमरमुनि	१४	६-७	१९६३	१-५
जैनधर्म : भ० महावीर की कसौटी पर	श्री लक्ष्मीनारायण 'भारतीय'	१४	६-७	१९६३	६-८
भगवान् महावीर की महामानवता	डॉ० मंगलदेव शास्त्री	१४	६-७	१९६३	९-११
जैन परम्परा का आदिकाल	डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	१४	६-७	१९६३	१२-१८
सबके कल्याण में अपना कल्याण	श्री अगरचन्द नाहटा	१४	६-७	१९६३	२१-२८
भगवान् महावीर और हरिकेशी	श्री समीरमुनि 'सुधाकर'	१४	६-७	१९६३	२९-३१
अहिंसा निउणा दिट्ठा	श्री कस्तूरमल बांठिया	१४	६-९	१९६३	३४-४३
श्रमण भ० महावीर का दीक्षा-दर्शन	पं० मुनि श्रीमल्ल जी	१४	६-७	१९६३	४४-४८
शांति के अग्रदूत-भ० महावीर	सुश्री शशिप्रभा जैन	१४	६-७	१९६३	४९-५२
धर्म का सर्वोदय स्वरूप	पं० चैनसुख दास जैन	१४	८	१९६३	१-२
विश्व अहिंसा संघ और प्रवृत्तियाँ	डॉ० बूलचन्द	१४	८	१९६३	६-८
कर्म और अनिश्वरवाद	श्री श्रीप्रकाश दुबे	१४	८	१९६३	९-१२
भगवान महावीर और उनका उपदेश	डॉ० गुलाबचन्द्र चौधरी	१४	८	१९६३	१३-१७
भगवान् महावीर और धर्म क्रांति	मुनि श्री नेमिचन्द्र जी	१४	८	१९६३	२१-२५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
"ऊँ"	महात्मा भगवानदीन	१४	८	१९६३	२६-२९
मैं महावीर को याद क्यों करता हूँ	डॉ० देवेन्द्र कुमार	१४	८	१९६३	३१-३३
भगवान् महावीर के समसामयिक आचार्य	श्री भागचन्द जैन	१४	९	१९६३	९-१६
मौलिक चिन्तन की आवश्यकता	श्री अगरचन्द नाहटा	१४	९	१९६३	२०-२३
भारतीय आचार्यों की दृष्टि में काव्य के हेतु	डॉ० गंगासागर राय	१४	९	१९६३	२४-२७
स्वामी जी धनीराम जी महाराज	डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	१४	९	१९६३	२८-३१
अहिंसा से कोई विरोध नहीं	श्री शरद कुमार 'साधक'	१४	९	१९६३	३६-३९
शुद्धि प्रयोग की झांकी	मुनि श्री नेमिचन्द्र जी	१४	१०	१९६३	५-८
पद्मलेश्या के रस का उपमेय मद्य क्यों ?	पं० मुनि श्री कन्हैयालालजी 'कमल'	१४	१०	१९६३	९-११
रक्षाबंधन	श्री सरदारमल जैन	१४	१०	१९६३	११-१४
भाई साहब	श्री उमाशंकर त्रिपाठी 'बन्धुजी'	१४	१०	१९६३	१५-१८
जैन धर्म का दृष्टिकोण	मुनि श्री नन्दीषेण विजय	१४	१०	१९६३	१९-२१
क्या आप स्वीकार करेंगे	श्री प्रतेशचन्द जैन	१४	१०	१९६३	२२-२३
धन्य यशोदा, तुम्हे !	श्री जयभिक्खु	१४	१०	१९६३	२५-३१
गुरुदेव की जीवन रेखाएँ	पं० मुनि श्री रामप्रसाद जी	१४	११-१२	१९६३	१७-२८
कृपालु गुरुदेव	मुनि श्री पद्मचन्द जी शास्त्री	१४	११-१२	१९६३	३०-३२
श्रद्धेय वाचस्पतिजी: एक पुण्य स्मृति	उपाध्याय अमरमुनि	१४	११-१२	१९६३	३३-३८
संस्मरणात्मक श्रद्धांजलि	पं० मुनिश्री श्रीमल्ल जी महाराज	१४	११-१२	१९६३	४१-४५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
संयममूर्ति गुरुदेव	श्री प्रकाश मुनि जी 'विशारद'	१४	११-१२	१९६३	४८-४९
कुछ संस्मरण और श्रद्धा के फूल	श्री किशोरीलाल जैन	१४	११-१२	१९६३	५०-५३
श्री व्याख्यान वाचस्पति जी महाराज	श्री समीर मुनि	१४	११-१२	१९६३	५४-५५
स्वामी श्री मदनलाल जी	श्री विमल जैन 'अंशु'	१४	११-१२	१९६३	५६-५८
स्थानकवासी समाज का दुर्भाग्य	पं० श्री ज्ञानमुनि जी	१४	११-१२	१९६३	६२-६४
श्री मदनलाल जी महाराज	पं० बेचरदास जी	१४	११-१२	१९६३	६५-६६
संयम और त्याग की मूर्ति	श्री कस्तूरीलाल जैन	१४	११-१२	१९६३	६७-७१
वंदन हो अगणित	श्री मधुकर मुनि	१४	११-१२	१९६३	७७-७९
त्याग-पत्र का स्पष्टीकरण	श्री हरजसराय जैन	१४	११-१२	१९६३	८१-८२
वाणी का जादूगर	श्री विजयमुनि शास्त्री	१४	११-१२	१९६३	८३-८५
मेरी कुछ अनुभूतियाँ	श्री शादीलाल जैन	१४	११-१२	१९६३	८८-९१
चरणारविन्द में	श्री प्रेमचन्द जी महाराज	१४	११-१२	१९६३	९१-९३
एक महत्त्वपूर्ण भेंट	मैडम लुइर्स वैस	१४	११-१२	१९६३	९४-९६
भाव-विभोर श्रद्धांजलि	श्री सुदर्शन मुनि जी	१४	११-१२	१९६३	९९-१०६
स्वामी विवेकानन्द	श्री श्रीप्रकाश दुबे	१५	१	१९६३	७-८
जैनधर्म और उनका सामाजिक दृष्टिकोण	श्री लक्ष्मीनारायण 'भारतीय'	१५	१	१९६३	९-१८
चीनी आक्रमण: अहिंसा को चुनौती	डॉ० गोपीचन्द धाड़ीवाल	१५	१	१९६३	२१-२४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
प्राच्यभारती का अधिवेशन	डॉ० नवरत्न कपूर	१५	१	१९६३	२६-३०
रघुवंश की अज्ञात जैन टीका	श्री अगरचन्द नाहटा	१५	१	१९६३	३१-३३
पूज्यश्री मंगल ऋषि जी	श्री कृष्णचन्द्राचार्य	१५	१	१९६३	३८-४०
दुर्भाग्य में से सौभाग्य प्राप्त करें	मुनिश्री संतबाल जी	१५	२	१९६३	९-१४
डॉ० भयाणी के व्याख्यान	श्री श्रीप्रकाश दुबे	१५	२	१९६३	१९-२०
चातुर्मास व्यवस्था में सुधार कीजिए	श्री अन्नराज जैन	१५	२	१९६३	२१-२३
हम क्रान्ति का आह्वान करें	श्री चांदमल कर्णावट	१५	२	१९६३	२४-२७
पूज्य श्री जिनविजयेन्द्र सूरि जी	श्री शंकरमुनि	१५	२	१९६३	२८-३०
प्रत्येक आत्मा परमात्मा है	पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री	१५	२	१९६३	३१-३३
श्री अतरचन्द जैन	श्री ओमप्रकाश अग्रवाल	१५	२	१९६३	३५-३६
साधुओं का शिथिलाचार	श्री सौभाग्यमल जैन	१५	३	१९६४	९-१३
साहित्य और साहित्यिक	संत विनोबा	१५	३	१९६४	१५-२८
सस्ता और सुलभ भोजन	डॉ० कौशल किशोर जैन	१५	३	१९६४	३५-३९
२६वां प्राच्यविद्या विश्व सम्मेलन	डॉ० नारायण हेमनदास सम्तानी	१५	४	१९६४	३-८
शुद्धि प्रयोग की झांकी	मुनि श्री नेमिचन्द जी	१५	४	१९६४	९-१३
मेरी पंजाब यात्रा	श्री श्रीप्रकाश दुबे	१५	४	१९६४	१४-२३
ऋषिभाषित का परीक्षण	श्री मनोहरमुनि शास्त्री	१५	४	१९६४	२६-३१
वसंत ऋतु का आहार-विहार	वैद्यराज श्री सुन्दरलाल जैन	१५	४	१९६४	३४-३५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
तीर्थंकर और उनकी शिक्षाएं	श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री	१५	५-६	१९६४	७-१०
पुण्डरीक का दृष्टांत	श्री श्रीप्रकाश दुबे	१५	५-६	१९६४	१२-१४
स्याद्वाद और अनेकान्तवाद	पं० दरबारीलाल कोठिया	१५	५-६	१९६४	१७-२०
श्रमण परम्परा में धर्म और उसका महत्त्व	श्री रामजी भाई पटेल	१५	५-६	१९६४	२३-२७
धर्म और सहिष्णुता	डॉ० ज्योति प्रसाद जैन	१५	५-६	१९६४	३३-३४
महावीर का तप कर्म	डॉ० मोहनलाल मेहता	१५	५-६	१९६४	३७-४१
मुनि वारिषेण और उनका सम्यकत्त्व	श्रीरंजन सूरिदेव	१५	५-६	१९६४	४२-४७
भगवान् महावीर के जीवनचरित्र और उन पर विभिन्न परम्पराओं का प्रभाव	श्री कस्तूरमल बांठिया	१५	५-६	१९६४	४९-६३
धार्मिक एकता	मुनि श्री नेमिचन्दजी	१५	५-६	१९६४	६५-६८
वर्धमान से महावीर कैसे बने	श्री जिनविजयसेन सूरि	१५	५-६	१९६४	६९-७१
भगवान् महावीर के बाद	श्री समीर मुनिं 'सुधाकर'	१५	५-६	१९६४	७२-७५
श्री रत्नमुनि: जीवन परिचय	श्री विजय मुनि	१५	७-८	१९६४	५-११
आगरा में श्रीरत्नमुनि शताब्दी समारोह	श्री कृष्णचन्द्राचार्य	१५	७-८	१९६४	१२-१६
तुलनात्मक दर्शन पर दो दृष्टियाँ	श्री श्रीप्रकाश दुबे	१५	७-८	१९६४	१७-२१
समता के संदेशदाता : भगवान् महावीर	श्री लक्ष्मीनारायण भारतीय	१५	७-८	१९६४	२५-२८
वर्धमान महावीर के जीवन का एक भ्रान्त दृश्य	डॉ० ज्योतिप्रसाद जैन	१५	७-८	१९६४	३३-४६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
उत्तराध्ययन सूत्र- धार्मिक काव्य	प्रो० कानजी भाई पटेल	१५	७-८	१९६४	४८-५७
ग्रीष्म ऋतु का आहार-विहार	वैद्यराज श्री सुन्दरलाल जैन	१५	७-८	१९६४	५९-६२
मेघदूतम् की एक अज्ञात बालावबोध पंजिका	श्री अगरचन्द नाहटा	१५	७-८	१९६४	६३-६४
सुहृदय श्री मुनिलाल जैनी	श्री हरजसराय जैन	१५	७-८	१९६४	६६-६८
स्थानांग और समवायांग (क्रमशः)	पं० बेचरदास दोशी	१५	९	१९६४	२-६
शिवशर्मसूरिकृत 'कर्म प्रकृति'	डॉ० मोहनलाल मेहता	१५	९	१९६४	७-१५
अहिंसा के तीन क्षेत्र (क्रमशः)	काका कालेलकर	१५	९	१९६४	१६-१९
पंचयाम धर्म का एक पर्यवेक्षण	श्री वृजनन्दन	१५	९	१९६४	२०-२३
मील का पत्थर	विजयेन्द्र 'दर्शी'	१५	९	१९६४	२४-२७
भगवान् महावीर के आठ सन्देश	श्री ज्ञानमुनि	१५	९	१९६४	२८-३२
सर्वोदय और जैन दृष्टिकोण	श्री महावीरचन्द धारीवाल	१५	९	१९६४	३३-३६
उद्भट विद्वान् पं० बेचरदास दोशी	श्री गुलाबचन्द जैन	१५	९	१९६४	३७-३८
स्थानांग व समवायांग	पं० बेचरदास दोशी	१५	१०	१९६४	२-८
रायपसेणिय उपांग और उसका रचनाकाल (क्रमशः)	श्री कस्तूरमल बांठिया	१५	१०	१९६४	९-१६
अहिंसा के तीन क्षेत्र	काका कालेलकर	१५	१०	१९६४	१६-१७
क्रोध और क्षमा	समीरमुनि	१५	१०	१९६४	१८-२१
वैराग्य क्या है ?	स्व० छोटालाल हरजीवन सुशील	१५	१०	१९६४	२२-२९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
भगवान् महावीर और समता का आचरण	मुनि नेमिचन्द्र	१५	१०	१९६४	३०-३४
जैनधर्म और आज की दुनिया	श्री ऋषभचन्द्र	१५	१०	१९६४	३५-३६
भगवान् महावीर की देन	मुनि बसन्तविजय	१५	१०	१९६४	३७-४०
रायपसेणिय और उसका रचनाकाल (क्रमशः)	श्री कस्तूरमल बांठिया	१५	११	१९६४	२-८
आत्मबलीसाधक और दैवीतत्त्व	मुनि श्री संतबाल जी	१५	११	१९६४	९-१२
क्रांतिकारी महावीर	श्री रत्नचन्द जैन शास्त्री	१५	११	१९६४	१३-१६
जैनदृष्टि से चारित्र विकास (क्रमशः)	डॉ० मोहनलाल मेहता	१५	११	१९६४	१७-२३
भगवान् महावीर की अहिंसा	श्री नरेन्द्र जैन	१५	११	१९६४	२४-२६
क्षमा शांति के ये सुशीतल स्रोत	श्री पारसमल 'प्रसून'	१५	११	१९६४	२७-२८
रायपसेणिय और उसका रचनाकाल (क्रमशः)	श्री कस्तूरमल बांठिया	१५	१२	१९६४	३-१०
भगवद्गीता और जैनधर्म	श्री अगरचन्द नाहटा	१५	१२	१९६४	११-१२
जैनदृष्टि से चारित्र विकास	डॉ० मोहनलाल मेहता	१५	१२	१९६४	१३-१८
अहिंसा की लोकप्रियता	श्री ज्ञानमुनि	१५	१२	१९६४	१९-२४
जैन समाज में फोटो प्रचार	उपाध्याय हस्तीमल जी	१५	१२	१९६४	२५-२९
हमारे कवल (ग्रास) को मुर्गी के अण्डे की उपमा क्यों	मुनि कन्हैयालाल 'कमल'	१५	१२	१९६४	३०-३२
संस्कृति का स्वरूप	श्री देवेन्द्र मुनि शास्त्री	१५	१२	१९६४	३३-३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
भगवान् महावीर और नारी जाति	श्री विमल जैन	१५	१२	१९६४	३५-३७
रायपसेणियउपांग और उसका रचनाकाल	श्री कस्तूरमल बांठिया	१६	१	१९६४	३-११
सत्य के आवरण या मूर्छायें	डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	१६	१	१९६४	१२-१९
कर्म प्राभृत अथवा षट्खंडागम- एक परिचय (क्रमशः)	डॉ० मोहनलाल मेहता	१६	१	१९६४	२०-२७
"डॉ० गोविन्द त्रिगुणायक का जैन दर्शन व संत कवि" सम्बन्धी वक्तव्य	श्री अगरचन्द नाहटा	१६	१	१९६४	२८-३६
रायपसेणियउपांग और उसका रचनाकाल	श्री कस्तूरमल बांठिया	१६	२	१९६४	३-११
अद्वेष दर्शन	काका कालेलकर	१६	२	१९६४	१२-१४
अंगग्रन्थों का बाह्यरूप	प्रो० बेचरदास दोशी	१६	२	१९६४	१५-२२
अण्डे खाना भी हिंसा ही है	श्री शिवनारायण सक्सेना	१६	२	१९६४	२३-२५
जैनधर्म की आचारसंहिता	श्री रिखबचंद 'लहरी'	१६	२	१९६४	२६-२८
कर्मप्राभृत अथवा षट्खंडागमः एक परिचय (क्रमशः)	डॉ० मोहनलाल मेहता	१६	२	१९६४	२९-३२
लवण एवं अंकुश की देवविजय का भौगोलिक परिचय	डॉ० ऋषभ चन्द्र	१६	३	१९६५	३-१५
द्वीपसागर प्रज्ञप्ति	श्री अगरचन्द नाहटा	१६	३	१९६५	१८-१९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
डणायक रविकीर्ति	पं० के० भुजबलि शास्त्री	१६	३	१९६५	२०-११
उपदेश विधि	मुनि दुलहराज जी	१६	३	१९६५	२२
कर्मप्राभृत अथवा षटखंडागम - एक परिचय (क्रमशः)	डॉ० मोहनलाल मेहता	१६	३	१९६५	२३-२८
त्याग का मनोविज्ञान	श्री माँ, अरविन्दाश्रम	१६	३	१९६५	२९-३३
पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान की कार्यदिशा	पं० सुखलाल संघवी	१६	३	१९६५	३४-३६
जैनदर्शन और भक्ति-एक थीसिस	डॉ० देवेन्द्र कुमार	१६	४	१९६५	३-८
भगवान् बुद्ध और भगवान् महावीर	पं० दलसुख मालवणिया	१६	४	१९६५	९-२१
क्या जैनधर्म जीवित रह सकता है ?	श्री गोपीचन्द धाड़ीवाल	१६	४	१९६५	२२-२५
रहस्यवादी जैन अपभ्रंशकाव्य का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव	श्री प्रेमचन्द जैन शास्त्री	१६	४	१९६५	२६-३१
कर्मप्राभृत अथवा षट्खंडागम- एक परिचय (क्रमशः)	डॉ० मोहनलाल मेहता	१६	४	१९६५	३२-३७
रायपसेणियउपांग और उसका रचनाकाल की समीक्षा	मुनि कल्याणविजय	१६	४	१९६५	३८
श्रमण संस्कृति का हार्द	श्री लक्ष्मीनारायण 'भारतीय'	१६	५	१९६५	२-११
रहस्यवादी जैन अपभ्रंशकाव्य का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव (क्रमशः)	श्री प्रेमचन्द शास्त्री	१६	५	१९६५	१२-१७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
विस्मृत परम्परायें	मुनिश्री दुलहराज	१६	५	१९६५	१८
कर्मप्राभृत अथवा षट्खंडागम- एक परिचय (क्रमशः)	डॉ० मोहनलाल मेहता	१६	५	१९६५	१९-२२
Ahimsa in the Ancient East	Shri Ramchandra Jain	१६	५	१९६५	२३-२८
वीरों का श्रृंगार : अहिंसा	श्री शिवनारायण पाण्डेय	१६	६	१९६५	३-८
क्रांतिदर्शी महावीर	डॉ० देवेन्द्र कुमार शास्त्री	१६	६	१९६५	९-११
रहस्यवादी जैन अपभ्रंशकाव्य का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव (क्रमशः)	श्री प्रेमचन्द्र जैन शास्त्री	१६	६	१९६५	१२-१७
अतिशय क्षेत्र पपौरा	डॉ० अमृतलाल शास्त्री	१६	६	१९६५	१८-२२
कर्मप्राभृत अथवा षट्खंडागम- एक परिचय	डॉ० मोहनलाल मेहता	१६	६	१९६५	२३-२९
पुनरुत्थान	श्री विद्याभिशु 'आधुनिक'	१६	६	१९६५	३०-३१
हमारी प्रवृत्तियाँ और उनका मूल्यांकन	डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	१६	६	१९६५	३२-३६
श्रावकप्रज्ञप्ति के रचयिता कौन ?	पं० बालचन्द्र शास्त्री	१६	७	१९६५	३-९
दर्शन और धर्म	श्री देवेन्द्र मुनि शास्त्री	१६	७	१९६५	१०-१२
नन्दीसूत्र की एक जैनेतर टीका	श्री अगरचन्द नाहटा	१६	७	१९६५	१३-१४
रहस्यवादी जैन अपभ्रंशकाव्य का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव	श्री प्रेमचन्द्र जैन शास्त्री	१६	७	१९६५	१५-१९
अहिंसा	श्री गोपीचन्द धाड़ीवाल	१६	७	१९६५	२०-२८
पउमचरियं में वर्णित राम की वनयात्रा (क्रमशः)	डॉ० के० ऋषभचन्द्र	१६	८	१९६५	३-८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जल में लागी लाय	श्री समीर मुनि 'सुधाकर'	१६	८	१९६५	९-१०
सचेल-अचेल	मुनि दुलहराज	१६	८	१९६५	११-१५
हमारे पतन का मुख्य कारण: हिंसा	श्री शिवनारायण सक्सेना	१६	८	१९६५	१६-१९
मूल्यों का संकट और आध्यात्मिकता	डॉ० देवेन्द्र कुमार	१६	८	१९६५	२०-२३
विवाह-भारतीयेत्तर परम्परायें (क्रमशः)	डॉ० बशिष्ठ नारायण सिन्हा	१६	८	१९६५	२४-३२
सोमदेवकृत यशस्तिलक	श्री गोकुलचन्द जैन	१६	९	१९६५	२-७
दर्शन और विज्ञान : एक चिन्तन	श्री गणेशमुनि शास्त्री	१६	९	१९६५	८-१२
पउमचरियं में वर्णित राम की वनयात्रा	डॉ० के० ऋषभचन्द्र	१६	९	१९६५	१३-१८
विवाह-भारतीयेतर परम्परायें	डॉ० बशिष्ठ नारायण सिन्हा	१६	९	१९६५	१९-२८
कल्याणसागरसूरि को प्रेषित सचित्र विज्ञप्तिलेख	श्री अगरचन्द नाहटा	१६	९	१९६५	२९-३०
आत्म विज्ञान	श्री गोपीचन्द धाड़ीवाल	१६	९	१९६५	३१-३८
विगत हजार वर्ष के जैन इतिहास का सिंहावलोकन (क्रमशः)	श्री कस्तूरमल बांठिया	१६	१०	१९६५	३-११
अहिंसा की महानता	डॉ० शिवनारायण सक्सेना	१६	१०	१९६५	१२-१५
कषायप्राभृत	डॉ० मोहनलाल मेहता	१६	१०	१९६५	१६-२१
भौतिकवाद व अध्यात्मवाद	श्री गोपीचन्द धाड़ीवाल	१६	१०	१९६५	२२-२९
विगत हजार वर्ष के जैन इतिहास					

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
का सिंहावलोकन (क्रमशः)	श्री कस्तूरमल बांठिया	१६	११	१९६५	३-१४
अद्भुत दान	श्री विद्याभिक्षु	१६	११	१९६५	१५-१६
पउमचरियं के कुछ भौगोलिक स्थल	डॉ० के० ऋषभचन्द्र	१६	११	१९६५	१७-२१
कषायप्राभृत	डॉ० मोहनलाल मेहता	१६	११	१९६५	२२-२६
हृदय का माधुर्य-करुणा	मुनि श्री विनयचन्द जी	१६	११	१९६५	२७-३३
आत्म शुद्धि का पर्व-पर्युषण	श्री सरदारमल जैन	१६	११	१९६५	३४-३५
विगत हजार वर्ष के जैन इतिहास का सिंहावलोकन	श्री कस्तूरमल बांठिया	१६	१२	१९६५	३-१९
धर्म का मूल आधार-अहिंसा	श्री शिवनारायण सक्सेना	१६	१२	१९६५	२०-२३
रामकथा-विषयक कतिपय भ्रांत धारणायें	डॉ० के० ऋषभचन्द्र	१६	१२	१९६५	२४-३१
आचार्य दिवाकर का प्रमाण: एक अनुशीलन	श्रीरंजन सूरिदेव	१७	१-२	१९६५	३-६
ब्रह्मचर्य की गुप्ति	उपाध्याय श्री हस्तिमल जी	१७	१-२	१९६५	७-१३
पुष्पदन्त की रामकथा	डॉ० देवेन्द्रकुमार	१७	१-२	१९६५	१४-१८
आस्रव व बंध	श्री गोपीचन्द धाड़ीवाल	१७	१-२	१९६५	१९-२५
ज्योतिर्धर महावीर	देवेन्द्र शास्त्री	१७	१-२	१९६५	२६-३२
श्रीमद्देवचन्द्र रचित कर्मसाहित्य	श्री अगरचन्द नाहटा	१७	१-२	१९६५	३३-३७
जैन संस्कृति और परिवार व्यवस्था	प्रेमसुमन जैन	१७	१-२	१९६५	३८-५२
महान् साहित्यकार आचार्य हरिभद्रसूरि	डॉ० ज्योति प्रसाद जैन	१७	१-२	१९६५	५३-५५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
दिगम्बर परम्परा में श्रावक के गुण और भेद	श्री कस्तूरमल बांठिया	१७	१-२	१९६५	५६-६६
जैन और बौद्धआगमों में गणिका	श्री कोमलचन्द जैन	१७	१-२	१९६५	६७-७२
लब्धियां	श्री अम्बालाल प्रेमचंद शाह	१७	१-२	१९६५	७३-८४
उपासक प्रतिमायें	डॉ० मोहनलाल मेहता	१७	१-२	१९६५	८५-८८
पउमसिरीचरिउ के मूलस्रोत्र (क्रमश:)	डॉ० के० ऋषभचन्द्र	१७	३	१९६६	३-८
समाजशास्त्र की पृष्ठभूमि में जैनों के सम्प्रदाय	श्री लक्ष्मी नारायण 'भारतीय'	१७	३	१९६६	११-१९
संघर्ष और आंलिगन	डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	१७	३	१९६६	२०-२४
जैनधर्म में मानवतावाद	श्री कस्तूरचन्द ललवानी	१७	३	१९६६	२५-३२
Concept of Aimsa in the Shantiparvan	Shri Bashistha Narayan Sinha	१७	३	१९६६	३३-४०
श्वेताम्बर-परम्परा में श्रावक के गुण और भेद	श्री कस्तूरमल बांठिया	१७	४	१९६६	३-१४
पउमसिरिचरिउ के मूल स्रोत्र	डॉ० के० ऋषभचन्द्र	१७	४	१९६६	१६-२३
धर्म : मेरी दृष्टि में	मुनि श्री नेमिचन्द्र जी	१७	४	१९६६	२४-२८
लब्धिफल	श्री अम्बालाल प्रेमचन्द शाह	१७	४	१९६६	२९-३९
अपभ्रंश की पूर्वस्वयंभूयुगीन कविता	डॉ० देवेन्द्र कुमार	१७	५	१९६६	५-९
संवर और निर्जरा	श्री गोपीचन्द धाड़ीवाल	१७	५	१९६६	११-१७
धर्म और विज्ञान	आचार्य रजनीश	१७	५	१९६६	१८-२१
संस्कृत साहित्य के इतिहास के जैन सम्बन्धित संशोधन	श्री अगरचन्द नाहटा	१७	५	१९६६	२२-२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
डॉ० जैकोबी और वासी चन्दन कल्प (क्रमशः)	मुनि श्री महेन्द्र कुमारजी 'द्वितीय'	१७	५	१९६६	२७-३४
Riṣabhadeva : A study	Dr. Bashistha Narayan Sinha	१७	५	१९६६	३५-३७
श्रावक के गुण और भेद (क्रमशः)	श्री कस्तूरमल बांठिया	१७	६	१९६६	३-११
अपूर्वरक्षा	श्री विद्याभिक्षु	१७	६	१९६६	१२-१३
मोक्ष	श्री गोपीचन्द धाड़ीवाल	१७	६	१९६६	१४-१९
जैन समाज द्वारा काव्य सेवा	श्री रूपचन्द जैन	१७	६	१९६६	२०-२२
डॉ० जैकोबी और वासी चन्दनकल्प (क्रमशः)	मुनिश्री महेन्द्र कुमारजी (द्वितीय)	१७	६	१९६६	२३-२८
उत्सर्ग और अपवाद	मुनिश्री पुण्यविजय जी	१७	६	१९६६	३०-३३
श्रावक के गुण और भेद (क्रमशः)	श्री कस्तूरमल बांठिया	१७	७	१९६६	३-११
डॉ० जैकोबी और वासी चन्दनकल्प (क्रमशः)	मुनिश्री महेन्द्र कुमारजी (द्वितीय)	१७	७	१९६६	१४-२०
आचारांग में उल्लिखित परमत	पं० बेचरदास दोशी	१७	७	१९६६	२१-२४
विश्वव्यवस्था और सिद्धान्तत्रयी	श्री अजित मुनि 'निर्मल'	१७	७	१९६६	२५-३१
जैन समाज व्यवस्था	श्री बशिष्ठ नारायण सिन्हा	१७	७	१९६६	३२-३६
श्रावक के गुण और भेद	श्री कस्तूरमल बांठिया	१७	८	१९६६	३-१०
डॉ० जैकोबी और वासी चन्दनकल्प (क्रमशः)	मुनिश्री महेन्द्र कुमारजी (द्वितीय)	१७	८	१९६६	१३-१८
आर्षप्राकृत का व्याकरण (क्रमशः)	पं० बेचरदास दोशी	१७	८	१९६६	१९-२६
जैन उपाश्रय व्यवस्था और कर्मचारीतंत्र	श्री कृष्णलाल शर्मा	१७	८	१९६६	२७-३३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
समग्र जैन संघ को नम्र विज्ञप्ति	मुनि श्री न्याय विजयजी	१७	८	१९६६	३४-३९
हेमचन्द्र और भारतीय काव्यालोचना	डॉ० देवेन्द्र कुमार	१७	९	१९६६	२-७
पउमचरियं : संक्षिप्त कथावस्तु	डॉ० के० ऋषभ चन्द्र	१७	९	१९६६	८-११
आर्षप्राकृत का व्याकरण	पं० बेचरदास दोशी	१७	९	१९६६	१२-१४
पुष्कर के सम्बन्ध में शोध	श्री अजित मुनि	१७	९	१९६६	१७
अहिंसा की परिणति समन्वय और सत्याग्रह	काका कालेलकर	१७	९	१९६६	१८-२१
गुणव्रत	डॉ० मोहनलाल मेहता	१७	९	१९६६	२२-२७
पिण्डनिर्युक्ति	डॉ० जगदीशचन्द्र जैन	१७	९	१९६६	२८-३१
श्वेताम्बर जैनों के पूजाविधियों का इतिहास (क्रमशः)	श्री कस्तूरमल बांठिया	१७	१०	१९६६	४-१५
न्यायोचित विचारों का अभिनन्दन	पं० श्री जुगल किशोर मुख्तार	१७	१०	१९६६	१६-२१
पउमचरियं : संक्षिप्त कथावस्तु (क्रमशः)	डॉ० के० ऋषभ चन्द्र	१७	१०	१९६६	२२-२७
महर्षि अरविन्द-जैन दर्शन की दृष्टि में	श्री लक्ष्मीचन्द जैन	१७	१०	१९६६	२८-३१
निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थी संघ	मुनिश्री पुण्यविजय जी	१७	१०	१९६६	३२-३७
श्वेताम्बर जैनों के पूजाविधियों का इतिहास (क्रमशः)	श्री कस्तूरमल बांठिया	१७	११	१९६६	२-१४
वीरनन्दी और उनका चन्द्रप्रभचरित	पं० अमृतलाल शास्त्री	१७	११	१९६६	१८-२५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
पउमचरियं : संक्षिप्त कथावस्तु	डॉ० के० ऋषभचन्द्र	१७	११	१९६६	२६-३०
यज्ञ : एक अनुचिन्तन (क्रमशः)	श्री सुदर्शन लाल जैन	१७	११	१९६६	३१-३८
पउमचरियं : संक्षिप्त कथावस्तु	डॉ० के० ऋषभचन्द्र	१७	१२	१९६६	३-८
'महावीरचर्या' ग्रन्थ सम्बन्धी महापंडित राहुल जी के दो पत्र	श्री अगरचन्द नाहटा	१७	१२	१९६६	९-१०
जैन समाज का धर्म प्रचार	श्री समीर मुनि 'सुधाकर'	१७	१२	१९६६	१२-१४
यज्ञ : एक अनुचिन्तन	श्री सुदर्शनलाल जैन	१७	१२	१९६६	१५-२७
धर्म का एक आधार : स्वस्थ समाज रचना	साध्वी श्री मंजुला	१७	१२	१९६६	२८-३०
अपभ्रंश की शोध कहानी	डॉ० देवेन्द्र कुमार	१८	१-२	१९६६	३-७
राक्षस : एक मानव वंश	डॉ० के० ऋषभचन्द्र	१८	१-२	१९६६	८-१२
भारतीय विद्याविद् डॉ० ज्हान ज्यार्ज बुहलर	श्री कस्तूरमल बांठिया	१८	१-२	१९६६	१३-२०
थुल्लवंश की एक अपूर्ण प्रशस्ति	श्री भंवरलाल नाहटा	१८	१-२	१९६६	२१-२५
सेवा : एक विश्लेषण	श्री देवेन्द्र मुनि शास्त्री	१८	१-२	१९६६	२६-४२
अहिंसा की साधना	श्री गोपीचन्द धाड़ीवाल	१८	१-२	१९६६	४३-६०
आचारांग के कुछ महत्त्वपूर्ण शब्द	साध्वी श्री कनकप्रभा	१८	१-२	१९६६	६१-६४
जैनधर्म और व्यावसायिक पूंजीवाद : वेबर की अनुदृष्टि	श्री कृष्णलाल शर्मा	१८	१-२	१९६६	६५-७२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
अहिंसा : एक विश्लेषण	श्री बशिष्ठ नारायण सिन्हा	१८	१-२	१९६६	७३-७७
क्या लोंकाशाह विद्वान् नहीं थे ?	श्री नन्दलाल मारु	१८	१-२	१९६६	७८-७९
जैनधर्म और नारी	श्री लक्ष्मीनारायण	१८	३	१९६७	३-९
श्रावक किसे कहा जाय	श्री कस्तूरमल बांठिया	१८	३	१९६७	१०-२३
आर्ष प्राकृत का व्याकरण	पं० बेचरदास दोशी	१८	३	१९६७	२९-३१
विश्व का निर्माण तत्त्व : द्रव्य	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	१८	३	१९६७	३२-३६
"कुवलयमाला" मध्ययुग के आदिकाल की एक जैन कथा	श्री कस्तूरमल बांठिया	१८	४	१९६७	२-१७
विद्याधर : एक मानव जाति	डॉ० के० ऋषभ चंद्र	१८	४	१९६७	१८-२०
आचार्य हेमचन्द्र के पट्टधर आचार्य रामचन्द्र - के अनुपलब्ध नाटकों की खोज अत्यावश्यक	श्री अगरचन्द नाहटा	१८	४	१९६७	२१-२५
जैन सिद्धान्त और समाजव्यापी प्रयोग	मुनि नेमिचन्द्र	१८	४	१९६७	२६-३०
जैन संस्कृति का विस्तार	श्री देवेन्द्र मुनि शास्त्री	१८	४	१९६७	३१-३७
पउमचरियं में अनार्य जातियां	डॉ० के० ऋषभ चन्द्र	१८	५	१९६७	२-५
प्रज्ञाचक्षु राजकवि श्रीपाल की एक अज्ञात रचना-शतार्थी	श्री अगरचन्द नाहटा	१८	५	१९६७	६-८
आत्म निरीक्षण	श्री पारसमल 'प्रसून'	१८	५	१९६७	९-१०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
अहिंसा का जैन दृष्टि से विश्लेषण	श्री नन्दलाल मारु	१८	५	१९६७	११-१४
कषाय प्राभृत की व्याख्यायें	डॉ० मोहनलाल मेहता	१८	५	१९६७	१५-२२
मुनिरामसिंह कृत 'पाहुडदोहा' : एक अध्ययन	श्री प्रेमचन्द जैन	१८	६	१९६७	२-९
अहिंसा : एक विश्लेषण	श्री बशिष्ठ नारायण सिन्हा	१८	६	१९६७	१०-१५
आगम प्रकाशन में सहयोग कौन और कैसे करे ?	श्री कस्तूरमल बांठिया	१८	६	१९६७	१६-२५
बौद्ध और जैन आगमों में जननी	डॉ० कोमलचन्द जैन	१८	६	१९६७	२६-३३
ज्ञान तपस्वी मुनि श्री पुण्यविजय जी	श्री रतिलाल दीपचंद देसाई	१८	६	१९६७	३४-३८
महावीर और बुद्ध : कैवल्य और बोधि	मुनि श्री नगराज जी	१८	७	१९६७	३-६
पुलिस	पं० बेचरदास दोशी	१८	७	१९६७	७-८
अष्टलक्षी में उल्लिखित अप्राप्य रचनायें	श्री अगरचन्द नाहटा	१८	७	१९६७	९-११
जैनमुनि और मांसाहार परिहार	श्री कस्तूरमल बांठिया	१८	७	१९६७	१४-२५
श्री सिद्धर्षिगणि कृत उपमितिभवप्रपंचाकथा	श्री गोपीचंद धाड़ीवाल	१८	७	१९६७	२६-३१
आर्षप्राकृत का व्याकरण	पं० बेचरदास दोशी	१८	८	१९६७	३-६
अक्षय तृतीया : एक चिन्तन	श्री देवेन्द्र मुनि शास्त्री	१८	८	१९६७	७-१२
जैन और बौद्ध आगमों में जननी- एक पहलू	सौ० सुधा राखे	१८	८	१९६७	१४-१७
अहिंसा : एक विश्लेषण	श्री गोपीचंद धाड़ीवाल	१८	८	१९६७	१८-१९
जैनधर्म में सामाजिक प्रवृत्ति की प्रेरणा	मुनि श्री नथमल	१८	८	१९६७	२०-२३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
बौद्ध और जैन आगमों में पुत्रवधु	डॉ० कोमलचन्द जैन	१८	८	१९६७	२४-३३
महाकवि स्वयंभू और तुलसीदास	श्री प्रेमसुमन जैन	१८	९	१९६७	३-१४
रोटी शब्द की चर्चा	पं० बेचरदास दोशी	१८	९	१९६७	१५-१९
क्या रावण के दस मुख थे?	डॉ० के० ऋषभ चन्द्र	१८	९	१९६७	२२-२४
श्रमण और श्रमणोपासक	श्री कस्तूरमल बांठिया	१८	९	१९६७	२५-२९
जैन संस्कृति और प्रचार : एक चिन्तन	श्री गजेन्द्र मुनि	१८	९	१९६७	३०-३६
कुवलयमालाकहा का कथा स्थापत्य संयोजन	श्री प्रेमसुमन जैन	१८	१०	१९६७	३-८
रामकथा के वानर : एक मानवजाति	डॉ० के० ऋषभ चन्द्र	१८	१०	१९६७	९-१२
बौद्ध और जैन आगमों में जननी : एक स्पष्टीकरण	डॉ० कोमलचन्द जैन	१८	१०	१९६७	१५-१९
भारतीय साहित्य और आयुर्वेद	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	१८	१०	१९६७	२०-३३
आचार्य हेमचन्द्र के योगशास्त्र पर एक प्राचीन टीका	श्री जुगल किशोर मुख्तार	१८	११	१९६७	२-१७
श्री सिद्धर्षिगणि कृत उपमितिभवप्रपंचाकथा से संकलित 'धर्म की महिमा'	श्री गोपीचंद धाड़ीवाल	१८	११	१९६७	१८-२३
जिनसेन का पार्श्वाभ्युदय : मेघदूत का माखौल	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	१८	११	१९६७	२८-३२
अहिंसा : एक विश्लेषण	श्री नन्दलाल मारु	१८	११	१९६७	३३-३७
पउमचरिउ की अवान्तर कथाओं में भौगोलिक सामग्री	डॉ० के० ऋषभ चन्द्र	१८	१२	१९६७	३-१६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
आचार्य हरिभद्रसूरि प्राकृत के एक सशक्त कथाकार	श्री प्रेमसुमन जैन	१८	१२	१९६७	१९-२६
अष्टलक्षी में उल्लिखित जयसुन्दरसूरि की शतार्थी की खोज आवश्यक	श्री अगरचन्द नाहटा	१८	१२	१९६७	२७-२९
श्रीरंजन सूरिदेव की कुछ मोटी भूलें	श्री जुगलकिशोर मुख्तार	१८	१२	१९६७	३०-३३
पुष्पदन्त का कृष्ण काव्य	डॉ० देवेन्द्र कुमार	१९	१-२	१९६७	३-१३
तप क्या है।	पं० बेचरदास दोशी	१९	१-२	१९६७	१४-१९
बौद्ध और जैन आगमों में जननी	सौ० सुधा राखे	१९	१-२	१९६७	२०-२६
सम्यग्दर्शन	श्री गोपीचन्द धाड़ीवाल	१९	१-२	१९६७	२७-३१
भगवान् महावीर की २५वीं निर्वाणशती कैसे मनायें	श्री नन्दलाल मारु	१९	१-२	१९६७	३२-३६
पार्श्वाभ्युदयकाव्य : विचार-वितर्क	डॉ० श्रीरंजन सूरि देव	१९	१-२	१९६७	३९-४२
अपभ्रंश कथाकाव्यों का हिन्दी प्रेमाख्यानों के शिल्प पर प्रभाव	श्री प्रेमचन्द जैन	१९	१-२	१९६७	४३-५३
अध्यात्मवाद : एक अध्ययन	श्री देवेन्द्र मुनि शास्त्री	१९	१-२	१९६७	५४-६४
श्रमण भगवान् महावीर का जन्मस्थान	श्री नरेश चन्द्र मिश्र 'भंजन'	१९	३	१९६८	३-१५
पेथड़रास के कर्ता कौन	श्री सनत्कुमार रंगाटिया	१९	३	१९६८	१६-२०
बौद्ध और जैन आगमों में नारी जीवन : एक और स्पष्टीकरण	डॉ० कोमलचन्द जैन	१९	३	१९६८	२३-२४
मगध साम्राज्य का प्रथम सम्राट श्रेणिक	श्री गणेश प्रसाद जैन	१९	३	१९६८	२५-३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
एक प्रतिक्रिया	डॉ० देवेन्द्र कुमार	१९	३	१९६८	३५
आचार्य हेमचन्द्र और जैन संस्कृति	डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	१९	४	१९६८	३-६
भगवान् महावीर कालीन वैशाली में जैनधर्म	श्री शांतिलाल मांडलिक	१९	४	१९६८	६-८
प्रसिद्धि प्राप्त श्वेताम्बर जैनों की कुछ कृत्रिम कृतियां	श्री कस्तूरमल बांठिया	१९	४	१९६८	९-३०
जिनचन्द्रसूरिरचित श्रावकसामाचारी की पूरी प्रति की खोज	श्री अगरचन्द नाहटा	१९	४	१९६८	३२-३५
समराइच्चकहा का अविकल गुर्जरानुवाद	श्री कस्तूरमल बांठिया	१९	५	१९६८	६-१८
जैन शिक्षा : उद्देश्य और पद्धतियाँ	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	१९	५	१९६८	१९-२३
जैन संस्कृति और राजनीति	श्री देवेन्द्र मुनि शास्त्री	१९	५	१९६८	२४-३१
समवायांगसूत्र में विसंगति	श्री नन्दलाल मारु	१९	५	१९६८	३२-३४
लंका में जैन धर्म	श्री डी० जी० महाजन	१९	६	१९६८	५-११
मुनिरामसिंह का उग्रअध्यात्मवाद	डॉ० देवेन्द्र कुमार	१९	६	१९६८	१२-२२
सप्तक्षेत्रिरासु	डॉ० सनत्कुमार रंगाटिया	१९	६	१९६८	२३-२८
अर्धकथानक : हिन्दी भाषा का प्रथम आत्मचरित	श्री गणेशमुनि शास्त्री	१९	६	१९६८	२९-३८
जैनों में मूर्ति और उसकी पूजा पद्धतियों में विकास और विकार	श्री कस्तूरमल बांठिया	१९	७	१९६८	६-१७
जैन धर्मानुसार जीव, प्राण और हिंसा	डॉ० बशिष्ठ नारायण सिन्हा	१९	७	१९६८	१८-२२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
संसार का अन्तरंग प्रदेश	श्री गोपीचन्द धाड़ीवाल	१९	७	१९६८	२३-२५
मंगलकलश कथा	श्री भंवरलाल नाहटा	१९	७	१९६८	२६-३४
नई पीढी और धर्म	श्री नन्दलाल मारु	१९	७	१९६८	३५-३८
अभव्यजीव नवग्रैवेयक तक कैसे जाता है ?	श्री कस्तूरमल बांठिया	१९	८	१९६८	७-११
विद्याविलासरास	श्री सनत्कुमार रंगाटिया	१९	८	१९६८	१२-२५
आचार्य वादिराजसूरि	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	१९	८	१९६८	२६-२९
पं० रामचन्द्रगणिरचित सुमुखनृपति काव्य	श्री अगरचन्द नाहटा	१९	८	१९६८	३०-३१
Some Important Prakrit Work	Dr. M. L. Mehta	१९	८	१९६८	३२-३९
मानवमूल्यों का काव्य भविसयत्तकहा	डॉ० देवेन्द्र कुमार	१९	९	१९६८	५-९
प्राकृत का अध्ययन	डॉ० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या	१९	९	१९६८	१०-१२
श्रवणबेलगोला के शिलालेख, दक्षिणभारत में जैनधर्म और गोम्मटेश्वर	श्री गणेश प्रसाद जैन	१९	९	१९६८	१३-२१
महावीर का वीरत्व	डॉ० भानीराम वर्मा	१९	९	१९६८	२२-२७
श्री बालाभाई वीरचन्द देसाई 'जयभिक्खू'	श्री कस्तूरमल बांठिया	१९	९	१९६८	२८-३७
भारतीय वाङ्मय में प्राकृतभाषा का महत्त्व	पं० बेचरदास दोशी	१९	१०	१९६८	६-१६
कवि रत्नाकर और रत्नाकरशतक	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	१९	१०	१९६८	१७-२४
अभय कुमार श्रेणिकरास (क्रमशः)	डॉ० श्रीसनत्कुमार रंगाटिया	१९	१०	१९६८	२५-३०
दसधर्म योग साधना है	श्री अर्हद्दासबंडोबा दिघे	१९	१०	१९६८	३१-३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
महाराष्ट्री प्राकृत	पं० बेचरदास दोशी	१९	११	१९६८	५-८
अहिंसा के इतिहास में निरामिषता	श्री गणेशमुनि शास्त्री	१९	११	१९६८	९-१४
आचार्य कुन्दकुन्द और उनका साहित्य	डॉ० बशिष्ठ नारायण सिन्हा	१९	११	१९६८	१५-२१
अभयकुमारश्रेणिकरास	डॉ० सनत्कुमार रंगाटिया	१९	११	१९६८	२२-२८
भारतीय विश्वविद्यालयों में जैन साहित्य और संस्कृति विषयक शोध कार्य	डॉ०गोकुलचन्द जैन	१९	११	१९६८	२९-३८
वास्तविक्तावाद और जैनदर्शन	मुनि श्री महेन्द्र कुमार 'द्वितीय'	१९	१२	१९६८	५-१७
जैनधर्म की प्राचीनता	श्री शांतिलाल मांडलिक	१९	१२	१९६८	१८-२४
श्री जय भिक्खू के ग्रन्थों का हिन्दी अनुवाद	श्री कस्तूरमल बांठिया	१९	१२	१९६८	२५-३४
ग्वालियर के तोमरवंशीयराजा	डॉ० राजाराम जैन	२०	१	१९६८	६-१३
जैन वाङ्मय में आयुर्वेद	श्रीरंजन सूरिदेव	२०	१	१९६८	१४-२२
Progress of Prakrit & Jain Studies	Dr. Nath Mal Tatia	२०	१	१९६८	२४-३५
आचार्य सिद्धसेन दिवाकर की साहित्य साधना	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२०	२	१९६८	५-१४
मुनिमेघकुमार-रचित किरातमहाकाव्य की अवचूरि	श्री अगरचन्द नाहटा	२०	२	१९६८	१५-१७
जैन महाकवि पं० बनारसीदास का रहस्यवाद	श्री गणेश प्रसाद जैन	२०	२	१९६८	१८-२२
महाकवि रत्नाकर के कतिपय अध्यात्मगीत	पं० के० भुजबलि शास्त्री	२०	२	१९६८	२३-२५
Compendia of Dṛṣṭivāda	Dr. M.L. Mehta	२०	२	१९६८	२६-२८
भगवान् महावीर के जीवनचरित्र	श्री कस्तूरमल बांठिया	२०	३	१९६९	५-२२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
राजस्थानी के विकास में अपभ्रंश का योगदान	श्री रमेशचन्द्र जैन	२०	३	१९६९	२३-३१
डॉ० नेमिचन्द्र जी शास्त्री और 'अरिहा' शब्द	पं० बेचरदास दोशी	२०	३	१९६९	३२-३६
रूपी और अरूपी	डॉ० मोहनलाल मेहता	२०	४	१९६९	५-७
कवि वीर और उनका जंबूसामिचरिउ	डॉ० देवेन्द्र कुमार	२०	४	१९६९	८-१७
जैन साहित्य के इतिहास की पूर्वपीठिका	श्री कस्तूरमल बांठिया	२०	४	१९६९	१८-२४
एकपत्र	श्री कैलाशचन्द्र जैन	२०	४	१९६९	२५
धर्म और अधर्म	डॉ० मोहनलाल मेहता	२०	५	१९६९	५-७
श्रमण संस्कृति का सार	श्री देवेन्द्र मुनि शास्त्री	२०	५	१९६९	८-१७
भोग तृष्णा	श्री गोपीचन्द धाड़ीवाल	२०	५	१९६९	१८-१९
हर्षकुलरचित कमलपंचशतिका	श्री अगरचन्द नाहटा	२०	५	१९६९	२०-२२
जैनपुराणों में रामकथा	श्री गणेश प्रसाद जैन	२०	५	१९६९	२३-३५
आकाश	डॉ० मोहनलाल मेहता	२०	६	१९६९	५-७
भारतीय संस्कृति में दान का महत्त्व (क्रमशः)	डॉ० देवेन्द्र मुनि शास्त्री	२०	६	१९६९	८-१६
पालि क्या बोलचाल की भाषा थी	डॉ० कोमलचन्द जैन	२०	६	१९६९	१७-२१
जैनधर्म की प्राचीनता (क्रमशः)	डॉ० बशिष्ठ नारायण सिन्हा	२०	६	१९६९	२२-२९
काल	डॉ० मोहनलाल मेहता	२०	७	१९६९	७-९
भारतीय संस्कृति में दान का महत्त्व	श्री देवेन्द्र मुनि शास्त्री	२०	७	१९६९	१०-२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
अज्ञात कवि कृत शीलसंधि	डॉ० सनत्कुमार रंगाटिया	२०	७	१९६९	२१-२६
जैनधर्म की प्राचीनता (क्रमशः)	डॉ० बशिष्ठ नारायण सिन्हा	२०	७	१९६९	२७-३२
तमिल क्षेत्रीय जैन योगदान	श्री डी० जी० महाजन	२०	८	१९६९	५-१०
जिनराजसूरि कृत नैषधमहाकाव्यवृत्ति	श्री अगरचन्द नाहटा	२०	८	१९६९	१५-१८
जैनधर्म की प्राचीनता (क्रमशः)	डॉ० बशिष्ठ नारायण सिन्हा	२०	८	१९६९	१९-२७
Jainism in Gujarat	Dr. Harihar Singh	२०	८	१९६९	२८-३४
जैनधर्म और बिहार	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	२०	९	१९६९	५-१९
पुद्गल	डॉ० मोहनलाल मेहता	२०	९	१९६९	२०-२२
जैनधर्म की प्राचीनता	डॉ० बशिष्ठ नारायण सिन्हा	२०	९	१९६९	२३-२७
Jainism in Gujarat	Dr. Harihar Singh	२०	९	१९६९	२८-३४
सिरिपालचरिउ : संदर्भ और शिल्प	डॉ० देवेन्द्र कुमार	२०	१०	१९६९	५-१४
स्याद्वाद: एक परिशीलन (क्रमशः)	श्री देवेन्द्र मुनि शास्त्री	२०	१०	१९६९	१५-२०
आचार्य हरिभद्र और धर्मसंग्रहणी (क्रमशः)	डॉ० सुदर्शनलाल जैन	२०	१०	१९६९	२१-२९
राजा डूंगरसिंह तोमर	डॉ० राजाराम जैन	२०	१०	१९६९	३०-३६
परमाणु	डॉ० मोहनलाल मेहता	२०	११	१९६९	५-७
स्याद्वाद- एक परिशीलन	डॉ० देवेन्द्र मुनि शास्त्री	२०	११	१९६९	८-१५
आचार्य हरिभद्र और धर्मसंग्रहणी	डॉ० सुदर्शनलाल जैन	२०	११	१९६९	१६-२२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
संवेगरंगशाला क्या देवभद्रसूरि-रचित और अनुपलब्ध है ?	श्री अगरचन्द नाहटा	२०	११	१९६९	२३-२६
श्रीकृष्ण: एक समीक्षात्मक अध्ययन (क्रमशः)	श्री धन्यकुमार राजेश	२०	११	१९६९	२७-३४
Jaina System of Education as revealed from the Nisitha Curni	Dr. Madhu Sen	२०	११	१९६९	३५-४१
महावीर और गांधी का अहिंसादर्शन-जनजीवन के सन्दर्भ में	श्रीरंजन सूरिदेव	२०	१२	१९६९	५-१२
स्याद्वाद एक परिशीलन	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२०	१२	१९६९	१३-२१
विग्रहगति एवं अन्तराभव	डॉ० कोमलचन्द जैन	२०	१२	१९६९	२२-२५
श्रीकृष्ण : एक समीक्षात्मक अध्ययन	श्री धन्यकुमार राजेश	२०	१२	१९६९	२६-३१
संवेगरंगशाला - एक स्पष्टीकरण	प्रो० हीरालाल रसिकलाल कापड़िया	२०	१२	१९६९	३२
Jaina System of Education as revealed from the Nisitha Curni	Dr. Madhu Sen	२०	१२	१९६९	३३-३७
सावयपण्णत्ति :एक तुलनात्मक अध्ययन (क्रमशः)	पं० बालचन्द सिद्धान्तशास्त्री	२०	१	१९६९	५-१२
युवक के प्रति	श्री चन्दनमल चांद	२०	१	१९६९	१३-१४
दक्षिण भारत में जैनधर्म और संस्कृति	श्री गणेश प्रसाद जैन	२०	१	१९६९	१५-२५
कृतिकर्म के बारह प्रकार	मुनि श्री नथमल जी	२०	१	१९६९	२६-३३
संवेगरंगशाला नामक दो ग्रन्थ नहीं एक ही है	श्री अगरचन्द नाहटा	२१	१	१९६९	३४
सावयपण्णत्ति :एक तुलनात्मक अध्ययन (क्रमशः)	पं० बालचन्द सिद्धान्तशास्त्री	२१	२	१९६९	५-११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
भगवान् नेमिनाथ के समय सम्बन्धी संशोधन	श्री अगरचन्द नाहटा	२१	२	१९६९	१२-१३
महावीर निर्वाण सम्वत् में शताब्दियों की भूल	श्री धन्यकुमार राजेश	२१	२	१९६९	१४-२१
Tirthakshetras in Jainism	Dr. Harihar Singh	२१	२	१९६९	२२-२६
सावग्पण्णत्ति :एक तुलनात्मक अध्ययन (क्रमशः)	पं० बालचन्द सिद्धान्तशास्त्री	२१	३	१९७०	५-१३
पं० मुनिविजय चन्द्रकृत ग्रहदीपिका	श्री अगरचन्द नाहटा	२१	३	१९७०	१५-१७
मूलाचार	श्री प्रेमचन्द जैन	२१	३	१९७०	१८-२४
जैन पौराणिक साहित्य में युद्ध	श्री धन्यकुमार जैन	२१	४	१९७०	५-१७
उपाध्याय भक्तिलाभ रचित न्यायसार अवचूर्णि	श्री अगरचन्द नाहटा	२१	४	१९७०	१९-२१
सावयपण्णत्ति :एक तुलनात्मक अध्ययन (क्रमशः)	पं० बालचन्द सिद्धान्तशास्त्री	२१	४	१९७०	२२-२८
जैन रत्न शास्त्र	पं० अम्बालाल प्रेमचन्द शाह	२१	४	१९७०	२९-३२
जैन और वैदिक साहित्य में परा विद्या	श्री धन्यकुमार राजेश	२१	५	१९७०	५-१५
जैन तत्त्वों पर शूब्रिंग के विचार	श्री कस्तूरमल बांठिया	२१	५	१९७०	१६-२३
सावयपण्णत्ति :एक तुलनात्मक अध्ययन (क्रमशः)	पं० बालचन्द सिद्धान्तशास्त्री	२१	५	१९७०	२४-२९
पद्ममंदिर रचित बालावबोध प्रवचनसार का नहीं प्रवचनसारोद्धार का है	श्री अगरचन्द नाहटा	२१	५	१९७०	३०-३१
भारतीय प्रतीक परम्परा में जैन साहित्य का योगदान	डॉ० प्रेमचन्द जैन	२१	५	१९७०	३२-३७
शास्त्रों की प्रामाणिकता	डॉ० मोहनलाल मेहता	२१	५	१९७०	३८-४०
मांडव : एक प्राचीन जैनतीर्थ (क्रमशः)	श्री शांतिलाल मांडलिक	२१	६	१९७०	५-१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
महाकवि पुष्पदंत : एक परिचय	श्री गणेश प्रसाद जैन	२१	६	१९७०	१५-१९
सावयपण्णत्ति :एक तुलनात्मक अध्ययन (क्रमशः)	पं० बालचन्द सिद्धान्तशास्त्री	२१	६	१९७०	२०-२७
गजेटियर आफ इंडिया (१९६५) में जैनी और जैनधर्म	श्री सुबोध कुमार जैन	२१	६	१९७०	२८-६५
श्रमण संस्कृति में अहिंसा के प्राचीन संदर्भ	डॉ० भागचन्द जैन	२१	७	१९७०	३-९
क्या रामकथा का वर्तमान रूप कल्पित है	श्री धन्यकुमार राजेश	२१	७	१९७०	१०-१९
बुन्देलखण्डी भाषा में प्राकृत के देशीशब्द	डॉ० कोमलचन्द जैन	२१	७	१९७०	२०-२३
मांडव- एक प्राचीन जैनतीर्थ	श्री शांतिलाल मांडलिक	२१	७	१९७०	२४-३०
जयप्रभसूरिरचित कुमारसंभवटीका	श्री अगरचन्द नाहटा	२१	७	१९७०	३१-३३
सर्वज्ञता : एक चिन्तन	डॉ० मोहनलाल मेहता	२१	७	१९७०	३४-३८
जैन रासक परिभाषा, विकास और काव्यरूप	डॉ० प्रेमचन्द जैन	२१	८	१९७०	३-९
श्रमण संस्कृति में अहिंसा के प्राचीन संदर्भ	डॉ० भागचन्द जैन	२१	८	१९७०	१०-१७
क्या रामकथा का वर्तमान रूप कल्पित है	श्री धन्यकुमार राजेश	२१	८	१९७०	१८-२७
अंगविज्जा	श्री श्रीनारायण शास्त्री	२१	८	१९७०	२८-३२
प्राकृत के विकास में बिहार की देन (क्रमशः)	श्रीरंजन सूरिदेव	२१	९	१९७०	४-१४
क्या 'व्याख्यापप्रज्ञप्ति का १५वां शतक प्रक्षिप्त है ?	डॉ० मोहनलाल मेहता	२१	९	१९७०	१५-१९
जैन साहित्य का बृहद् इतिहास भाग ५ के कतिपय सशोधन	श्री अगरचन्द नाहटा	२१	९	१९७०	२०-२३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
कवि पुष्पदन्त की रामकथा	श्री गणेश प्रसाद जैन	२१	९	१९७०	२४-२७
अहिंसा का विराट रूप	श्री उदय जैन	२१	९	१९७०	२८-३१
जैन आचारशास्त्र की गतिशीलता का समाज-शास्त्रीय अध्ययन	श्री धन्यकुमार राजेश	२१	१०	१९७०	३-१२
पुराण बनाम कथा साहित्य : एक प्रश्नचिन्ह	डॉ० प्रेमचन्द जैन	२१	१०	१९७०	१३-१९
प्राकृत के विकास में बिहार की देन	श्रीरंजन सूरिदेव	२१	१०	१९७०	२०-२६
भक्तामरस्तोत्रके श्लोकों की संख्या ४४या ४८	श्री अगरचन्द नाहटा	२१	१०	१९७०	२७-३१
भारतवर्ष के मूलनिवासी श्रमण	श्री गणेश प्रसाद जैन	२१	१०	१९७०	३२-३७
जिनमार्ग	श्री कस्तूरचंद ललवानी	२१	११	१९७०	३-१५
जैनसाहित्य में स्तूपनिर्माण की प्रथा	डॉ० हरिहर सिंह	२१	११	१९७०	१६-२२
पावा कहां ? गंगा के उत्तर में या दक्षिण में	मुनिश्री महेन्द्र कुमारजी 'प्रथम'	२१	११	१९७०	२३-२४
भम्तामरस्तोत्र के पाद पूर्तिरूप स्तवकाव्य	श्री अगरचन्द नाहटा	२१	११	१९७०	२५-२९
श्रमण संस्कृति की प्राचीनता	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२१	१२	१९७०	३-१२
हेल्मुथ फोन ग्लासनप और जैनधर्म	श्री सुबोध कुमार जैन	२१	१२	१९७०	१३-१७
उत्तर भारतीय शिल्प में महावीर	श्री मारुति नंदन तिवारी	२१	१२	१९७०	१८-२३
ऋषभपुत्र भरत और भारत	श्री गणेश प्रसाद जैन	२१	१२	१९७०	२४-३२
पुष्पदन्त और सूर का कृष्णलीला चित्रण	डॉ० देवेन्द्र कुमार जैन	२२	१	१९७०	३-११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
दक्षिण भारतीय शिल्प में तीर्थंकर महावीर	श्री मारुति नन्दन तिवारी	२२	१	१९७०	१२-१७
२४ तीर्थंकरों के नामों में नाथ शब्द का प्रयोग कब से	श्री अगरचन्द नाहटा	२२	१	१९७०	१८-२२
जैन-बौद्ध सम्मत कर्म सिद्धान्त	श्री रामप्रसाद त्रिपाठी	२२	१	१९७०	२३-२६
महावीर की निर्वाण भूमि पावा की स्थिति	पं० कपिलदेव गिरि	२२	१	१९७०	२७-३३
प्रवृत्ति मार्ग और निवृत्ति मार्ग	सुबोध कुमार जैन	२२	१	१९७०	३४-३६
हरिवंशपुराणकालीन समाज और संस्कृति	श्री धन्यकुमार राजेश	२२	२	१९७०	३-१३
प्राकृत 'पउमचरिय' : रामचरित	श्रीरंजन सूरिदेव	२२	२	१९७०	१४-१९
वाग्भट्टालंकार	पं० अमृतलाल शास्त्री	२२	२	१९७८	२०-२८
साधुवन्दना के रचयिता	श्री अगरचन्द नाहटा	२२	२	१९७०	२९-३२
कर्म का स्वरूप	डॉ० मोहनलाल मेहता	२२	३	१९७१	३-११
अपभ्रंश जैन साहित्य (क्रमशः)	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२२	३	१९७१	१२-१७
अध्यात्मवादियों से	पं० उदय जैन	२२	३	१९७१	१८-२४
Sarasvati in Jaina Sculpture	Dr. M. N. Tiwari	२२	३	१९७१	२७-३४
श्रीपालचरित की कथा	डॉ० देवेन्द्र कुमार शास्त्री	२२	४	१९७१	३-७
अपभ्रंश जैन साहित्य (क्रमशः)	श्री देवेन्द्र मुनि शास्त्री	२२	४	१९७१	८-१२
भक्तामरस्तोत्र की सचित्र प्रतियां	श्री अगरचन्द नाहटा	२२	४	१९७१	१३-१९
द्राविण	श्री गणेश प्रसाद जैन	२२	४	१९७१	२०-२४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
Sarasvati in Jaina Sculpture	Dr. M. N. Tiwari	२२	४	१९७१	२५-२८
प्राकृत जैन कथा साहित्य (क्रमशः)	श्री देवेन्द्र मुनि शास्त्री	२२	५	१९७१	३-१०
कर्मवाद का अन्य वाद	डॉ० मोहनलाल मेहता	२२	५	१९७१	११-२०
उड़ीसी नृत्य और जैन सम्राट खारवेल	श्री सुबोध कुमार जैन	२२	५	१९७१	२१-२२
जैन पुराणों में पुनर्जन्म की कथाएँ (क्रमशः)	श्री धन्यकुमार राजेश	२२	५	१९७१	२३-३१
प्राकृत और उसका विकास स्रोत	श्रीरंजन सूरिदेव	२२	६	१९७१	३-९
जैन पुराणों में पुनर्जन्म की कथाएँ (क्रमशः)	श्री धन्यकुमार राजेश	२२	६	१९७१	१०-१५
प्राकृत जैन कथा साहित्य	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२२	६	१९७१	१६-२१
जैन साहित्य में शिशु	श्री उदयचन्द जैन	२२	६	१९७१	२२-२९
कर्मों का फल देने वाला कम्प्यूटर	प्रो० जी० आर० जैन	२२	६	१९७१	३०-३२
आगम साहित्य में कर्मवाद	डॉ० मोहनलाल मेहता	२२	७	१९७१	४-१२
भगवान् अरिष्टनेमि की ऐतिहासिकता	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२२	७	१९७१	१३-१८
तीर्थक्षेत्र शत्रुंजय	डॉ० हरिहर सिंह	२२	७	१९७१	१९-२५
दास, दस्यु और पणि	श्री गणेश प्रसाद जैन	२२	७	१९७१	२६-३०
Sociology in Jain Literature	Dr. L. K. Bharatiya	२२	७	१९७१	३१-३७
सिरिपालचरिउ : एक मूल्यांकन	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	२२	८	१९७१	३-७
मांडव : एक प्राचीन जैनतीर्थ	श्री तेजसिंह गौड़	२२	८	१९७१	८-१२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैनदर्शन में अहिंसा	श्री प्रेमकुमार अग्रवाल	२२	८	१९७१	१३-२२
एक अप्रकाशित प्राचीन प्राकृत सूत्र या अध्ययन	श्री अगरचन्द नाहटा	२२	८	१९७१	२३-२५
Jain Influence on Shri Ramanujacharya	Shri Indu Bhushan Pandey	२२	८	१९७१	२६-३०
मोक्ष मीमांसा में जैनदर्शन का योगदान	श्री धन्यकुमार जैन	२२	९	१९७१	३-९
जैनकृष्ण साहित्य (क्रमशः)	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२२	९	१९७१	१०-१६
अजीवद्रव्य	श्री हुकुमचन्द संगवे	२२	९	१९७१	१७-२२
श्रीहेमविजयगणि और विजयप्रशस्तिमहाकाव्य	श्री उदयचन्द जैन	२२	९	१९७१	२३-२९
असुर	श्री गणेश प्रसाद जैन	२२	९	१९७१	३०-३३
जिनचन्द्रसूरिकृत क्षपक शिक्षा का विषय	श्री अगरचन्द नाहटा	२२	९	१९७१	३४-३५
पुण्य और पाप	डॉ० मोहनलाल मेहता	२२	१०	१९७१	३-७
महावैयाकरण आचार्य हेमचन्द्र	श्रीरंजन सूरिदेव	२२	१०	१९७१	८-१३
जैनकृष्ण साहित्य	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२२	१०	१९७१	१४-१९
जैनेतर दर्शनों में अहिंसा	श्री प्रेमकुमार अग्रवाल	२२	१०	१९७१	२०-२८
प्राकृत व्याकरण और भोजपुरी का 'केर' प्रत्यय (क्रमशः)	पं० कपिलदेव गिरि	२२	१०	१९७१	२९-३८
आचार्य हेमचन्द्र और कुमारपालचरित	श्री उदयचंद जैन	२२	११	१९७१	३-१०
षडावश्यक में सामायिक	श्री हुकुमचंद संगवे	२२	११	१९७१	११-१६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
प्रयाग-एक महान् जैन क्षेत्र	श्री सुबोध कुमार जैन	२२	११	१९७१	१७-१९
वहित और अहित	श्री गणेश प्रसाद जैन	२२	११	१९७१	२०-२३
प्राकृत व्याकरण और भोजपुरी का 'केर' प्रत्यय	पं० कपिलदेव गिरि	२२	११	१९७१	२४-३८
उच्चगोत्र और नीचगोत्र	डॉ० मोहनलाल मेहता	२२	१२	१९७१	३-४
चण्डकौशिक का उपसर्गस्थान योगीपहाड़ी	श्री भंवरलाल नाहटा	२२	१२	१९७१	५-८
जैनधर्म में शक्ति पूजा का स्वरूप	श्री प्रेमकुमार अग्रवाल	२२	१२	१९७१	९-१२
चतुर्विंशतिस्तव का भेद और एक अतिरिक्तगाथा	श्री अगरचन्द नाहटा	२२	१२	१९७१	१३-१७
बंगला आदि भाषाओं के सम्बन्धवाची प्रत्यय	पं० कपिलदेव गिरि	२२	१२	१९७१	१८-२९
Jain Concept of Liberation	Shri I.B. Pandey	२२	१२	१९७१	३०-३५
पौराणिक साहित्य में राजनीति	श्री धन्यकुमार राजेश	२३	१	१९७१	३-१३
णायकुमारचरिउ की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि	श्रीरंजन सूरिदेव	२३	१	१९७१	१४-१८
आचार्य हरिभद्रसूरि का दार्शनिक दृष्टिकोण	कु० सुशीला जैन	२३	१	१९७१	१९-२३
कुरलकाव्य	श्री फूलचन्द जैन 'प्रेमी'	२३	१	१९७१	२४-२९
महावीर की निर्वाण भूमि पावा की वर्तमान स्थिति	श्री कन्हैयालाल सरावगी	२३	१	१९७१	३०-३१
कर्म की मर्यादा	डॉ० मोहनलाल मेहता	२३	२	१९७१	३-५
भविसयत्तकहा तथा अपभ्रंश कथाकाव्य-कुछ प्रतिस्थापनायें	डॉ० देवेन्द्र कुमार जैन	२३	२	१९७१	६-११
जैनधर्म में उपासना	श्री प्रेमकुमार अग्रवाल	२३	२	१९७१	१२-१७
दानवीरता का कीर्तिमान-वस्तुपाल	श्री चम्पालाल सिंघई	२३	२	१९७१	१७-२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
मूलाराधना में समाधिमरण	श्री उदयचन्द जैन	२३	२	१९७१	२१-३०
अपभ्रंश चरितकाव्य तथा कथाकाव्य	डॉ० देवेन्द्र कुमार	२३	३	१९७२	३-१०
प्रमेय : एक अनुचिंतन	श्री रंजन सूरिदेव	२३	३	१९७२	११-१४
भ० नेमिनाथ का समय-एक विचारणीय समस्या	श्री अगरचन्द नाहटा	२३	३	१९७२	१५-१९
जैनों में सती प्रथा	श्री चम्पालाल सिंघई	२३	३	१९७२	२०-२१
जैन दर्शन में कर्मवाद की अवधारणा	कु० प्रमिला पाण्डेय	२३	३	१९७२	२२-२७
उज्जयिनी और जैनधर्म	तेजसिंह गौड	२३	४	१९७२	३-१२
निक्षेप में नय योजना	श्री उदयचन्द जैन	२३	४	१९७२	१३-१७
जैन मूर्तियों का क्रमिक विकास	श्री प्रेमकुमार अग्रवाल	२३	४	१९७२	१८-२१
Nature and Role of Devotion in Jaina Sadana	Shri I.B. Pandey	२३	४	१९७२	२२-२८
वासुपूज्यचरितम् - एक अध्ययन	श्री उदयचन्द जैन 'प्रभाकर'	२३	५	१९७२	३-१०
पावापुर	श्री जिनवर प्रसाद जैन	२३	५	१९७२	११-१९
लेश्या- एक विश्लेषण	कु० सुशीला सिंह	२३	५	१९७२	२०-२४
जैनतीर्थंकर और भिल्ल प्रजाति	डॉ० देवेन्द्र कुमार जैन	२३	५	१९७२	२५-२७
जैनधर्म में भक्ति का स्थान	कु० प्रमिला पाण्डेय	२३	५	१९७२	२८-३३
जैनधर्म भौगोलिक सीमा में आबद्ध क्यों ?	श्री कन्हैयालाल सरावगी	२३	५	१९७२	३४-३८
श्रमण संस्कृति में मोक्ष की अवधारणा	श्री प्रेमकुमार अग्रवाल	२३	६	१९७२	३-९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
वासुपूज्यचरित-एक अध्ययन	श्री उदयचन्द जैन	२३	६	१९७२	१०-१७
गुप्त सम्राटों का धर्म समभाव	श्री चम्पालाल सिंघई	२३	६	१९७२	१८-२०
परम्परागत पावा ही भगवान् महावीर की निर्वाण भूमि	श्री बलवन्द सिंह मेहता	२३	६	१९७२	२१-३०
बनारसीदास का रसदर्शन	श्री गणेश प्रसाद जैन	२३	६	१९७२	३१-४१
अन्तरायकर्म का कार्य	डॉ० मोहनलाल मेहता	२३	७	१९७२	३-५
श्रमण संस्कृति और नारी	डॉ० कोमलचन्द जैन	२३	७	१९७२	६-१०
जैनपदों में रागों का प्रयोग	श्री प्यारेलाल श्रीमाल	२३	७	१९७२	११-१४
जैनग्रन्थों और पुराणों के भौगोलिक वर्णन का तुलनात्मक अध्ययन	श्री अगरचन्द नाहटा	२३	७	१९७२	१५-२०
प्रसाद और तीर्थंकर	डॉ० देवेन्द्र कमार जैन	२३	७	१९७२	२१-२४
पद्मचरित और हरिवंशपुराण	श्री रमेशचन्द जैन	२३	८	१९७२	३-७
जैनधर्म : वैदिक धर्म के संदर्भ में	श्रीरंजन सूरिदेव	२३	८	१९७२	८-१२
कुवलयमालाकहा में उल्लिखित कडंग, चन्द्र और तार द्वीप	श्री प्रेमसुमन जैन	२३	८	१९७२	१३-१८
सात लाख श्लोक परिमित संस्कृत साहित्य के निर्माता जैनाचार्य विजयलावण्यसूरि	श्री अगरचन्द नाहटा	२३	८	१९७२	१९-२३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैनधर्म : एक अवलोकन	डॉ० के० एच० त्रिवेदी	२३	८	१९७२	२४-२८
अपभ्रंश का विकासक्रम तथा जैन साहित्यकारों की देन	श्रीमती मीना भारती	२३	८	१९७२	२९-३४
कर्मयोगी कृष्ण के आगामी भव	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२३	९	१९७२	३-९
वेदोत्तरकालीन आत्मविद्या और जैनधर्म	डॉ० अजित शुकदेव	२३	९	१९७२	१०-१६
प्राणप्रिय काव्य के रचयिता व रचनाकाल	श्री अगरचन्द नाहटा	२३	९	१९७२	१७-२०
गर्भापहरण- एक समस्या	डॉ० रतिलाल म० शाह	२३	९	१९७२	२१-२५
भगवान् महावीर के निर्वाण का २५००वां वर्ष	डॉ० गोपीचन्द धाड़ीवाल	२३	९	१९७२	२६-३१
श्रमण और वैदिक साहित्य में स्वर्ग और नरक	श्री धन्यकुमार जैन	२३	१०	१९७२	३-९
ग्वालियर के तोमरकालीन दानवीर	श्री चम्पालाल सिंघई	२३	१०	१९७२	१०-१३
कल्चुरीकालीन भ० शांतिनाथ की प्रतिमाएँ	श्री शिवकुमार नामदेव	२३	१०	१९७२	१४-१५
श्रमण संस्कृति की मूल संवेदना	डॉ० देवेन्द्र कुमार जैन	२३	१०	१९७२	१६-१७
जैनदर्शन में स्याद्वाद और उसका महत्त्व	श्री रामजी	२३	१०	१९७२	१८-२२
अनासक्ति	डॉ० अजित शुकदेव	२३	१०	१९७२	२३-२६
गर्भापहरण सम्बन्धी कुछ बातें	श्री अगरचन्द नाहटा	२३	१०	१९७२	२७-२८
Jaina Temples in Karanataka	Dr. K. B. Shastri	२३	१०	१९७२	२९-३०
श्रमण भगवान् महावीर	पं० बेचरदास दोशी	२३	११	१९७२	३-९
पद्मचरित की भाषा और शैली	श्री रमेशचन्द्र जैन	२३	११	१९७२	१०-१८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन और वैष्णव काव्य परम्परा में राम	श्री रामदयाल जैन	२३	११	१९७२	१९-२२
महो० समयसुन्दर का एक संग्रहग्रंथ : गाथासहस्त्री	श्री अगरचन्द नाहटा	२३	११	१९७२	२३-२८
प्राचीन जैन साहित्य में उत्सव महोत्सव	डॉ० झिनकू यादव	२३	११	१९७२	२९-३३
विश्वेश्वरकृत श्रृंगारमंजरी सट्टक का अनुवाद (क्रमशः)	डॉ० के० ऋषभ चन्द्र	२३	११	१९७२	३४-३८
पउमचरिउ-परंपरा, संदर्भ और शिल्प	डॉ० देवेन्द्र कुमार जैन	२३	१२	१९७२	३-७
जैन तर्क शास्त्र में सन्निकर्ष प्रमाणवाद	श्री लालचन्द जैन	२३	१२	१९७२	८-१५
जैन शिल्पकला और मथुरा	कु० सुधा जैन	२३	१२	१९७२	१६-१९
विश्वेश्वरकृत श्रृंगारमंजरी सट्टक का अनुवाद	डॉ० के० ऋषभ चन्द्र	२३	१२	१९७२	२०-२३
गर्भापहरण -सम्बन्धी स्पष्टीकरण	श्री रतिलाल म० शाह	२३	१२	१९७२	२४-२७
भगवान् अरिष्टनेमि और कर्मयोगी कृष्ण	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२४	१	१९७२	३-६
वर्ण विचार	श्री रमेशचन्द्र जैन	२४	१	१९७२	७-११
जैन एवं न्याय दर्शन में कर्म सिद्धान्त	श्री प्रेमकुमार अग्रवाल	२४	१	१९७२	१२-१९
षट्दर्शनसमुच्चय के लघुटीकाकार सोमतिलकसूरि	श्री अगरचन्द नाहटा	२४	१	१९७२	२०-२३
समराइच्चकहा में चार्वाक दर्शन	श्री झिनकू यादव	२४	१	१९७२	२४-२७
विश्वेश्वरकृत शृंगारमंजरीसट्टक का अनुवाद (क्रमशः)	डॉ० के० आर० चन्द्र	२४	१	१९७२	२८-३२
प्रमाण स्वरूप विमर्श (क्रमशः)	डॉ० सुदर्शनलाल जैन	२४	२	१९७२	३-१५
राजगृह	श्री गणेश प्रसाद जैन	२४	२	१९७२	१६-२७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
क्या कृष्णगच्छ की स्थापना सम्वत् १३९१ में हुई थी ?	श्री अगरचन्द नाहटा	२४	२	१९७२	२८-२९
विश्वेश्वरकृत शृंगारमंजरीसट्टक का अनुवाद (क्रमशः)	डॉ० के० आर० चन्द्र	२४	२	१९७२	३०-३४
मिथ्यात्त्व इन जैनिज्म एण्ड शंकर : ए कम्परेटिव स्टडी	ललित किशोरलाल श्रीवास्तव	२४	२	१९७२	३५-४१
प्रमाण स्वरूप विमर्श	डॉ० सुदर्शनलाल जैन	२४	३	१९७३	३-११
क्षत्रचूड़ामणि में उल्लिखित कतिपय नीतिकाव्य	श्री उदयचन्द जैन 'प्रभाकर'	२४	३	१९७३	१२-२१
त्रिरत्न : मोक्ष के सोपान	श्रीरंजन सूरिदेव	२४	३	१९७३	२२-२६
जैनदर्शन में ज्ञान का स्वरूप	श्री रामजी सिंह	२४	३	१९७३	२७-३२
विश्वेश्वरकृत शृंगारमंजरी-सट्टक का अनुवाद (क्रमशः)	डॉ० के० आर० चन्द्र	२४	३	१९७३	३३-३५
गोम्मट आइडोल्स ऑफ कर्णाटक	पं० के० भुजबलि शास्त्री	२४	३	१९७२	३६-३८
पुनर्जन्मसिद्धान्त की व्यापकता	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२४	४	१९७३	३-१०
पउमचरिउ और रामचरितमानस : एक तुलनात्मक अध्ययन	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	२४	४	१९७३	११-१४
आषुतोष म्यूजियम में नागौर का एक सचित्र विज्ञप्तिपत्र	श्री अगरचन्द भंवरलाल नाहटा	२४	४	१९७३	१५-१९
प्राचीन जैनग्रन्थों में कृषि	डॉ० अच्छेलाल यादव	२४	४	१९७३	२४-२७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
राष्ट्रभाषा के आद्यजनक भगवान् महावीर	डॉ० रतिलाल म० शाह	२४	४	१९७३	२८-३१
विश्वेश्वरकृत शृंगारमंजरी-सट्टक का अनुवाद (क्रमशः)	डॉ० के० आर० चन्द्र	२४	४	१९७३	३२-३७
पद्मचरित और उपमचरिउ	श्री रमेशचन्द जैन	२४	५	१९७३	३-७
जैन धर्म की प्राचीनता और विशेषता	कुमारी मंजुला मेहता	२४	५	१९७३	८-१५
सर्वांगसुन्दरी कथानक	डॉ० के० आर० चन्द्र	२४	५	१९७३	१६-२१
ग्यारह गणधर सम्बन्धी ज्ञातव्य बातें	श्री अगरचन्द भंवरलाल नाहटा	२४	५	१९७३	२२-२६
क्या स्त्रियां तीर्थंकर के सामने बैठती नहीं ?	श्री नन्दलाल मारु	२४	५	१९७३	२७-३०
जैनदर्शन में कर्म का स्वरूप	डॉ० राधेश्याम श्रीवास्तव	२४	५	१९७३	३१-३५
विश्वेश्वरकृत श्रृंगारमंजरी सट्टक का अनुवाद (क्रमशः)	डॉ० के० आर० चन्द्र	२४	५	१९७३	३६-३८
महावीर और उनके सिद्धान्त	श्री देवेन्द्र कुमार जैन	२४	६	१९७३	३-८
जैन परम्परा में ध्यान-योग	श्री धन्यकुमार राजेश	२४	६	१९७३	९-१६
प्राचीन भारत में अपराध और दंड	डॉ० प्रमोद मोहन पाण्डेय	२४	६	१९७३	१७-२१
विश्वेश्वरकृत श्रृंगारमंजरी सट्टक का अनुवाद (क्रमशः)	डॉ० के० आर० चन्द्र	२४	६	१९७३	२२-२६
जैन मिस्टीसिज्म (क्रमशः)	प्रो० यू० ए० असरानी	२४	६	१९७३	२७-३८
भारतीय साहित्य की रमणीय काव्य रचना: गउडवहो	श्रीरंजन सूरिदेव	२४	७	१९७३	३-७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैनदर्शन में योग का प्रत्यय	श्री प्रेमकुमार अग्रवाल	२४	७	१९७३	८-१२
कन्नड़ में जैन साहित्य	पं० के० भुजबली शास्त्री	२४	७	१९७३	१३-२०
भक्तामर की एक और सचित्रप्रति	श्री अगरचंद नाहटा	२४	७	१९७३	२१-२४
विश्वेश्वरकृत श्रृंगारमंजरी सट्टक का अनुवाद (क्रमशः)	डॉ० के० आर० चन्द्र	२४	७	१९७३	२५-३०
स्वयंभू की गणधर परम्परा	डॉ० देवेन्द्र कुमार जैन	२४	७	१९७३	३१
जैन मिस्टीसिज्म	प्रो० यू० ए० असरानी	२४	७	१९७३	३२-४१
पश्चिम भारत का जैन संस्कृत साहित्य को योगदान	श्री प्रेमसुमन जैन	२४	८	१९७३	३-१६
जैन संस्कृति के प्रतीक मौर्यकालीन अभिलेख	डॉ० पुष्पमित्र जैन	२४	८	१९७३	१७-२५
तीर्थंकर और दुःखवाद	डॉ० देवेन्द्र कुमार जैन	२४	८	१९७३	२६-२८
विश्वेश्वरकृत श्रृंगारमंजरी सट्टक का अनुवाद (क्रमशः)	डॉ० के० आर० चन्द्र	२४	८	१९७३	२९-३४
Prakrit Bhasyas	Dr. M.L. Mehta	२४	८	१९७३	३५-३६
आगमों में राजा एवं राजनीति पर स्त्रियों का प्रभाव	डॉ० प्रमोद मोहन पाण्डेय	२४	९	१९७३	३-८
प्राचीन भारतवर्ष में गणतंत्र का आदर्श	श्री कन्हैयालाल सरावगी	२४	९	१९७३	९-१२
अद्धमागहाए भाषाए भासंति अरिहा	श्री नन्दलाल मारु	२४	९	१९७३	१३-१५
विश्वेश्वरकृत श्रृंगारमंजरी सट्टक का अनुवाद	डॉ० के० आर० चन्द्र	२४	९	१९७३	१६-१९
Jaina View of Kevalin	Dr. L.K. L. Srivastava	२४	९	१९७३	२०-३०
भारतीय कथा साहित्य में पद्मचरित का स्थान	श्री रमेशचन्द्र जैन	२४	१०	१९७३	३-११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन धर्म में भावना	डॉ० अजित शुकदेव	२४	१०	१९७३	१२-१७
दान, शील, तप, भाव के रचयिता और दानकुलक पाठ	श्री अगरचन्द नाहटा	२४	१०	१९७३	१८-२४
महाकवि स्वयंभू के काव्य विचार	डॉ० देवेन्द्र कुमार जैन	२४	१०	१९७३	२५-२७
भारत का प्राचीन जैन केन्द्र : कसरावद	डॉ० मनोहरलाल दलाल	२४	१०	१९७३	२८-३१
जैन दर्शन में मोक्षोपाय	डॉ० रामजी सिंह	२४	१०	१९७३	३२-३६
आत्मा : बौद्ध एवं जैन दृष्टि	श्री कन्हैयालाल सरावगी	२४	११	१९७३	३-९
महाकथा कुवलयमाला के रचनाकार का उद्देश्य और पात्रों का आयोजन	डॉ० के० आर० चन्द्र	२४	११	१९७३	१०-१३
दक्षिण भारत में जैन धर्म, साहित्य और तीर्थ क्षेत्र	श्री गणेश प्रसाद जैन	२४	११	१९७३	१४-१८
पद्मचरित में शकुनविद्या	डॉ० रमेशचन्द्र जैन	२४	११	१९७३	२९-३५
वंडगच्छ के युगप्रधान दादा मुनिशेखरसूरि	श्री अगरचन्द नाहटा	२४	११	१९७३	३६-३९
महाकवि स्वयंभू का प्रकृति दर्शन	डॉ० देवेन्द्र कुमार शास्त्री	२४	१२	१९७३	३-५
प्राचीन भारतीय श्रमण एवं श्रमणचर्या	डॉ० झिनकू यादव	२४	१२	१९७३	६-१२
षड्द्रव्य - एक परिचय	श्री रमेशमुनि शास्त्री	२४	१२	१९७३	१३-१५
जैन मंदिर व स्तूप	कु० सुधा जैन	२४	१२	१९७३	१६-१९
दशार्ण में जैनधर्म	डॉ० मनोहर लाल दलाल	२४	१२	१९७३	२०-२४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैनधर्म में तांत्रिक साधना का प्रवेश	डॉ० रतिलाल म० शाह	२४	१२	१९७३	२५-३०
स्था० जैन साध्वी संघ का पारम्परिक इतिहास	श्री अजित मुनि	२४	१२	१९७३	३१-३२
स्वयंभू और उनका पउमचरिउ	डॉ० देवेन्द्र कुमार जैन	२५	१-२	१९७३	३-१३
उड़ीसा में जैनकला एवं प्रतिमा-विज्ञान की राजनैतिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि	श्री मारुतिनन्दन प्रसाद तिवारी	२५	१-२	१९७३	१४-२१
स्याद्वाद-एक पर्यवेक्षण	श्री रमेशमुनि शास्त्री	२५	१-२	१९७३	२२-२८
भट्टारक सकलकीर्ति और उनकी सद्भाषितावली	डॉ० रमेशचन्द्र जैन	२५	१-२	१९७३	२९-३४
समराइच्चकहा की संक्षिप्त कथावस्तु और उसका सांस्कृतिक महत्त्व	डॉ० झिनकू यादव	२५	१-२	१९७३	३५-४२
तीर्थंकर-प्रतिमाओं का उद्भव और विकास	श्री हरिहर सिंह	२५	१-२	१९७३	४३-५२
Contribution of Jainism to Indian Philosophy	Dr. M.L. Mehta	२५	१-२	१९७३	५३-५८
प्राकृत के प्रबन्ध-काव्य : संस्कृत-प्रबन्ध काव्यों के सन्दर्भ में	श्रीरंजन सूरिदेव	२५	३	१९७४	३-१०
जैन सिद्धान्त में 'योग' और 'आस्व'	आचार्य अनन्त प्रसाद जैन	२५	३	१९७४	११-१९
भगवान् महावीर के युग का जैन सम्राट् महाराजा चेटक	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२५	३	१९७४	२०-२४
आचार्य भद्रबाहु और हरिभद्र की अज्ञात रचनाएँ	श्री अगरचन्द नाहटा	२५	३	१९७४	२५-३१
मृत्यु एवं संलेखना	डॉ० हुकुमचन्द संगवे	२५	३	१९७४	३२-३९
महाकवि स्वयंभू और नारी	डॉ० देवेन्द्र कुमार जैन	२५	४	१९७४	३-७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन दर्शन में पुद्गल द्रव्य	डॉ० रमेशचन्द्र जैन	२५	४	१९७४	८-१५
पावा: कसौटी पर	श्री कन्हैयालाल सरावगी	२५	४	१९७४	१६-२३
तीर्थंकर प्रतिमाओं की विशेषताएँ	श्री शिवकुमार नामदेव	२५	४	१९७४	२४-२६
महावीर-सम्बन्धी साहित्य	कु० मंजुला मेहता	२५	४	१९७४	२७-३२
जैन कर्म सिद्धान्त	डॉ० प्रमोद कुमार	२५	५	१९७४	३-९
निक्षेपवाद : एक परिदृष्टि	श्री रमेश मुनि शास्त्री	२५	५	१९७४	१०-१५
महावीर का धर्म : सर्वोदय-तीर्थ	आचार्य राजकुमार जैन	२५	५	१९७४	१६-२०
महावीर और उनकी देशना	श्री जमनालाल जैन	२५	५	१९७४	२१-२४
जैनधर्म में नीतिधर्म और साधना	श्री रामजी सिंह	२५	५	१९७४	२५-३०
प्राचीन भारत में जैन चित्रकला	कु० सुधा जैन	२५	५	१९७४	३१-३४
प्रमाणवाद : एक पर्यवेक्षण	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२५	६	१९७४	३-१३
पं० जोधराज कासलीवाल और उनका सुखविलास	डॉ० रमेश चन्द्र जैन	२५	६	१९७४	१४-१७
विदिशा में प्राप्त जैन प्रतिमाएँ और रामगुप्त की ऐतिहासिकता	श्री शिवकुमार नामदेव	२५	६	१९७४	१८-२३
पउमचरिउ में नारी	डॉ० देवेन्द्र कुमार जैन	२५	६	१९७४	२४-२७
कुंभारिया तीर्थं का कलापूर्ण महावीर मंदिर	श्री अगरचन्द नाहटा	२५	६	१९७४	२८-३१
पच्चीसवीं निर्वाण-शताब्दी के आयोजनों में आगम-वाचना भी हो	श्री नन्दलाल मारु	२५	६	१९७४	३२-३५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
पद्मचरित : एक महाकाव्य	डॉ० रमेश चन्द्र जैन	२५	७	१९७४	३-६
प्रमाणवाद : एक पर्यवेक्षण	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२५	७	१९७४	७-१८
कलचुरि-नरेश और जैनधर्म	श्री शिवकुमार नामदेव	२५	७	१९७४	१९-२२
जैनदर्शन में सर्वज्ञता का स्वरूप	श्री एल० के० एल० श्रीवास्तव	२५	७	१९७४	२३-२८
संडेरगच्छीय ईश्वरसूरि की प्राप्त एवं अप्राप्त रचनाएँ	श्री अगरचन्द नाहटा	२५	७	१९७४	२९-३२
श्रमण धर्म	डॉ० मोहनलाल मेहता	२५	८	१९७४	१८-२३
द्विसन्धानमहाकाव्य में राज्य और राजा का स्वरूप	डॉ० रमेशचन्द्र जैन	२५	८	१९७४	८-१२
प्रमाणवाद : एक पर्यवेक्षण	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२५	८	१९७४	१३-२२
धुबेला संग्रहालय की अद्वितीय जैन प्रतिमाएँ	श्री शिवकुमार नामदेव	२५	८	१९७४	२४-२७
वर्तमान युग के संदर्भ में भगवान् महावीर के उपदेश	कन्हैयालाल सरावगी	२५	८	१९७४	२८-३४
पद्मचरित में वस्त्र और आभूषण	डॉ० रमेशचन्द्र जैन	२५	९	१९७४	३-१०
पुराणों में ऋषभदेव	डा० मनोहरलाल दलाल	२५	९	१९७४	११-१४
जैन साहित्य और संस्कृति का जनजीवन	कु० सुधा जैन	२५	९	१९७४	१५-१८
Jain and Buddhist Tradition Regarding the origins of Ajatsattu's war with the Vajjis- A New Interpretation	Dr. J. P. Sharma	२५	९	१९७४	२७-३५
निश्चय और व्यवहार : पुण्य और पाप	पं० दलसुख मालवणिया	२५	१०	१९७४	३-१०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
नालंदा या नागलंदा	पं० बेचरदास दोशी	२५	१०	१९७४	११-१३
पुद्गल : एक विवेचन	मुनि बुद्धमल्ल जी	२५	१०	१९७४	१४-१८
कलचुरि-कला में जैन शासन देवियों की मूर्तियों	श्री शिवकुमार नामदेव	२५	१०	१९७४	२४-२६
Jain and Buddhist Tradition Regarding the origins of Ajatsattu's war with the Vajjis- A New Interpretataion	Dr. J. P. Sharma	२५	१०	१९७४	२७-३६
अपभ्रंश और देशीतत्त्व	डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन	२५	११	१९७४	३-८
वराङ्गचरित में राजनीति	डॉ. रमेश चन्द्र जैन	२५	११	१९७४	८-१६
प्राचीन ऐतिहासिक नगरी : जूना (बाड़मेर)	श्री भूरचन्द जैन	२५	११	१९७४	१७-२१
जैन धर्म में तप का स्वरूप और महत्त्व	श्री रामजी सिंह	२५	११	१९७४	२२-२७
निश्चय और व्यवहार	पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री	२५	१२	१९७४	३-८
वीर हनुमान : स्वयंभू कवि की दृष्टि में	श्री श्रीरंजन सूरिदेव	२५	१२	१९७४	९-१५
जैन शिल्प का एक विशिष्ट प्रकार : सहस्रकूट	श्री अगरचंद नाहटा	२५	१२	१९७४	१६-२१
जैन कला-तीर्थ : खजुराहो	श्री शिवकुमार नामदेव	२५	१२	१९७४	२२-२७
व्यक्ति पहले या समाज	श्री कन्हैयालाल सरावगी	२५	१२	१९७४	२८-३१
भगवान् महावीर की मंगल विरासत	पं० सुखलाल जी	२६	१-२	१९७४	३-९
श्रमण भगवान् महावीर	पं० बेचरदास दोशी	२६	१-२	१९७४	१०-१७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
भगवान् महावीर : समता-धर्म के प्ररूपक	पं० दलसुख मालवणिया	२६	१-२	१९७४	१८-२७
आगमिक साहित्य में महावीर-चरित्र	डॉ० कोमलचन्द जैन	२६	१-२	१९७४	२८-३३
महावीर क्षत्रिय पुत्र थे या ब्राह्मण पुत्र?	डॉ० मोहनलाल मेहता	२६	१-२	१९७४	३४-३८
भारतीय पुरातत्त्व तथा कला में भगवान् महावीर	श्री शिवकुमार नामदेव	२६	१-२	१९७४	३८-४६
कुम्भारिया का महावीर-मन्दिर	श्री हरिहर सिंह	२६	१-२	१९७४	४७-५२
महावीर-सम्बन्धी एक अज्ञात संस्कृत चरित्र	श्री अगरचन्द नाहटा	२६	१-२	१९७४	५२-५६
महावीरोपदिष्ट परिग्रह परिमाण व्रत	श्री जमनालाल जैन	२६	१-२	१९७४	५७-६२
भगवान् महावीर का तत्त्व ज्ञान	कु० मंजुला मेहता	२६	१-२	१९७४	६३-६७
कुवलयमाला की मुख्य कथा और अवान्तर कथाएँ (क्रमशः)	डॉ० के० आर० चन्द्र	२६	३	१९७५	३-८
जैन दर्शन में प्रमाण का स्वरूप (क्रमशः)	श्री रमेश मुनि शास्त्री	२६	३	१९७५	९-१३
जैन दर्शन में नारी मुक्ति	कु० चन्द्रलेखा पंत	२६	३	१९७५	१४-१८
जैनधर्म आस्तिक या नास्तिक? (क्रमशः)	श्री कन्हैयालाल सरावगी	२६	३	१९७५	१९-२५
जैनागम-पदानुक्रम (क्रमशः)	डॉ० मोहनलाल मेहता एवं श्री जमनालाल जैन	२६	३	१९७५	२६-३३
कुवलयमाला की मुख्य कथा और अवान्तर कथाएँ(क्रमशः)	डॉ० के० आर० चन्द्र	२६	४	१९७५	३-८
जैन दर्शन में प्रमाण का स्वरूप (क्रमशः)	श्री रमेश मुनि शास्त्री	२६	४	१९७५	९-१३
जैन दर्शन में मोक्ष का स्वरूप	डॉ० प्रमोद कुमार	२६	४	१९७५	१४-२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैनधर्म आस्तिक या नास्तिक?	श्री कन्हैयालाल सरावगी	२६	४	१९७५	२१-२५
जैनागम-पदानुक्रम (क्रमशः)	डॉ० मोहनलाल मेहता एवं श्री जमनालाल जैन	२६	४	१९७५	२६-३०
जैन दर्शन में बन्ध का स्वरूप : वैज्ञानिक अवधारणाओं के सन्दर्भ में	श्री अनिलकुमार गुप्त	२६	५	१९७५	३-९
मरुधरा का ऐतिहासिक जैनतीर्थ : नाकोड़ा	श्री भूरचन्द जैन	२६	५	१९७५	१०-१५
जैन दर्शन में प्रमाण का स्वरूप (क्रमशः)	श्री रमेशमुनि शास्त्री	२६	५	१९७५	१६-२२
जैन न्याय दर्शन : समन्वय का मार्ग	श्री रमेशचन्द्र जैन	२६	५	१९७५	२३-२७
जैनागम-पदानुक्रम (क्रमशः)	डॉ० मोहनलाल मेहता एवं श्री जमनालाल जैन	२६	५	१९७५	२८-३१
मल्लिषेण और उनकी स्याद्वादमंजरी	डॉ० बशिष्ठ नारायण सिन्हा	२६	६	१९७५	३-६
जैन दर्शन में प्रमाण का स्वरूप (क्रमशः)	श्री रमेश मुनि शास्त्री	२६	६	१९७५	७-९
कुवलयमाला की मुख्य कथा और अवान्तर कथाएँ (क्रमशः)	डॉ० के० आर० चन्द्र	२६	६	१९७५	१०-११
महावीर विवाहित थे या अविवाहित?	श्री रतिलाल म० शाह	२६	६	१९७५	१२-१६
राजस्थान में महावीर के दो उपसर्ग स्थल	श्री अगरचन्द नाहटा	२६	६	१९७५	१७-२०
जैनागम-पदानुक्रम (क्रमशः)	डॉ० मोहनलाल मेहता एवं श्री जमनालाल जैन	२६	६	१९७५	२१-२५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
Problem of Suffering as Conceived in Jainism	Dr. B.N. Tripathi	२६	६	१९७५	२६-२९
वरांगचरित में अठारह श्रेणियों के प्रधान : एक विश्लेषण	डॉ० रमेशचन्द्र जैन	२६	७	१९७५	३-८
सिरोही के प्राचीन जैन मन्दिर	श्री भूरचन्द जैन	२६	७	१९७५	९-१२
जैन धर्म में सरस्वती	श्रीमती सुधा जैन	२६	७	१९७५	१३-१४
जैन दर्शन में प्रमाण का स्वरूप (क्रमशः)	श्री रमेशमुनि शास्त्री	२६	७	१९७५	१५-१८
कुवलयमाला की मुख्य कथा और अवान्तर कथाएँ (क्रमशः)	डॉ० के० आर० चन्द्र	२६	७	१९७५	१९-२१
जैनागम-पदानुक्रम (क्रमशः)	डॉ० मोहनलाल मेहता एवं श्री जमनालाल जैन	२६	७	१९७५	२२-२६
Problem of Suffering as Conceived in Jainism	Dr. B.N. Tripathi	२६	७	१९७५	२७-३२
श्रमण-साहित्य में वर्णित विविध सम्प्रदाय	डॉ० भागचन्द्र जैन 'भास्कर'	२६	८	१९७५	३-१३
भगवान् महावीर की निर्वाण-भूमि- कौन सी पावा	श्री रतिलाल म० शाह	२६	८	१९७५	१४-१८
कुवलयमाला की मुंख्य कथा और अवान्तर कथाएँ (क्रमशः)	डॉ० के० आर० चन्द्र	२६	८	१९७५	१९-२२
जैन दर्शन में प्रमाण का स्वरूप	श्री रमेशमुनि शास्त्री	२६	८	१९७५	२३-२९
जैनागम-पदानुक्रम (क्रमशः)	डॉ० मोहनलाल मेहता एवं श्री जमनालाल जैन	२६	८	१९७५	३०-३२
मूलाचार में मुनि की आहार-चर्या	श्री फूलचन्द जैन 'प्रेमी'	२६	९	१९७५	३-१३
हिन्दी काव्यों में महावीर	श्री प्रेमचन्द रावका	२६	९	१९७५	१४-२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
कुवलयमाला की मुख्य कथा और अवान्तर कथाएँ	डॉ० के० आर० चन्द्र	२६	९	१९७५	२१-२५
श्रीमालपुराण में भ० महावीर और गणधर गौतम का विकृत वर्णन	श्री अगरचन्द नाहटा	२६	९	१९७५	२६-२८
मेड़ता-फलौदी पार्श्वनाथ तीर्थ	श्री भूरचन्द जैन	२६	९	१९७५	२९-३३
भरतेशवैभव में प्रतिपादित सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था (क्रमशः)	श्री सुपार्श्वकुमार जैन	२६	१०	१९७५	३-८
भगवान् महावीर का ईश्वरवाद	डॉ० बशिष्ठ नारायण सिन्हा	२६	१०	१९७५	९-१२
आचार्य हेमचन्द्र: जीवन, व्यक्तिव एवं कृतित्व	श्री अभयकुमार जैन	२६	१०	१९७५	१३-१८
गीता के राजस्थानी अनुवादक जैनकवि थिरपाल	श्री अगरचन्द नाहटा	२६	१०	१९७५	१९-२३
The Iconography of the Jaina yakshini Chakresvari	Shri M.N. P. Tiwari	२६	१०	१९७५	२४-३३
भरतेशवैभव में प्रतिपादित सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था	श्री सुपार्श्वकुमार जैन	२६	११	१९७५	३-८
जैन साधना-पद्धति में सम्यग्दर्शन (क्रमशः)	श्री रमेशमुनि शास्त्री	२६	११	१९७५	९-१२
जैन रास की दुर्लभ हस्तलिखित प्रति: विक्रम लीलावती चौपाई	डॉ० सुरेन्द्रकुमार आर्य	२६	११	१९७५	१३-१४
कारीतलाई की जैन द्विमूर्तिका प्रतिमाएँ	श्री शिवकुमार नामदेव	२६	११	१९७५	१५-१९
जैनकवि जटमल कृत प्रेमविलासकथा	श्री अशोककुमार मिश्र	२६	११	१९७५	२०-२३
शिल्पकला एवं प्राकृतिक वैभव का प्रतीक : जैसलमेर का अमर सागर	श्री भूरचन्द जैन	२६	११	१९७५	२४-२७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन साधना-पद्धति में सम्यग्दर्शन्	श्री रमेशमुनि शास्त्री	२६	१२	१९७५	३-६
श्रावक में षट्कर्म	डॉ० रमेशचन्द्र जैन	२६	१२	१९७५	७-१३
मानतुंगसूरिरचित पंचपरमेष्ठिस्तोत्र	श्री अगरचन्द नाहटा	२६	१२	१९७५	१४-१७
जैन सरस्वती हंसवाहना या मयूरवाहना ?	श्री शिवकुमार नामदेव	२६	१२	१९७५	१८-२०
हीराणंदसूरि का विद्याविलास और उस पर आधारित रचनाएँ	श्री अशोककुमार मिश्र	२६	१२	१९७५	२१-२६
जैन दर्शन का स्याद्वाद सिद्धान्त	श्री अभयकुमार जैन	२७	१	१९७५	३-१४
जैन साहित्य में जनपद	डॉ० अच्छेलाल	२७	१	१९७५	१५-२४
ब्राह्मी लिपि और ऋषभनाथ	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	२७	१	१९७५	२५-२८
जैनागम-पदानुक्रम (क्रमशः)	डॉ० मोहनलाल मेहता एवं श्री जमनालाल जैन	२७	१	१९७५	२९-३१
संस्कृत और प्राकृत का समानान्तर अध्ययन	श्री श्रीरंजन सूरिदेव	२७	२	१९७५	३-८
जालोर में महावीर-मन्दिर की शिल्प सामग्री का मूर्ति-वैज्ञानिक अध्ययन	श्री मारूति नन्दन प्र.तिवारी	२७	२	१९७५	९-१७
जैनशास्त्रों में वर्णित १८ श्रेणियों का उल्लेख	श्री ज्ञानचन्द	२७	२	१९७५	१८-२१
विक्रमलीलावतीचौपाईविषयक विशेष ज्ञातव्य	श्री अगरचन्द नाहटा	२७	२	१९७५	२२-२३
जैनागम-पदानुक्रम (क्रमशः)	डॉ० मोहनलाल मेहता एवं श्री जमनालाल जैन	२७	२	१९७५	२४-२७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
Latitude of the Moon as determined in Jaina Astronomy	Dr. S.D. Sharma and Shri S.S. Lishk	२७	२	१९७५	२८-३५
जैन तर्क-शास्त्र में बौद्ध प्रत्यक्ष प्रमाणवाद (क्रमशः)	श्री लालचन्द जैन	२७	३	१९७६	३-८
महाकवि पुष्पदंत की भक्ति चेतना	डॉ० देवेन्द्र कुमार जैन	२७	३	१९७६	९-१४
श्रमण-धर्म : एक विश्लेषण	श्री रमेशमुनि शास्त्री	२७	३	१९७६	१५-१८
जैन आगमों में जननी एवं दीक्षा	डॉ० कोमलचन्द जैन	२७	३	१९७६	१९-२२
विख्यात जैन तीर्थ: प्रभास पाटन	श्री भूरचन्द जैन	२७	३	१९७६	२३-२६
जैनागम-पदानुक्रम (क्रमशः)	डॉ० मोहनलाल मेहता एवं श्री जमनालाल जैन	२७	३	१९७६	२७-३०
पुष्पदन्त का कृष्ण-काव्य : एक अनुशीलन (क्रमशः)	कु० प्रेमलता जैन	२७	४	१९७६	३-९
जैन तर्क शास्त्र में बौद्ध प्रत्यक्ष प्रमाणवाद (क्रमशः)	श्री लालचन्द जैन	२७	४	१९७६	१०-१५
जैन राजनीति में दूतों और गुप्तचरों का स्वरूप (क्रमशः)	डॉ० रमेशचन्द्र जैन	२७	४	१९७६	१६-२४
जैन दर्शन में बंध और मुक्ति	श्री हरेराम सिंह	२७	४	१९७६	२५-३०
जैनागम-पदानुक्रम (क्रमशः)	डॉ० मोहनलाल मेहता एवं श्री जमनालाल जैन	२७	४	१९७६	३१-३३
पुष्पदन्त का कृष्ण-काव्य : एक अनुशीलन	कु० प्रेमलता जैन	२७	५	१९७६	३-९
प्राकृत भद्रबाहु संहिता का अर्धकाण्ड	श्री अगरचन्द नाहटा	२७	५	१९७६	१०-१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन तर्क शास्त्र में बौद्ध प्रत्यक्ष प्रमाणवाद (क्रमशः)	श्री लालचन्द जैन	२७	५	१९७६	१५-१९
चन्दन-मलयागिरि	पं० अशोककुमार मिश्र	२७	५	१९७६	२०-२५
दिगम्बर रहना क्या महावीर का आचार था?	श्री रतिलाल म० शाह	२७	५	१९७६	२६-३०
जैनागम-पदानुक्रम (क्रमशः)	डॉ० मोहनलाल मेहता एवं श्री जमनालाल जैन	२७	५	१९७६	३१-३४
श्रमण-आचार: एक परिचय	श्री रमेशमुनि शास्त्री	२७	६	१९७६	३-७
जैनधर्म एवं बौद्धधर्म-परस्पर पूरक	डॉ० कोमलचन्द जैन	२७	६	१९७६	८-११
जैन तर्कशास्त्र में बौद्ध प्रत्यक्ष प्रमाणवाद	श्री लालचन्द जैन	२७	६	१९७६	१२-२०
मूर्त-अंकनों में तीर्थंकर महावीर के जीवन-दृश्य	श्री मारुति नन्दन प्र० तिवारी	२७	६	१९७६	२१-२५
राजस्थान में महावीर-मन्दिर	श्री अगरचन्द नाहटा	२७	६	१९७६	२६-२८
जैनागम-पदानुक्रम (क्रमशः)	डॉ० मोहनलाल मेहता एवं श्री जमनालाल जैन	२७	६	१९७६	२९-३१
वैशाली का सन्त राजकुमार	श्री कन्हैयालाल सरावगी	२७	७	१९७६	३-७
कवि-स्वरूप : जैन आलंकारिकों की दृष्टि में	श्री कमलेशकुमार जैन	२७	७	१९७६	८-१२
राणकपुर के जैन मन्दिर	श्री भूरचन्द जैन	२७	७	१९७६	१३-१५
त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित में महावीर-चरित	कु० मंजुला मेहता	२७	७	१९७६	१६-२२
कालिदास के काव्यों में अहिंसा और जैनत्व	श्री प्रेमचन्द रांवका	२७	७	१९७६	२३-२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैनागम-पदानुक्रम (क्रमशः)	डॉ० मोहनलाल मेहता एवं श्री जमनालाल जैन	२७	७	१९७६	२७-३०
आदिपुराण में राजनीति	डॉ० रमेशचन्द्र जैन	२७	८	१९७६	३-१३
लेश्या: एक विश्लेषण	श्री रमेशमुनि शास्त्री	२७	८	१९७६	१४-१७
हरिकलशरचित दिल्ली-मेवात देश चैत्य-परिपाटी	श्री अगरचन्द नाहटा	२७	८	१९७६	१८-२१
शुंग-कुषाणकालीन जैन शिल्पकला	श्री शिवकुमार नामदेव	२७	८	१९७६	२२-२५
जैन तीर्थ राता महावीर जी	श्री भूरचन्द जैन	२७	८	१९७६	२६-२८
जैनागम-पदानुक्रम (क्रमशः)	डॉ० मोहनलाल मेहता एवं श्री जमनालाल जैन	२७	८	१९७६	२९-३०
भारतीय चिन्तन में मोक्ष और मोक्षमार्ग (क्रमशः)	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२७	९	१९७६	३-१०
जैन साहित्य और सांस्कृतिक संवेदना	श्री गुरुचरणसिंह मोंगिया	२७	९	१९७६	११-२१
छीहल की एक दुलर्भ प्रबन्ध कृति	श्री अशोककुमार मिश्र	२७	९	१९७६	२२-२८
जैनयक्ष गोमुख का प्रतिमा-निरूपण	श्री मारुति नन्दन प्रसाद तिवारी	२७	९	१९७६	२९-३६
जैनागम-पदानुक्रम (क्रमशः)	डॉ० मोहनलाल मेहता एवं श्री जमनालाल जैन	२७	९	१९७६	३७-३८
भारतीय चिन्तन में मोक्ष एवं मोक्षमार्ग (क्रमशः)	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२७	१०	१९७६	३-७
आचार्य हेमचन्द्र : एक महान् वैयाकरण	श्री अभयकुमार जैन	२७	१०	१९७६	८-१३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
कर्णाटक में जैन शिल्पकला का विकास	श्री शिवकुमार नामदेव	२७	१०	१९७६	१४-१८
१२वीं शताब्दी की एक तीर्थमाला	श्री अगरचन्द नाहटा	२७	१०	१९७६	१९-२३
सौराष्ट्र का प्राचीन जैन तीर्थ तालध्वज गिरि	श्री भूरचन्द जैन	२७	१०	१९७६	२४-२८
जैनागम-पदानुक्रम (क्रमशः)	डॉ० मोहन लाल मेहता एवं श्री जमनालाल जैन	२७	१०	१९७६	२९-३१
भारतीय चिन्तन में मोक्ष एवं मोक्षमार्ग (क्रमशः)	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२७	११	१९७६	३-८
भारतीय भाषा और अपभ्रंश	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	२७	११	१९७६	९-१२
झारड़ा की जैन देवियों की अप्रकाशित प्रतिमाएँ	डॉ० सुरेन्द्रकुमार आर्य	२७	११	१९७६	१३-१४
जैन विद्वानों के कुछ हिन्दी वैद्यक ग्रन्थ	आचार्य राजकुमार जैन	२७	११	१९७६	१५-२४
निर्वाण : उपनिषद् से जैन दर्शन तक	डॉ० शान्ति जैन	२७	११	१९७६	२५-२९
जैनागम पदानुक्रम (क्रमशः)	डॉ० मोहनलाल मेहता एवं श्री जमनालाल जैन	२७	११	१९७६	३०-३२
भाषा और साहित्य	श्री कन्हैयालाल सरावगी	२७	११	१९७६	३-१४
भारत में प्राचीन जैन गुफाएँ	डॉ० शिवकुमार नामदेव	२७	११	१९७६	१५-२२
रस-विवेचन : अनुयोगद्वारसूत्र में	श्री कमलेशकुमार जैन	२७	११	१९७६	२३-२९
कुन्दकुन्दाचार्य की साहित्यिक उद्भावनाएँ	श्री रमेशमुनि शास्त्री	२७	११	१९७६	३०-३२
जैनागम पदानुक्रम	डॉ० मोहनलाल मेहता एवं				

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
	श्री जमनालाल जैन	२७	११	१९७६	३३-३४
सेवा: स्वरूप और दर्शन	श्री रमेश मुनि शास्त्री	२८	१	१९७६	३-४
पुष्पदन्त की रामकथा की विशेषताएँ	कु० प्रेमलता जैन	२८	१	१९७६	५-१२
शासन-प्रभावक आचार्य जिनप्रभसूरि	श्री अगरचन्द नाहटा	२८	१	१९७६	१३-२०
वर्धमान जैन आगम-मन्दिर	श्री भूरचन्द जैन	२८	१	१९७६	२१-२३
महोपाध्याय समयसुन्दर-रचित कथा-कोश	श्री भंवरलाल नाहटा	२८	१	१९७६	२४-२७
The Eight Dikpalas as Depicted in the Jaina temple at Kumbharia	Shri Harihar Singh	२८	१	१९७६	२८-३१
मानव-संस्कृति का विकास	श्री कन्हैयालाल सरावगी	२८	२	१९७६	३-१५
जैन वास्तुकला : संक्षिप्त विवेचन	डॉ० शिवकुमार नामदेव	२८	२	१९७६	१६-२१
कीर्तिवर्द्धनकृत सदयवत्स-सावलिंगा चउपई	डॉ० अशोककुमार मिश्र	२८	२	१९७६	२२-२६
सन्देशरासक में उल्लिखित वनस्पतियों के नाम	श्री श्रीरजंन सूरिदेव	२८	२	१९७६	२७-२९
जैन साहित्य और शिल्प में वाग्देवी सरस्वती	श्री मारुति नन्दन प्रसाद तिवारी	२८	२	१९७६	३०-३४
गुणस्थान : मनोदशाओं का आध्यात्मिक विश्लेषण (क्रमशः)	श्री अभय कुमार जैन	२८	३	१९७७	३-१४
त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित में रसोद्भावना	कु० मंजुला मेहता	२८	३	१९७७	१५-२०
हरियाणा के सुकवि मालदेव की नवोपलब्ध रचनाएँ	श्री अगरचन्द नाहटा	२८	३	१९७७	२१-२४
पार्श्वाभ्युदय में प्रकृति-चित्रण	डॉ० रमेशचन्द्र जैन	२८	३	१९७७	२५-३०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
अकलंकदेव की दार्शनिक कृतियाँ	डॉ० मोहनलाल मेहता	२८	३	१९७७	३१-२४
आदीश जिन	डॉ० प्रकाशचन्द्र जैन	२८	४	१९७७	३-८
गुणस्थान-मनोदशाओं का आध्यात्मिक विश्लेषण	श्री अभयकुमार जैन	२८	४	१९७७	९-१८
जैनसाहित्य और शिल्प में रामकथा	श्री मारुति नन्दन प्र० तिवारी	२८	४	१९७७	१९-२१
शब्दों की अर्थमीमांसा	श्री रमेश मुनि शास्त्री	२८	४	१९७७	२२-२६
ऐतिहासिक जैन तीर्थ नांदिया	श्री भूरचन्द जैन	२८	४	१९७७	२७-२९
प्राकृतभाषा के कुछ ध्वनि-परिवर्तनों की ध्वनि वैज्ञानिक व्याख्या	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	२८	५	१९७७	३-७
अन्तराल गति	डॉ० बशिष्ठ नारायण सिन्हा	२८	५	१९७७	८-१३
श्रावस्ती का जैन राजा सुहलदेव	श्री गणेशप्रसाद जैन	२८	५	१९७७	१४-१८
प्राकृत हिन्दी कोश के महान् प्रणेता : पं० हरगोविन्ददास	श्री अगरचंद नाहटा	२८	५	१९७७	१९-२२
माणिक्यनन्दिविरचित परीक्षामुख	डॉ० मोहनलाल मेहता	२८	५	१९७७	२३-२४
Sixteen Vidyadevis as depicted in Temple at Kumbharia	Dr. Harihar Singh	२८	५	१९७७	२५-३२
प्राचीन प्राकृत ग्रन्थों में उपलब्ध भगवान् महावीर का जीवन-चरित	डॉ० के० आर० चन्द्र	२८	६	१९७७	३-१०
त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित में गणधरवाद	कु० मंजुला महेता	२८	६	१९७७	११-१६
व्युत्सर्ग आवश्यक	श्री रमेशमुनि शास्त्री	२८	६	१९७७	१७-२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
प्राकृत साहित्य में श्रीदेवी की लोक-परम्परा	श्री रमेश जैन	२८	६	१९७७	२१-२५
प्राचीन जैन तीर्थ : करेड़ा पार्श्वनाथ	श्री भूरचन्द जैन	२८	६	१९७७	२६-२९
सोलंकी-काल के जैन मन्दिरों में जैनतर चित्रण	डॉ० हरिहर सिंह	२८	६	१९७७	३०-३२
वादिराजसूरि : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	श्री उदयचन्द्र 'प्रभाकर'	२८	७	१९७७	३-८
पार्श्वाभ्युदय में शृंगार रस	डॉ० रमेशचन्द्र जैन	२८	७	१९७७	९-१५
उत्तर प्रदेश में मध्ययुगीन जैन शिल्पकला का विकास	डॉ० शिव कुमार नामदेव	२८	७	१९७७	१६-२०
तीर्थंकरों की निश्चित संख्या क्यों ?	श्री रतिलाल म० शाह	२८	७	१९७७	२१-२६
हेमचन्द्राचार्य की साहित्य साधना	डॉ०मोहनलाल मेहता	२८	७	१९७७	२६-३१
भगवान् महावीर का अचेल धर्म	पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री	२८	८	१९७७	३-१०
क्या जैनधर्म रहस्यवादी है ?	डॉ० प्रद्युम्नकुमार जैन	२८	८	१९७७	११-१७
संस्कृत शब्द और प्राकृत-अपभ्रंश	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	२८	८	१९७७	१८-२०
प्राचीन जैनतीर्थ श्री गांगाणी	श्री भूरचन्द जी	२८	८	१९७७	२१-२३
मेवाड़ में चित्रित कल्पसूत्र की एक विशिष्ट प्रति	श्री अगरचन्द नाहटा	२८	८	१९७७	२४-२६
Jain Temple Sculptures of Gujarat	Dr. Harihar Singh	२८	८	१९७७	२७-३४
आचार्य हेमचन्द्र : एक महान् काव्यकार	श्री अभयकुमार जैन	२८	९	१९७७	३-१३
सांख्य और जैन दर्शन	डॉ० रमेशचन्द्र जैन	२८	९	१९७७	१४-१९
राजस्थान में मध्ययुगीन जैन प्रतिमाएँ	डॉ० शिवकुमार नामदेव	२८	९	१९७७	२०-२४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
मन और संज्ञा	श्री रमेशमुनि शास्त्री	२८	९	१९७७	२५-२८
भांडवा जैन तीर्थ	श्री भूरचन्द जैन	२८	९	१९७७	२९-३२
जैन धर्म और बौद्ध धर्म	डॉ० रमेशचन्द्र जैन	२८	१०	१९७७	३-११
कविवर देवीदास : जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व	श्री अभयकुमार जैन	२८	१०	१९७७	१२-१९
बीकानेरी चित्र-शैली का सर्वाधिक चित्रोंवाला कल्पसूत्र	श्री अगरचंद नाहटा	२८	१०	१९७७	२०-२४
कुम्भारिया जैनतीर्थ	श्री भूरचन्द जैन	२८	१०	१९७७	२५-२८
धर्म की छानने की आवश्यकता	श्री रतिलाल म० शाह	२८	१०	१९७७	२९-३५
पार्श्वनाथचरित में प्रतिपादित समाज	श्री जयकुमार जैन	२८	११	१९७७	३-९
जैन-दर्शन में पुद्गल-स्कन्ध	श्री रमेशमुनि शास्त्री	२८	११	१९७७	१०-१२
परमानन्द विलास : एक परिचय	श्री अभयकुमार जैन	२८	११	१९७७	१३-१७
श्रमण-संघ	डॉ० मोहनलाल मेहता	२८	११	१९७७	१८-२९
कुंभारिया के जैन अभिलेखों का सांस्कृतिक अध्ययन (क्रमशः)	डॉ० हरिहर सिंह	२८	११	१९७७	३०-३६
उत्तराध्ययन का अनेकान्तिक पक्ष	प्रो० श्रीरंजन सूरिदेव	२८	१२	१९७७	३-१०
आचार्य : स्वरूप और दर्शन	श्री रमेशमुनि शास्त्री	२८	१२	१९७७	११-१६
सप्तसन्धानमहाकाव्य में ज्योतिष	श्री श्रेयांसकुमार जैन	२८	१२	१९७७	१७-२१
शब्दरत्न-महोदधि नामक संस्कृत-गुजराती जैन-कोश	श्री अगरचंद नाहटा	२८	१२	१९७७	२२-२४
कुंभारिया के जैन अभिलेखों का सांस्कृतिक अध्ययन	डॉ० हरिहर सिंह	२८	१२	१९७७	२५-३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
संस्कृत साहित्य में अभ्युदय नामन्त जैन काव्य	श्री जयकुमार जैन	२९	१	१९७७	३-८
विपाकसूत्र के आख्यान : एक विहंगावलोकन	श्री जमनालाल जैन	२९	१	१९७७	९-१४
तर्कप्रधान संस्कृत वाङ्मय के आदि प्रेरक : सिद्धसेन दिवाकर	श्री मोहन रत्नेश	२९	१	१९७७	१५-१६
मेघविजय के समस्यापूर्ति काव्य	श्री श्रेयांसकुमार जैन	२९	१	१९७७	१७-२२
जैन दर्शन में समता	श्री अभयकुमार जैन	२९	१	१९७७	२३-३३
चित्तौड़ का जैन कीर्तिस्तम्भ	श्री भूरचन्द जैन	२९	१	१९७७	३४-३५
आगमिक प्रकरण	डॉ० मोहनलाल मेहता	२९	२	१९७७	३-१३
जैन दर्शन	श्री उदय मुनि	२९	२	१९७७	१४-१७
आचेलक्य कल्प-एक चिन्तन	श्री रमेशमुनि शास्त्री	२९	२	१९७७	१८-२०
दशाश्रुतस्कन्ध के विविध संस्करण एवं टीकाएं	श्री अगरचन्द नाहटा	२९	२	१९७७	२१-२४
पार्श्वनाथचरित में राजनीति और शासन-व्यवस्था	श्री जयकुमार जैन	२९	२	१९७७	२५-२९
प्राचीन जैन तीर्थ ओसियाँ	श्री भूरचन्द जैन	२९	२	१९७७	३०-३२
उत्तराध्ययन : नामकरण व कर्तृत्व	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२९	३	१९७८	३-११
क्या 'रूपकमाला' नामक रचनाएँ अलंकार शास्त्र सम्बन्धी हैं ?	श्री अगरचन्द नाहटा	२९	३	१९७८	१२-१७
जैनकला विषयक साहित्य	डॉ० ज्योतिप्रसाद जैन	२९	३	१९७८	१८-२१
Origin and Development of Tirthankara Images	Dr. Harihar Singh	२९	३	१९७८	२२-३०
योग का जनतन्त्रीकरण	प्रो० श्रीरंजन सूरिदेव	२९	४	१९७८	३-७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
शान्त रस : मान्यता और स्थान	श्री जयकुमार जैन	२९	४	१९७८	८-१२
श्रमरस का स्रोत : श्रावक	श्री जमनालाल जैन	२९	४	१९७८	१३-२२
संप्रतिकालीन आहाड़ के मंदिर का जीर्णोद्धार-स्तवन	श्री भंवरलाल नाहटा	२९	४	१९७८	२३-३०
दशाश्रुतस्कन्ध की बृहद टीका और टीकाकार मतिकीर्ति	श्री अगरचंद नाहटा	२९	५	१९७८	३-९
सामायिक : सौ सयाने एकमत	श्री कन्हैयालाल सरावगी	२९	५	१९७८	१०-१७
आगम-साहित्य में क्षेत्र प्रमाण-प्रणाली	श्री रमेशमुनि शास्त्री	२९	५	१९७८	१८-२१
मालपुरा की विख्यात जैन दादावाड़ी	श्री भूरचन्द जैन	२९	५	१९७८	२२-२३
महाकवि जिनहर्ष और उनकी कविता	श्री मोहन 'रत्नेश'	२९	५	१९७८	२४-२६
तारंगा का अजितनाथ-मंदिर	डॉ० हरिहर सिंह	२९	६	१९७८	३-१३
जैन आलंकारिकों की रसविषयक मान्यताएँ	डॉ० कमलेशकुमार जैन	२९	६	१९७८	१४-२४
अज्ञात प्राचीन जैनतीर्थ : कसरावद	श्री लक्ष्मीचन्द जैन	२९	६	१९७८	२५-२७
सिद्धियोग का महत्त्व	पं० के० भुजबली शास्त्री	२९	६	१९७८	२८-२९
समयसार- आचार-मीमांसा	डॉ० दयानन्द भार्गव	२९	७	१९७८	३-११
रामसनेही सम्प्रदाय के रेणशाखा के दो सरावगी आचार्य	श्री अगरचन्द नाहटा	२९	७	१९७८	१२-१६
वर्ण और जातिवाद: जैनदृष्टि	श्री कन्हैयालाल सरावगी	२९	७	१९७८	१७-२०
भगवान् महावीर की साधना एवं देशना	श्री भूरचन्द जैन	२९	७	१९७८	२१-२७
जैन सिद्धान्त	डॉ० मोहनलाल मेहता	२९	८	१९७८	३-१३
भौतिकवाद एवं समयसार की सप्तभंगी व्याख्या	डॉ० केवल कृष्ण मित्तल	२९	८	१९७८	१४-२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन तीर्थंकरों का जन्म क्षत्रियकुल में ही क्यों ?	श्री गणेशप्रसाद जैन	२९	८	१९७८	२१-२५
काव्यशास्त्रियों की दृष्टि में श्लेष	श्री श्रेयांसकुमार जैन	२९	८	१९७८	२६-३१
पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान के मार्गदर्शक पं० सुखलालजी	श्री गुलाबचन्द जैन	२९	९	१९७८	३-५
समयसार सप्तदशांगी टीका में गणितीय न्याय एवं दर्शन	डॉ० लक्ष्मीचंद जैन	२९	९	१९७८	६-१०
कर्मशास्त्रविद् रामदेवगणि और उनकी रचनाएँ	श्री अगरचन्द नाहटा	२९	९	१९७८	११-१९
जैन आगम साहित्य में जनपद	श्री रमेशमुनि शास्त्री	२९	९	१९७८	२०-२२
आष्टा की परमारकालीन अप्रकाशित जैन प्रतिमाएँ	डॉ० मायारानी आर्य	२९	९	१९७८	२३-२४
जैनतीर्थ शंखेश्वर पार्श्वनाथ	श्री भूरचन्द जैन	२९	९	१९७८	२५-२९
समयसार सप्तदशांगी टीका: एक साहित्यिक मूल्यांकन	डॉ० नेमिचंद जैन	२९	१०	१९७८	३-८
वैदिक धर्म और जैन धर्म	पं० के० भुजबली शास्त्री	२९	१०	१९७८	९-१३
नयवाद : एक दृष्टि	श्री कन्हैयालाल सरावगी	२९	१०	१९७८	१४-१८
जैन रक्षापर्व : वात्सल्य पूर्णिमा	श्री भूरचन्द जैन	२९	१०	१९७८	१९-२२
Kundakundas View-Points in the Samayasara	Dr. M.L. Mehta	२९	१०	१९७८	२३-२६
The Nature of object in Jaina Philosophy	Shree A. Majumdar	२९	१०	१९७८	२७-३२
श्रावक के मूलगुण	श्री सनतकुमार जैन	२९	११	१९७८	३-१८
प्राचीन पांडुलिपियों का संपादन : कुछ प्रश्न और हल	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	२९	११	१९७८	१९-२३
विशालकीर्तिरचित प्रक्रियासारकौमुदी	श्री अगरचन्द नाहटा	२९	११	१९७८	२४-२८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैनदृष्टि से ज्ञान-निरूपण	श्री रमेशमुनि शास्त्री	२९	११	१९७८	२९-३५
चन्द्रावती की जैन प्रतिमाएँ : एक परिचयात्मक सर्वेक्षण	श्री विनोद राय	२९	११	१९७८	३६-३८
ज्योतिषशास्त्र और सन्मति वर्धमान महावीर	डॉ० भूपसिंह राजपूत	२९	१२	१९७८	३-११
जैन पुराणों में समता	श्री देवीप्रसाद मिश्र	२९	१२	१९७८	१२-१७
ग्यारह प्रतिमा (व्रत) और एकादशी	श्री कन्हैयालाल सरावगी	२९	१२	१९७८	१८-२३
पालनपुर का प्राचीन प्रहलविया जैन मन्दिर	श्री भूरचन्द जैन	२९	१२	१९७८	२४-२७
श्रमण परम्परा : एक विवेचन	श्री रमेशमुनि शास्त्री	३०	१	१९७८	३-१०
समन्तभद्र द्वारा क्षणिकवाद की समीक्षा	श्री नरेन्द्रकुमार जैन	३०	१	१९७८	११-२२
कलचुरिकालीन जैन शिल्प-संपदा	डॉ० शिवकुमार नामदेव	३०	१	१९७८	२३-३२
The Purvas	Dr. Mohan Lal Mehta	३०	१	१९७८	३३-३५
जैनधर्म की प्राचीनता तथा इतिहास	डॉ० मोहनलाल मेहता	३०	२	१९७८	३-१६
समन्तभद्र द्वारा क्षणिकवाद की समीक्षा	श्री नरेन्द्रकुमार जैन	३०	२	१९७८	१७-२५
कतिपय जैनेतर ग्रन्थों की अज्ञात जैन टीकाएँ	श्री अगरचन्द नाहटा	३०	२	१९७८	२६-३१
मांडोली का गुरु मन्दिर	श्री भूरचन्द जैन	३०	२	१९७८	३२-३६
जैनकला एवं स्थापत्य	डॉ० मोहनलाल मेहता	३०	३	१९७९	३-९
शीलव्रत : एक विवेचन	श्री सनतकुमार जैन	३०	३	१९७९	१०-१८
जयसिंहसूरिरचित अप्रसिद्ध ऋषभदेव और वीरचरित्र	श्री अगरचन्द नाहटा	३०	३	१९७९	१९-२३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
युगल काव्य	श्री भंवरलाल नाहटा				
मुनिश्री चौथमल जी की जन्म-शताब्दी	श्री गुलाबचन्द जैन	३०	३	१९७९	२४-२७
पंचास्तिकाय के टीकाकार और टीकाएँ	डॉ० लालचन्द जैन	३०	४	१९७९	३-१२
जैन व्याकरण शास्त्र में शोध की संभावनाएँ	श्री रामकृष्ण पुरोहित	३०	४	१९७९	१३-२२
जैन दार्शनिक साहित्य में अभाव प्रमाण-एक मीमांसा	श्री रमेशमुनि शास्त्री	३०	४	१९७९	२३-३५
जैन धर्म दर्शन का स्रोत-साहित्य	डॉ० मोहनलाल मेहता	३०	५	१९७९	३-१४
पुराणप्रतिपादित शीलव्रत	श्री सनतकुमार जैन	३०	५	१९७९	१५-१९
सिंहदेवरचित एक विलक्षण महावीरस्तोत्र	श्री अगरचन्द नाहटा	३०	५	१९७९	२०-२५
धार्मिक एवं पर्यटन स्थल गिरनार	श्री भूरचन्द जैन	३०	५	१९७९	२६-२९
क्या जैन दर्शन नास्तिक दर्शन है?	डॉ० लालचन्द जैन	३०	६	१९७९	३-१५
जैन श्रावकाचार (क्रमशः)	डॉ० मोहनलाल मेहता	३०	६	१९७९	१६-२२
जैनधर्म में शुभ और अशुभ की अवधारणा	सुभाषचन्द जैन	३०	६	१९७९	२३-३२
जौनपुर की बड़ी मस्जिद क्या जैन मंदिर है ?	श्री अगरचन्द नाहटा	३०	६	१९७९	३३-३५
पातंजल तथा जैन योग : स्वरूप एवं प्रकार	कु० मंगला दूगड़	३०	७	१९७९	३-१५
जैन श्रावकाचार (क्रमशः)	डॉ० मोहनलाल मेहता	३०	७	१९७९	१६-२३
जैनधर्म और भक्ति	श्री गुलाबचन्द जैन	३०	७	१९७९	२४-३१
ध्वन्यालोक एवं दशरूपक की दो प्राकृत गाथाएँ-एक चिन्तन	श्री विश्वनाथ पाठक	३०	७	१९७९	३२-३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन तथा अन्य भारतीय दर्शनों में सर्वज्ञता विचार (क्रमशः)	श्री नरेन्द्रकुमार जैन	३०	८	१९७९	३-१३
प्रवर्तक एवं निवर्तक धर्मों का मनोवैज्ञानिक विकास एवं उनके दार्शनिक एवं सांस्कृतिक प्रदेय	डॉ० सागरमल जैन	३०	८	१९७९	१४-२०
जैन श्रावकाचार	डॉ० मोहनलाल मेहता	३०	८	१९७९	२१-३२
स्वयंभू का कृष्णकाव्य और सूरकाव्य के अध्ययन की समस्याएँ	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	३०	८	१९७९	३३-३५
जैन तथा अन्य भारतीय दर्शनों में सर्वज्ञता विचार	श्री नरेन्द्रकुमार जैन	३०	९	१९७९	३-१०
जैन दर्शन में ब्रह्माद्वैतवाद	डॉ० लालचन्द जैन	३०	९	१९७९	११-२६
समताशील भगवान् महावीर	मुनिश्री महेन्द्रकुमार (प्रथम)	३०	९	१९७९	२७-३०
जिनदत्तसूरि का शकुनशास्त्र एवं हरिभद्र सूरि का व्यवहारकल्प	श्री अगरचन्द नाहटा	३०	९	१९७९	३१-३३
ब्रह्माद्वैतवाद का समालोचनात्मक परिशीलन	डॉ० लालचन्द जैन	३०	१०	१९७९	३-१३
तीर्थंकर महावीर	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	३०	१०	१९७९	१४-१६
विनयप्रभकृत जैन व्याकरण ग्रंथ- शब्ददीपिका	श्री अगरचन्द नाहटा	३०	१०	१९७९	१७-२१
निर्जरा तत्त्व-एक विश्लेषण	श्री रमेशमुनि शास्त्री	३०	१०	१९७९	२२-२९
प्राचीन जैन तीर्थ-करेड़ा पार्श्वनाथ	श्री भूरचन्द जैन	३०	१०	१९७९	३०-३४
पर्युषण : संभावनाओं की खोज	डॉ० नेमिचन्द जैन	३०	११	१९७९	३-७
जैन साधना के मनोवैज्ञानिक आधार	डॉ० सागरमल जैन	३०	११	१९७९	८-१४
जैनधर्म में कर्मयोग का स्वरूप	श्री कन्हैयालाल सरावगी	३०	११	१९७९	१५-२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
स्याद्वाद	कु० कुसुम जैन	३०	११	१९७९	२१-३३
सोमदेवकृत उपासकाध्ययन में शीलव्रत (क्रमशः)	श्री सनतकुमार जैन	३०	११	१९७९	३४-३८
आगमिक व्याख्याएँ	डॉ० मोहनलाल मेहता	३०	१२	१९७९	३-१७
आधुनिक सन्दर्भ में जैन दर्शन	श्री बृजकिशोर पाण्डेय	३०	१२	१९७९	१८-२२
सोमदेवकृत उपासकाध्ययन में शीलव्रत	श्री सनतकुमार जैन	३०	१२	१९७९	२३-२८
जैन आगम साहित्य में प्रमाणवाद	श्री गणेशमुनि शास्त्री	३०	१२	१९७९	२९-३४
हर्ष कीर्ति सूरि रचित धातु तरंगिणी	श्री अगर चन्द नाहटा	३०	१२	१९७९	३५-३८
वज्जालग्ग की कुछ गाथाओं के अर्थ पर पुनर्विचार (क्रमशः)	पं० विश्वनाथ पाठक	३१	१	१९७९	३-७
समाज में महिलाओं की उपेक्षा एक विचारणीय विषय	डॉ० प्रेमचन्द जैन	३१	१	१९७९	८-१९
गृहस्थ के अष्टमूल गुण-तुलनात्मक अध्ययन	श्री अशोक पाराशर	३१	१	१९७९	२०-२४
जैन वाङ्मय का संगीत पक्ष	श्री प्यारेलाल श्रीमाल 'सरसं पंडित'	३१	१	१९७९	२५-२७
देवचन्द्रकृत यंत्रपद्धति का वस्त्र टिप्पणक	श्री अगरचन्द नाहटा	३१	१	१९७९	२८-२९
बुद्ध और महावीर	डॉ० देवसहाय त्रिवेद	३१	१	१९७९	३०-३४
भारत का सर्व प्राचीन संवत्	पं० के० भुजबली शास्त्री	३१	१	१९७९	३५
भगवान् महावीर का विचार तथा कृतित्व समस्त विश्व के लिए अनुपम धरोहर	डॉ० रामकुमार वर्मा	३१	१	१९७९	३६-३७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
वज्जालग्ग की कुछ गाथाओं पर पुनर्विचार	पं० विश्वनाथ पाठक	३१	२	१९७९	३-८
ब्रह्माद्वैतवाद का समालोचनात्मक परिशीलन	डॉ० लालचन्द जैन	३१	२	१९७९	९-२२
एलाचार्य मुनि श्री विद्यानन्द जी का सामाजिक दर्शन	श्री रत्नेश कुसुमाकर	३१	२	१९७९	२३-२७
अहिंसा का अर्थ, विस्तार, संभावना और सीमाक्षेत्र	डॉ० सागरमल जैन	३१	३	१९८०	३-२१
माँस का मूल्य	उपाध्याय अमर मुनि जी	३१	३	१९८०	२२-२५
बालकों के संस्कार निर्माण में अभिभावक, शिक्षक एवं समाज की भूमिका	डॉ० सागरमल जैन	३१	३	१९८०	२६-३८
धर्म क्या है (क्रमशः)	डॉ० सागरमल जैन	३१	४	१९८०	१-८
त्याग का मूल्य	उपाध्याय अमर मुनि	३१	४	१९८०	९-११
हिंसा-अहिंसा का जैन दर्शन	डॉ० मोहनलाल मेहता	३१	४	१९८०	१२-१४
उतार चढ़ाव के बीच उभरती अहिंसा	श्री शरदकुमार साधक	३१	४	१९८०	१५-१८
आत्मा और परमात्मा	डॉ० सागरमल जैन	३१	५	१९८०	१
धर्म क्या है	डॉ० सागरमल जैन	३१	५	१९८०	२-५
सामायिक का मूल्य	उपाध्याय अमर मुनि	३१	५	१९८०	६-८
सुख-दुःख	श्री कन्हैयालाल सरावगी	३१	५	१९८०	९-१३
जैन धर्म में भक्ति का स्थान	डॉ० सागरमल जैन	३१	५	१९८०	१४-१७
महावीर संदेश दार्शनिक दृष्टि	श्री हरिओम सिंह	३१	५	१९८०	१८-२१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
अध्यात्मवाद और भौतिकवाद	डॉ० सागरमल जैन	३१	६	१९८०	१-६
जीवन दर्शन	उपाध्याय अमर मुनि	३१	६	१९८०	७-९
ईश्वर और आत्मा : जैन दृष्टि	प्रो० श्रीरंजन सूरिदेव	३१	६	१९८०	१०-१४
जैन तीर्थंकरों का जन्म-क्षत्रिय कुल में ही क्यों	श्री गणेशप्रसाद जैन	३१	६	१९८०	१५-१८
जीवन और विवेक	श्री डोंगरे महाराज	३१	७	१९८०	१
धर्म क्या है	डॉ० सागरमल जैन	३१	८	१९८०	२-७
सोने की चमक	उपाध्याय अमर मुनि	३१	८	१९८०	८-९
अनेकान्त-एक दृष्टि	श्री ऋषभचन्द जैन फौजदार	३१	८	१९८०	१०-१२
महत्त्वपूर्ण जैन कला के प्रति जैन समाज की उपेक्षावृति	श्री अगरचंद नाहटा	३१	८	१९८०	१३-१४
आर्यारत्न श्री विचक्षण श्री जी म० सा०	श्री गुलाबचन्द जैन	३१	८	१९८०	१६-२३
संयम : जीवन का सम्यक् दृष्टिकोण	डॉ० सागरमल जैन	३१	८	१९८०	२-१३
अधूरी जोड़ी	उपाध्याय अमर मुनि जी	३१	८	१९८०	१४-१८
जैनधर्म की प्रासंगिकता	डॉ० निजामुद्दीन	३१	८	१९८०	१९-२५
भेद विज्ञान : मुक्ति का सिंहद्वार	डॉ० सागरमल जैन	३१	९	१९८०	३-११
नाथ कौन ?	उपाध्याय अमर मुनि जी	३१	९	१९८०	१२-१६
भिक्षुणी संघ की उत्पत्ति एवं विकास	डॉ० अरुण प्रताप सिंह	३१	९	१९८०	१७-२०
जैन दर्शन में मुक्ति की अवधारणा	श्री पांडेय रामदास गंभीर	३१	१०	१९८०	२-१२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
मन की लड़ाई	उपाध्याय अमर मुनि	३१	१०	१९८०	१३-१६
क्या भगवान् महावीर के विचारों से विश्वशांति संभव है ?	डॉ० (कु०) मंजुला मेहता	३१	१०	१९८०	१७-२२
अनेकान्तवाद की व्यावहारिक जीवन में उपयोगिता	श्री शीतलचन्द जैन	३१	१०	१९८०	२३-२७
पर्युषण	श्री मधुकर मुनि	३१	११	१९८०	२-६
उदायन का पर्युषण	उपाध्याय अमर मुनि	३१	११	१९८०	७-११
साधना में श्रद्धा का स्थान	आचार्य श्री आनन्द ऋषि	३१	११	१९८०	१२-१८
'पर्वराज-दस लक्षणी' पर्युषण पर्व	श्री गणेशप्रसाद जैन	३१	११	१९८०	१९-२५
जैन एवं बौद्ध धर्म में स्वहित एवं लोकहित का प्रश्न	डॉ० सागरमल जैन	३१	१२	१९८०	२-१०
मनुष्य की परिभाषा	श्री महावीरप्रसाद गैरोला	३१	१२	१९८०	१४-१६
शान्ति की खोज में	श्री प्रवीण ऋषि जी	३१	१२	१९८०	१७-१९
पंडित कौन	महात्मा भगवानदीन	३२	१	१९८०	१-४
जैन एवं बौद्ध धर्म में स्वहित और लोकहित का प्रश्न	डॉ० सागरमल जैन	३२	१	१९८०	५-१३
सेवाव्रत नंदीषेण	उपाध्याय अमर मुनि जी	३२	१	१९८०	१४-१७
अनेकान्तवाद की व्यावहारिक जीवन में उपयोगिता	डॉ० सनतकुमार जैन	३२	१	१९८०	१८-१९
तीर्थंकर महावीर का निर्वाण-दिवस 'दीपावली'	गणेशप्रसाद जैन	३२	१	१९८०	२०-२३
ममता	महात्मा भगवानदीन	३२	२	१९८०	३-४
दु:ख का जनक लोभ	आचार्य श्री आनन्द ऋषि	३२	२	१९८०	५-१२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
राजा मेघरथ का बलिदान	उपाध्याय अमर मुनि	३२	२	१९८०	१३-१५
प्राणीमात्र के विकास का आधार : जैन धर्म	डॉ० महेन्द्रसागर प्रचंडिया	३२	२	१९८०	१६-१८
अनमोलवाणी-संकलन	महात्मा चेतनदास जी	३२	२	१९८०	१९
कर्मों का फल	डॉ० आदित्य प्रचण्डिया	३२	२	१९८०	२०-२१
साहित्य में गोम्मटेश्वर बाहुबलि	डॉ० सागरमल जैन	३२	३	१९८१	१-९
शिल्प में गोम्मटेश्वर बाहुबलि	डॉ० मारुति नन्दन प्र० तिवारी	३२	३	१९८१	१०-२०
बाहुबलि : चक्रवर्ती का विजेता	उपाध्याय अमर मुनि	३२	३	१९८१	२१-२६
कीर्ति के शत्रु; क्रोध और कुशील	आनन्द ऋषि जी म० सा०	३२	४	१९८१	१-९
महाकवि पुष्पदन्त और गोम्मटेश्वर बाहुबलि	डॉ० देवेन्द्र कुमार	३२	४	१९८१	१३-१६
कल्पना का स्वर्ग या स्वर्ग की कल्पना	श्री सौभाग्यमल जैन	३२	४	१९८१	१७-२१
सदाचार मानदण्ड और जैन धर्म	डॉ० सागरमल जैन	३२	४	१९८१	२२-२७
दार्शनिक क्षितिज का दीप्तिमान नक्षत्र	उपाध्याय श्री अमर मुनि जी	३२	५	१९८१	११-१३
चक्षुष्मान पं० सुखलाल जी	उपाध्याय महेन्द्र कुमार जी	३२	५	१९८१	१४-१५
विद्या-वारिधि एवं प्रज्ञा-पुत्र	मुनिश्री नगराज जी	३२	५	१९८१	१६
भारतीय दर्शनों का समन्वयवादी स्थितप्रज्ञ पुरुष	पं० श्री विजयमुनि जी	३२	५	१९८१	१७-२७
पं० सुखलाल जी- एक संस्मरण	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	३२	५	१९८१	२८-३२
प्रज्ञामूर्ति	श्री रमेशमुनि जी शास्त्री	३२	५	१९८१	३३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
दार्शनिक पुरुष	मुनिश्री रामकृष्ण	३२	५	१९८१	३४
प्रज्ञापुरुष	साध्वीश्री विचक्षण श्री जी	३२	५	१९८१	३५
सदा जागृत नरवीर	साध्वीश्री मृगावती एवं साध्वी श्री सुव्रता श्री जी	३२	५	१९८१	३६
स्मृति नन्दन	श्री जैनेन्द्र कुमार	३२	५	१९८१	३९-४०
गुणों के आगार	श्री यशपाल जैन	३२	५	१९८१	४१-४३
भारतीय मनीषा के उज्जवलतम् प्रतीक पं० सुखलाल जी	डॉ० रामजी सिंह	३२	५	१९८१	४४-४६
पं० रत्न विद्वान् सुखलाल जी-एक सुखद संस्मरण	पं० के० भुजबलि शास्त्री	३२	५	१९८१	४७
पुरुषार्थ के प्रतीक पं० सुखलाल जी	साहू श्रेयांसप्रसाद जैन	३२	५	१९८१	४८-४९
सरस्वती पुत्र	सेठ श्री अचलसिंह जी	३२	५	१९८१	५०
स्व० पंडित जी-एक चलते फिरते विश्व-कोष	श्री शादीलाल जैन	३२	५	१९८१	५१
समदर्शी दार्शनिक	श्री चिमनभाई चकुभाई शाह	३२	५	१९८१	५२
विद्वत् रत्नमाला का एक अमूल्य रत्न	विद्यानन्द मुनि	३२	५	१९८१	५३
अनन्य साथी का वियोग	बेचरदास दोशी	३२	५	१९८१	५४
प्रज्ञाचक्षु पं० सुखलाल जी: एक परिचय	श्री गुलाबचन्द जैन	३२	५	१९८१	५५
पं० सुखलाल जी के तीन व्याख्यानमालाओं के पठनीय ग्रंथ	श्री अगरचन्द नाहटा	३२	५	१९८१	५७
जैन, बौद्ध और वैदिक साहित्य-एक तुलनात्मक अध्ययन	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	३२	द्वितीय भाग	१९८१	१-२८
प्राचीन भारतीय वाङ्मय में पार्श्वचरित	डॉ० जयकुमार जैन	३२	द्वितीय भाग	१९८१	२९-४५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
शम्बूक आख्यान (जैन तथा जैनेतर सामग्री का तुलनात्मक अध्ययन)	श्री विमलचन्द शुक्ल	३२	द्वितीय भाग	१९८१	४६-५१
आचार्य शाकटायन (पाल्यकीर्ति) और पाणिनि	श्री रामकृष्ण पुरोहित	३२	द्वितीय भाग	१९८१	५२-६१
मुनि श्रीदेशपाल : जीवन और कृतित्व	डॉ० सनत्कुमार रंगाटिया	३२	द्वितीय भाग	१९८१	६२-६९
मेरुतुंग के जैनमेघदूत का एक समीक्षात्मक अध्ययन	श्री रविशंकर मिश्र	३२	द्वितीय भाग	१९८१	७०-७७
जैनाचार्यों द्वारा आयुर्वेद साहित्य में योगदान	आचार्य राजकुमार जैन	३२	द्वितीय भाग	१९८१	७८-८६
महावीर का दर्शन- सामाजिक परिप्रेक्ष्य में	डॉ० सागरमल जैन	३२	६	१९८१	२-९
महावीर का अखण्ड व्यक्तित्व	उपाध्याय श्री अमरमुनि जी	३२	६	१९८१	११-१६
भगवान् महावीर का उपदेश और आधुनिक समाज	पं० दलसुख भाई मालवणिया	३२	६	१९८१	१७-२२
महावीर की वाणी	श्री कपूरचन्द जैन	३२	६	१९८१	२३-२६
महावीर का संयम और उनका साधनामय जीवन	कु० सविता जैन	३२	६	१९८१	२७-३०
चक्रवर्तियों के चक्रवर्ती श्रमण महावीर	श्री वेदप्रकाश सी० त्रिपाठी	३२	६	१९८१	३१
मनुष्य प्रकृति से शाकाहारी	डॉ० महेन्द्रसागर प्रचण्डिया	३२	६	१९८१	३२-३४
स्वाध्याय : एक आत्मचिन्तन	श्री राजकुमार छाजेड़ 'राजन'	३२	६	१९८१	३५-३६
भगवान् महावीर और उनके द्वारा प्रतिपादित धर्म	श्री ऋषभचन्द फौजदार	३२	७	१९८१	२-४
दयामूर्ति : धर्मरुचि अनगार	उपाध्याय श्री अमर मुनि	३२	७	१९८१	५-७
तीर्थंकर	डॉ० बी० सी० जैन	३२	७	१९८१	८-१०
चमत्कार को नमस्कार	डॉ० रतन कुमार जैन	३२	७	१९८१	११-१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन आचार में इन्द्रियदमन की मनोवैज्ञानिकता	रतनचन्द जैन	३२	८	१९८१	१-१६
सम्राट और साम्राज्य	डॉ० आदित्य प्रचण्डिया 'दीति'	३२	८	१९८१	१७-२३
सोमदेवसूरि की अर्थनीति-एक समाजवादी दृष्टिकोण	श्री कृष्णमुरारी पांडेय	३२	८	१९८१	२४-२५
उपरीयाली का विख्यात जैन तीर्थ	श्री भूरचन्द जैन	३२	८	१९८१	२६-२८
जैन दर्शन में प्रमाण (विशेष शोध-निबन्ध)	डॉ० बशिष्ठ नारायण सिन्हा	३२	८	१९८१	१-३४
बौद्ध एवं जैन अहिंसा का तुलनात्मक अध्ययन	डॉ० भागचन्द जैन	३२	९	१९८१	१-१६
बलिदान की अमरगाथा	उपाध्याय श्री अमरमुनि जी	३२	९	१९८१	१७-२३
लोद्रवा-जैसलमेर तीर्थ पर श्री घण्टाकर्ण-महावीर मन्दिर	श्री भूरचन्द जैन	३२	९	१९८१	२४-२६
जैन दर्शन में अनेकान्तवाद का स्वरूप	श्री भिखारीराम यादव	३२	१०	१९८१	१-८
जैन कवि विक्रम और उनका नेमिदूतकाव्य	श्री रविशंकर मिश्र	३२	१०	१९८१	९-१४
जैन दर्शन और मार्क्सवाद	श्री हरिओम् सिंह	३२	१०	१९८१	१६-२०
सफल हुआ सम्यक्त्व पराक्रम	राजमल पवैया	३२	११	१९८१	१
पर्युषण : आत्म-संक्रान्ति का अद्वितीय अध्याय	डॉ० नरेन्द्र भानावत	३२	११	१९८१	२-५
मानव धर्म का सार	श्री जगदीश सहाय	३२	११	१९८१	६-१५
सांस्कृतिक पर्व की सामाजिक उपयोगिता	साध्वीश्री अर्णिमा श्री जी	३२	११	१९८१	१६-२०
जीवन का सत्य	डॉ० रतनकुमार जैन	३२	११	१९८१	२१-२५
पर्युषण : आत्मा की उपासना का पर्व	मुनि श्री रामकृष्ण	३२	११	१९८१	२६-३०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
सच्ची क्षमा	साध्वीश्री कानकुमारी जी	३२	११	१९८१	३१-३२
अपने को पहचानिये	महात्मा भगवानदीन जी	३२	१२	१९८१	१-६
श्वेताम्बर साहित्य में राम कथा	डॉ० सागरमल जैन	३२	१२	१९८१	७-११
विमलसूरि के पउमचरिउ का भौगोलिक अध्ययन	डॉ० कामता प्रसाद मिश्र	३२	१२	१९८१	१२-२०
अललित जैन साहित्य का अनुवाद : कुछ समस्याएँ	डॉ० नंदलाल जैन	३२	१२	१९८१	२१-२६
फलवर्द्धिका पार्श्वनाथ तीर्थ-एक ऐतिहासिक दृष्टि	श्री शिवप्रसाद	३२	१२	१९८१	२७-३१
नय और निक्षेप-एक विश्लेषण	डॉ० कृपाशंकर व्यास	३२	१२	१९८१	३५-४८
नैतिकता का आधार	जगदीश सहाय	३३	१	१९८१	१-१८
ज्ञानदीप की शिखा	राजमल पवैया	३३	१	१९८१	१९
महावीर-कालीन वैशाली	श्रीरंजन सूरिदेव	३३	१	१९८१	२०-२५
नर्क का प्रश्न	श्री सौभाग्यमल जैन	३३	१	१९८१	२६-२९
अपनी परमात्म शक्ति को पहचानें	श्री सौभाग्यमल जैन	३३	२	१९८१	२-६
ज्ञान भी सम्पदा है	मुनि रामकृष्ण	३३	२	१९८१	७-११
कानों सुनी सो झूठ सब	डॉ० रतन कुमार जैन	३३	२	१९८१	१२-१५
जैनधर्म में अहिंसा	श्री रामदेव राम यादव	३३	२	१९८१	१६-२२
सिर्फ फैशन की खातिर	श्री प्रकाश मेहता	३३	२	१९८१	२३-२४
स्नेह के धागे	श्री अमरमुनि जी	३३	३	१९८२	२-७
लोद्रवा का कलात्मक कल्पवृक्ष	श्री भूरचन्द जैन	३३	३	१९८२	१०-१३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन दर्शन में प्रत्यक्ष का स्वरूप (विशेष शोध-निबन्ध)	डॉ० बशिष्ठ नारायण सिन्हा	३३	३	१९८२	१-२४
श्रोत्र इन्द्रिय की प्राप्यकारिता : एक समीक्षा	श्री नंदलाल जैन	३३	३	१९८२	२५-३२
स्याद्वाद: एक भाषायी पद्धति	श्री भिखारीराम यादव	३३	३	१९८२	३३-३८
जैन धर्म में आत्मतत्त्व निरूपण	प्रो० रामदेव राम यादव	३३	४	१९८२	१-९
जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि	डॉ० आदित्य प्रचण्डिया दीति	३३	४	१९८२	१०-११
जैन भिक्षुणी-संघ और उसमें नारियों के प्रवेश के कारण	श्री अरुण कुमार सिंह	३३	४	१९८२	१२-१६
भगवान् श्री अजितनाथ	श्री भूरचन्द जैन	३३	४	१९८२	१७-२०
भिगमंगों-मन	डॉ० रतनकुमार जैन	३३	४	१९८२	२१-२८
नैतिक आचरण विधि : सोरेन कीर्केगार्ड और जैन दर्शन	पाण्डेय रामदास गम्भीर	३३	५	१९८२	३-१२
सत्ता का दर्प	उपाध्याय अमरमुनि जी	३३	५	१९८२	१३-१६
अहिंसा परमोधर्म:	रविशंकर मिश्र	३३	५	१९८२	१७-१९
दशरूपक की एक अव्याख्यात्मक गाथा	पं० विश्वनाथ पाठक	३३	५	१९८२	२०-२१
श्रमण भगवान् महावीर के चारित्रिक अलंकरण	रविशंकर मिश्र	३३	६	१९८२	१-२
महावीर के सिद्धान्त-युगीन सन्दर्भ में	डॉ० सागरमल जैन	३३	६	१९८२	३-२७
क्रान्तदर्शी महावीर	उपाध्याय अमरमुनि जी	३३	६	१९८२	२८-३८
दुर्दान्त दस्यु दया का देवता बना	श्री वीरेन्द्रकुमार जैन	३३	६	१९८२	३९-५०
भगवान् महावीर और युवा-अध्यात्म	श्री जमनालाल जैन	३३	६	१९८२	५१-५५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
अकबर और जैनधर्म	डॉ० ओमप्रकाश सिंह	३३	६	१९८२	५६-६०
४५ आगम और मूलसूत्र की मान्यता पर विचार	श्री अगरचन्द नाहटा	३३	६	१९८२	६१-६३
संस्कृत दूतकाव्यों के निर्माण में जैन कवियों का योगदान	रविशंकर मिश्र	३३	६	१९८२	१-१५
विदेशों में जैन साहित्य : अध्ययन और अनुसंधान	डॉ० भागचन्द भास्कर	३३	६	१९८२	१०-२८
ज्ञान-प्रमाण्य और जैन दर्शन	भिखारीराम यादव	३३	६	१९८२	२९-३६
आचार्य मानतुंगसूरिविरचित भक्तामर-काव्य	राजमल पवैया	३३	७	१९८२	१-४
धर्म परिवर्तन-श्रमण धर्मों की भूमिका और निदान	महेन्द्रकुमार फुसकेले	३३	७	१९८२	५-११
बिना विचारे जो करै	उपाध्याय अमरमुनि	३३	७	१९८२	१२-१४
साधु मर्यादा क्या? कितनी?	सौभाग्यमल जैन	३३	७	१९८२	१५-१८
महावीर का संयम और उनका साधनामय जीवन	कु० सविता जैन	३३	७	१९८२	१९-२३
दशरूपक का एक अपभ्रंश दोहा : कुछ तथ्य	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	३३	७	१९८२	२४-२६
'प्राणप्रिय काव्य' का रचनाकाल, श्लोक- संख्या और सम्प्रदाय	श्री अगरचंद नाहटा	३३	७	१९८२	२७-२९
जैनधर्म एक सम्प्रदायातीत धर्म	डॉ० निजामुद्दीन	३३	८	१९८२	३-७
जीवन-दृष्टि	उपाध्याय अमरमुनि जी	३३	८	१९८२	८-१०
संस्कृत-व्याकरण शास्त्र में जैनचार्यों का योगदान	श्रीराम यादव	३३	८	१९८२	११-२०
प्रतिक्रिया है दु:ख	युवाचार्य महाप्रज्ञ	३३	९	१९८२	२-६
जैन धर्म में मोक्ष का स्वरूप	विनोदकुमार तिवारी	३३	९	१९८२	७-१०
ढंढण ऋषि की तितिक्षा	उपाध्याय अमरमुनि	३३	९	१९८२	११-१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन मुनि क्या कुछ कर सकता है?	मन्नूलाल जैन	३३	९	१९८२	१५-१८
मध्य प्रदेश के गुना जिले का जैन पुरातत्त्व	डॉ० शिवप्रसाद	३३	९	१९८२	१९-२३
पर्युषण पर्व : क्या, कब, क्यों और कैसे	डॉ० सागरमल जैन	३३	१०	१९८२	१-१९
असली दुकान/नकली दुकान	डॉ० सागरमल जैन	३३	१०	१९८२	२०-२१
सुख का सागर	डॉ० आदित्य प्रचण्डिया 'दीति'	३३	१०	१९८२	२२-२४
अमृत जीता, विष हारा	उपाध्याय अमरमुनि	३३	१०	१९८२	२५-२९
सिरोही जिले में जैन धर्म	डॉ० सोहनलाल पटनी	३३	१०	१९८२	३२-३७
दशरूपकावलोक में उद्धृत अपभ्रंश उदाहरण	हरिवल्लभ भयाणी	३३	१०	१९८२	३८
आत्मसुख सभी सुखों का राजा	आचार्य आनन्द ऋषि जी	३३	११	१९८२	३-५
संवत्सरी महापर्व : स्वरूप और अपेक्षाएँ	मुनि नगराज जी	३३	११	१९८२	६-९
सनत्कुमार का सौन्दर्य	उपाध्याय अमरमुनि जी	३३	११	१९८२	१०-१४
जैन हरिवंश पुराण-एक सांस्कृतिक अध्ययन	लल्लू पाठक	३३	११	१९८२	१५-२२
महावीर की विहार भूमि-मगध और उसकी संस्कृति	गणेशप्रसाद जैन	३३	११	१९८२	२३-२७
चिन्तन : सम्यक् जीवन दृष्टि	डॉ० हुकुमचन्द संगवे	३३	११	१९८२	२८-३१
श्रमण संस्कृति की पृष्ठभूमि	श्रीमती उर्मिला जैन	३३	१२	१९८२	३-५
धर्म और युवा पीढ़ी	श्रीमती बीना निर्मल	३३	१२	१९८२	७-८
बलभद्र और हरिण	उपाध्याय अमरमुनि जी	३३	१२	१९८२	९-११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन दर्शन के अन्तर्गत जीव तत्त्व का स्वरूप	विनोदकुमार तिवारी	३३	१२	१९८२	१२-१५
संयुक्त निकाय में जैन सन्दर्भ	विजयकुमार जैन	३३	१२	१९८२	१६-२३
भगवान् महावीर	उपाध्याय अमरमुनि जी	३४	१	१९८२	५-१४
तीर्थंकर महावीर का निर्वाण पर्व 'दीपावली' एक समीक्षा	गणेशप्रसाद जैन	३४	१	१९८२	१५-२०
उपाध्याय श्री अमरमुनि जी : एक ज्योर्तिमय व्यक्तित्व	मुनि समदर्शी	३४	१	१९८२	२१-२५
आज का युवक धर्म से विमुख क्यों?	माणकचन्द पींचा "भारती"	३४	१	१९८२	२६-२८
कवि देपाल की अन्य रचनायें	श्री अगरचन्द नाहटा	३४	१	१९८२	२९-३३
व्यक्ति और समाज	डॉ० सागरमल जैन	३४	२	१९८२	३-४
प्रातिभ ज्ञानात्मक चिन्तन: सापेक्ष चिन्तन	पाण्डेय रामदास गंभीर	३४	२	१९८२	५-१७
मन की शक्ति बनाम सामायिक	युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ	३४	२	१९८२	१८-२२
जैन एकता का प्रश्न	डॉ० सागरमल जैन	३४	३	१९८३	१-२७
जैन एकता संभव कैसे ?	मुनि रूपचन्द	३४	३	१९८३	२८-३२
जैन धर्म और युवावर्ग	प्यारेलाल श्रीमाल 'सरस पंडित'	३४	३	१९८३	३५-३९
ब्रह्मदत्त	मुनि श्री महेन्द्रकुमार जी 'प्रथम'	३४	३	१९८३	४०-४२
हुबली का श्री शांतिनाथ मंदिर	श्री भूरचन्द जैन	३४	३	१९८३	४३-४५
धर्म क्या है ?	डॉ० सागरमल जैन	३४	४	१९८३	२-४
जैनधर्म में अरिहन्त और तीर्थंकर की अवधारणा	श्री रमेशचन्द्र गुप्त	३४	४	१९८३	५-९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
आत्मबोध का क्षण	आचार्य आनन्द ऋषि	३४	४	१९८३	१०-११
नन्दीसेन	मुनि महेन्द्रकुमार 'प्रथम'	३४	४	१९८३	१२-१६
जैन दृष्टि में चारित्र	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	३४	४	१९८३	१७-२१
अनेकान्तवाद	डॉ० प्रतिभा जैन	३४	५	१९८३	२-९
सदाचार का महत्त्व	आचार्य आनन्द ऋषि	३४	५	१९८३	११-१२
वर्तमान अशान्ति का एक मात्र समाधान अहिंसा	कस्तूरीनाथ गोस्वामी	३४	५	१९८३	१३-१६
बन्ध के कार्य में मिथ्यात्व और कषाय की भूमिकाएँ	डॉ० रतनचन्द्र जैन	३४	६	१९८३	२-८
अभी तो सबेरा ही है ?	मुनि महेन्द्रकुमार जी 'प्रथम'	३४	६	१९८३	१०-१३
वैराग्यमूलक एक ऐतिहासिक प्रेमकाव्य : तरंगवती	गणेशप्रसाद जैन	३४	६	१९८३	१४-२४
जैनत्व का गौरव और हम	श्री हर्षचन्द्र	३४	७	१९८३	२-५
जैन भौगोलिक स्थानों की पहचान	डॉ० प्रेमसुमन जैन	३४	७	१९८३	६-११
आनन्द	मुनि महेन्द्रकुमार	३४	७	१९८३	१२-१७
जैन दर्शन में अजीव तत्त्व का स्थान	डॉ० विनोद कुमार तिवारी	३४	७	१९८३	१८-२१
जैन विद्या के अध्ययन एवं संशोधन केन्द्रों की स्थापना	श्री के० रिषभचन्द्र	३४	७	१९८३	२२-२५
चरित्र निर्माण में आचार-पद्धति का योगदान.	श्री राजदेव दुबे	३४	७	१९८३	२६-३२
अहिंसा की समस्याएँ	युवाचार्य महाप्रज्ञ	३४	९	१९८३	२-४
जैनधर्म में भक्ति का स्वरूप	मुनि ललितप्रभ सागर	३४	९	१९८३	५-७
समाधिमरण	गणेशप्रसाद जैन	३४	९	१९८३	९-१३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
राज्य का त्याग: त्यागी से भय	गणेश ललवाणी	३४	९	१९८३	१४-१९
स्वप्न और विचार	मुनि सुखलाल	३४	९	१९८३	२०-२१
बंगलौर का आदिनाथ जैन मंदिर	भूरचन्द जैन	३४	९	१९८३	२२-२३
जैन अध्यात्मवाद : आधुनिक संदर्भ में	डॉ० सागरमल जैन	३४	१०	१९८३	१-१७
धर्म और धार्मिक	डॉ० आदित्य प्रचण्डिया	३४	१०	१९८३	२०-२१
जैन स्तोत्रों में नवधा भक्ति	श्री धर्मचन्द जैन	३४	१०	१९८३	२५-२९
क्षमा-वाणी	मुनिश्री चन्द्रप्रभ सागर	३४	११	१९८३	१-११
दशलक्षण/दशलक्षण धर्म के	डॉ० सागरमल जैन	३४	११	१९८३	१३-२८
शांति का अमोध अस्त्र-क्षमा	मुनि ललितप्रभ सागर	३४	११	१९८३	२९-३१
क्षमा की शक्ति	मुनि महेन्द्र कुमार जी 'प्रथम'	३४	११	१९८३	३३-३८
जैन एकता का स्वरूप व उसके उपाय	स्व० श्री अगरचन्द नाहटा	३४	१२	१९८३	१-२१
जैन एकता : सूत्र व सुझाव	श्री जसकरण डागा	३४	१२	१९८३	२२-४१
भगवान् महावीर का निर्वाण-कल्याणक	उपाध्याय अमर मुनि	३५	१	१९८३	२-६
क्या हम अपराधी नहीं हैं ?	श्री जिनेन्द्र कुमार	३५	१	१९८३	७-८
भगवान् महावीर और विश्वशांति	डॉ० निजामुद्दीन	३५	१	१९८३	१०-१३
भाग्यवान् अन्धा पुरुष	मुनि महेन्द्र कुमार	३५	१	१९८३	१४-१६
जैनदर्शन में मोक्ष का स्वरूप :भारतीय दर्शनों के परिप्रेक्ष्य में	डॉ० सुदर्शनलाल जैन	३५	१	१९८३	१८-२४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
वीरवर्धमानचरित में शान्तरस विमर्श	श्रीमती उर्मिला जैन	३५	१	१९८३	२५-२८
तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ	श्री गणेशप्रसाद जैन	३५	२	१९८३	२-५
अहिंसा की सार्थकता	श्री सौभाग्यमल जैन	३५	२	१९८३	८-१२
जैन आचार-पद्धति में अहिंसा	डॉ० राजदेव दुबे	३५	२	१९८३	१३-२०
कर्म का स्वरूप	श्री रवीन्द्रनाथ मिश्र	३५	३	१९८४	५-७
भगवान् बाहुबली के प्रति	दिलीप सुराणा	३५	३	१९८४	८-१०
जैन धर्म दर्शन में अराधना का महत्त्व	गुलाबचन्द जैन	३५	३	१९८४	११-१४
यशस्तिलकचम्पू और जैनधर्म	डॉ० (कु०) सत्यभामा	३५	३	१९८४	१५-२८
सामायिक और ध्यान	डॉ० आदित्य प्रचण्डिया	३५	४	१९८४	४-८
वसुराजा	मुनि महेन्द्र कुमार	३५	४	१९८४	९
सद्विचार हेतु मौलिक प्रक्रिया	सौभाग्य मुनि 'कुमुद'	३५	४	१९८४	१०-११
जैन संस्कृति में सत्य की अवधारणा	डॉ० राजदेव दुबे एवं प्रमोद कुमार सिंह	३५	४	१९८४	१२-१५
उत्तराध्ययनसूत्र	श्री मिश्रीलाल जैन	३५	५	१९८४	२-२६
समणसुत्तं	श्री मिश्रीलाल जैन	३५	५	१९८४	२७-४१
समयसार	श्री मिश्रीलाल जैन	३५	५	१९८४	४२-५९
श्रमण भगवान् महावीर के चारित्रिक अलंकरण	श्री रविशंकर मिश्र	३५	६	१९८४	१-२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
महावीर का जीवन-दर्शन	उपाध्याय अमरमुनि	३५	६	१९८४	३-१४
महावीर जयन्ती	स्व० जिनेन्द्रवर्णी	३५	६	१९८४	१५-१९
भगवान् महावीर के आदर्शों और यथार्थ की पृष्ठभूमि	मुनिश्री नगराज जी	३५	६	१९८४	२०-२२
नारी उत्क्रान्ति के मसीहा भगवान् महावीर	दर्शनाचार्य मुनि योगेशकुमार	३५	६	१९८४	२४-२६
वर्तमान सन्दर्भ और भगवान् महावीर की अहिंसा	डॉ० आदित्य प्रचण्डिया	३५	६	१९८४	२७-२८
भगवान् महावीर की व्यापक दृष्टि	श्यामवृक्ष मौर्य	३५	६	१९८४	२९-३१
आचारांग में सोऽहम् की अवधारणा का अर्थ	मुनि योगेश कुमार	३५	७	१९८४	१-१०
ध्यान साधना का दिशाबोध	श्री सौभाग्य मुनिजी 'कुमुद'	३५	७	१९८४	११-१४
जैनदर्शन और अरविन्द दर्शन में एकत्व और अनेकत्व सम्बन्धी विचार	कु० ममता गुप्ता	३५	६	१९८४	१६-२०
हिन्दी जैन कवि छत्रपति : व्यक्तित्व तथा कृतित्व	डॉ० आदित्य प्रचण्डिया 'दीति'	३५	७	१९८४	१-५
जैन आगमों में विद्वत् गोष्ठी	श्री सौभाग्यमल जैन	३५	७	१९८४	६-९
अपना और पराया	मुनिश्री महेन्द्र कुमार प्रथम	३५	७	१९८४	१०-१४
सूत्रकृतांग में प्रस्तुत तज्जीव तच्छरीवाद	श्रीमती मंजू सिंह	३५	७	१९८४	१५-२३
जैन एवं बौद्ध धर्म में भिक्षुणी संघ की स्थापना	अरुण प्रताप सिंह	३५	९	१९८४	१-१६
धर्म का भान	डॉ० आदित्य प्रचण्डिया	३५	९	१९८४	१७-१८
तपश्चर्या-उपवास	चिमनलाल चकुभाई शाह	३५	९	१९८४	२०-२२
पूज्य आचार्य श्री कांशीराम जी महाराज स्मृति विशेषांक		३५	१०	१९८४	१-४१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
शुद्धि, चिकित्सा और सिद्धि का महान् पर्व-संवत्सरी	युवाचार्य महाप्रज्ञ	३५	११	१९८४	२-३
प्रेम की सरिता प्रवाहित करने वाला पर्व	मुनि मणिप्रभ सागर	३५	११	१९८४	४-६
अध्यात्म-आवास/पर्युषण	दर्शनाचार्य मुनि योगेशकुमार	३५	११	१९८४	७-१६
सिद्धि का पथ : आर्जवधर्म	श्रीमती अलका प्रचण्डिया 'दीति'	३५	११	१९८४	१७-१८
तप का उपादेय : कर्मों की निर्जरा	डॉ० आदित्य प्रचण्डिया 'दीति'	३५	११	१९८४	१९-२०
भगवान् महावीर की साधना	उपाध्याय अमरमुनि	३५	१२	१९८४	१-१०
मानव जाति के अभ्युदय का पर्व 'दीपावली'	दर्शनाचार्य योगेशकुमार	३५	१२	१९८४	११-१४
भारतीय संस्कृति के विकास में श्रमण धारा का महत्त्व	डॉ० कोमलचन्द्र जैन	३५	१२	१९८४	१५-२४
आत्म परिमाण (विस्तार क्षेत्र) जैन दर्शन के सन्दर्भ में	दर्शनाचार्य मुनि योगेशकुमार	३५	१२	१९८४	२८-३६
तत्त्वार्थ राजवार्तिक में वर्णित बौद्धादिमत	डॉ० उदयचन्द जैन	३५	१२	१९८४	३७-४८
नागदत्त	मुनिश्री महेन्द्रकुमार जी 'प्रथम'	३६	१	१९८४	२-७
शान्तरस : जैनकाव्यों का प्रमुख रस	डॉ० मंगल प्रकाश मेहता	३६	२	१९८४	१-३
धर्म का स्वरूप	भंडारी सरदारचंद जैन	३६	२	१९८४	५-७
बन्दर का रोना	मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी 'प्रथम'	३६	२	१९८४	८-१०
आडम्बरप्रिय नहीं धर्मप्रिय बनो	श्री सौभाग्य मुनि जी 'कुमुद'	३६	३	१९८५	२-४
राष्ट्रीय विकास-यात्रा में जैनधर्म एवं जैन पत्रकारों का योगदान	जिनेन्द्र कुमार	३६	३	१९८५	६-१०
पाप का घट	मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी 'प्रथम'	३६	३	१९८५	११-१३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
भगवान् महावीर निर्वाण-स्थली	अनन्त प्रसाद जैन	३६	३	१९८५	१४-१६
दुर्बल को सताना क्षत्रियधर्म नहीं	आचार्य आनन्द ऋषि जी	३६	४	१९८५	२-४
धर्म को समाज सेवा से जोड़ा जाय	जिनेन्द्र कुमार	३६	४	१९८५	६-८
सुबुद्धि और दुर्बुद्धि	मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी 'प्रथम'	३६	४	१९८५	९-१३
संवेदनहीनता से सुलगती सभ्यता	मुनि राजेन्द्रकुमार 'रत्नेश'	३६	४	१९८५	१४-१९
परम तत्त्व : आचार्य विनोबा भावे की दृष्टि में	डॉ० नरेन्द्र बहादुर	३६	४	१९८५	२२-२५
अन्तः प्रज्ञा-शक्ति	दर्शनाचार्य मुनि योगेशकुमार	३६	५	१९८५	२-४
जैन दर्शन में कथन की सत्यता	सुश्री अर्चना पाण्डेय	३६	५	१९८५	६-९
सच्ची सनाथता	डॉ० रविशंकर मिश्र	३६	५	१९८५	१०-१२
जैन संतकाव्य में संयम : आधुनिक-परिस्थितियों का समाधान	डॉ० बहादुर सिंह	३६	५	१९८५	१३-१९
राष्ट्रीय एकता और साहित्य	डॉ० नगेन्द्र	३६	५	१९८५	२०-२५
हुबली अचलगच्छ जैन देरासर	श्री भूरचंद जैन	३६	५	१९८५	२६-२८
मुलाकात महावीर से	श्री शरद कुमार साधक	३६	६	१९८५	२-६
महामानव महावीर का जीवन प्रदेय	डॉ० आदित्य प्रचण्डिया	३६	६	१९८५	७-९
सुमन रख भरोसा महावीर का	उत्सवलाल तिवारी 'सुमन'	३६	६	१९८५	१०-११
भगवान् महावीर : जीवन सम्बन्धी प्रमुख घटनाएँ	डॉ० मंगलप्रकाश मेहता	३६	६	१९८५	१२-१५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
दर्शन और ज्ञान जब चारित्र में आया	श्री महेन्द्र सागर प्रचण्डिया	३६	७	१९८५	१८-१९
भगवान् महावीर का आदर्श जीवन	पूनमचन्द मुणोत जैन	३६	७	१९८५	२२-२३
तीर्थंकर महावीर की जन्मभूमि : विदेह का कुण्डपुर	गणेश प्रसाद जैन	३६	७	१९८५	२-११
स्वभाव-परिवर्तन	युवाचार्य महाप्रज्ञ	३६	७	१९८५	१२-१८
जैनधर्म एवं गुरु-मन्दिर	जसवन्तलाल मेहता	३६	७	१९८५	१९-२६
आभूषण भार स्वरूप है	श्री सौभाग्यमुनि जी 'कुमुद'	३६	८	१९८५	२-४
अपराध की औषधि : क्षमा	श्री कृष्ण 'जुगनू'	३६	८	१९८५	७-९
एक महान् विरासत की सहमति में उठा हाथ	महेन्द्र कुमार फुसकुले	३६	८	१९८५	११-१४
दृढ़प्रतिज्ञ केशव	मुनिश्री महेन्द्रकुमार जी 'प्रथम'	३६	८	१९८५	१५-२१
एकता? एकता? एकता?	राजेन्द्रकुमार श्रीमाल	३६	८	१९८५	२२-२६
भाग्य बनाम पुरुषार्थ	डॉ॰ सागरमल जैन	३६	९	१९८५	२-६
शब्द का वाच्यार्थ जाति या व्यक्ति	कु॰ अर्चना पांण्डेय	३६	९	१९८५	९-१३
श्रावक गंगदत्त	मुनिश्री महेन्द्रकुमार 'प्रथम'	३६	९	१९८५	१४-१५
जैन कर्म-सिद्धान्त का क्रमिक-विकास	श्री रवीन्द्रनाथ मिश्र	३६	९	१९८५	१६-२१
जैनदर्शन में आत्म स्वरूप	डॉ० उदयचन्द जैन	३६	१०	१९८५	१-११
तीर्थंकर महावीर की शिक्षाओं का सामाजिक महत्त्व	डॉ० विनोदकुमार तिवारी	३६	१०	१९८५	१२-१४
धर्म एवं दर्शन-एक गवेषणात्मक विवेचन	मुनि राजेन्द्रकुमार 'रत्नेश'	३६	१०	१९८५	१६-१८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन कर्म-सिद्धान्त का उद्भव एवं विकास	श्री रवीन्द्रनाथ मिश्र	३६	१०	१९८५	१९-२६
तीर्थंकर, बुद्ध और अवतार की अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन	रमेशचन्द्र गुप्त	३६	१०	१९८५	२७-३७
पर्युषण और हमारा कर्त्तव्य	स्व० श्री अगरचन्द नाहटा	३६	११	१९८५	६-१२
महापर्व पर्युषण का पावन सन्देश:अपने आप को परखें	आचार्य आनन्दऋषि जी महाराज	३६	११	१९८५	१४-१५
संवत्सरी की सर्वमान्य तारीख	दिलीप सुराणा	३६	११	१९८५	१६-२२
भारतीय दर्शनों में अहिंसा	रत्नलाल जैन	३६	११	१९८५	२३-३१
श्वेताम्बर साहित्य में रामकथा का स्वरूप	डॉ० सागरमल जैन	३६	१२	१९८५	२-६
वसुदेवहिण्डी में रामकथा	गणेशप्रसाद जैन	३६	१२	१९८५	७-१३
पर्वाराधन की एकरूपता का प्रश्न	श्री सौभाग्य मुनि 'कुमुद'	३६	१२	१९८५	१४-१५
प्राचीन जैन साहित्य में शिक्षा का स्वरूप	डॉ० राजदेव दुबे	३६	१२	१९८५	१६-२४
जैन संस्कृति का दिव्य सन्देश-अनेकान्त	मुनि ज्योतिर्धर	३७	१	१९८५	२-७
जैन पर्व दीपावली : उत्पत्ति एवं महत्त्व	डॉ० विनोदकुमार तिवारी	३७	२	१९८५	२-५
जैन दिवाकर मुनिश्री चौथमल जी महाराज	विपिन जारोली	३७	२	१९८५	६-९
सिद्धक्षेत्र बावनगजा जी	नेमिचन्द जैन	३७	३	१९८६	२-४
आचार्य सोमदेव का व्यक्तित्व तथा कर्तृव्य	कु० मीनाक्षी शर्मा	३७	४	१९८६	३-८
संस्कृत काव्यशास्त्र के विकास में प्राकृत की भूमिका	धनीराम अवस्थी	३७	५	१९८६	२-९
जैन दर्शन के सन्दर्भ में भाषा की उत्पत्ति	कु० अर्चना पाण्डेय	३७	५	१९८६	११-१८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
वीरावतार	समन्तभद्र	३७	६	१९८६	१-६
महावीर का जीवन दर्शन	डॉ० सागरमल जैन	३७	६	१९८६	७-९
जैनदर्शन में बंधन-मोक्ष	विजय कुमार	३७	६	१९८६	१०-१९
जैन नीति दर्शन एवं उसका व्यावहारिक पक्ष	डॉ० डी० आर० भण्डारी	३७	७	१९८६	१-८
जैन दर्शन की पृष्ठभूमि में ईश्वर का अस्तित्व	डॉ० विनोद कुमार तिवारी	३७	७	१९८६	९-११
महावीर और बुद्ध	सुभाष मुनि 'सुमन'	३७	७	१९८६	१२-१६
धम्मपद और उत्तराध्ययन का एक तुलनात्मक अध्ययन	महेन्द्रनाथ सिंह	३७	८-९	१९८६	१-९
प्राचीन जैन साहित्य में वर्णित आर्थिक जीवन-एक अध्ययन	श्रीमती कमलप्रभा जैन	३७	८-९	१९८६	१०-१९
जैन विद्या के निष्काम सेवक : लाला हरजसराय जी जैन	डॉ० सागरमल जैन	३७	८-९	१९८६	२१-२४
चरित्र की दृढ़ता	केवल मुनि जी	३७	८-९	१९८६	२६-३३
जैनागमों में वर्णित नागपूजा	रामहंस चतुर्वेदी	३७	१०	१९८६	१-७
सर्वधर्म समभाव और स्याद्वाद	सुभाष मुनि 'सुमन'	३७	१०	१९८६	१०-१५
जैन साधना पद्धति में ध्यानयोग	साध्वी प्रियदर्शनाजी	३७	१०	१९८६	१८-२७
क्षमा में विश्व बन्धुत्व	सौभाग्यमल जैन 'वकील'	३७	११	१९८६	२-४
इन्द्रियनिग्रह से मोक्ष-प्राप्ति	श्री कृष्ण 'जुगनू'	३७	११	१९८६	५-७
जैन दर्शन में जीव का स्वरूप	विजय कुमार	३७	११	१९८६	९-१५
महत्तरा श्री जी का महाप्रयाण	राजकुमार जैन	३७	११	१९८६	१६-२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
धर्म और दर्शन के क्षेत्र में हरिभद्र का अवदान	डॉ० सागरमल जैन	३७	१२	१९८६	१-२०
तीर्थंकर महावीर की तलस्पर्शी अहिंसा दृष्टि	मुनिश्री नगराज जी	३८	१	१९८६	२-४
तीर्थंकर महावीर की निर्वाण भूमि 'पावा'	गणेशप्रसाद जैन	३८	१	१९८६	५-११
धर्म और आधुनिकता	श्रीमती वीणानिर्मल जैन	३८	१	१९८६	१२-१३
महावीर विहार मीमांसा	आचार्य विजयेन्द्र सूरि	३८	१	१९८६	१४-१८
डॉ० वाल्टेर शुब्रिंग की जैन विद्या की सेवा	डॉ० सौभाग्यमल जैन 'वकील'	३८	१	१९८६	१९-२१
तीर्थंकर पार्श्वनाथ : प्रामाणिकता और ऐतिहासिकता	डॉ० विनोद कुमार तिवारी	३८	२	१९८६	२-७
उपासकदशांगसूत्र का आलोचनात्मक अध्ययन	डॉ० सुभाष कोठारी	३८	२	१९८६	८-१३
भोले नहीं भले बनिये	डॉ० आदित्य प्रचण्डिया 'दीति'	३८	२	१९८६	१४-१६
युवा-दृष्टिकोण	सौभाग्यमल जैन	३८	२	१९८६	१७-२०
शुद्ध-अशुद्ध भावधारा	युवाचार्य महाप्रज्ञ	३८	३	१९८७	२-५
आज के सन्दर्भ में जैन पंचव्रतों की उपयोगिता (क्रमशः)	डॉ० विनोद कुमार तिवारी	३८	३	१९८७	८-१२
समाधिमरण की अवधारणा : उत्तराध्ययन-सूत्र के परिप्रेक्ष्य में	श्री रज्जन कुमार	३८	३	१९८७	१३-१८
पुरातत्त्वविद् स्व० अगरचन्द नाहटा	श्री भूरचन्द जैन	३८	३	१९८७	२०-२३
जैन साहित्य में चैतन्य केन्द्रों का निरूपण	युवाचार्य महाप्रज्ञ	३८	४	१९८७	२-५
भारतीय संस्कृति की अन्तरात्मा	देवेन्द्रमुनि शास्त्री	३८	४	१९८७	६-८
मध्यप्रदेश एवं जैन धर्म	(लेखक का नाम उद्धृत नहीं है)	३७	४	१९८७	१०-२५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
गतिशील स्वच्छ मन वरदान है ?	डॉ० उम्मेदमल मुनोत	३७	५	१९८७	२-५
प्राणातिपात विरमण: अहिंसा की उपादेयता	डॉ० ब्रजनारायण शर्मा	३७	५	१९८७	६-१५
प्राकृत भाषा और जैन आगम	डॉ० रमेशचन्द जैन	३७	५	१९८७	१६-२२
प्लेटो और जैन दर्शन	मुनि राजेन्द्रकुमार 'रत्नेश'	३७	५	१९८६	२४-२७
आज के सन्दर्भ में जैन पंचव्रतों की उपयोगिता	डॉ० विनोदकुमार तिवारी	३७	७	१९८७	२-५
श्वेताम्बर पण्डित परम्परा	श्री अगरचन्द नाहटा	३७	७	१९८७	१०-१३
ज्ञानीजनों का मरण : भक्त प्रत्याख्यान मरण	श्री रज्जन कुमार	३७	७	१९८७	१४-१९
युवाचित्त धर्म से विमुख क्यों?	दर्शनाचार्य मुनि योगेश	३७	७	१९८७	२०-२२
जैन साहित्य के महान् सेवक : हीरालाल कापड़िया	श्री अगरचन्द नाहटा	३७	७	१९८७	२३-२६
वैदिक वाङ्मय और पुरातत्त्व में तीर्थंकर ऋषभदेव	डॉ० राजदेव दुबे	३७	८	१९८७	२-६
पुरुदेवचम्पू का आलोचनात्मक अध्ययन	डॉ० कपूरचन्द जैन	३८	८	१९८७	७-१३
श्रमण संस्था और समाज	सौभाग्यमल जैन	३८	८	१९८७	१४-१९
आहार दर्शन	डॉ० कस्तूरीमल गोस्वामी	३८	८	१९८७	२१-२२
जैन दर्शन में जन्म और मृत्यु की प्रक्रिया	अम्बिकादत्त शर्मा	३८	९	१९८७	२-९
संस्कृत साहित्य में कर्मवाद	रत्नलाल जैन	३८	९	१९८७	१०-१६
प्रबन्धकोश में उपलब्ध आर्थिक विवरण	अशोककुमार सिंह	३८	९	१९८७	१७-२५
भगवान् पार्श्वनाथ का निर्वाण पर्व	रमेशकुमार जैन	३८	१०	१९८७	२-५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन एवं बौद्ध दर्शन	सुभाषमुनि 'सुमन'	३८	१०	१९८७	६-१७
हिंसक और अहिंसक युद्ध	अशोककुमार सिंह	३८	११	१९८७	१-३
जैन धर्म में निर्जरा तप	डॉ० मुकुलराज मेहता	३८	११	१९८७	४-८
आत्म-अनात्म द्वन्द्वात्मिकी	संन्यासी राम	३८	११	१९८७	९-१९
आचारांग में समाज और संस्कृति	स्व० डॉ० परमेष्ठीदास जैन	३८	११	१९८७	२०-३२
आचारांग का दार्शनिक पक्ष	स्व० डॉ० परमेष्ठीदास जैन	३८	१२	१९८७	१-११
उत्तर भारत की सामाजिक संरचना - जैन आगम साहित्य के सन्दर्भ में	उमेशचन्द्र सिंह	३८	१२	१९८७	१२-२४
मरण के विविध प्रकार	रज्जन कुमार	३८	१२	१९८७	२५-३१
महावीर का अपरिग्रह सिद्धान्त : सामाजिक न्याय का अमोघमन्त्र	डॉ० कमलचन्द सोगाणी	३९	१	१९८७	१-४
जैन तत्त्व विद्या में पुद्गल की अवधारणा	अम्बिकादत्त शर्मा	३९	१	१९८७	६-१५
महावीर और गाँधी की जीवन दृष्टि : सत्य की शोध	दरियाव सिंह मेहता 'जिज्ञासु'	३९	१	१९८७	१७-२४
आचारांग सूत्र : एक विश्लेषण	डॉ० सागरमल जैन	३९	२	१९८७	१-१९
गुजरात में जैनधर्म	स्व० मुनिश्री जिनविजय जी	३९	३	१९८८	१-३९
तत्त्वसूत्र	संन्यासी राम	३९	४	१९८८	१-८
हरिभद्र के धर्म-दर्शन में क्रान्तिकारी तत्त्व : सम्बोध प्रकरण के सन्दर्भ में	डॉ० सागरमल जैन	३९	४	१९८८	९-२०
हरिभद्र की क्रान्तदर्शी दृष्टि, धूर्ताख्यान के सन्दर्भ में	डॉ० सागरमल जैन	३९	४	१९८८	२१-२५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
हरिभद्र के धूर्ताख्यान का मूल स्रोत : एक चिन्तन	डॉ० सागरमल जैन	३९	४	१९८८	२६-२८
प्रलय से एकलय की ओर	मुनि राजेन्द्र कुमार रत्नेश	३९	५	१९८८	२-४
जगत सत्य या मिथ्या	कन्हैया लाल सरावगी	३९	५	१९८८	५-११
समाधिमरण का स्वरूप	रज्जन कुमार	३९	५	१९८८	१२-१७
जैन एवं बौद्ध धर्मों के वैदिक स्वरूप	डॉ० राजेन्द्र प्रसाद कश्यप	३९	५	१९८८	१८-२३
राजस्थानी एवं हिन्दी जैन साहित्य	श्री भँवरलाल नाहटा	३९	६-७	१९८८	२-४
जैनधर्म में समाधिमरण की अवधारणा	रज्जन कुमार	३९	६-७	१९८८	३-८
प्राचीन भारतीय सैन्य विज्ञान एवं युद्धनीति	इन्द्रेशचन्द्र सिंह	३९	८	१९८८	९-१७
हिन्दू तथा जैन राजनैतिक आदर्शों का समीक्षात्मक अध्ययन	कु० प्रतिभा जैन	३९	८	१९८८	१८-२२
पश्चाताप	भँवरलाल नाहटा	३९	८	१९८८	२३-२४
जैनधर्म का एक विलुप्त सम्प्रदाय : यापनीय (क्रमशः)	प्रो० सागरमल जैन	३९	९	१९८८	१-१६
आचार्य अमितगति : व्यक्तिव एवं कृतित्व	डॉ० कुसुम जैन	३९	९	१९८८	१७-२३
जैन तर्कशास्त्र के सप्तभंगी नय की आगमिक व्याख्या	डॉ० भिखारीराम यादव	३९	१०	१९८८	१-२६
जैन साहित्य में कृष्ण कथा	श्रीमती रीता सिंह	३९	१०	१९८८	२७-३२
जैन धर्म का एक विलुप्त सम्प्रदाय : यापनीय	प्रो० सागरमल जैन	३९	११	१९८८	१-१८
पश्चाताप : एक विवेचन	श्री भँवरलाल नाहटा	३९	११	१९८८	२२-२३
भावात्मक एकता : प्रकृति और जीवन का सत्य	डॉ० नरेन्द्र भानावत	३९	११	१९८८	२५-२८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
पुरातत्त्वाचार्य पद्मश्री स्व० मुनि जिनविजय जी	श्री हजारीमल बांठिया	३९	१२	१९८८	१-७
आचारांग के शस्त्रपरिज्ञा अध्ययन में प्रतिपादित-षड्जीवनिकाय सम्बन्धी अहिंसा	डॉ० फूलचन्द जैन	३९	१२	१९८८	८-१५
काशी के कतिपय ऐतिहासिक तथ्य	श्री अमृतलाल शास्त्री	३९	१२	१९८८	१६-१८
अन्तर-यात्रा	मुनि राजेन्द्र कुमार 'रत्नेश'	३९	१२	१९८८	१९-२१
पाण्डवचरित्र का तुलनात्मक अध्ययन	कल्याणी देवी जायसवाल	३९	१२	१९८८	२२-२७
धम्मपद और उत्तराध्ययन का निरोधवादी दृष्टिकोण	डॉ० महेन्द्रनाथ सिंह	३९	१२	१९८८	२८-२९
हरिभद्रसूरि का समय-निर्णय (क्रमशः)	स्व० मुनिश्री जिनविजयजी	४०	१	१९८८	१-३२
हरिभद्रसूरि का समय-निर्णय	स्व० मुनिश्री जिनविजयजी	४०	२	१९८८	१-३०
अष्टलक्षी : संसार का एक अद्भुत ग्रंथ	महोपाध्याय चन्द्रप्रभ सागर	४०	३	१९८९	२-८
अनेकान्तदर्शन	मुनिश्री नगराज जी	४०	३	१९८९	९-१०
जैन दर्शन और आधुनिक विज्ञान	डॉ० मुकुलराज मेहता	४०	३	१९८९	११-१४
भावडारगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	डॉ० शिव प्रसाद	४०	३	१९८९	१५-३३
जैन धर्म मानवतावादी दृष्टिकोण : एक मूल्यांकन	डॉ० ललितकिशोरलाल श्रीवास्तव	४०	३	१९८९	३४-४५
आनन्दघन जी खरतरगच्छ में दीक्षित थे	श्री भँवरलाल नाहटा	४०	४	१९८९	२-१२
पुरानी हिन्दी (मरुगूर्जर) के प्राचीनतम कवि धनपाल	डॉ० शितिकण्ठ मिश्र	४०	४	१९८९	१३-१७
जैन लेखों का सांस्कृतिक अध्ययन	श्री नारायण दुबे	४०	४	१९८९	१८-२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन दर्शनों में आवश्यक साधना	कु० कमला जोशी	४०	४	१९८९	२७-३४
कर्म की विचित्रता-मनोविज्ञान की भाषा में	डॉ० रत्नलाल जैन	४०	४	१९८९	३५-४१
पार्श्वकालीन जैनधर्म	डॉ० विनोद कुमार तिवारी	४०	५	१९८९	३-९
महाकवि माघ ओसवाल थे?	श्री माँगीलाल भूतोड़िया	४०	५	१९८९	१०-१४
कोरंट गच्छ	डॉ० शिवप्रसाद	४०	५	१९८९	१५-४३
भगवान् महावीर की मंगल विरासत	पं० सुखलाल संघवी	४०	६	१९८९	१-८
अध्यात्म और विज्ञान	प्रो० सागरमल जैन	४०	६	१९८९	९-१९
कल्पप्रदीप में उल्लिखित भगवान् महावीर के कतिपय तीर्थक्षेत्र	डॉ० शिव प्रसाद	४०	६	१९८९	२०-२९
भगवान् महावीर की प्रमुख आर्यिकाएँ	डॉ० अशोक कुमार सिंह	४०	६	१९८९	३०-३३
नाणकीय गच्छ	डॉ० शिव प्रसाद	४०	७	१९८९	२-३४
उत्तराध्ययन में मोक्ष की अवधारणा	डॉ० महेन्द्र नाथ सिंह	४०	७	१९८९	३५-३८
भारतीय संस्कृति और श्रमण परम्परा	श्री सौभाग्यमल जैन	४०	८	१९८९	२-९
वेदान्त दर्शन और जैन दर्शन	डॉ० सुदर्शनलाल जैन	४०	८	१९८९	१०-१६
जैन एवं मीमांसा दर्शन में कर्म की अवधारणा	डॉ० कृष्णा जैन	४०	८	१९८९	१७-२१
सांख्य दर्शन और जैन दर्शन : एक तुलनात्मक अध्ययन	डॉ० सुदर्शनलाल जैन	४०	९	१९८९	२-१०
आहार-विहार में उत्सर्ग - अपवाद मार्ग का समन्वय	डॉ० सुदर्शनलाल जैन	४०	९	१९८९	११-१५
जैनागमवर्णित तीर्थंकरों की भिक्षुणियाँ	डॉ० अशोक कुमार सिंह	४०	९	१९८९	१७-३०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
चौबीसवें तीर्थंकर भगवान् महावीर का जन्म स्थान	डॉ० सीताराम राय	४०	१०	१९८९	१-७
ओसवाल और पार्श्वापत्य सम्बन्धों पर टिप्पणी	श्री भँवरलाल नाहटा	४०	१०	१९८९	८-१३
जैन परम्परा में महाभारत कथा	डॉ० कल्याणी देवी जायसवाल	४०	१०	१९८९	१४-१९
संगीत समयसार का आलोचनात्मक अध्ययन	लक्ष्मीबाला अग्रवाल	४०	११	१९८९	२०-२९
संवत्सरी	डॉ० गोकुलचन्द जैन	४०	११	१९८९	३
पर्युषण पर्व का मतलब	भाई बंशीधर	४०	११	१९८९	४
पर्युषण और सामाजिक शुद्धि	मुनि नेमिचन्द्र	४०	११	१९८९	६-१०
प्राचीन जैन साहित्य के प्रारम्भिक निष्ठासूत्र	पं० दलसुख भाई मालवणिया	४०	११	१९८९	११-२०
जैन एवं बौद्ध दर्शनों में कर्म की विचित्रता	रत्नलाल जैन	४०	११	१९८९	११-२०
कल्पप्रदीप में उल्लिखित 'खेड़ा' गुजरात का नहीं राजस्थान का है	श्री भँवरलाल नाहटा	४०	११	१९८९	२५-२८
धर्म और दर्शन के क्षेत्र में हरिभद्र का अवदान	श्रीमती संगीता झा	४०	११	१९८९	३०-४०
जैनदर्शन में परीषह जय का स्वरूप एवं महत्त्व	कु० कमला जोशी	४०	११	१९८९	४१-४५
आचार्य हेमचन्द्र एक युग पुरुष	डॉ० सागरमल जैन	४०	१२	१९८९	३-१५
संलेखना के विभिन्न पर्यायवाची शब्द	डॉ० रज्जन कुमार	४०	१२	१९८९	१६-२०
विश्वचेतना के मनस्वी सन्त विजयवल्लभ सूरि	पंन्यास नित्यानन्द विजय	४०	१२	१९८९	२१-२५
युद्ध और युद्धनीति	इन्द्रेशचन्द्र सिंह	४०	१२	१९८९	२६-३६
स्याद्वाद और सप्तभंगी : एक चिन्तन	प्रो० सागरमल जैन	४१	१-३	१९९०	३-४४
धर्मघोषगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	डॉ० शिव प्रसाद	४१	१-३	१९९०	४५-१०४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैनधर्म में मानव	डॉ० रज्जन कुमार एवं डॉ० सुनीता कुमारी	४१	१-३	१९९०	१०५-११२
जैनधर्म में तीर्थ की अवधारणा	प्रो० सागरमल जैन	४१	४-६	१९९०	१-२८
जैन संस्कृति और श्रमण परम्परा	प्रो० शान्ताराम भालचन्द्र देव	४१	४-६	१९९०	२९-४०
मानव व्यक्तित्व का वर्गीकरण	डॉ० त्रिवेणी प्रसाद सिंह	४१	४-६	१९९०	४१-५०
सूत्रकृतांग में वर्णित दार्शनिक विचार	डॉ० श्रीप्रकाश पाण्डेय	४१	४-६	१९९०	५१-७६
पार्श्वनाथ जन्मभूमि मंदिर, वाराणसी का पुरातत्त्वीय वैभव	प्रो० सागरमल जैन	४१	४-६	१९९०	७७-८८
प्रबन्धकोश का ऐतिहासिक अध्ययन	प्रवेश भारद्वाज	४१	४-६	१९९०	८९-१००
जैन परम्परा का ऐतिहासिक विश्लेषण	प्रो० सागरमल जैन	४१	७-९	१९९०	१-१६
सत् का स्वरूप : अनेकान्तवाद और व्यवहारवाद की दृष्टि में	डॉ० राजेन्द्र कुमार सिंह	४१	७-९	१९९०	१७-२५
भारतीय राजनीति में जैन संस्कृति का योगदान	इन्द्रेशचन्द्र सिंह	४१	७-९	१९९०	२७-३४
आचार्य हरिभद्र का योगदान	श्री धनंजय मिश्र	४१	७-९	१९९०	३५-४४
पश्चिमी भारत के जैन तीर्थ	डॉ० शिव प्रसाद	४१	७-९	१९९०	४५-७८
सिया and असिया Two Prakrit forms and Pischel on them	Dinanath Sharma	४१	७९	१९९०	७९-८२
भट्ट अकलंककृत लघीयस्त्रय : एक दार्शनिक अध्ययन	हेमन्त कुमार जैन	४१	७-९	१९९०	८३-९०
जैनधर्म में नारी की भूमिका	प्रो० सागरमल जैन	४१	१०-१२	१९९०	१-४८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
क्षेत्रज्ञ शब्द के विविध रूपों की कथा और उसका अर्धमागधी रूपान्तर	डॉ० के० आर० चन्द्र	४१	१०-१२	१९९०	४९-५६
हरिभद्र की श्रावकप्रज्ञप्ति में वर्णित अहिंसा : आधुनिक सन्दर्भ में	डॉ० अरुण प्रताप सिंह	४१	१०-१२	१९९०	५७-७०
ईश्वरत्व : जैन और योग-एक तुलनात्मक अध्ययन	डॉ० ललित किशोर लाल श्रीवास्तव	४१	१०-१२	१९९०	७१-८४
जैन आगम साहित्य में वर्णित दास-प्रथा	डॉ० इन्द्रेशचन्द्र सिंह	४१	१०-१२	१९९०	८५-९२
जैनाचार्य राजशेखरसूरि : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	डॉ० अशोक कुमार सिंह	४१	१०-१२	१९९०	९३-११०
शाजापुर का पुरातात्त्विक महत्त्व	प्रो० कृष्णदत्त बाजपेयी	४१	१०-१२	१९९०	१११-११४
जैनधर्म के धार्मिक अनुष्ठान एवं कलातत्त्व	डॉ० सागरमल जैन	४२	१-३	१९९१	१-२९
जैन श्रमण साधना : एक परिचय	डॉ० सुभाष कोठारी	४२	१-३	१९९१	३३-५०
तीर्थंकर महावीर जन्मना ब्राह्मण या क्षत्रिय	श्री सौभाग्यमल जैन	४२	१-३	१९९१	५१-५५
समयसार के अनुसार आत्मा का कर्तृत्व-अकर्तृत्व एवं भोक्तृत्व-अभोक्तृत्व	डॉ० श्रीप्रकाश जी पाण्डेय	४२	१-३	१९९१	५७-७०
भरतमुनि द्वारा प्राकृत को संस्कृत के साथ प्रदत्त सम्मान और गौरवपूर्ण स्थान	डॉ० के० आर० चन्द्र	४२	१-३	१९९१	७१-७४
पाण्डवपुराण में राजनैतिक स्थिति	रीता बिश्नोई	४२	१-३	१९९१	७५-८६
इषुकारीय अध्ययन (उत्तराध्ययन) एवं शांतिपर्व (महाभारत) का पिता-पुत्र संवाद	डॉ० अरुण प्रताप सिंह	४२	१-३	१९९१	८७-९२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन भाषा दर्शन की समस्याएं	श्रीमती अर्चनारानी पाण्डेय	४२	१-३	१९९१	९३-९६
उपदेशमाला (धर्मदास गणि) एक समीक्षा	दीनानाथ शर्मा	४२	१-३	१९९१	९७-१००
अर्हं परमात्मने नमः	प्रो० कल्याणमल लोढ़ा	४२	४-६	१९९१	१-१०
प्राकृत व्याकरण : वररुचि बनाम हेमचन्द्र- अन्धानुकरण या विशिष्ट प्रदान	के० आर० चन्द्र	४२	४-६	१९९१	११-१९
बसन्तविलासकार बालचन्द्रसूरि : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	डॉ० यदुनाथ प्रसाद दुबे	४२	४-६	१९९१	२१-३२
अन्य प्रमुख भारतीय दर्शनों एवं जैन दर्शन में कर्मबन्ध का तुलनात्मक स्वरूप	कु० कमला जोशी	४२	४-६	१९९१	३३-४३
ऋग्वेद में अहिंसा के सन्दर्भ	डॉ० प्रतिभा त्रिपाठी	४२	४-६	१९९१	४५-६२
जैन आगमों में वर्णित जातिगत समता	डॉ० इन्द्रेश चन्द्र सिंह	४२	४-६	१९९१	६३-७२
आचारांग में अनाशक्ति	डॉ० श्रीप्रकाश पाण्डेय	४२	४-६	१९९१	७३-८८
जैन अभिलेखों की भाषाओं का स्वरूप एवं विविधताएं	डॉ० एस० एन० दुबे	४२	४-६	१९९१	८९-९२
महावीर निर्वाण भूमि पावा-एक विमर्श	श्री भगवतीप्रसाद खेतान	४२	४-६	१९९१	९३-९८
समाधिमरण की अवधारणा की आधुनिक परिप्रेक्ष्य में समीक्षा	डॉ० सागरमल जैन	४२	४-६	१९९१	९९-१०१
पंचपरमेष्ठि मन्त्र का कर्तृत्व और दशवैकालिक	साध्वी (डॉ०) सुरेखा श्री	४२	७-१२	१९९१	१-१०
मूल अर्धमागधी के स्वरूप की पुनर्रचना	डॉ० के० आर० चन्द्र	४२	७-१२	१९९१	११-१५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
उच्चैर्नागर शाखा के उत्पत्ति स्थान एवं उमास्वाति के जन्मस्थल की पहचान	डॉ० सागरमल जैन	४२	७-१२	१९९१	१७-२४
सूडा-सहेली की प्रेमकथा	श्री भँवरलाल नाहटा	४२	७-१२	१९९१	२५-३४
जैन सम्मत आत्मस्वरूप का अन्य भारतीय दर्शनों से तुलनात्मक विवेचन	डॉ० (श्रीमती) कमला पंत	४२	७-१२	१९९१	३५-४३
अपभ्रंश के जैन पुराण और पुराणकार	रीता बिश्नोई	४२	७-१२	१९९१	४५-५६
कोटिशिला तीर्थ का भौगोलिक अभिज्ञान	डॉ० कस्तूरचन्द जैन	४२	७-१२	१९९१	५७-६०
उपकेशगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	डॉ० शिव प्रसाद	४२	७-१२	१९९१	६१-१८२
मूल्य और मूल्य बोध की सापेक्षता का सिद्धांत	डॉ० सागरमल जैन	४३	१-३	१९९२	१-२२
गुणस्थान सिद्धांत का उद्भव एवं विकास	डॉ० सागरमल जैन	४३	१-३	१९९२	२३-४३
चन्द्रवेध्यक(प्रकीर्णक) एक आलोचनात्मक परिचय	श्री सुरेश सिसोदिया	४३	१-३	१९९२	४५-५३
श्रमण एवं ब्राह्मण परम्परा में परमेष्ठी पद	साध्वी (डॉ०) सुरेखा श्री	४३	१-३	१९९२	५५-६७
ऋषिभाषित का सामाजिक दर्शन	साध्वी (डॉ०) प्रमोद कुमारी	४३	१-३	१९९२	६९-७९
पर्यावरण एवं अहिंसा	डॉ० डी०आर०भण्डारी	४३	१-३	१९९२	८१-९०
स्याद्वाद की समन्वयात्मक दृष्टि	डॉ० (कु०) रत्ना श्रीवास्तव	४३	१-३	१९९२	९१-१०२
युगपुरुष आचार्य सम्राट आनन्द ऋषि जी म०	उपाचार्य देवेन्द्र मुनि	४३	१-३	१९९२	१०३-१०५
गुणस्थान सिद्धांत का उद्भव एवं विकास	डॉ० सागरमल जैन	४३	४-६	१९९२	१-२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैनदर्शन में शब्दार्थ सम्बन्ध	डॉ० सुदर्शनलाल जैन	४३	४-६	१९९२	२७-३९
जालिहरगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	डॉ० शिवप्रसाद	४३	४-६	१९९२	४१-४६
प्राकृत जैनागम परम्परा में गृहस्थाचार तथा उसकी पारिभाषिक शब्दावली	डॉ० कमलेश जैन	४३	४-६	१९९२	४७-६८
त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित में प्रतिपादित सांस्कृतिक जीवन	डॉ० उमेशचन्द्र श्रीवास्तव	४३	४-६	१९९२	६९-८४
जैनधर्म और दर्शन की प्रासंगिकता-वर्तमान परिप्रेक्ष्य में	डॉ० इन्दु	४३	७-९	१९९२	१-८
वैदिक साहित्य में जैन-परम्परा	प्रो० दयानन्द भार्गव	४३	७-९	१९९२	९-१३
श्वेताम्बर मूलसंघ एवं माथुर संघ-एक विमर्श	डॉ० सागरमल जैन	४३	७-९	१९९२	१५-२३
जैन दृष्टि में नारी की अवधारणा	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	४३	७-९	१९९२	२५-२८
पूर्णिमागच्छ का संक्षिप्त इतिहास	डॉ० शिवप्रसाद	४३	७-९	१९९२	२९-५१
कवि छल्ह कृत अरडकमल्ल का चार भाषाओं में वर्णन	श्री भँवरलाल नाहटा	४३	७-९	१९९२	५३-५८
द्वादशार नयचक्र का दार्शनिक अध्ययन	जितेन्द्र बी० शाह	४३	७-९	१९९२	५९-६३
जैन कर्म-सिद्धान्त और मनोविज्ञान	डॉ० रत्नलाल जैन	४३	७-९	१९९२	६५-७०
जैनधर्म और आधुनिक विज्ञान	डॉ० सागरमल जैन	४३	१०-१२	१९९२	१-१२
प्रागैतिहासिक भारत में सामाजिक मूल्य और परम्पराएं	डॉ० जगदीशचन्द्र जैन	४३	१०-१२	१९९२	१३-१९
जैन एवं बौद्ध दर्शन में प्रमाण-विवेचन	डॉ० धर्मचन्द जैन	४३	१०-१२	१९९२	२१-४०
क्षेत्रज्ञ शब्द का स्वीकार्य प्राचीनतम अर्धमागधी रूप	डॉ० के० आर० चन्द्र	४३	१०-१२	१९९२	४१-४४
अष्टपाहुड की प्राचीन टीकाएं	डॉ० महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज'	४३	१०-१२	१९९२	४५-४८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
पूर्णिमागच्छ-प्रधान शाखा अपरनाम ढंढेरिया शाखा का संक्षिप्त इतिहास	डॉ० शिवप्रसाद	४३	१०-१२	१९९२	४९-६६
जैन दार्शनिक साहित्य में ईश्वरवाद की समालोचना	श्रीमती मंजुला भट्टाचार्या	४३	१०-१२	१९९२	६७-६९
आत्मोपलब्धि की कला-ध्यान	महोपाध्याय मुनि चन्द्रप्रभसागर	४४	१-३	१९९३	१-७
आचार्य हरिभद्र और उनका योग	डॉ० कमल जैन	४४	१-३	१९९३	८-२७
डॉ० ईश्वरदयाल जैन कृत "जैन निर्वाण परम्परा और परिवृत" लेख में 'आत्मा की माप-जोख' शीर्षक के अन्तर्गत उठाये गये प्रश्नों के उत्तर	श्री पुखराज भण्डरी	४४	१-३	१९९३	२८-३४
पल्लवनरेश महेन्द्रवर्मन "प्रथम" कृत मत्तविलास प्रहसन में वर्णित धर्म और समाज	दिनेशचन्द्र चौबीसा	४४	१-३	१९९३	३५-४१
सार्धपूर्णिमागच्छ का इतिहास	डॉ० शिवप्रसाद	४४	१-३	१९९३	४२-५९
आचार्य हरिभद्र और उनका साहित्य	डॉ० कमल जैन	४४	४-६	१९९३	१-१२
षड्जीवनिकाय में त्रस एवं स्थावर के वर्गीकरण की समस्या	डॉ० सागरमल जैन	४४	४-६	१९९३	१३-२१
पूर्णिमापक्ष-भीमपल्लीयाशाखा का इतिहास	डॉ० शिवप्रसाद	४४	४-६	१९९३	२२-३५
वसन्तविलास महाकाव्य का काव्य-सौन्दर्य	डॉ० केशवप्रसाद गुप्त	४४	४-६	१९९३	३६-५८
महायान सम्प्रदाय की समन्वयात्मक दृष्टि : भागवद्गीता और जैनधर्म के परिप्रेक्ष्य में	डॉ० सागरमल जैन	४४	७-९	१९९३	१-१०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
वृत्ति : बोध और विरोध	महोपाध्याय चन्द्रप्रभ सागर	४४	७-९	१९९३	११-१६
जैन परम्परा के विकास में स्त्रियों का योगदान	डॉ० अरुण प्रताप सिंह	४४	१०-१२	१९९३	१-७
अशोक के अभिलेखों में अनेकांतवादी चिन्तन:एक समीक्षा	डॉ० अरुण प्रताप सिंह	४४	१०-१२	१९९३	८-१३
हिन्दू एवं जैन परम्परा में समाधिमरण : एक समीक्षा	डॉ० अरुण प्रताप सिंह	४४	१०-१२	१९९३	१४-१८
प्राचीन जैन ग्रन्थों में कर्म सिद्धान्त का विकास क्रम	डॉ० अशोक सिंह	४४	१०-१२	१९९३	१९-२८
हिन्दी जैन साहित्य के विस्मृत बुन्देली कवि : देवीदास	डॉ० (श्रीमती) विद्यावती जैन	४४	१०-१२	१९९३	२९-३९
मूक सेविका : विजयाबहन	शरद कुमार साधक	४४	१०-१२	१९९३	४०-४१
बृहत्कल्पसूत्रभाष्य का सांस्कृतिक अध्ययन	डॉ० महेन्द्र प्रताप सिंह	४४	१०-१२	१९९३	४२-४५
त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र: एक कलापरक अध्ययन	डॉ० शुभा पाठक	४४	१०-१२	१९९३	४६-४८
काशी के घाट : कलात्मक एवं सांस्कृतिक अध्ययन	डॉ० हरिशंकर	४४	१०-१२	१९९३	४९-५१
जैन धर्म-दर्शन का सारतत्त्व	डॉ० सागरमल जैन	४५	१-३	१९९४	१-१३
भगवान् महावीर का जीवन और दर्शन	डॉ० सागरमल जैन	४५	१-३	१९९४	१४-१७
जैनधर्म में भक्ति की अवधारणा	,,	४५	१-३	१९९४	१८-३६
जैनधर्म में स्वाध्याय का अर्थ एवं स्थान	,,	४५	१-३	१९९४	३७-४३
जैन साधना में ध्यान	,,	४५	१-३	१९९४	४४-७९
अर्धमागधी आगम साहित्य में समाधिमरण की अवधारणा	,,	४५	१-३	१९९४	८०-९३
जैन कर्म सिद्धान्त : एक विश्लेषण	,,	४५	१-३	१९९४	९४-१२७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
भारतीय संस्कृति का समन्वित स्वरूप	,,	४५	४-६	१९९४	१२९-१३४
पर्यावरण के प्रदूषण की समस्या और जैनधर्म	,,	४५	४-६	१९९४	१३५-१४३
जैनधर्म और सामाजिक समता	,,	४५	४-६	१९९४	१४४-१६१
जैन आगमों में मूल्यात्मक शिक्षा और वर्तमान सन्दर्भ	,,	४५	४-६	१९९४	१६२-१७२
खजुराहो की कला और जैनाचार्यों की - समन्वयात्मक एवं सहिष्णु दृष्टि	,,	४५	४-६	१९९४	१७३-१७८
महापण्डित राहुल सांकृत्यायन के जैनधर्म सम्बन्धी मन्तव्यों की समालोचना	,,	४५	४-६	१९९४	१७९-१८४
ऋग्वेद में अर्हत् और ऋषभवाची ऋचायें:एक अध्ययन	,,	४५	४-६	१९९४	१८५-२०२
निर्युक्त साहित्य : एक पुनर्चिन्तन	,,	४५	४-६	१९९४	२०३-२३३
जैन एवं बौद्ध पारिभाषिक शब्दों के अर्थ-निर्धारण और अनुवाद की समस्या	,,	४५	४-६	१९९४	२३४-२३८
जैन आगमों में हुआ भाषिक स्वरूप परिवर्तन : एक विमर्श	,,	४५	४-६	१९९४	२३९-२५३
भगवान् महावीर की निर्वाण तिथि पर पुनर्विचार	,,	४५	४-६	१९९४	२५४-२६८
कर्म की नैतिकता का आधार-तत्त्वार्थसूत्र के प्रसङ्ग में	डॉ. रत्ना श्रीवास्तव	४५	७-९	१९९४	१-९
रामचन्द्रसूरि और उनका साहित्य	डॉ० कृष्णपाल त्रिपाठी	४५	७-९	१९९४	१०-२२
प्राकृत की बृहत्कथा "वसुदेवहिण्डी" में वर्णित कृष्ण	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	४५	७-९	१९९४	२३-३०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
मडाहड़ागच्छ का इतिहास : एक अध्ययन	डॉ० शिवप्रसाद	४५	७-९	१९९४	३१-५१
सन्दर्भ एवं भाषायी दृष्टि से आचारांग के उपोद्धात में प्रयुक्त प्रथम वाक्य के पाठ की प्राचीनता पर कुछ विचार	डॉ० के० आर० चन्द्र	४५	७-९	१९९४	५२-५९
बारहभावना : एक अनुशीलन	डॉ० कमलेश कुमार जैन	४५	७-९	१९९४	५५-६१
भारतीय दर्शन में मोक्ष की अवधारणा	डॉ० राजीव प्रचण्डिया	४५	१०-१२	१९९४	१-९
कर्म और कर्मबन्ध	डॉ० नन्दलाल जैन	४५	१०-१२	१९९४	१०-२२
महावीर निर्वाणभूमि पावा : एक समीक्षा	डॉ० जगदीशचन्द्र जैन	४५	१०-१२	१९९४	२३-२५
आचार्य सम्राट पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज एक अशुंमाली	श्री हीरालाल जैन	४५	१०-१२	१९९४	२६-३२
जैन महापुराण : एक कलापरक अध्ययन	डॉ० कुमुद गिरि	४५	१०-१२	१९९४	३३-३६
अर्धमागधी आगम साहित्य	डॉ० सागरमल जैन	४६	१-३	१९९५	१-४५
प्राचीन जैन आगमों में चार्वाक दर्शन का प्रस्तुतीकरण	डॉ० सागरमल जैन	४६	१-३	१९९५	४६-५८
महावीर के समकालीन विभिन्न आत्मवाद एवं उसमें जैन आत्मवाद का वैशिष्ट्य	डॉ० सागरमल जैन	४६	१-३	१९९५	५९-६८
सकरात्मक अहिंसा की भूमिका	,,	४६	१-३	१९९५	६९-८६
तीर्थंकर और ईश्वर के सम्प्रत्ययों का तुलनात्मक विवेचन	,,	४६	१-३	१९९५	८७-९२
मन-शक्ति, स्वरूप और साधना : एक विश्लेषण	,,	४६	४-६	१९९५	९७-१२२
जैन दर्शन में नैतिकता की सापेक्षता	,,	४६	४-६	१९९५	१२३-१३३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
सदाचार के शाश्वत मानदण्ड	,,	४६	४-६	१९९५	१३४-१४९
जैन धर्म का लेश्या-सिद्धान्त : एक विमर्श	,,	४६	४-६	१९९५	१५०-१६५
प्रज्ञापुरुष पं० जगन्नाथ जी उपाध्याय की दृष्टि में बुद्ध व्यक्ति नहीं प्रक्रिया	,,	४६	४-६	१९९५	१६६-१६९
युगीन परिवेश में महावीर स्वामी के सिद्धान्त	,,	४६	७-९	१९९५	१-६
भक्तामरस्तोत्र : एक अध्ययन	डॉ० हरिशंकर पाण्डेय	४६	७-९	१९९५	७-९
नागेन्द्रगच्छ का इतिहास	डॉ० शिवप्रसाद	४६	७-९	१९९५	२०-६५
अर्धमागधी भाषा में सम्बोधन का एक-विस्मृत शब्द-प्रयोग 'आउसन्ते'	डॉ० के० आर० चन्द्र	४६	७-९	१९९५	६६-६९
चातुर्मास : स्वरूप और परम्पराएँ	श्री कलानाथ शास्त्री	४६	७-९	१९९५	७०-७३
वाचक श्रीवल्लभरचित 'विदग्धमुखमंडन' की दर्पण टीका की पूरी प्रति अन्वेषणीय है	स्व० अगरचन्द नाहटा	४६	७-९	१९९५	७४-७५
द्रौपदी कथानक का जैन और हिन्दू स्रोतों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन	श्रीमती शीला सिंह	४६	७-९	१९९५	७६-८२
गांधी जी के मित्र और मार्गदर्शक : श्रीमद्राजचन्द्र	डॉ० सुरेन्द्र वर्मा	४६	१०-१२	१९९५	१-४
भगवान् महावीर की निर्वाण तिथि : एक पुनर्विचार	डॉ० अरुण प्रताप सिंह	४६	१०-१२	१९९५	५-१४
तरंगलोला और उसके रचयिता से सम्बन्धित-भ्रान्तियों का निवारण	पं० विश्वनाथ पाठक	४६	१०-१२	१९९५	१५-२३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
'संदेशरासक' में पर्यावरण के तत्त्व	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	४६	१०-१२	१९९५	२४-२७
हारीजगच्छ	डॉ० शिवप्रसाद	४६	१०-१२	१९९५	२८-३३
समकालीन जैन समाज में नारी	डॉ० प्रतिभा जैन	४६	१०-१२	१९९५	३४-४१
कालचक्र	डॉ० धूपनाथ प्रसाद	४६	१०-१२	१९९५	४२-४३
ऐतिहासिक अध्ययन के जैन स्रोत और उनकी प्रामाणिकता : एक अध्ययन	असीम कुमार मिश्र	४६	१०-१२	१९९५	४४-५१
प्राचीन जैन कथा साहित्य का उद्भव, विकास और वसुदेवहिंडी	डॉ० (श्रीमती) कमल जैन	४६	१०-१२	१९९५	५२-६३
Meaning and Typology of Violence	Dr. Surendra Verma	46	10-12	1995	81-86
Paṇis and Jainas	Dr. S. P. Naranga	46	10-12	1995	87-89
Sādhna of Mahāvīra as Depicted in UpadhānaŚruta	Dr. A. K. Singh	46	10-12	1995	90-98
Select Vyāntara Devatās in Early Indian Art and Literature	Dr. Nandini Mehta	46	10-12	1995	99-103
Srī Hanumāna in Padmapurāṇa	Surendra Kumar Garga	46	10-12	1995	104-117
जैनधर्म और हिन्दूधर्म (सनातन धर्म) का पारस्परिक सम्बन्ध	डॉ० सागरमल जैन	४७	१-३	१९९६	३-१०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
प्राचीन जैन आगमों में राजस्व व्यवस्था	डॉ० अनिल कुमार सिंह	४७	१-३	१९९६	११-१९
जैनदर्शन में पुरुषार्थ चतुष्टय	प्रो० सुरेन्द्र वर्मा	४७	१-३	१९९६	२१-४६
वैदिक एवं श्रमण परम्परा में ध्यान	डॉ० रज्जन कुमार	४७	१-३	१९९६	४७-५९
धूमावली-प्रकरणम्	साध्वी अतुलप्रभा	४७	१-३	१९९६	६०-६४
Yapaniya Sect : An Introduction	Prof. S. M. Jain & Trans Dr. A. K. Singh	47	1-3	1996	99-114
Jain Archaeology and Epigraphy	Prof. K. D. Bajpai	47	1-3	1996	115-119
पाणिनीय व्याकरण का सरलीकरण और आचार्य हेमचन्द्र	श्यामधर शुक्ल	४७	४-६	१९९६	३-१०
वसुदेवहिंडी का समीक्षात्मक अध्ययन	डॉ० कमल जैन	४७	४-६	१९९६	११-३५
हर्षपुरीयगच्छ अपरनाम मलधारीगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	डॉ० शिवप्रसाद	४७	४-६	१९९६	३६-६७
The Story of the Origin of Yāpanīya Sect	Prof. S. M. Jain Trans. Dr. A. K. Singh	47	4-6	1996	71-83
Philosophical Aspect of Non-violence	Dr. Bashishtha Narayan Sinha	47	4-6	1996	84-111
जैन आगम और गुणस्थान सिद्धान्त	डॉ० श्रीप्रकाश पाण्डेय	४७	७-९	१९९६	३-१४
जैन धर्म और प्रयाग	डॉ० कृष्णलाल त्रिपाठी	४७	७-९	१९९६	१५-२२
जीरापल्लीगच्छ का इतिहास	डॉ० शिवप्रसाद	४७	७-९	१९९६	२३-३३
आधुनिक विज्ञान, ध्यान एवं सामायिक	डॉ० पारसमल अग्रवाल	४७	७-९	१९९६	३४-४३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
त्रिरत्न, सर्वोदय और सम्पूर्ण क्रान्ति	डॉ० धूपनाथ प्रसाद	४७	७-९	१९९६	४४-४८
महात्मा गांधी का मानवतावादी राजनैतिक चिन्तन और जैनदर्शन : एक समीक्षात्मक अध्ययन	डॉ० ऊषा सिंह	४७	७-९	१९९६	५५-५८
Metrical Studies of Daśāśrutaskandha Niryukti in the light of its parallels	Dr. Ashok Kumar Singh	47	7-9	1996	59-76
Sādhaka, Sādhanā & Sādhya	Priya Jain	47	7-9	1996	77-84
द्वन्द्व और द्वन्द्व निवारण (जैन दर्शन के विशेष प्रसङ्ग में)	डॉ० सुरेन्द्र वर्मा	४७	१०-१२	१९९६	१-१३
अनेकान्तवाद और उसकी व्यावहारिकता	डॉ० विजय कुमार	४७	१०-१२	१९९६	१३-३५
स्थानाङ्ग एवं समवायाङ्ग में पुनरावृत्ति की समस्या	डॉ० अशोककुमार सिंह	४७	१०-१२	१९९६	३६-५२
तित्थोगाली (तिर्थोद्गालिक) प्रकीर्णक की गाथा संख्या का निर्धारण	अतुलकुमार प्रसाद सिंह	४७	१०-१२	१९९६	५३-६४
पिप्पलगच्छ का इतिहास	डॉ० शिवप्रसाद	४७	१०-१२	१९९६	६५-८२
Spiritual Practices of Lord Mahāvīra	Yuacharya Dr. Shiv Muni	47	10-12	1996	83-100
Relevance of Non-Violence in Modern life	Dulichand Jain	47	10-12	1996	101-109
तनाव : कारण एवं निवारण	डॉ० सुधा जैन	४८	१-३	१९९७	१-२०
योगनिधान	डॉ० कुन्दनलाल जैन	४८	१-३	१९९७	२१-३२
दशाश्रुतस्कन्ध निर्युक्ति में इंङ्गित दृष्टांत	डॉ० अशोककुमार सिंह	४८	१-३	१९९७	४७-५९
अणगार वन्दना बत्तीसी	डॉ० (श्रीमती) मुन्नी जैन	४८	१-३	१९९७	६०-७०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन चम्पूकाव्य एक परिचय	डॉ० रामप्रवेश कुमार	४८	१-३	१९९७	७१-७५
Ācārya Hemacandra and Ardhamāgadhi	Prof. S. C. Pande	४८	१-३	१९९७	७६-८२
पिप्पलगच्छ का इतिहास	डॉ० शिव प्रसाद	४८	१-३	१९९७	८३-११७
जैनधर्म में सामाजिक चिन्तन	डॉ० सागरमल जैन	४८	४-६	१९९७	१-१९
अध्यात्म और विज्ञान	,,	४८	४-६	१९९७	२०-२९
जैन, बौद्ध और हिन्दूधर्म का पारस्परिक प्रभाव	,,	४८	४-६	१९९७	३०-५९
आचार्य हेमचन्द्र : एक युगपुरुष	,,	४८	४-६	१९९७	६०-७०
सम्राट अकबर और जैनधर्म	,,	४८	४-६	१९९७	७१-७६
जैनधर्म में अचेलकत्व और सचेलकत्व का प्रश्न	,,	४८	४-६	१९९७	७७-११२
स्त्रीमुक्ति, अन्यतैर्थिकमुक्ति एवं सवस्त्रमुक्ति का प्रश्न	,,	४८	४-६	१९९७	११३-१३२
प्रमाण-लक्षण-निरूपण में प्रमाण-मीमांसा का अवदान	,,	४८	४-६	१९९७	१३३-१४०
पं० महेन्द्रकुमार 'न्यायाचार्य' द्वारा सम्पादित एवं अनूदित षड्दर्शनसमुच्चय की समीक्षा	,,	४८	४-६	१९९७	१४१-१४६
आगम साहित्य में प्रकीर्णकों का स्थान, महत्त्व, रचनाकाल एवं रचयिता	,,	४८	४-६	१९९७	१४७-१५६
जैनधर्म में आध्यात्मिक विकास	,,	४८	४-६	१९९७	१५७-१६०
The Heritage of Last Arhat Mahavıra	Charlotte Krause	४८	४-६	१९९७	1-27
Mahāvīra	Amarchand	४८	४-६	१९९७	1-17

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
स्याद्वाद की अवधारणा : उद्भव एवं विकास	डॉ० सीताराम दुबे	४८	७-९	१९९७	१-१३
ब्रह्माणगच्छ का इतिहास	डॉ० शिवप्रसाद	४८	७-९	१९९७	१४-५०
पंचेन्द्रिय संवाद : एक आध्यात्मिक रूपक काव्य	सं० डॉ० मुन्नी जैन	४८	७-९	१९९७	५१-६७
प्रद्युम्नचरित में प्रयुक्त छन्द-एक अध्ययन	कु० भारती	४८	७-९	१९९७	६८-८०
जैनों में साध्वी प्रतिमा की प्रतिष्ठा-पूजा व वन्दन	महेन्द्र कुमार जैन 'मस्त'	४८	७-९	१९९७	८२-८५
Nirgrantha Doctrine of Karma : A Historical Perspective	Dr. A. K. Singh	48	7-9	1997	89-103
Guṇavrata and Upāsakadaśānga	Dr. Rajjan Kumar	48	7-9	1997	104-108
जैन आगमों की मूलभाषा : अर्धमागधी या शौरसेनी	डॉ० सागरमल जैन	४८	१०-१२	१९९७	१-२८
दशाश्रुतस्कंधनिर्युक्ति : अन्तरावलोकन	डॉ० अशोक कुमार सिंह	४८	१०-१२	१९९७	३१-४४
षट्प्राभृत के रचनाकार और उसका रचनाकाल	डॉ० के० आर० चन्द्र	४८	१०-१२	१९९७	४५-५२
जैन आगमों में धर्म-अधर्म (द्रव्य) :					
एक ऐतिहासिक विवेचन	डॉ० विजय कुमार	४८	१०-१२	१९९७	५३-७२
पंचकारण समवाय	डॉ० रतनचन्द्र जैन	४८	१०-१२	१९९७	७३-८०
अड्डालिजीय गच्छ	डॉ० शिवप्रसाद	४८	१०-१२	१९९७	८१-८२
जर्मन जैन श्राविका डॉ० शार्लोटे क्राउझे	श्री हजारीमल बांठिया	४८	१०-१२	१९९७	८३-९२
Aṣṭakaprakaraṇa : An Introduction	Dr. Ashok Kumar Singh	48	10-12	1997	107-118
Navatattvaprakaraṇa	Dr. Shriprakash Pandey	48	10-12	1997	1-28

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रमण

लेखकानुसार लेख सूची

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
अगरचंद नाहटा				
अष्टलक्षी में उल्लेखित अप्राप्य रचनायें	१८	७	१९६७	९-११
अष्टलक्षी में उल्लेखित जयसुन्दरसूरि की शतार्थी की खोज आवश्यक	१८	१२	१९६७	२७-२८
अस्वाद व्रत भी तप है	१२	१२	१९६१	२५-३१
आगम मर्यादा और संतों के वर्षावास	८	१०	१९५७	२६-३३
आचार्य भद्रबाहु और हरिभद्र की अज्ञात रचनाएं	२५	३	१९७४	२५-३१
आचार्य हेमचन्द्र के पट्टधर आचार्य रामचन्द्र के अनुपलब्ध नाटकों की खोज अत्यावश्यक	१८	४	१९६१	२१-२५
आचार्य श्री आत्माराम जी की आगम सेवा	१३	५	१९६२	४०
आत्म शोधन का महान् पर्व : पर्युषण	२	११	१९५१	७-१३
आशुतोष म्युजियम में नागौर का एक सचित्र विज्ञप्तिपत्र	२४	४	१९७३	१५-१९
ओसवंश-स्थापना के समय संबन्धी महत्त्वपूर्ण उल्लेख	३	१०	१९५२	२७-३३
उपा० भक्तिलाभरचित न्यायसार अवचूर्णि	२१	४	१९७०	१९-२१
एक अप्रकाशित प्राचीन प्राकृत सूत्र या अध्ययन	२२	८	१९७१	२३-२५
एक अज्ञात ग्रन्थ की उपलब्धि	१२	१०	१९६१	२९-३०
एक अज्ञात जैनमुनि का संस्कृत दूत काव्य	१२	५	१९६१	१७-२०
कतिपय जैनेतर ग्रन्थों की अज्ञात जैन टीकाएं	३०	२	१९७८	२६-३१
कुंभारिया तीर्थ का कलापूर्ण महावीर मंदिर	२५	६	१९७४	२८-३१
कर्मशास्त्रविद् रामदेवगणि और उनकी रचनाएँ	२९	९	१९७८	११-१९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
कल्याणसागरसूरि को प्रेषित सचित्र विज्ञप्ति लेख	१६	९	१९६५	२९-३०
कवि देपाल की अन्य रचनाऐं	३४	१	१९८२	२९-३३
क्या कृष्णगच्छ की स्थापना सम्वत् १३९१ ई० में हुई थी ?	२४	२	१९७२	२८-२९
क्या 'रूपकमाला' नामक रचनाएँ अलंकार शास्त्र सम्बन्धी हैं ?	२९	३	१९७८	१२-१७
काव्यकल्पलतावृत्ति	९	५	१९५८	१२-१५
गर्भापहरण सम्बंधी कुछ बातें	२३	१०	१९७२	२७-२८
गीता के राजस्थानी अनुवादक जैन कवि थिरपाल	२६	१०	१९७२	१९-२३
गीतासंज्ञक जैन रचनाएं	२	९	१९५१	२५-२७
ग्यारह गणधर सम्बंधी ज्ञातव्य बाते	२४	५	१९७३	२२-२६
चतुर्विंशतिस्तव का पाठ भेद और एक अतिरिक्त गाथा	२२	१२	१९७१	१३-१७
चन्द्रवेध्यक आदि-सूत्र अनुपलब्ध नहीं हैं	५	६	१९५४	१६-१७
२४ तीर्थंकरों के नामों में नाथ शब्द का प्रयोग कब से	२२	१	१९६७	१८-२२
जयप्रभसूरि रचित कुमारसंभव टीका	२१	७	१९७०	३१-३३
जयसिंहसूरि रचित अप्रसिद्ध ऋषभदेव और वीरचरित्र युगल काव्य	३०	३	१९७९	१९-२३
ज्योतिर्धर दो जैन विद्वान्-हरिभद्र और यशोविजय	७	५	१९५६	१६-१९
जिनचन्द्रसूरिरचित श्रावक सामाचारी की पूरी प्रति की खोज	१९	४	१९६८	३२-३५
जिनचन्द्रसूरिकृत क्षपक शिक्षा का विषय	२२	९	१९७१	३४-३५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जिनदत्तसूरि का शकुनशास्त्र एवं हरिभद्रसूरि का व्यवहारकल्प	३०	९	१९७९	३१-३३
जिनधर्म का तमाशा	५	७	१९५४	९-११
जिनराजसूरिकृत नैषधमहाकाव्यवृत्ति	२०	८	१९६९	१५-१८
श्री जिनवल्लभसूरि की प्राकृत साहित्य सेवा	१४	४	१९६३	३२-३४
जीवन चरित्र ग्रन्थ	१०	६	१९५९	३५-३८
जैन आगमों का महत्त्व और अपना कर्त्तव्य	१	९	१९५०	९-१४
जैन एकता का स्वरूप व उसके उपाय	३४	१२	१९८३	१-२१
जैन कला प्रदर्शनी	८	५	१९५७	३६-३८
जैन ग्रन्थों और पुराणों के भौगोलिक वर्णन का तुलनात्मक अध्ययन	२३	७	१९७२	१५-२०
जैन रास साहित्य	७	४	१९५६	१५-१६
जैन शिल्प का एक विशिष्ट प्रकार : सहस्रकूट	२५	१२	१९७४	१६-२१
जैन साहित्य का बृहद इतिहास भाग ५ के कतिपय संशोधन	२१	९	१९७०	२०-२३
जैन ज्ञान भण्डारों के प्रकाशित सूची ग्रन्थ	४	७-८	१९५३	७३-७९
जौनपुर की बड़ी मस्जिद क्या जैन मंदिर है ?	३०	६	१९७९	३३-३५
जैनागमों में महावीर के जीवनवृत्त की सामग्री	७	७	१९५६	३४-३८
गोविन्द त्रिगुणायक का 'जैन दर्शन व संत कवि' सम्बन्धी वक्तव्य	१६	१	१९६४	२८-३६
तेरापंथ सम्प्रदाय के हस्तलिखित ग्रन्थ-संग्रहालय	११	५	१९६०	२३-२५

Jain Education International 	For Private & Personal Use Only 	www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
तेलगूभाषा के अवधानी विद्वानों की परम्परा	११	२	१९५९	२४-२७
दशाश्रुतस्कन्ध की बृहद् टीका और टीकाकार मतिकीर्ति	२९	५	१९७८	३-९
दशाश्रुतस्कन्ध के विविध संस्करण एवं टीकाएँ	२९	२	१९७७	२१-२४
देवचन्द्रकृत यंत्र प्रकृति का वस्त्र टिप्पणक	३१	१	१९७९	२८-२९
दानशील, तप, भाव के रचयिता और दानकुलक का पाठ	२४	१०	१९७३	१८-२४
दान सम्बन्धी मान्यता पर विचार	६	३	१९५५	३-१०
दिगम्बर आर्या जिनमती की मूर्ति	१०	१२	१९५९	३१-३२
दिल मां दिवड़ो थाय	११	१२	१९६०	८-९
द्वीपसागरप्रज्ञप्ति	१६	३	१९६५	१८-१९
नन्दीसूत्र की एक जैनेतर टीका	१६	७	१९६५	१३-१४
मुनि विनयचन्द्रकृत ग्रहदीपिका	२१	३	१९७०	१५-१७
पं० रामचंद्र गणिरचित सुमुखनृपतिकाव्य	१९	८	१९६८	३०-३१
पं० सुखलाल जी के तीन व्याख्यानमालाओं के पठनीय ग्रंथ	३२	५	१९८१	५७
पद्ममंदिररचित बालावबोध प्रवचनसार का नहीं प्रवचनसारोद्धार का है	२१	५	१९७०	३०-३१
पर्युषण और हमारा कर्त्तव्य	८	११	१९५७	९-१४
,,	३६	११	१९८५	६-१२
पर्युषण पर्व का पावन संदेश	१०	११	१९५९	२५-२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
पर्युषण पर्व पर दो महत्तपूर्ण धार्मिक अनुष्ठान	७	११	१९५६	३७-३९
पल्लीवालगच्छीय शांतिसूरि का समय एवं प्रतिष्ठा	३	११	१९५२	३१-३३
प्रज्ञाचक्षु राजकवि श्रीपाल की एक अज्ञात रचना-शतार्थी	८	५	१९६७	६-८
प्राकृत भाषा के चार कर्मग्रन्थ	१३	१०	१९६२	२४-२५
प्राकृत भद्रबाहुसंहिता का अर्धकाण्ड	२७	५	१९७६	१०-१४
प्राकृत-हिन्दी कोश के महान् प्रणेता : पं० हरगोविन्ददास	२८	५	१९७७	१९-२२
प्राकृत और उसका साहित्य	१०	३	१९५९	१३-१९
प्राकृत साहित्य के इतिहास के प्रकाशन की आवश्यकता	४	६	१९५३	२१-२७
प्राचीन जैन राजस्थानी गद्य साहित्य	७	१०	१९५६	११-१८
प्राणप्रिय काव्य का रचनाकाल, श्लोक संख्या और सम्प्रदाय	३३	७	१९८२	२७-२९
प्राणप्रिय काव्य के रचयिता व रचनाकाल	२३	९	१९७२	१७-२०
४५ आगम और मूलसूत्र की मान्यता पर विचार	३३	६	१९८२	६१-६३
पैंतालीस और बत्तीस सूत्रों की मान्यता पर विचार	१	११	१९५०	२४-२९
१२वीं शताब्दी की एक तीर्थमाला	२७	१०	१९७६	१९-२३
बीकानेरी चित्र-शैली का सर्वाधिक चित्रों वाला कल्पसूत्र	२८	१०	१९७७	२०-२४
बीसवीं सदी का जैन इतिहास	५	३	१९५४	२०-२४
भक्तामर की एक और सचित्रप्रति	२४	७	१९७३	२१-२४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
भक्तामरस्तोत्र की सचित्रप्रतियाँ	२२	४	१९७१	१३-१९
भक्तामरस्तोत्र के बाद पूर्तिरूप स्तवकाव्य	२१	११	१९७०	२५-२९
भक्तामरस्तोत्र के श्लोकों की संख्या ४४ या ४८	२१	१०	१९७०	२७-३१
भगवान् नेमिनाथ का समय-एक विचारणीय समस्या	२३	३	१९७२	१५-१९
भगवान् नेमिनाथ के समय सम्बन्धी संशोधन	२१	२	१९६९	१२-१३
भागवद्गीता और जैनधर्म	१५	१२	१९६४	११-१२
महत्त्वपूर्ण जैन कला के प्रति जैन समाज की उपेक्षा वृत्ति	३१	७	१९८०	१३-१४
मानतुंगसूरिरचित पंचपरमेष्ठिस्तोत्र	२६	१२	१९७५	१४-१७
महावीरचर्या ग्रन्थ सम्बंधी महापंडित राहुल जी के दो पत्र	१७	१२	१९६६	९-१०
महावीर-सम्बन्धी एक अज्ञात संस्कृत चरित्र	२६	१-२	१९७४	५२-५६
महावीर स्तुति	१०	१	१९५८	१३-१५
महो० समयसुंदर का एक संग्रहग्रन्थ-'गाथासहस्त्री'	२३	११	१९७२	२३-२८
मुनि मेघकुमार-रचित किरातमहाकाव्य की अवचूरि	२०	२	१९६८	१५-१७
मेघदूत की एक अज्ञात् बालबोधिका पंजिका	१५	७-८	१९६४	६३-६४
मेवाड़ में चित्रित कल्पसूत्र की एक विशिष्ट प्रति	२८	८	१९७७	२४-२६
मौलिक चिन्तन की आवश्यकता	१४	९	१९६३	२०-२३
रघुवंश की अज्ञात जैन टीका	१५	१	१९६२	३१-३२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
राजस्थान में महावीर के दो उपसर्ग स्थल	२६	६	१९७५	१७-२०
राजस्थान में महावीर मंदिर	२७	६	१९७६	२६-२८
राजस्थानी जैन साहित्य	६	५	१९५५	१५-२२
,,	६	८	१९५५	४-६
राजस्थानी लोक-कथाओं सम्बन्धी साहित्य-निर्माण में जैनों का योगदान	१०	९	१९५९	२९-३१
रामसनेही सम्प्रदाय के रेणशाखा के दो सरावगी आचार्य	२९	७	१९७८	१२-१६
लंदन में कतिपय अप्राप्य जैन ग्रन्थ	२	५	१९५१	२७-२९
लिखाई का सस्तापन	९	३	१९५८	३-५
लोंकागच्छीय विद्वानों के तीन संस्कृत ग्रन्थ	११	१०	१९६०	२४-२८
लोक साहित्य के आदिसर्जक-जैन विद्वान्	७	२	१९५५	९-१२
वडगच्छ के युगप्रधान दादा-मुनिशेखरसूरि	२४	११	१९७३	३६-३९
वसुमतीमहाकाव्य	१२	८	१९६१	१७-२०
वाचक श्रीवल्लभ रचित 'विदग्धमुखमण्डन' की दर्पण टीका की पूरी प्रति अन्वेषणीय है	४६	७-९	१९९६	७४-७५
विक्रमलीलावतीचौपाईविषयक विशेष ज्ञातव्य	२७	२	१९७५	२२-२३
विद्वद्वर विनयसागर आद्यपक्षीय नहीं, पिप्पलक शाखा के थे	७	३	१९५६	१७-१८
विनयप्रभकृत जैन व्याकरण ग्रंथ शब्ददीपिका	३०	१०	१९७८	१७-२१
विलासकीर्तिरचित प्रक्रियासारकौमुदी	२९	११	१९७८	२४-२८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
वैराग्यशतक	१२	२	१९६०	३२-३३
शब्दरत्नमहोदधि नामक संस्कृत गुजराती जैन-कोश	२८	१२	१९७७	२२-२४
श्वेताम्बर पण्डित परम्परा	३८	७	१९८७	१०-१३
शासनप्रभावक जिनप्रभसूरि	२८	१	१९७६	१३-२०
षट्दर्शनसमुच्चय के लघुटीकाकार-सोमतिलकसूरि	२४	१	१९७२	२०-२३
संडेरगच्छीय ईश्वरसूरि की प्राप्त एवं अप्राप्त रचनाएं	२५	७	१९७४	२९-३२
संवेगरंगशाला क्या देवभद्रसूरि रचित और अनुपलब्ध है?	२०	११	१९६९	२३-२६
संवेगरंगशाला नामक दो ग्रन्थ नहीं एक ही है	२१	१	१९६९	३४
संस्कृत साहित्य के इतिहास के जैन सम्बन्धित संशोधन	१७	५	१९६६	२२-२६
सबके कल्याण में अपना कल्याण	१४	६-७	१९६३	२१-२८
स्वर्गीय हीरालाल कापड़िया	३८	७	१९८७	२३-२६
सात लाख श्लोक परिमित संस्कृत साहित्य के निर्माता जैनाचार्य विजयलावण्यसूरि	२३	८	१९७२	१९-२३
साधुवन्दना के रचयिता	२२	२	१९७०	२९-३२
सिंहदेवरचित एक विलक्षण महावीरस्तोत्र	३०	५	१९७९	२०-२५
हमारी भक्ति निष्ठा कैसी हो ?	६	१०	१९५५	८-९
हरिकलशरचित दिल्ली-मेवात देश चैत्यपरिपाटी	२७	८	१९७६	१८-२१
हरियाणा के सुकवि मालदेव की नवोपलब्ध रचनाएँ	२८	३	१९७७	२१-२४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
हर्षकीर्तिसूरिरचित धातुतंरगिणी	३०	१२	१९७९	३५-३८
हर्षकुलचरित कमलपंचशतिका	२०	५	१९६९	२०-२२
ज्ञानार्णव (ग्रन्थ परिचय)	११	६	१९६०	५९-६२
श्रीमद्देवचन्द्ररचित कर्म साहित्य	१७	१-२	१९६५	३३-३७
श्रीमालपुराण में भगवान् महावीर और गणधर गौतम का विकृत वर्णन	२६	९	१९७५	२६-२८
अचल सिंह				
सरस्वती पुत्र	३२	५	१९८१	५०
अच्छेलाल यादव				
जैन साहित्य में जनपद	२७	१	१९७५	१५-२४
प्राचीन जैन ग्रंथों में कृषि	२४	४	१९७३	२४-२७
श्री अजातशत्रु				
धर्म का बहिष्कार या परिष्कार	११	४	१९६०	१९-२२
श्री अजित मुनि				
पुष्कर के सम्बन्ध में शोध	१७	९	१९६६	१७
विश्व व्यवस्था और सिद्धान्तत्रयी	१७	७	१९६६	२५-३१
स्था० जैन साध्वीसंघ का पारम्परिक इतिहास	२४	१२	१९७३	३१-३२
अजित शुकदेव शर्मा				

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
अनासक्ति	२३	१०	१९७२	२३-२६
वेदोत्तरकालीन आत्मविद्या और जैनधर्म	२३	९	१९७२	१०-१६
जैनधर्म में भावना	२४	१०	१९७३	१२-१७
साध्वी श्री अणिमा श्री जी				
सांस्कृतिक पर्व की सामाजिक उपयोगिता	३२	११	१९८१	१६-२०
साध्वी अतुलप्रभा				
धूमावली-प्रकरणम्	४७	१-३	१९९६	६०-६४
अतुल कुमार प्रसाद सिंह				
तित्थोगाली (तिर्थोद्गालिक) प्रकीर्णक की गाथा संख्या का निर्धारण	४७	१०-१२	१९९६	५३-६४
अनन्त प्रसाद जैन				
भगवान् महावीर की निर्वाण-स्थली	३६	३	१९८५	१४-१६
जैन सिद्धान्त में योग और आस्रव	२५	३	१९७४	११-१९
अन्नराज जैन				
चातुर्मास व्यवस्था में सुधार कीजिये	१५	२	१९६३	२१-२३
अनिल कुमार गुप्त				
जैन दर्शन में बन्ध का स्वरूप: वैज्ञानिक अवधारणाओं के सन्दर्भ में	२६	५	१९७५	३-९
अनिल कुमार सिंह				
प्राचीन जैन, आगमों में राजस्व व्यवस्था	४७	१-३	१९९६	११-१९

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
अनिल सेन गुप्ता				
सर्वोदय प्रदर्शनी	१०	५	१९५९	४०-४२
अभय कुमार जैन				
आचार्य हेमचन्द्र : एक महान् काव्यकार	२८	९	१९७७	३-१३
,,	२७	१०	१९७६	८-१३
आचार्य हेमचन्द्र : जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व	२६	१०	१९७५	१३-१८
कविवर देवीदास : जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व	२८	१०	१९७७	१२-१९
गुणस्थान : मनोदशाओं का आध्यात्मिक विश्लेषण (क्रमशः)	२८	३	१९७७	३-१४
,,	२८	४	१९७७	९-१८
परमानन्दविलास : एक परिचय	२८	११	१९७७	१३-१७
जैन दर्शन में समता	२९	१	१९७७	२३-३३
जैन दर्शन का स्याद्वाद सिद्धान्त	२७	१	१९७५	३-१४
अभय मुनि जी महाराज				
पथ-भ्रष्ट	७	२	१९५५	३३-३६
मन-निग्रह	६	१२	१९५५	३६-३७
श्री अमरचन्द्र				
उज्जयिनी	३	१०	१९५२	२७-३३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
ब्रह्मनिष्ठ महावीर	१२	६-७	१९६१	५४-५३
जैन साहित्य में कलिङ्ग	७	९	१९५६	३-६
अमरचंद मित्तल				
गुप्तकाल में जैनधर्म	१०	६	१९५९	१६-२२
उपाध्याय श्री अमरमुनि				
अधूरी जोड़ी	३१	८	१९७९	१४-१८
अमरवाणी	५	८	१९५४	१-४
अमृत जीता, विष हारा	३३	१०	१९८२	२५-२९
आचार्य : एक मधुर शास्ता	८	१२	१९५७	१२-१६
उदयन का पर्युषण	३१	११	१९८०	७-११
श्रद्धेय वाचस्पति जी : एक पुण्य स्मृति	१४	११-१२	१९६३	३३-३८
क्रान्तिदर्शी महावीर	३३	६	१९८२	२८-३८
जीवन की कला	७	११	१९५६	३-६
जीवन दर्शन	३१	६	१९८०	७-९
जीवन-दृष्टि	३३	८	१९८२	८-१०
ढंढ़ण ऋषि की तितिक्षा	३३	९	१९८२	११-१४
त्याग का मूल्य	३१	४	१९८०	९-११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
दयामूर्ति : धर्मरुचि अनगार	३२	७	१९८१	५-७
दार्शनिक क्षितिज का दीप्तिमान नक्षत्र	३२	५	१९८१	११-१३
धार्मिक जीवन की प्रेरणा	११	१०	१९६०	९-१२
नाथ कौन ?	३१	९	१९८०	१२-१६
पर्व की आराधना	१०	१२	१९५९	१७-१९
बलभद्र और हरिण	३३	१२	१९८२	९-११
बलिदान की अमर गाथा	३२	९	१९८१	१७-२३
बाहुबलि : चक्रवर्ती का विजेता	३२	३	१९८१	२१-२७
बिना विचारे जो करै	३३	७	१९८१	१२-१४
भगवान् महावीर	३४	१	१९८२	५-१४
भगवान् महावीर का अध्यात्म दर्शन	१४	६-७	१९६३	१-५
भगवान् महावीर का निर्वाण-कल्याणक	३५	१	१९८३	२-६
भगवान् महावीर की साधना	३५	१२	१९८४	१-१०
भारतीय दर्शनों की आत्मा	१२	९	१९६१	९-११
भारतीय संस्कृति का प्रहरी	६	१२	१९५५	२६-२८
मन की लड़ाई	३१	१०	१९८०	१३-१६
महावीर का अखण्ड व्यक्तित्व	३२	६	१९८१	११-१६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
महावीर का जीवन दर्शन	३५	६	१९८४	३-१४
माँस का मूल्य	३१	३	१९८०	२२-२५
राजा मेघरथ का बलिदान	३२	२	१९८१	१३-१५
सब धर्मों की मंजिल एक है	११	४	१९६०	१६-१७
सत्ता का दर्प	३३	५	१९८२	१३-१६
सनत् कुमार का सौन्दर्य	३३	११	१९८२	१०-१४
सर्वधर्म समानत्व की कुँजी	११	४	१९६०	१८
स्नेह के धागे	३३	३	१९८२	२-७
सामायिक और तपस्या का रहस्य	१०	११	१९५९	११-१२
सामायिक का मूल्य	३१	५	१९८०	६-८
सेवाव्रती नंदीषेण	३२	१	१९८०	१४-१७
सोने की चमक	३१	७	१९८०	८-९
होली का व्यापक आधार	१२	५	१९६१	७-८
पं० अमृतलाल शास्त्री				
अतिशय क्षेत्र पपौरा	१६	६	१९६५	१८-२२
उपकारी पशुओं की यह दुर्दशा	१२	९	१९६१	२६-२९
काशी के कतिपय ऐतिहासिक तथ्य	३९	१२	१९८८	१६-१८
पर्वराज पर्युषण	१०	११	१९५९	१५-१६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
भगवान् महावीर की दिव्य देशना	८	६	१९५७	३३-३४
भगवान् महावीर की देन	११	६	१९६०	१२
भोजन और उसका समय	७	१२	१९५६	१८-२०
वाग्भट्टालंकार	८	१	१९५६	४-७
वाग्भट्टालंकार	२२	२	१९७०	२०-२८
वीरनन्दी और उनका चन्द्रप्रभचरित	१७	११	१९६९	१८-२५
पं० अम्बालाल प्रेमचन्द शाह				
लब्धिफल	१७	४	१९६६	२९-३९
लब्धियाँ	१७	१-२	१९६५	७३-८४
जैनरत्नशास्त्र	२१	४	१९७०	२९-३२
अम्बाशंकर नागर				
श्री किशनदासकृत 'उपदेशबावनी'	११	११	१९६०	२८-३२
अमिताभ				
पार्श्वनाथ के दो पट्टधर	१२	२	१९६०	२०-२१
अम्बिकादत्त शर्मा				
जैन तत्त्वविद्या में 'पुद्गल' की अवधारणा	३९	१	१९८७	६-१५
जैन दर्शन में जन्म और मृत्यु की प्रक्रिया	३८	९	१९८७	२-९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
अरविंद				
क्रोध आदि वृत्तियों पर विजय कैसे?	४	४	१९५३	८-१०
अरुण प्रताप सिंह				
अशोक के अभिलेखों में अनेकांतवादी चिन्तन : एक समीक्षा	४४	१०-१२	१९९३	८-१३
इषुकारीय अध्ययन (उत्तराध्ययन) एवं शांतिपर्व- (महाभारत) का पिता-पुत्र संवाद	४२	१-३	१९९१	८७-९२
जैन एवं बौद्ध धर्म में भिक्षुणी संघ की स्थापना	३५	९	१९८४	१-१६
जैन परम्परा के विकास में स्त्रियों का योगदान	४४	१०-१२	१९९३	१-७
जैन भिक्षुणी-संघ और उसमें नारियों के प्रवेश के कारण	३३	४	१९८२	१२-१६
भगवान् महावीर की निर्वाण तिथि : एक पुनर्विचार	४६	१०-१२	१९९५	१-४
भिक्षुणी संघ की उत्पत्ति एवं विकास	३१	९	१९८०	१७-२०
हरिभद्र की श्रावक प्रज्ञप्ति में वर्णित अहिंसा : आधुनिक संदर्भ में	४१	१०-१२	१९९०	५७-७०
हिन्दू एवं जैन परम्परा में समाधिमरण : एक समीक्षा	४४	१०-१२	१९९३	१४-१८
अर्चना पाण्डेय				
जैन दर्शन के संदर्भ में भाषा की उत्पत्ति	३७	५	१९८६	११-१८
जैन दर्शन में कथन की सत्यता	३६	५	१९८५	६-९
जैन भाषा दर्शन की समस्याएँ	४२	१-३	१९९१	९३-९६
शब्द का वाच्यार्थ जाति या व्यक्ति	३६	९	१९८५	९-१३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
अर्हद्दास बंडोबा दिगे				
दसधर्म योग साधना है	१९	१०	१९६८	३१-३६
अलका प्रचण्डिया 'दीति'				
सिद्धि का पथ : आर्जवधर्म	३५	११	१९८४	१७-१८
अवधकिशोर नारायण				
जैन मूर्ति कला	१	१०	१९५०	१९-२१
अत्रिदेव गुप्त				
उपवास से लाभ	५	१२	१९५४	२७-३०
गाय का दूध	९	३	१९५८	१६-१८
भारतीय चिकित्सा शास्त्र	४	३	१९५३	२९-३४
शाक विचार	२	१०	१९५१	३६-३१
अशोक चढड्ढा				
युवकों के सामने एक प्रश्न चिन्ह	११	१	१९५९	२१-२२
अशोककुमार मिश्र				
कीर्तिवर्द्धनकृत सदयवत्स सावलिंगा चउपई	२८	२	१९७६	२२-२६
चन्दन मलयागिरि	७	५	१९७६	२०-२५
छीहल की एक दुर्लभ प्रबन्ध कृति	२७	९	१९७६	२२-२८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन कवि जटमलकृत प्रेमविलास कथा	२६	११	१९७५	२०-२३
हीराणंदसूरि का विद्याविलास और उस पर आधरित रचनाएँ	२६	१२	१९७५	२१-२६
अशोक पराशर				
गृहस्थ के अष्टमूल गुण-तुलनात्मक अध्ययन	३१	१	१९७९	२०-२४
अशोक कुमार सिंह				
प्रबन्धकोश में उपलब्ध आर्थिक विवरण	३८	९	१९८७	१७-२६
प्राचीन जैन ग्रंथों में कर्मसिद्धांत का विकासक्रम	४३	१०-१२	१९९३	१९-२८
जैनागमवर्णित तीर्थंकरों की भिक्षुणियाँ	४०	९	१९८९	१७-३०
जैनाचार्य राजशेखरसूरि : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	४१	१०-१२	१९९०	९३-११०
दशाश्रुतस्कन्धनिर्युक्ति में इंङ्गित दृष्टांत	४८	१-३	१९९७	४७-५९
दशाश्रुतस्कन्धनिर्युक्ति : अन्तरावलोकन	४८	१०-१२	१९९७	३१-४४
भगवान् महावीर की प्रमुख आर्यिकाएं	४०	६	१९८९	३०-३३
स्थानाङ्ग एवं समवायाङ्ग में पुनरावृत्ति की समस्या	४७	१०-१२	१९९६	३६-५२
हिंसक और अहिंसक युद्ध	३८	११	१९८७	१-३
असीम कुमार मिश्र				
ऐतिहासिक अध्ययन के जैन स्रोत और उनकी प्रामाणिकता : एक अध्ययन	४६	१०-१२	१९९५	४४-५१
मुनि आईदान जी				

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जीवन के दो रूप-धन और धर्म	८	२	१९५६	१६-१८
मनुष्य की प्रगति के प्रति भयंकर विद्रोह	५	६	१९५४	१८-१९
मुनियों का आदर्श त्याग	३	७-८	१९५२	७-८
नारी का महत्त्व	५	३	१९५४	३०-३६
नि:शस्त्रीकरण	९	६-७	१९५८	१७-२२
साध्वी समाज से	४	४	१९५३	२१-२२
श्रमण जीवन का बदलता हुआ इतिहास (क्रमशः)	७	८	१९५६	३०-३५
,,	७	९	१९५६	२९-३४
श्री विनयचन्द दुर्लभ जी	९	४	१९५८	३५-३७
आचार्य आत्मारामजी				
शास्त्रोद्धार की आवश्यकता	१३	५	१९६२	४१
आदित्य प्रचण्डिया				
कर्मों का फल	३२	२	१९८०	२०-२१
जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि	३३	४	१९८२	१०-११
तप का उपादेय : कर्मों की निर्जरा	३५	११	१९८४	१९-२०
धर्म और धार्मिक	३४	१०	१९८३	२०-२१
धर्म का मान	३५	९	१९८४	१७-१८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
भोले नहीं भले बनिये	३८	२	१९८६	१४-१६
महामानव महावीर का जीवन प्रदेय	३६	७	१९८५	७-९
वर्तमान सन्दर्भ और भगवान् महावीर की अहिंसा	३५	६	१९८४	२७-२८
सम्राट और साम्राज्य	३२	८	१९८१	१७-२३
सामायिक और ध्यान	३५	४	१९८४	४-८
सुख का सागर	३३	१०	१९८२	२२-२४
हिन्दी जैन कवि छत्रपति : व्यक्तित्व तथा कृतित्व	३५	८	१९८४	१-५
भदन्त आनन्द कौसल्यायन				
भगवान् बुद्ध	७	८	१९५६	१३-२०
आचार्य आनन्द ऋषि				
आत्म बोध का क्षण	३४	४	१९८३	१०-११
आत्म सुख सभी सुखों का राजा	३३	११	१९८१	३-५
कीर्ति के शत्रु, क्रोध और कुशील	३२	४	१९८१	१-९
दु:ख का जनक लोभ	३२	२	१९८०	५-१२
दुर्बल को सताना क्षत्रिय धर्म नहीं	३६	४	१९८५	२-४
महापर्व पर्युषण का पावन सन्देश : अपने आप को परखें	३६	११	१९८५	१४-१५
सदाचार का महत्त्व	३४	५	१९८३	११-१२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
साधना में श्रद्धा का स्थान	३१	११	१९८०	१२-१८
आरती पात्रा				
व्यावहारिक क्रियाएँ	८	३-४	१९५७	२३-२८
इन्द्रचन्द्र जैन				
स्थूलभद्र	८	७-८	१९५७	९-११
श्री शान्तिभाई वनमाली सेठ का अमृतोत्सव	३८	८	१९८७	२३-२५
इन्द्रचन्द्र शास्त्री				
अभय का अराधक	५	६	१९५४	१-८
आचार्य हेमचंद्र और जैन संस्कृति	१९	४	१९६८	३-५
आचारांग की दार्शनिक मान्यतायें	४	१०	१९५३	१-६
आप सम्यग् दृष्टि हैं या मिथ्यादृष्टि	२	८	१९५१	३२-३६
आर्यरक्षित	८	२	१९५६	१९-२२
आस्तिक और नास्तिक	५	७	१९५६	२७-३०
किसकी जय	३	५	१९५२	३३-३७
केवलज्ञान सम्बन्धी कुछ बातें	३	४	१९५२	१९-२२
गुरु नानक	५	७	१९५४	१२-२५
चरित्र के मापदण्ड	१	६	१९५०	२१-२२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जनतंत्र के महान् उपासक भगवान् महावीर	८	६	१९५७	३-७
जैन आगमों का मन्थन	४	१०	१९५३	३५-३७
,,	४	१२	१९५३	२९-३०
जैन परम्परा	१०	३	१९५९	९-११
जैन परम्परा का आदिकाल	१४	४	१९६३	९-१७
,,	१४	५	१९६३	९-१७
,,	१४	६-७	१९६३	१२-१८
जैन साहित्य का विहंगावलोकन	५	२	१९५३	८-१४
जैन साहित्य के विषय में अजैन विद्वानों की दृष्टियाँ	५	१	१९५३	२५-२८
जैन साहित्य के संकेत चिन्ह	५	२	१९५३	३०-३८
जैन साहित्य सेवा	९	१०	१९५८	१३-१५
नरसिंह मेहता	५	८	१९५४	१७-२०
पितृहीन	५	३	१९५४	२५-२९
त्यागपूर्वक उपभोग करो	७	२	१९५५	२८-३१
महात्मा हुसेन बसराई	५	५	१९५४	२१-२८
महावीर का दर्शन कराइए	१३	६	१९६२	२९-३२
महावीर की जय	५	८	१९५४	३१-३३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
महावीर से पहले का जैन इतिहास	४	७-८	१९५३	३०-३४
मेरी बम्बई यात्रा	४	१२	१९५३	११-१५
वज्रस्वामी	८	१	१९५६	८-११
वैशाली के गणतंत्र की एक झाँकी	५	४	१९५४	२८-३०
संघर्ष और आलिंगन	१७	३	१९६६	२५-३२
संसार के धर्मों का उदय	५	६	१९५४	२०-२५
सत्य के आवरण या मूर्च्छाएं	१६	१	१९६४	१२-१९
सन्त एकनाथ के जीवन प्रसंग	५	३	१९५४	११-१९
सफलता के तीन तत्त्व	१२	३	१९६१	२८-३०
सम्यक्दृष्टि और मिथ्या दृष्टि	५	३	१९५४	३-१०
,,	५	४	१९५४	४-११
सम्यग् ज्ञान और मिथ्या ज्ञान	२	४	१९५१	११-१४
स्वामी श्री धनीराम जी महाराज	१४	९	१९६३	२८-३१
सिद्धसेन दिवाकर	४	१०	१९५३	२५-३१
,,	४	११	१९५३	२९-३५
सूत्रकृतांग में वर्णित मत-मतांतर	५	५	१९५४	११-२०
सेवक	१	४	१९५०	१७-२३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	**वर्ष**	**अंक**	**ई० सन्**	**पृष्ठ**
श्रमण और ब्राह्मण	१	४	१९५०	२९-३२
श्रमण संघ के दस वर्ष	१३	९	१९६२	१७-१९
श्री जैनेन्द्र गुरुकुल, पंचकूला	२	१०	१९५१	१५-२०
हम किधर बह रहे हैं ?	४	६	१९५३	५-१३
हमारी प्रवृत्तियाँ और उनका मूल्यांकन	१६	६	१९६५	३२-३६
इन्द्रेश चन्द्र सिंह				
जैन आगम साहित्य में वर्णित दास-प्रथा	४१	१०-१२	१९९०	८५-९२
जैन आगमों में वर्णित जातिगत समता	४२	४-८	१९९१	६३-७२
प्राचीन भारतीय सैन्य विज्ञान एवं युद्धनीति : जैन स्रोतों के आधार पर	३९	८	१९८८	९-१७
भारतीय राजनीति में जैन संस्कृति का योगदान	४१	७-९	१९९०	२७-३४
युद्ध और युद्ध नीति	४०	१२	१९८९	२६-३६
इन्दु				
जैनधर्म और दर्शन की प्रासंगिकता-वर्तमान परिपेक्ष्य में	४३	७-९	१९९२	१-८
इन्दुला				
आध्यात्मिक साधना और उसकी परम्पराएँ	१०	१०	१९५९	९-१६
इला खासनवीस				
बच्चों की मूलभूत आवश्यकताएँ	८	५	१९५७	१५-२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
इलाचन्द जोशी				
कालकाचार्य	५	१०	१९५४	२३-२९
(महासती) उज्जवल कुमारी				
सामायिक की सार्थकता	१	१२	१९५०	२६
उत्सवलाल तिवारी				
सुमन रख भरोसा महावीर का	३६	७	१९४५	१०-११
पं० उदयचन्द जैन				
आचार्य हेमचन्द्र और कुमारपालचरित	२२	११	१९७१	३-१०
आध्यात्मवादियों से	२२	३	१९७१	१८-२४
अहिंसा का विराट रूप	२१	९	१९७०	२८-३१
जैन दर्शन में आत्मस्वरूप	३६	१०	१९८५	१-११
जैन साहित्य में शिशु	२२	६	१९७१	२२-२०
तत्त्वार्थराजवार्तिक में वर्णित बौद्धादिमत	३५	१२	१९८४	३७-४८
पर्युषण और बौद्ध धर्म	१२	११	१९६१	२७-३०
निक्षेप में नय योजना	२३	४	१९७२	१३-१७
महामना की महानता	१३	३	१९६२	२६-२८
मूलाराधना में समाधिमरण	२३	२	१९७२	२१-३०
वादिराजसूरि : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	२८	७	१९७७	३-८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
वासुपूज्यचरितम् : एक अध्ययन	२३	५	११७२	३-१०
,,	२३	६	११७२	१०-१७
हमारे समाज की भावी पीढ़ी	३	५	१९५२	१६-१८
श्री हेमविजयगणि और विजयप्रशस्तिमहाकाव्य	२२	९	१९७१	२२-२९
क्षत्रचूड़ामणि में उल्लिखित कतिपयनीतिवाक्य	२४	३	१९७३	१२-२१
उदय मुनि				
जैनदर्शन	२९	२	१९७७	१४-१७
उमाशंकर त्रिपाठी				
बुनियादी सुधार	१	६	१९५०	१७-२०
भाई साहब	१४	१०	१९६३	१५-१८
शिक्षा का जहर	७	३	१९५६	३०
शिक्षा के दो रूप	७	२	१९५५	२७
शिक्षा के साधन	३	२	१९५१	१३-१७
उर्मिला जैन				
वीरवर्धमानचरित में शान्तरस विमर्श	३५	१	१९८३	२५-२८
श्रमण संस्कृति की पृष्ठभूमि	३३	१२	१९८२	३-५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
उमेशचन्द्र सिंह				
उत्तरभारत की सामाजिक एवं आर्थिक संरचना : जैन आगम साहित्य के सन्दर्भ में	३८	१२	१९८७	१२-२४
उमेशचन्द्र श्रीवास्तव				
त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित में प्रतिपादित-सांस्कृतिक जीवन	४३	४-६	१९९२	६९-८४
उम्मेदमल मुनोत				
गतिशील स्वच्छ मन वरदान है	३८	५	१९८७	२-५
उमेश मुनि				
असमता मिटाने का उपाय	११	११	१९६०	२२-२३
उषा सिंह				
महात्मा गाँधी का मानवतावादी राजनीतिक चिन्तन और जैनदर्शन-एक समीक्षात्मक अध्ययन	४७	७-९	१९९६	५५-५९
उषा मेहरा				
मॉन्तेसरी शिक्षा-पद्धति	८	३-४	१९५७	३८-४८
ए० एम० योस्तन				
अहिंसा और शिशु	८	३-४	१९५७	३-९
मॉन्तेसरी आन्दोलन	८	३-४	१९५७	६७-७९
मॉन्तेसरी शिक्षा के ५० वर्ष	८	३-४	१९५७	६१-६६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
एस० आर० कृष्णन्				
लेखक और विश्वशान्ति	६	१०	१९५५	३०-३२
एस० कान्त				
सच्चा वैभव	६	८	१९५५	१९-३५
एस० आर० स्वामी				
शिशु और संस्कृति	८	३-४	१९५७	१०-१४
शिक्षा और उसका उद्देश्य	८	७-८	१९५७	४-७
एस० सी० उपाध्याय				
कुषाणकालीन मथुरा की जैन सभ्यता	७	२	१९५५	१७-१८
एस० एन० दुबे				
जैन अभिलेखों की भाषाओं का स्वरूप एवं विविधताएं	४२	४-६	१९९१	८९-९२
एस० एस० गुप्त				
एक दुनियाँ और एक धर्म	८	९	१९५७	४-७
ऋषभचन्द्र				
जैन धर्म और आज की दुनियाँ	१५	१०	१९६४	३५-३६
लवण एवं अंकुश की देव विजय का भौगोलिक परिचय	१६	३	१९६५	३-१५
अनेकान्त एक दृष्टि	३१	७	१९८०	१०-१२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
भगवान् महावीर और उनके द्वारा प्रतिपादित धर्म	३२	९	१९८१	२-४
ऋषभदास रांका				
एकता की ओर एक कदम	१०	११	१९५९	२२-२४
मंदिरों के झगड़े और जैन समाज	२	६	१९५१	२८-३२
संस्कृति की दुहाई	८	९	१९५७	१५-१८
समता के प्रतीक महावीर	९	६-७	१९५८	६९-७२
ओमप्रकाश अग्रवाल				
श्री अतरचन्द जैन	१५	२	१९६३	३५-३६
ओमप्रकाश सिंह				
अकबर और जैनधर्म	३३	६	१९८२	५६-६०
आज का युग महावीर का युग है	९	४	१९५८	३०-३४
साध्वी श्री कनकप्रभा				
आचारांग के कुछ महत्त्वपूर्ण शब्द	१८	१-२	१९६६	६१-६४
मुनि कनकविजय				
नेपाल के शाहवंश और उनके पूर्वज	२	४	१९५१	३४-३८
मुनिश्री कन्हैयालाल 'कमल'				
आगमों के आनुयोगिक-वर्गीकरण	१३	१०	१९६२	९-१२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
आचारांग का परिचय	१२	५	१९६६	२७-३५
कषाय विजय का महापर्व	८	११	१९५७	३-५
नए अपवाद	१२	२	१९६०	२२-२
पद्मलेश्या के रस का उपमेय मद्य क्यों ?	१४	१०	१९६३	९-११
पर्युषण और पश्चात्ताप	१२	११	१९६१	२८
पर्युषण मीमांसा	६	११	१९५५	१७-२१
भगवान् महावीर का व्यक्तित्व	८	६	१९५७	१७-२३
मनुष्य जन्म या मानवता	११	७-८	१९६०	४१-४४
राम की क्षमायाचना	१०	१२	१९५९	३३-३४
श्रमण संघ के सामने एक सवाल !	११	९	१९६०	२६-२९
हमारे कवल (ग्रास) को मुर्गी के अण्डे की उपमा क्यों ?	१५	१२	१९६४	३०-३२
कन्हैयालाल भुरड़िया				
भारतीय संस्कृति को भगवान् महावीर की देन	११	१२	१९६०	२७-२९
कन्हैयालाल सरावगी				
आत्मा : बौद्ध एवं जैन दृष्टि	२४	११	१९७३	३-९
ग्यारह प्रतिमा (व्रत) और एकादशी	२९	१२	१९७८	१८-२३
जगत्: सत्य या मिथ्या	३९	५	१९८८	५-११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैनधर्म आस्तिक या नास्तिक	२६	३	१९८०	१९-२५
,,	२६	४	१९७५	२१-२५
जैनधर्म में कर्मयोग का स्वरूप	३०	११	१९७९	१५-२०
जैनधर्म भौगोलिक सीमा में आबद्ध क्यों ?	२३	५	१९७२	८४-३८
नयवाद : एक दृष्टि	२९	१०	१९७८	१४-१८
पावा : कसौटी पर	२५	४	१९७४	१६-२३
प्राचीन भारतवर्ष में गणतंत्र का आदर्श	२४	९	१९७३	९-१२
भाषा और साहित्य	२७	१२	१९७६	३-१४
महावीर की निर्वाण-भूमि पावा की वर्तमान स्थिति	२३	१	१९७१	३०-३१
मानव संस्कृति का विकास	२८	२	१९७६	३-१५
वर्ण और जातिवाद : जैन दृष्टि	२९	७	१९७८	१७-२०
वर्तमान युग के सन्दर्भ में भगवान् महावीर के उपदेश	२५	६	१९७४	२८-३४
वैशाली का सन्त राजकुमार	२७	७	१९७६	३-७
व्यक्ति पहले या समाज	२५	१२	१९७४	२८-३१
शीलपरायण महावीर	१२	६-७	१९६१	५२-५३
श्रमण जीवन में अधिकरण का उपशमन	७	११	१९५६	२३-२७
सामायिक : सौ सयाने एकमत	२९	५	१९७८	१०-१७
सुख-दुःख	३१	५	१९७९	९-१३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
पं० कपिलदेव गिरि				
प्राकृत व्याकरण और भोजपुरी का 'केर' प्रत्यय	२२	१०	१९७१	२९-३८
,,	२२	११	१९७१	२४-३८
बंगला आदि भाषाओं के सम्बन्धवाची प्रत्यय	२२	१२	१९७१	१८-२९
महावीर की निर्वाण भूमि पावा की स्थिति	२२	१	१९७४	२७-३३
कपूरचन्द जैन				
पुरुदेवचम्पू का आलोचनात्मक परिशीलन	३८	८	१९८७	७-१३
महावीर की वाणी	३२	६	१९८१	२३-२६
कमलचन्द सौगानी				
महावीर का अपरिग्रह सिद्धान्त : सामाजिक न्याय का अमोघ मन्त्र	३९	१	१९८७	१-४
कमल जैन				
आचार्य हरिभद्र एवं उनका योग	४४	१-३	१९९३	८-२७
आचार्य हरिभद्र और उनका साहित्य	४४	४-६	१९९३	१-१२
प्राचीन जैन कथा साहित्य का उद्भव, विकास और वसुदेवहिंडी	४६	१०-१२	१९९५	५२-६३
प्राचीन जैन साहित्य में वर्णित आर्थिक जीवन : एक अध्ययन	३७	८-९	१९८६	१०-१९
वसुदेवहिंडी का समीक्षात्मक अध्ययन	४७	४-६	१९९६	११-३५
कमला माताजी				
अन्धेरा दीप तले	३९	१	१९८७	२६-२७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
कमला जैन				
तत्त्वोपदेष्टा महावीर	१२	६-७	१९६१	७-१०
आचार्य श्री का पुण्य जीवन	१३	५	१९६२	३६-३७
कमला पंत				
जैन सम्मत आत्मस्वरूप का अन्य भारतीय दर्शनों से तुलनात्मक विवेचन	४२	७-१२	१९९१	३५-४३
कमला जोशी				
अन्य प्रमुख भारतीय दर्शनों एवं जैन दर्शन में कर्मबन्ध का तुलनात्मक स्वरूप	४२	४-६	१९९१	३३-४३
जैन दर्शन में आवश्यक साधना	४०	४	१९८९	२७-३४
जैन दर्शन में परीषह जय का स्वरूप एवं महत्त्व	४०	११	१९८९	४१-४५
शिशु की निद्रा	५	९	१९५४	३२-३४
कमलेश कुमार जैन				
जैन आलंकारिकों की रस विषयक मान्यताएँ	२९	६	१९७८	१४-२४
कवि-स्वरूप : जैन आलंकारिकों की दृष्टि में	२७	७	१९७६	८-१२
प्राकृत जैनागम परम्परा में गृहस्थाचार तथा उसकी पारिभाषिक शब्दावली	४३	४-६	१९९२	४७-६८
बारहभावना : एक अनुशीलन	४५	७-९	१९९४	५६-६१
रस-विवेचन : अनुयोगद्वारसूत्र में	२७	१२	१९७६	२३-२९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
कलादेवी जैन				
अक्षय तृतीया	८	७-८	१९५७	४०-४३
कलानाथ शास्त्री				
चातुर्मास : स्वरूप और परम्पराएँ	४६	७-९	१९९५	७०-७३
कल्याणमल लोढ़ा				
अर्हं परमात्मने नम:	४२	४-६	१९९१	१-१०
मुनि कल्याण विजय				
'रायपसेणिय उपांग और उसका रचनाकाल' की समीक्षा	१६	४	१९६५	३८
कल्याणी देवी जायसवाल				
जैन परम्परा में महाभारत कथा	४०	१०	१९८९	१४-१९
पाण्डवचरित का तुलनात्मक अध्ययन	३९	१२	१९८८	२२-२७
कस्तूरचन्द जैन				
कोटिशिला तीर्थ का भौगोलिक अभिज्ञान	४२	७-१२	१९९१	५१-६०
जैन धर्म में मानवतावाद	१७	३	१९६६	२५-३२
कस्तूरमल बांठिया				
अहिंसा निउणा दिट्ठा	१४	६-७	१९६३	३४-४३
अधिमास और पर्युषण	७	१	१९५५	१७-२३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
अभव्यजीव नवग्रैवेयक तक कैसे जाता है?	१९	८	१९६८	७-११
अहिंसक मधु	७	५	१९५६	२४-२९
आगम प्रकाशन में सहयोग कौन और कैसे करे?	१८	६	१९६७	१६-२५
आगम वाचना का सवाल	९	११-१२	१९५८	६८-७०
इस चर्चा को खत्म कीजिये	११	६	१९६०	४४-४७
"कुवलयमाला" मध्ययुग के आदिकाल की एक जैन कथा	१८	४	१९६७	२-१७
क्या जाति स्मरण भी नहीं रहा	११	३	१९६०	२९-३४
क्या थे? क्या हैं? क्या होना है?	११	९	१९६०	१७-२१
छद्मस्थानां च मतिभ्रमः	१०	१	१९५८	२६-३०
जनमार्ग	२१	११	१९७०	३-१५
जैन इतिहास लेखकों को आह्वान	१२	३	१९६१	३१-३३
जैन आगम और विज्ञान	१२	११	१९६१	३६-४०
जैन तत्त्वों में शूब्रिंग के विचार	२१	५	१९७०	१६-२३
जैनमुनि और माँसाहार परिहार	१८	७	१९६७	१४-२५
जैन साहित्य के इतिहास की पूर्व पीठिका	२०	४	१९६९	१८-२४
जैनों ने भी युग का आह्वान सुना	१४	९	१९६३	३३-३७
जैनों में मूर्ति और उसकी पूजा पद्धतियों में विकास और विकार	१९	७	१९६८	६-१७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
तीर्थंकर महावीर	१२	६-७	१९६१	१२-१४
तीर्थंकरवाद	७	९	१९५६	९-१६
दिगम्बर परम्परा में श्रावक के गुण और भेद	१७	१-२	१९६५	५६-६२
पहले महावीर निर्वाण या बुद्ध निर्वाण	१०	७-८	१९५९	१०-२१
प्रसिद्धिप्राप्त श्वेताम्बर जैनों की कुछ कृत्रिम कृतियाँ	१९	४	१९६८	९-३०
प्रत्यालोचना-महावीर का अन्तस्थल	६	५	१९५५	३३-३६
बुद्ध और महावीर का परिनिर्वाण	१३	६	१९६२	८-१३
,,	१३	७-८	१९६२	२५-२६
भगवान् महावीर का निर्वाणाब्द २५०० आ रहा है	११	१	१९५९	२८-३२
भारतीय विद्याविद् डॉ० जॉन जार्ज बुहलर	१८	१-२	१९६६	१३-२०
महावीर के जीवन पर नया प्रकाश	१२	९	१९६१	३१-३३
भगवान् महावीर के जीवन-चरित्र	१५	५-६	१९६४	४९-६३
,,	२०	३	१९६९	५-२२
महावीर भूले?	७	३	१९५६	२२-२९
,,	८	२	१९५६	४-१५
रायपसेणइ उपांग और उसका रचनाकाल-क्रमशः	१५	१०	१९६४	९-१६
,,	१५	११	१९६४	२-८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
,,	१५	१२	१९६४	३-१०
,,	१६	१	१९६४	३-११
,,	१६	२	१९६४	३-११
विगत हजार वर्ष के जैन इतिहास का सिंहावलोकन-क्रमशः	१६	१०	१९६५	३-११
,,	१६	११	१९६५	३-१४
,,	१६	१२	१९६५	३-१९
श्रमण और श्रमणोपासक	१८	९	१९६७	२५-२९
श्रावक किसे कहा जाय	१८	३	१९६७	१०-२३
श्रावक के गुण एवं भेद-क्रमशः	१७	६	१९६६	३-११
,,	१७	७	१९६६	३-११
,,	१७	८	१९६६	३-१०
श्री जयभिक्खु के ग्रन्थों का हिन्दी अनुवाद	१९	१२	१९६८	२५-३४
श्री लालाभाई वीरचन्द देसाई 'जयभिक्खु'	१९	९	१९६८	२८-३७
शास्त्र वाचना की आज फिर आवश्यकता है	८	५	१९५७	४-७
श्वेताम्बर जैनों के पूजाविधियों का इतिहास (क्रमशः)	१७	१०	१९६६	४-५
,,	१७	११	१९६६	२-१४
श्वेताम्बर-परम्परा में श्रावक के गुण और भेद	१७	४	१९६६	३-१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
समराइच्चकहा का अविकल गुर्जरानुवाद	१९	५	१९६८	६-१८
हम अनेकान्तवादी हैं या एकान्तवादी ?	९	१०	१९५८	१७-२०
हम दूसरों को दूसरों के ही दृष्टिकोण से समझें	१२	१	१९६०	७-१२
कस्तूरीनाथ गोस्वामी				
आहार दर्शन	३८	८	१९८७	२१-२२
वर्तमान अशान्ति का एकमात्र समाधान अहिंसा	३४	५	१९८३	१३-१६
कस्तूरीलाल जैन				
संयम और त्याग की मूर्ति	१४	११-१२	१९६३	६७-७१
काका कालेलकर				
अद्वेष दर्शन	१६	२	१९६४	१२-१४
अहिंसा की परिणति-समन्वय और सत्याग्रह	१७	९	१९६६	१८-२१
अहिंसा की साधना	१	७	१९५०	११-१३
अहिंसा के तीन क्षेत्र-क्रमशः	१५	९	१९६४	१६-१९
	१५	१०	१९६४	१६-१७
अहिंसा-शोधपीठ	११	४	१९६०	३४-३८
तर्क और भावना	१	२	१९४९	३१-३२
धर्म के स्थान पर संस्कृति	२	८	१९५१	३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
साध्वी श्री कानकुमारी जी				
सच्ची क्षमा	३२	११	१९८१	३१-३२
कानजी भाई पटेल				
उत्तराध्ययनसूत्र : धार्मिक काव्य	१५	७-८	१९६४	४८-५७
धर्म क्षेत्रे-हिम क्षेत्रे	१४	३	१९६३	१९-२८
श्रमण संस्कृति में क्षमा	१३	११	१९६२	९-१३
श्रमण परम्परा में धर्म और उसका महत्त्व	१५	५-६	१९६४	२३-२७
कांता जैन				
स्त्री शिक्षा	१	६	१९५०	२३-२६
भगवान् महावीर का आदर्श और हम	२	६	१९५१	३३-३६
मुनिश्री कांति सागर जी				
कवि रत्न श्री अमरमुनि जी	८	५	१९५७	८-१०
मगध में दीपमालिका	१	१	१९४९	३७-४०
कामता प्रसाद मिश्र				
विमलसूरि के पउमचरिउ का भौगोलिक अध्ययन	३२	१२	१९८१	१२-२०
किशोरी लाल जैन				
कुछ संस्मरण और श्रद्धा के फूल	१४	११-१२	१९६३	५०-५३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
किशोरी लाल मशरूवाला				
नारी की प्रतिष्ठा	२	९	१९५१	४-८
शुद्ध व्यवहार का आन्दोलन	२	११	१९५१	१४-१८
सोमनाथ	२	९	१९५१	१८-२३
स्वच्छता : जीवन का अंग	११	३	१९६०	२७-२८
कृपाशंकर व्यास				
नय और निक्षेप-एक विश्लेषण	३२	१२	१९८१	३५-४८
कृष्णचन्द्राचार्य				
आगरा में श्री रत्नमुनि शताब्दी समारोह	१५	७-८	१९६४	१२-१६
जैनत्व की कसौटी	१	१२	१९५०	३१-३२
धर्मबन्धु हर्बर्ट वारन	५	११	१९५४	१६-२२
पूज्य श्री मंगल ऋषि जी	१५	१	१९६४	३८-४०
वीतराग महावीर	१२	९	१९६१	७-८
श्रमण संस्कृति का भावी विकास	९	११-१२	१९५८	७३-७४
सबसे पहला पाठ	१	१	१९५०	२८-३०
साधु समाज की प्रतिष्ठा	३	७-८	१९५२	६१-६३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
श्री कृष्ण 'जुगनू'				
अपराध की औषधि : क्षमा	३६	८	१९८५	७-९
इन्द्रियनिग्रह से मोक्ष-प्राप्ति	३७	११	१९८६	५-७
कृष्णदत्त बाजपेयी				
शाजापुर का पुरातात्त्विक महत्त्व	४१	१०-१२	१९९०	१११-११४
कृष्णमुरारी पाण्डेय				
सोमदेवसूरि की अर्थनीति-एक समाजवादी दृष्टिकोण	३२	८	१९८१	२४-२५
कृष्णलाल त्रिपाठी				
जैन धर्म और प्रयाग	४७	७-९	१९९६	१५-२२
रामचन्द्रसूरि और उनका साहित्य	४५	७-९	१९९४	१०-२२
कृष्णलाल शर्मा				
जैनधर्म और व्यावसायिक पूँजीवाद : वेबर की अनुदृष्टि	१८	१-२	१९६७	६५-७२
जैन उपाश्रय व्यवस्था और कर्मचारी तंत्र	१७	८	१९६६	२७-३३
कृष्णा मेहरोत्रा				
आदर्श गृहस्थी	१२	२	१९६०	२९-३१
कुमार प्रियदर्शी				
जीवन के दो पक्ष	१०	९	१९५९	२५-२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
नई समाज व्यवस्था	९	११-१२	१९५८	४२-५६
कुन्दनलाल जैन				
योगनिधान	४८	१-३	१९९७	२१-३२
कुमुद गिरि				
जैन महापुराण : एक कलापरक अध्ययन	४५	१०-१२	१९९४	३३-३६
कुसुम जैन				
आचार्य अमितगति : व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व	३९	९	१९८८	१७-२३
स्याद्वाद	३०	११	१९७९	२१-३३
केवलकृष्ण मित्तल				
भौतिकवाद एवं समयसार की सप्तभंगी व्याख्या	२९	८	१९७८	१४-२०
के०एच० त्रिवेदी				
जैनधर्म-एक अवलोकन	२३	८	१९७२	२४-२८
केवल मुनि				
चारित्र की दृढ़ता	३७	८-९	१९८६	२६-३३
के० आर० चन्द्र				
अर्धमागधी भाषा में सम्बोधन का एक विस्मृत शब्द-प्रयोग 'आउसन्ते'	४६	७-९	१९९५	६६-६९
कुवलयमाला की मुख्य कथा और अवान्तर कथाएँ (क्रमशः)	२६	३	१९७५	३-८
,,	२६	४	१९७५	३-८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
,,	२६	६	१९७५	१०-११
,,	२६	७	१९७५	१९-२१
,,	२६	८	१९७५	१९-२२
,,	२६	९	१९७५	२१-२५
क्या रावण के दस मुख थे ?	१८	९	१९६७	२२-२४
क्षेत्रज्ञ शब्द का स्वीकार्य प्राचीनतम अर्धमागधी रूप	४३	१०-१२	१९९२	४१-४४
क्षेत्रज्ञ शब्द के विविध रूपों की कथा और उसका अर्धमागधी रूपान्तर	४१	१०-१२	१९९०	४९-५६
जैन विद्या के अध्ययन एवं संशोधन केन्द्रों की स्थापना	३४	७	१९८३	२२-२५
पउमचरियं के कुछ भौगोलिक स्थल	१६	११	१९६५	१७-२१
पउमचरियं की अवान्तर कथाओं में भौगोलिक सामाग्री	१८	१२	१९६७	३-१७
पउमचरियं : संक्षिप्त कथावस्तु (क्रमशः)	१७	९	१९६६	८-११
,,	१७	१०	१९६६	२२-२७
,,	१७	११	१९६६	२६-३०
,,	१७	१२	१९६६	३-८
पउमचरियं में अनार्य जातियाँ	१८	५	१९६७	२-५
पउमसिरीचरिउ के मूल स्रोत	१७	३	१९६६	३-८
पउमचरियं में वर्णित राम की वनयात्रा -क्रमशः	१६	८	१९६५	३-८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
,,	१६	९	१९६५	१३-१८
प्राकृत व्याकरण: वररुचि बनाम हेमचन्द्र : अंधानुकरण या विशिष्ट प्रदान	४२	४-६	१९९१	११-१९
प्राचीन प्राकृत ग्रंथों में उपलब्ध भगवान् महावीर का जीवन-चरित्र	२८	६	१९७७	३-१०
भरतमुनि द्वारा प्राकृत को संस्कृत के साथ प्रदत्त-सम्मान और गौरवपूर्ण स्थान	४२	१-३	१९९१	७१-७४
महाकथा कुवलयमाला के रचनाकार का उद्देश्य और पात्रों का आयोजन	२४	११	१९७३	१०-१३
मूल अर्धमागधी के स्वरूप की पुनर्रचना	४२	७-१२	१९९१	११-१५
राक्षस : एक मानव वंश	१८	१-२	१९६७	८-१२
रामकथा-विषयक कतिपय भ्रान्त-धारणायें	१६	१२	१९६५	३२-३४
विद्याधर : एक मानव जाति	१८	४	१९६७	१८-२०
विश्वेश्वरकृत शृंगारमंजरी सट्टक का अनुवाद क्रमश:	२३	११	१९७२	३४-३८
,,	२३	१२	१९७२	२०-२३
,,	२४	१	१९७२	२८-३२
,,	२४	२	१९७२	३०-३४
,,	२४	३	१९७३	३३-३५
,,	२४	४	१९७३	३२-३७
,,	२४	५	१९७३	३६-३८
,,	२४	६	१९७३	२२-२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
,,	२४	७	१९७३	२५-३०
,,	२४	८	१९७३	२९-३६
,,	२४	९	१९७३	१६-१९
राम कथा के वानर : एक मानव जाति	१८	१०	१९६७	९-१२
षट्प्राभृत के रचनाकार और उसका रचनाकाल	४८	१०-१२	१९९७	४५-५२
सर्वांगसुन्दरी-कथानक	२४	५	१९७३	१६-२१
सन्दर्भ एवं भाषायी दृष्टि से आचारांग के उपोद्धात में प्रयुक्त प्रथम वाक्य के पाठ की प्राचीनता पर कुछ विचार	४५	७-९	१९९४	५२-५९
के० भुजबली शास्त्री				
कन्नड़ में जैन साहित्य	२४	७	१९७३	१३-२०
गोम्मट आइडोल्स ऑफ कर्णाटक	२४	३	१९७३	३६-३८
जैन कन्नड़ वाङ्मय	४	७-८	१९५३	४७-५१
पंडितरल विद्वान् सुखलाल जी एक सुखद संस्मरण	३२	५	१९८१	४७
महाकवि रत्नाकर के कतिपय अध्यात्म-गीत	२०	२	१९६९	२३-२५
वैदिक धर्म तथा जैन धर्म	२९	१०	१९७८	९-१३
सिद्धि योग का महत्त्व	२९	६	१९७८	२८-२९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
केशवप्रसाद गुप्त				
वसन्तविलासमहाकाव्य का काव्य-सौन्दर्य	४४	४-६	१९९३	३६-५८
के० एस० धरणेन्द्रैया				
कन्नड़ संस्कृति को जैनों की देन	४	७-८	१९५३	३९-४४
कैलाशचंद्र जैन				
एक पत्र	२०	४	१९६९	२५
कैलाशचन्द्र शास्त्री				
अहिंसक महावीर	७	६-७	१९५६	४८-५०
एक समस्या	१	९	१९५०	२१-२५
कश्मीर की सैर - क्रमशः	५	१०	१९५४	३३-३६
,,	५	११	१९५४	२९-३०
,,	५	१२	१९५४	२५-२७
दर्शन और धर्म	१४	२	१९६२	९-१३
निश्चय और व्यवहार	२५	१२	१९७४	३-८
प्रत्येक आत्मा परमात्मा है	१५	२	१९६३	३१-३२
भगवान् महावीर का अचेलधर्म	२८	८	१९७७	३-१०
भगवान् महावीर के जीवन की एक झलक	९	१०	१९५८	३०-३२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
युद्ध और श्रमण	१	२	१९४९	९-११
सन्त श्री गणेश प्रसाद वर्णी	१२	१२	१९६१	१६-१८
कोमलचन्द जैन				
आगमिक साहित्य में महावीर चरित्र	२६	१-२	१९७५	२८-३३
क्षमा पहला धर्म है	१०	११	१९५९	३२-३४
जैन आगमों में जननी एवं दीक्षा	२७	३	१९७६	१९-२२
जैन और बौद्ध आगमों में गणिका	१७	१-२	१९६५	७३-८४
जैन और बौद्ध आगमों में विवाह पद्धति	१४	४	१९६३	१८-२२
जैनधर्म एवं बौद्धधर्म-परस्पर पूरक	२७	६	१९७६	८-११
पालि क्या बोलचाल की भाषा थी ?	२०	६	१९६९	१७-२१
बुन्देलखण्डी भाषा में प्राकृत के देशी शब्द	२१	७	१९७०	२०-२३
बौद्ध और जैन आगमों में नारी जीवन : एक और स्पष्टीकरण	१९	३	१९६८	२३-२४
बौद्ध और जैन आगमों में जननी	१८	६	१९६७	२६-३३
बौद्ध और जैन आगमों में जननी : एक स्पष्टीकरण	१८	१०	१९६७	१५-१९
बौद्ध और जैन आगमों में पुत्रवधू	१८	८	१९६७	२४-३३
भारतीय संस्कृति के विकास में श्रमण धारा का महत्त्व	३५	१२	१९८४	१५-२४
विग्रहगति एवं अन्तराभव	२०	१२	१९६९	२२-२५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
श्रमण संस्कृति और नारी	२३	७	१९७२	६-१०
कोमलचन्द्र शास्त्री				
क्या लोकप्रियता योग्यता की निशानी है	१२	३	१९६१	१६-१८
वनस्पति की गतिशीलता	१२	३	१९६१	१६-१८
कोमल जैन				
प्रभावशाली व्यक्तित्त्व (मनोवैज्ञानिक लेख)	८	५	१९५७	१२-१४
कौशल किशोर जैन				
सस्ता और सुलभ भोजन	१५	३	१९६४	३५-३९
खलील जिब्रान				
शैतान	३	४	१९५१	२३-३३
गंगाधर जालान				
बुनियादी समस्या और उसका समाधान	११	२	१९५९	१८-२३
गंगासागर राय				
काव्य का प्रयोजन : एक विमर्श	१३	१२	१९६१	२५-२६
काव्य में लोक मंगल	१३	७-८	१९६१	४२-४४
भारतीय आचार्यों की दृष्टि में काव्य के हेतु	१४	९	१९६२	२४-२७
गजेन्द्र मुनि				
जैन संस्कृति और प्रचार : एक चिन्तन	१८	९	१९६६	३०-३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
गणेश प्रसाद जैन				
असुर	२२	९	१९७०	३०
ऋषभ पुत्र भरत और भारत	२१	१२	१९६९	२४-३२
कवि पुष्पदन्त की रामकथा	२१	९	१९६९	२४-२७
जैन तीर्थंकरों का जन्म क्षत्रियकुल में ही क्यों ?-क्रमशः	२९	८	१९७७	२१-२५
,,	३१	६	१९८०	१५-१८
जैन पुराणों में राम कथा	२०	५	१९६८	२३-२५
जैन महाकवि पं० बनारसीदास का रहस्यवाद	२०	२	१९६८	१८-२२
तीर्थंकर महावीर का निर्वाण-दिवस 'दीपावली'	३२	१	१९८१	२०-२३
तीर्थंकर महावीर का निर्वाण पर्व 'दीपावली' : एक समीक्षा	३४	१	१९८२	१५-२०
तीर्थंकर महावीर की जन्म भूमि : विदेह का कुण्डपुर	३६	७	१९८४	२-११
तीर्थंकर महावीर की निर्वाण भूमि 'पावा'	३८	१	१९८६	५-११
तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ	३५	२	१९८३	२-५
दक्षिण भारत में जैनधर्म और संस्कृति	२१	१	१९६९	१५-२५
दक्षिण भारत में जैनधर्म, साहित्य और तीर्थ क्षेत्र	२४	११	१९७२	१४-२८
दास, दस्यु और पणि	२२	७	१९७०	२६-३०
द्राविण	२२	४	१९७०	२०-२४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
पर्वराज-दस लक्षणी पर्युषण पर्व	३१	११	१९८०	१९-२५
भारतवर्ष के मूल निवासी श्रमण	२१	१०	१९६९	३२-३७
मगध साम्राज्य का प्रथम सम्राट-श्रेणिक	१९	३	१९६७	२५-३४
महाकवि पुष्पदन्त : एक परिचय	२१	६	१९६९	१५-१९
महाकवि बनारसीदास का रस दर्शन	२३	६	१९७१	३१-४१
महावीर की विहारभूमि-मगध और उसकी संस्कृति	३३	११	१९८१	२३-२७
राजगृह	२४	२	१९७२	१६-२७
वसुदेवहिण्डी में रामकथा	३६	१२	१९८४	७-१३
वहित और अहित	२२	११	१९७०	२०-२३
वैराग्यमूलक एक ऐतिहासिक प्रेमकाव्य : तरंगवती	३४	६	१९८२	१४-२४
समाधिमरण	३४	९	१९८२	९-१३
श्रवणबेलगोला के शिलालेख, दक्षिण भारत में जैनधर्म और गोम्मटेश्वर	१९	९	१९६७	१३-२१
श्रावस्ती का जैन राजा सुहलदेव	२८	५	१९७६	१४-१८
गणेश मुनि शास्त्री				
अहिंसा के इतिहास में निरामिषता	१९	११	१९६७	९-१४
जैन आगम साहित्य में प्रमाणवाद	३०	११	१९७८	२९-३४
दर्शन और विज्ञान : एक चिन्तन	१६	९	१९६४	८-१२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
गणेश ललवानी				
राज्य का त्याग : त्यागी से भय	३४	९	१९८२	१४-१९
गुरुचरण सिंह मोंगिया				
जैन साहित्य और सांस्कृतिक संवेदना	२७	९	१९७५	११-२१
गुलाबचन्द्र चौधरी				
अखिल भारतीय प्राच्यविद्या महासम्मेलन	३	१	१९५१	३८-४४
अपरिग्रह के तीन उपदेष्टा	१०	१	१९५८	२२-२५
आचार्य विद्यानन्द	१	१०	१९४९	२४-२७
आचार्य हेमचन्द्र	२	८	१९५०	१६-२४
आर्यों से पहले की संस्कृति	१	८	१९४९	१३-१९
इतिहास की पुनरावृत्ति : एक भ्रामक धारणा	२	१०	१९५०	३१-३२
नारी के अतीत की झांकी-सतीप्रथा	२	२	१९५०	११-१८
भगवान् महावीर का जन्म और निर्वाण भूमि	२	६	१९५०	९-१२
भगवान् महावीर और उनका उपदेश	१४	८	१९६२	१५-१७
भगवान् महावीर का व्यक्तित्व	६	६-७	१९५४	४१-४६
संस्कृति-एक विश्लेषण	१	१२	१९४९	१३-१६
श्रमण संस्कृति का केन्द्र-विपुलाचल और उसका पड़ोस	२	१	१९५०	१५-२३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
गुलाबचन्द्र जैन				
आर्यारत्न श्री विचक्षण श्री जी म०सा०	३१	७	१९८०	१६-२३
उद्भट विद्वान् पं० बेचरदास दोशी	१५	९	१९६३	३७-३८
जैनधर्म और भक्ति	३०	७	१९७८	२४-३१
जैनधर्म दर्शन में आराधना का महत्त्व	३५	३	१९८३	११-१४
पर्युषण : दस लक्षण	१२	१२	१९६०	१४-१५
पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान के मार्गदर्शक पं० सुखलाल जी	२९	९	१९७७	३-५
प्रज्ञाचक्षु पं० सुखलाल जी : एक परिचय	३२	५	१९८०	५५
बौद्ध ग्रन्थों में जैन धर्म	८	७-८	१९५६	१८-२८
मुनिश्री चौथमल जी की जन्म शताब्दी	३०	३	१९७८	२४-२७
स्व० डॉ० भगवानदास	१३	३	१९६१	३८-४०
गोपीचन्द धारीवाल				
अपरिग्रह अथवा अकर्मण्यता	१२	४	१९६०	२३-२५
अहिंसा	१६	७	१९६४	२०-२८
अहिंसा : एक विश्लेषण	१८	८	१९६६	१८-१९
अहिंसा की साधना	१८	१-२	१९६६	४३-६०
आत्म विज्ञान	१६	९	१९६४	३१-३८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
आस्रव व बंध	१७	१-२	१९६५	१९-२५
क्या जैनधर्म जीवित रह सकता है ?	१६	४	१९६४	२२-२५
चीनी आक्रमण : अहिंसा को चुनौती	१५	१	१९६३	२१-२४
भगवान् महावीर के निर्वाण का २५००वां वर्ष	२३	९	१९७१	२६-३१
भोग तृष्णा	२०	५	१९६८	१८-१९
भौतिकवाद व अध्यात्मवाद	१६	१०	१९६४	२२-२९
मोक्ष	१७	६	१९६५	१४-१९
संवर और निर्जरा	१८	५	१९६६	१०-१७
संसार का अन्तरंग प्रदेश	१९	७	१९६७	२३-२५
सम्यग्दर्शन	१९	१-२	१९६७	२७-३१
श्री सिद्धर्षिगणिकृत उपमितिभवप्रपंचाकथा	१८	७	१९६६	२६-३१
श्री सिद्धर्षिगणिकृत उपमितिभवप्रपंचाकथा से संकलित "धर्म की महिमा"	१८	११	१९६६	१८-२२
गोकुल चन्द जैन				
आचार्य सोमदेवसूरि	१२	१	१९६०	३१-३३
केशी ने पूछा	१२	२	१९६०	११-१३
जैन संस्कृति और विवाह	१३	४	१९६१	८-२१
जैन साहित्य और अनुसंधान की दिशा	११	१	१९५९	३३-३५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन साहित्य की प्रतिष्ठा	११	६	१९५९	३२-३४
बदलते सामाजिक मूल्य और हमारा चिन्तन	१२	८	१९६०	२१-२२
भारतीय विश्वविद्यालयों में जैन शोध-कार्य	१९	११	१९६७	२४-२८
महावीर के समकालीन आचार्य	१२	६-७	१९६०	६५-६९
वर्णी जी के स्मारक का प्रश्न ?	१२	१२	१९६०	२३-२४
संवत्सरी	४०	११	१९८८	३
सोमदेवकृत यशस्तिलक	१६	९	१९६४	२-७
सोमदेवसूरि और जैनाभिमत वर्ण-व्यवस्था	१३	१	१९६१	९-१४
चन्दनमल चांद				
युवक के प्रति	२१	१	१९६९	१३-१४
महोपाध्याय चन्द्रप्रभसागर				
अष्टलक्षी : संसार का एक अद्भुत ग्रन्थ	४०	३	१९८८	२-८
आत्मोपलब्धि की कला : ध्यान	४४	१-३	१९९३	१-७
वृत्ति : बोध और विरोध	४४	४-९	१९९३	११-१६
क्षमा-वाणी	३४	११	१९८२	१-११
चन्द्रलेखा पंत				
जैन दर्शन में नारी मुक्ति	२६	३	१९७४	१४-१८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
चन्द्रशंकर शुक्ल				
स्याद्वाद की सर्वप्रियंता	४	१	१९५२	३-८
चन्द्रशेखर शास्त्री				
प्राचीन भारत में संस्कृतियों का संघर्ष	१	३	१९४९	३३-३४
चन्द्रिका सिंह उपासक				
सारनाथ-काशी की तपोभूमि	१	४	१९४९	२५-२८
सारनाथ के भग्नावशेष	१	९	१९४९	२६-३१
चम्पालाल सिंघई				
ग्वालियर के तोमरकालीन दानवीर	२३	१०	१९७१	१०-१३
गुप्त सम्राटों का धर्म समभाव	२३	६	१९७१	१८-२०
जैनों में सती प्रथा	२३	३	१९७१	२०-२१
दानवीरता का कीर्तिमान-वस्तुपाल	२३	२	१९७२	१७-२०
चांदमल कर्णावट				
हम क्रान्ति का आह्वान करें	१५	२	१९६३	२४-२७
चित्र भानु				
जीवन सौरभ	११	३	१९५९	२०-२२
चिमनलाल चकुभाई शाह				
तपश्चर्या-उपवास	३५	९	१९८३	२०-२२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
समदर्शी दार्शनिक	३२	५	१९८०	५२
महात्मा चेतनदास जी				
अनमोल वाणी-संकलन	३२	२	१९८१	१९
चैनसुखदास जैन				
धर्म का सर्वोदय स्वरूप	१४	८	१९६२	१-२
छगनलाल शास्त्री				
भेद में अभेद का सर्जक स्याद्वाद	१४	२	१९६२	२६-२८
छोटालाल हरजीवन सुशील				
वैराग्य क्या है	१५	१०	१९६३	२२-२९
जमनालाल जैन				
अपरिग्रह की नई दशा	९	६-७	१९५८	४७-५०
अपरिग्रही महावीर	१३	६	१९६१	४-७
अहिंसा, संयम और तप	११	६	१९५९	३५-३८
गंगा का जल लेय अरघ गंगा को दीना	८	५	१९५६	२३-२८
जो विदा हो रहे हैं	११	२	१९५९	३-६
भगवान् महावीर और युवा अध्यात्म	३३	६	१९८१	५१-५५
महात्मा भगवानदीन जी	१४	४	१९६२	२३-२५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
महावीर और उनकी देशना	२५	५	१९७३	२१-२४
महावीरोपदिष्ट परिग्रह परिमाण व्रत	२६	१-२	१९७४	५७-६२
मातृ-वत्सल महावीर	१२	६-७	१९६०	४५-४७
विपाकसूत्र के आख्यान : एक विहंगावलोकन	२९	१	१९७७	९-१४
श्रमरस का स्रोत : श्रावक	२९	४	१९७७	१३-२२
हमें सामाजिक मूल्यों को बदलना है	८	७-८	१९५६	१३-१७
भिक्षु जगदीश काश्यप				
भिक्षुसंघ और समाज सेवा	१	४	१९४९	१३-१६
लोक कल्याण के लिए श्रमण संस्कृति	१	१	१९४९	१९-२१
जगदीशचन्द्र जैन				
अनेकान्त : अहिंसा	१४	२	१९६२	७-८
अनेकांत : अहिंसा का व्यापक रूप	१३	७-८	१९६१	५१-५२
प्रागैतिहासिक भारत में सामाजिक मूल्य एवं परम्पराएँ	४३	१०-१२	१९९२	१३-१९
महावीर निर्वाण भूमि पावा : एक समीक्षा	४५	१०-१२	१९९४	२३-२५
पिण्ड निर्युक्ति	१७	९	१९६५	२८-३१
जगदीश सहाय				
नैतिकता का आधार	३३	१	१९८१	१-१८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
मानव धर्म का सार	३२	११	१९८०	६-१५
जगन्नाथ पाठक				
संस्कृत कवियों के उपनाम	११	३	१९५९	१३-१७
जयकुमार जैन				
पार्श्वनाथचरित में प्रतिपादित समाज	२८	११	१९७६	३-९
पार्श्वनाथचरित में राजनीति और शासन-व्यवस्था	२९	२	१९७७	२५-२९
प्राचीन भारतीय वाङ्मय में पार्श्वचरित	३२	५	१९८०	२९-४५
शान्त रस : मान्यता और स्थान	२९	४	१९७७	८-१२
संस्कृत साहित्य में अभ्युदय नामान्त जैन काव्य	२९	१	१९७७	३-८
जयचन्द्र बाफणा				
चंदनबाला और मृगावती	३	७	१९५५	३१-३२
जयन्त मुनि				
पर्युषण का सामाजिक महत्त्व	७	११	१९५५	१०-१५
मुनिश्री जयन्ती लाल जी				
ज्ञान की खोज में	३	९	१९५१	१७-२१
जयभगवान जी एडवोकेट				
आत्मा की महिमा	३	७-८	१९५१	३०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जयभगवान जैन				
पर्व और धर्म चर्या	७	१२	१९५५	३-९
जय भिक्खु				
परिनिर्वाण	३	१२	१९५१	१७-२१
मैं स्वयं	४	१	१९५२	१३-२१
अहमदाबाद के भामाशाह	४	१०	१९५२	२१-२४
सांपू सरोवर	५	७	१९५३	३४-३९
धन्य यशोदा, तुम्हें	१४	१०	१९६२	२५-३१
जसकरण डागा				
जैन एकता : सूत्र व सुझाव	३४	१२	१९८२	२२-४१
जसवन्तलाल मेहता				
जैनधर्म एवं गुरु मन्दिर	३६	७	१९८९	१९-२६
मुनि ज्योतिर्धर				
जैन संस्कृति का दिव्य सन्देश-अनेकान्त	३७	१	१९८५	२-७
ज्योतिप्रसाद जैन				
जैनकला विषयक साहित्य	२९	३	१९७७	१८-२१
धर्म और सहिष्णुता	१५	५-६	१९६३	३३-३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
भगवान् महावीर और दीवाली	४	१	१९६२	८
भगवान् महावीर के जीवन का एक भ्रान्त दृश्य	१५	७-८	१९६३	३३-४६
महान् साहित्यकार आचार्य हरिभद्रसूरि	१७	१-२	१९६५	५३-५५
महावीर का अन्तस्तल	५	१२	१९५३	३१-३४
जितेन्द्र बी० शाह				
द्वादशारनयचक्र का दार्शनिक अध्ययन	४३	७-९	१९९२	५९-६३
जिनवर प्रसाद जैन				
पावापुर	२३	५	१९७१	११-१९
जिनेन्द्र कुमार				
क्या हम अपराधी नहीं	३५-१		१९८३	७-८
धर्म को समाज सेवा से जोड़ा जाय	३६-४		१९८४	६-८
राष्ट्रीय विकास यात्रा में जैन धर्म एवं जैन पत्रकारों का योगदान	३६-३		१९८४	६-१०
जिनेन्द्र कुमार				
स्मृति नन्दन	३२-५		१९८०	३९-४०
जिनेन्द्रवर्णी				
महावीर जयन्ती	३५-६		१९८३	१५-१९
मुनिश्री जिनविजय जी				
गुजरात का जैनधर्म	३९	३	१९८७	१-३९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन कथा साहित्य का सार्वजनीन महत्त्व	५	५	१९५३	२९-३८
हरिभद्रसूरि का समय-निर्णय - क्रमश:	४०	१	१९८८	१-३२
,,	४०	२	१९८८	१-३०
पूज्य जिनविजयसेन सूरि				
जैन विद्वान् साहित्यिक परम्परा को अक्षुण रखें	११	५	१९५९	२०-२२
वर्धमान से महावीर कैसे बने ?	१५	५-६	१९६३	६९-७०
जी०आर०जैन				
कर्मों का फल देनेवाला कम्प्यूटर	२२	६	१९७०	३०-३२
जुगलकिशोर मुख्तार				
आचार्य हेमचन्द्र के योगशास्त्र पर एक प्राचीन टीका	१८	११	१९६६	२-१७
न्यायोचित विचारों का अभिनन्दन	१७	१०	१९६५	१०-२१
सुधार का मूलमंत्र	१३	१२	१९६१	९-१६
श्रीरंजन सूरिदेव की कुछ मोटी भूलें	१८	१२	१९६६	३०
जे०सी० कुमारप्पा				
युद्ध के लिए जिम्मेदार कौन	११	९	१९५९	१३-१५
जे०एन० भारती				
अपने व्यक्तित्व की परख कीजिये	६	१०	१९५४	३५-३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
झिनकू यादव				
प्राचीन जैन साहित्य में उत्सव-महोत्सव	२३	११	१९७१	२९-३३
प्राचीन भारतीय श्रमण एवं श्रमण चर्या	२४	१२	१९७२	६-१२
समराइच्चकहा की संक्षिप्त कथावस्तु और उसका सांस्कृतिक महत्त्व	२५	१-२	१९७३	३५-४२
समराइच्चकहा में चार्वाक दर्शन	२४	१	१९७२	२४-२७
टालस्टाय				
धर्म का तत्त्व	३	१२	१९५१	२२-२६
डी०पी० महाजन				
तमिलक्षेत्रीय जैन योगदान	२०	८	१९६८	५-१०
लंका में जैनधर्म	१९	६	१९६७	५-११
डी०आर० भण्डारी				
जैन नीति-दर्शन एवं उसका व्यावहारिक पक्ष	३६	७	१९८५	१-८
पर्यावरण एवं अहिंसा	४३	१-३	१९९२	८१-९०
डोंगरे महाराज				
जीवन और विवेक	३१	७	१९८०	१
ताराचन्द्र मेहता				
हिंसा का बोलबाला	१४	१	१९६२	६-७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
ताजमल बोथरा				
मूल में भूल	९	११-१२	१९५१	५७-५९
तेज सिंह गौड़				
उज्जयिनी और जैनधर्म	२३	४	१९७१	३-१२
मांडव : एक प्राचीन तीर्थ	२२	८	१९७०	८-१२
दयानन्द भार्गव				
वैदिक साहित्य में जैनपरम्परा	४३	७-९	१९९२	९-१३
समयसार : आचार-मीमांसा	२९	७	१९७७	३-११
दरबारीलाल कोठिया				
स्याद्वाद और अनेकान्तवाद	१५	५-६	१९६३	१७-२०
जीवन तो संयम ही है	१३	१२	१९६१	२१-२४
दरियावसिंह मेहता 'जिज्ञासु'				
महावीर और गांधी की जीवन दृष्टि : सत्य की शोध	३९	१	१९८७	१७-२४
दलसुख मालवणिया				
असंयत जीव का जीना चाहना राग है	४	३	१९५२	३-६
आगम झूठे हैं क्या ?	८	६	१९५६	५६-५९
आचारांगसूत्र ; क्रमशः	८	१२	१९५६	४-७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
,,	१	१	१९५७	७-९
,,	१	२	१९५७	१०
,,	१	३	१९५७	२३-२५
,,	१	४	१९५७	३-६
,,	१	५	१९५७	३-६
,,	१	६-७	१९५७	३४-३७
,,	१	८	१९५७	९-१५
,,	१	९	१९५७	२६-२९
,,	१	१०	१९५७	२५-२७
आत्महित बनाम परहित	२	३	१९५०	९-११
उपशमन का आध्यात्मिक पर्व	५	११	१९५३	३-५
एकान्तपाप और एकान्तपुण्य	६	१२	१९५४	११-१६
क्या मैं जैन हूँ ?	३	१०	१९५१	३-१२
चातुर्मास	१	१०	१९४९	२८-३०
जंगम आगम संशोधन मंदिर	२	४	१९५०	२८-३२
जैन और हिन्दू	१	११	१९४९	१६-१७
जैन साहित्य का इतिहास और इसकी प्रगति	६	२	१९५४	३०-३९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन साहित्य का सिंहावलोकन	९	५	१९५७	३०-४०
दक्षिण हिन्दुस्तान और जैनधर्म	१	५	१९४९	१७-१९
धर्म का पुनरुद्धार और संस्कृति का नवनिर्माण	१	३	१९४९	९-१३
निश्चय और व्यवहार : पुण्य और पाप	२५	१०	१९७४	३-१०
न्याय सम्पन्न विभव	२	१	१९५०	९-१२
पार्श्वनाथ विद्याश्रम-एक सांस्कृतिक अनुष्ठान	१	१	१९४९	३३-३४
प्राचीन जैन साहित्य के प्रारम्भिक निष्ठासूत्र	४०	११	१९८८	११-२०
बनारस से जैनों का सम्बन्ध	२	७	१९५०	१५-१८
बौद्धधर्म	१	७	१९४९	१९-२२
भक्तिमार्ग का सिंहावलोकन	२	९	१९५०	९-१५
भगवान् महावीर का उपदेश और आधुनिक समाज	३२	६	१९८०	१७-२२
भगवान् महावीर का मार्ग	६	६-७	१९५४	२०-२२
भगवान् महावीर के गणधर	५	५	१९५३	१-१०
भगवान् महावीर : समता-धर्म के प्ररूपक	२६	१-२	१९७४	१८-२७
भगवान् बुद्ध और भगवान् महावीर	१६	४	१९६४	९-२१
भौतिकता और अध्यात्म का समन्वय	४	६	१९५२	३-४
मलधारी अभयदेव और हेमचन्द्राचार्य	४	१२	१९५२	१-१०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
विद्यामूर्ति पं० सुखलाल जी	३	४	१९५१	१५-१८
महावीर भूले	७	६-७	१९५५	५१-५४
शॉ का सन्देश मुझे भूल जाओ	१०	७-८	१९५८	३२-३३
संथारा आत्महत्या नहीं	१३	१२	१९६१	३५-३९
संन्यासमार्ग और महावीर	४	५	१९५२	७-११
दिनकर				
जैनधर्म	११	६	१९५९	१७-२३
दिनेशचन्द्र चौबीसा				
पल्लवनरेश महेन्द्रवर्मन "प्रथम" कृत मत्तविलासप्रहसन में वर्णित-धर्म और समाज	४४	१-३	१९९३	३५-४१
दिलीप सुराणा				
भगवान् बाहुबलि के प्रति	३५	३	१९८३	८-१०
संवत्सरी की सर्वमान्य तारीख	३६	११	१९८४	१६-२२
दीनानाथ शर्मा				
उपदेशमाला (धर्मदासगणिकृत) एक समीक्षा	४२	१-३	१९९१	९७-१००
दुर्गाशंकर द्विवेदी				
रोगों का इलाज	१४	३	१९६२	२९-३२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
मुनि दुलहराज				
उपदेश विधि	१६	३	१९६४	२२
विस्मृत परम्पराएँ	१६	५	१९६४	१८
सचेल-अचेल	१६	८	१९६४	११-१५
दुलीचन्द्र जैन				
गुरुत्वाकर्षण से परमाणु शक्ति तक	११	५	१९५८	३०-३४
देवराज				
भारतीय दर्शनों की समन्वय परम्परा	१२	९	१९६०	२१-२४
देवसहाय त्रिवेद				
बुद्ध और महावीर	३१	१	१९७९	३०-३४
देवी प्रसाद मिश्र				
जैन पुराणों में समता	२९	१२	१९७७	१२-१७
देवेन्द्रकुमार जैन				
अपभ्रंश और देशीतत्त्व	२५	११	१९७४	३-८
अपभ्रंश की पूर्वस्वयंभूयुगीन कविता	१८	५	१९६६	५-९
अपभ्रंश की शोध कहानी	१८	१-२	१९६६	३-७
अपभ्रंश चरितकाव्य तथा कथाकाव्य	२३	३	१९७१	३-१०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
अपभ्रंश साहित्य : उपलब्धियाँ और प्रभाव	१२	१	१९६०	२१-२५
अपने को जानिये	५	७	१९५३	३१-३३
आचार्य हेमचन्द्र और उनकी साहित्यिक मान्यताएँ	१२	३	१९६०	२२-२६
इतिहास की पुनरावृत्ति-यथार्थ दर्शन	३	२	१९५१	३४-३६
एक प्रतिक्रिया	१९	३	१९६७	३५
कवि वीर और उनका जंबूसामिचरिउ	२०	४	१९६८	८
क्रांतिदर्शी महावीर	१६	६	१९६४	९-११
'जी' की आत्मकथा	८	१	१९५६	१५-१७
जैन तीर्थंकर और भिल्ल प्रजाति	२३	५	१९७१	२५-२७
जैन दर्शन और भक्ति : एक थीसिस	१६	४	१९६४	३-८
तीर्थंकर और दु:खवाद	२४	८	१९७२	२६-२८
तीर्थंकर महावीर	३०	१०	१९७८	१४-१६
दशरूपक का एक अपभ्रंश दोहा : कुछ तथ्य	३३	७	१९८१	२४-२६
पउमचरिउ और रामचरितमानस : एक तुलनात्मक अध्ययन	२४	४	१९७२	११-१४
पउमचरिउ में नारी	२५	६	१९७३	२४-२७
पउमचरिउ परम्परा, संदर्भ और शिल्प	२३	१२	१९७१	३-७
पर्युषण : आत्म चिन्तन से सामाजिक चिन्तन की ओर	१२	११	१९६१	१५-१७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
देवेन्द्रकुमार शास्त्री				
पुनीत स्मरण	७	६	१९५६	७-९
पुष्पदन्त क्या पुष्पभाट थे ?	७	१०	१९५६	३-५
पुष्पदन्त और सूर का कृष्ण लीला-चित्रण	२२	११	१९७१	३-११
पुष्पदन्त का कृष्ण काव्य	१९	१-२	१९६७	३-१३
पुष्पदन्त की रामकथा	१७	१-२	१९६५	१४-१८
प्रसाद और तीर्थंकर	२३	७	१९७२	२१-२४
प्राकृत भाषा के कुछ ध्वनि-परिवर्तनों की ध्वनि वैज्ञानिक व्याख्या	२८	५	१९७७	३-७
प्राचीन पांडुलिपियों का संपादन : कुछ प्रश्न और हल	२९	११	१९७८	१९-२३
ब्राह्मी लिपि और ऋषभनाथ	२७	१	१९७५	२५-२८
भगवान् महावीर की जीवन साधना	६	६-७	१९५५	६२-६४
भविसयत्तकहा तथा अपभ्रंश कथाकाव्य कुछ प्रतिस्थापनायें	२३	२	१९७१	६-११
भारतीय आर्यभाषा और अपभ्रंश	२७	११	१९७६	९-१२
भारतीय समाज का आध्यात्मिक दर्शन	१	१२	१९५०	२७-२९
महाकवि पुष्पदन्त और गोम्मटेश्वर बाहुबलि	३२-४		१९८२	१३-१६
महाकवि पुष्पदन्त की भक्ति चेतना	२७	३	१९७६	९-१४
महाकवि स्वयंभू का प्रकृति दर्शन	२४	१२	१९७३	३-५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
महाकवि स्वयंभू और नारी	२५	४	१९७५	३-७
महाकवि स्वयंभू के काव्य विचार	२४	१०	१९७३	२५-२७
मानवमूल्यों की काव्यकथा-भविसयत्तकहा	१९	९	१९६८	५-९
मानव संस्कृति और महावीर	७	७	१९५६	२२-२५
,,	११	७-८	१९६०	२१-२३
मुंनिराम सिंह का उग्रअध्यात्मवाद	१९	६	१९६८	१२-२२
मूल्यों का संकट और आध्यात्मिकता	१६	८	१९६५	२०-२३
मैं महावीर को याद क्यों करता हूँ	१४	८	१९६३	३१-३३
शुभ कामना	६	१	१९५४	३१-३३
संस्कृत शब्द और प्राकृत अपभ्रंश	२८	८	१९७७	१८-२०
समन्वय या सफाई	३	१२	१९५२	७-१०
समाज का धर्म	१३	२	१९६०	२१-२३
साधु समाज और निवृत्ति	३	२	१९५१	९-१२
सिद्धि विनिश्चय और अकलंक	५	४	१९५३	३१-३२
स्वयंभू और उनका पउमचरिउ	२५	१-२	१९७३	३-१३
स्वयंभू का कृष्णकाव्य और सूरकाव्य के अध्ययन की समस्याएँ	३०	८	१९७९	३३-३५
स्वयंभू की गणधर परम्परा	२४	७	१९७३	३७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
श्रद्धा का क्षेत्र	३	५	१९५२	९-१२
श्रमण संस्कृति की मूल संवेदना	२३	१०	१९७२	१६-१७
श्री तारण स्वामी	२	१	१९५०	२९-३२
श्रीपालचरित की कथा	२२	४	१९७१	३-७
सिरिपालचरिउ : एक मूल्यांकन	२२	८	१९७१	३-७
सिरिपालचरिउ : संदर्भ और शिल्प	२०	१०	१९६९	५-१४
हम सौ वर्ष जी सकते हैं ?	६	१२	१९५५	३१-३३
हेमचन्द्र और भारतीय काव्यालोचना	१७	९	१९६६	२-७
अध्यात्मवाद : एक अध्ययन	१९	१-२	१९६७	५४-६४
अपभ्रंश जैन साहित्य	२२	३	१९७१	१२-१७
,,	२२	४	१९७१	१८-१२
अक्षय तृतीया : एक चिन्तन	१८	८	१९६७	७-१२
आचार्य सिद्धसेन दिवाकर की साहित्य साधना	२०	२	१९६८	५-१४
उत्तराध्ययन : नामकरण व कर्तृत्व	२९	३	१९७८	३-११
कर्मयोगी कृष्ण के आगामी भव	२३	९	१९७२	३-९
ज्योतिर्धर महावीर	१७	१-२	१९६५	२६-३२
जैन कृष्ण साहित्य	२२	९	१९७१	१०-१६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
,,	२२	१०	१९७१	१४-१९
जैन, बौद्ध और वैदिक साहित्य-एक तुलनात्मक अध्ययन	३२	५	१९८१	१-२८
जैन संस्कृति और राजनीति	१९	५	१९६८	२४-३१
जैन संस्कृति का विस्तार	१८	४	१९६७	३१-३७
दर्शन और धर्म	१६	७	१९६५	३-७
पुनर्जन्म सिद्धान्त की व्यापकता	२४	४	१९७३	३-१०
प्रमाणवाद : एक पर्यवेक्षण	२५	६	१९७४	३-१३
,,	२५	७	१९७४	७-१८
,,	२५	८	१९७४	१३-२२
प्राकृत जैन कथा साहित्य	२२	५	१९७१	३-१०
,,	२२	६	१९७१	१६-२१
भगवान् अरिष्टनेमि और कर्मयोगी कृष्ण	२४	१	१९७२	३-६
भगवान् अरिष्टनेमि की ऐतिहासिकता	२२	७	१९७१	१३-१८
भगवान् महावीर के युग का जैन सम्राट महाराजा चेटक	२५	९	१९७४	२०-२४
भारतीय चिन्तन में मोक्ष और मोक्षमार्ग	२७	९	१९७६	३-१०
,,	२७	१०	१९७६	३-७
	२७	११	१९७६	३-८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
भारतीय संस्कृति की अन्तरात्मा	३८	४	१९८७	६-८
भारतीय संस्कृति में दान का महत्त्व	२०	६	१९६९	८-१६
,,	२०	७	१९६९	१०-२०
भारतीय साहित्य और आयुर्वेद	१८	१०	१९६७	२०-२३
महावीर और उनके सिद्धान्त	२४	६	१९७३	३-८
युगपुरुष आचार्य सम्राट आनन्द ऋषि जी म०	४३	१-३	१९९२	१०३-१०५
संस्कृति का स्वरूप	१५	१२	१९६४	३३-३४
पं० सुखलाल जी - एक संस्मरण	३२	५	१९८२	२८-३२
सेवा : एक विश्लेषण	१८	१-२	१९६६	२६-४२
स्याद्वाद एक परिशीलन	२०	१०	१९६९	१५-२०
,,	२०	११	१९६९	८-१५
,,	२०	१२	१९६९	१३-२१
श्रमण संस्कृति का सार	२०	५	१९६९	८-१७
श्रमण संस्कृति की प्राचीनता	२१	१२	१९७०	३-१२
धनंजय मिश्र				
आचार्य हरिभद्र का योगदर्शन	४१	७-९	१९९०	३५-४४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
धनदेव कुमार 'सुमन'				
ऐसा क्यों ?	६	२	१९५४	२१-२६
जैन शिक्षण संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा	४	५	१९५३	१३-१६
धनपति डंकलिया				
प्रज्ञाचक्षु पं० सुखलाल संघवी	८	२	१९५६	३७-३९
धनीराम अवस्थी				
संस्कृत काव्यशास्त्र के विकास में प्राकृत की भूमिका	३७	५	१९८५	२-९
धन्यकुमार राजेश				
क्या रामकथा का वर्तमान रुप कल्पित है	२१	७	१९६९	१०-१९
,,	२१	८	१९७०	१८-२७
जैन आचारशास्त्र की गतिशीलता का समाजशास्त्रीय अध्ययन	२१	१०	१९७०	३-१२
जैन और वैदिक साहित्य में पराविद्या	२१	५	१९७०	५-१५
जैन परम्परा में ध्यान योग	२४	६	१९७०	९-१६
जैन पुराणों में पुनर्जन्म की कथायें	२२	५	१९७३	२३-३१
,,	२२	६	१९७१	१०-१५
जैन पौराणिक साहित्य में युद्ध	२१	४	१९७१	५-१७
पौराणिक साहित्य में राजनीति	२३	१	१९७०	३-१३
महावीर निर्वाण सम्वत् में शताब्दियों की भूल	२१	२	१९७१	१४-२१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
मोक्ष मीमांसा में जैन दर्शन का योगदान	२२	९	१९६९	३-९
श्रमण और वैदिक साहित्य में स्वर्ग और नरक	२३	१०	१९७२	३-९
श्रीकृष्ण : एक समीक्षात्मक अध्ययन	२०	११	१९६९	२७-३४
	२०	१२	१९६९	२६-३१
हरिवंशपुराणकालीन समाज और संस्कृति	२२	२	१९७०	३-१३
भिक्षु धर्मरक्षित				
बौद्ध धर्म का छठां संगायन	५	९	१९५४	१२-१८
धर्मचन्द्र जैन				
जैन एवं बौद्ध दर्शन में प्रमाण-विवेचन	४३	१०-१२	१९९२	२१-४०
जैन स्त्रोतों में नवधा भक्ति	३४	१०	१९८३	२५-२९
धर्मचन्द 'मुखर'				
भगवान् महावीर-जीवन और सिद्धांत	६	६-७	१९५५	३६-४०
दादा धर्माधिकारी				
जीवन का सही दृष्टिकोण	११	५	१९६०	९-११
सर्वोदय: गाँधी का मार्ग	१०	५	१९५९	१७-१९
धर्मेन्द्रकुमार कांकरिया				
भावनाओं का जीवन पर प्रभाव	९	१	१९५७	२५-२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
धीरजलाल टोकरशी शाह				
ईर्यापथ-प्रतिक्रमण	१	७	१९५०	३४-३६
धीरेन्द्र वर्मा				
खोज सम्बन्धी कुछ अनुभव और समस्यायें	२	८	१९५१	९-१२
धूपनाथ प्रसाद				
त्रिरत्न, सर्वोदय और सम्पूर्ण क्रान्ति	४७	७-९	१९९६	४४-४८
कालचक्र	४६	१०-१२	१९९५	४२-४३
नगराज जी				
अनेकान्त दर्शन	४०	३	१९८९	९-१४
भगवान् महावीर की तलस्पर्शिनी अहिंसा-दृष्टि	३८	१	१९८६	२-४
भगवान् महावीर के आदर्श और यथार्थ की पृष्ठ भूमि	३५	६	१९८४	२०-२२
महावीर और बुद्ध : कैवल्य और बोधि	१८	७	१९६७	३-६
विद्यावारिधि एवं प्रज्ञापुत्र	३२	५	१९८२	१६
संवत्सरी महापर्व : स्वरूप और अपेक्षाएँ	३३	११	१९८२	६-९
नगेन्द्र				
राष्ट्रीय एकता और साहित्य	३६	५	१९८५	२०-२५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
मुनिश्री नथमल जी				
कृतिकर्म के बारह प्रकार	२१	१	१९६९	२६-३३
जैन धर्म में सामाजिक प्रवृत्ति की प्रेरणा	१८	८	१९६७	२०-२३
जैन शासन तेजस्वी कैसे बने ?	१३	७-८	१९६२	२१-२३
ध्यान योगी महावीर	१२	६-७	१९६१	२८-३०
शब्दों की शवपूजा न हो	१२	४	१९६१	१५-१९
संघटन या विघटन	११	४	१९६०	२९-३१
नंदलाल जैन				
अललित जैन साहित्य का अनुवाद : कुछ समस्याएँ	३२	१२	१९८१	२१-२६
कर्म और कर्म बन्ध	४५	१०-१२	१९९४	१०-२२
श्रोतेन्द्रिय की प्राप्यकारिता : एक समीक्षा	३३	३	१९८२	२५-३२
नंदलाल मारू				
अद्धमागहाए भाषाए भासंति अरिहा	२४	९	१९७३	१३-१५
अहिंसा : एक : विश्लेषण	१८	११	१९६७	३३-३७
अहिंसा का जैन दृष्टि से विश्लेषण	१८	५	१९६७	११-१४
क्या लोंकाशाह विद्वान् नहीं थे ?	१८	१-२	१९६६	७८-८०
क्या स्त्रियाँ तीर्थंकर के सामने बैठती नहीं ?	२४	५	१९७३	२७-३०
नई पीढ़ी और धर्म	१९	७	१९६८	३५-३८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
पच्चीसवीं निर्वाण-शताब्दी के आयोजनों में आगम-वाचना भी हो	२५	६	१९७४	३२-३५
भगवान् महावीर की २५वीं निर्वाणशती कैसे मनायें ?	१९	१-२	१९६७	३२-३६
समवायांगसूत्र में विसंगति	१९	५	१९६८	३२-३४
मुनिश्री नन्दीषेण विजय				
जैनधर्म का दृष्टिकोण	१४	१०	१९६३	१९-२१
नृपराज शादीलाल जैन				
भारत जैन महामण्डल के ४५वें अधिवेशन पर अध्यक्षीय भाषण	३७	११	१९८६	२१-२८
नरेन्द्रकुमार जैन				
जैन तथा अन्य भारतीय दर्शनों में सर्वज्ञता विचार	३०	८	१९७९	३-१३
,,	३०	९	१९७९	३-१०
भगवान् महावीर की अहिंसा	१५	११	१९६४	२४-२६
विश्वशांति का आचार गाँधीवाद	५	३	१९५४	३७-४०
समन्तभद्र द्वारा क्षणिकवाद की समीक्षा	३०	१	१९७८	११-२२
,,	३०	२	१९७८	१७-२५
नरेन्द्र गुप्त				
गांधी जी की दृष्टि में अहिंसा का अर्थ	४	१	१९५२	११-१२
नरेशचंद्र जैन				
भगवान् महावीर और वर्तमान युग	४	५	१९५३	३५-३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
भगवान् महावीर का जन्म स्थान	१९	३	१९६८	३-१५
वर्धमान : चिन्तन खण्ड	१९	६	१९६८	१-४
नरेन्द्र बहादुर				
परम तत्त्व : आचार्य विनोबा भावे की दृष्टि में	३६	४	१९८५	२२-२६
नरेन्द्र भानावत				
पर्युषण : आत्म संक्रान्ति का अद्वितीय अध्याय	३२	११	१९८१	२-५
भावात्मक एकता, प्रकृति और जीवन का सत्य	३९	११	१९८८	२५-२९
नवरत्न कपूर				
नौ का अंक	१२	१०	१९६१	९-१६
प्राच्यभारती का अधिवेशन	१५	१	१९६३	२६-३०
भीगी अंखियाँ	१२	१	१९६०	२७-३०
सन् १९६१	१२	३	१९६१	६-७
मुनिश्री न्याय विजयजी				
समस्त जैन संघ को नम्र विज्ञप्ति	१७	८	१९६६	३४-३९
नामवर सिंह				
संस्कृति क्या है?	१२	१२	१९६१	३४-३९
नारायण हेमनदास सम्तानी				
२६वाँ प्राच्यविद्या विश्व-सम्मेलन	१५	४	१९६४	३-८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
निकिता ख्रुश्चेव				
युद्ध और उसके साधनों को खत्म करो	११	१	१९५९	१३-१८
निजामुद्दीन				
जैनधर्म-एक सम्प्रदायातीत धर्म	३३	८	१९८२	३-७
जैनधर्म की प्रासंगिकता	३१	८	१९८१	१९-२५
भगवान् महावीर और विश्व शांति	३५	१	१९८३	१०-१३
पंन्यास नित्यानन्द विजय				
विश्व चेतना के मनस्वी सन्त विजयवल्लभ	४०	१२	१९८९	२१-२५
मुनिश्री निर्मल कुमार				
आहार शुद्धि के लिए क्या करें ?	११	१०	१९६०	१९-२०
निर्मल कुमार जैन				
संघर्ष करना होगा	५	९	१९५४	१९-२३
निर्मला प्रीतिप्रेम				
ईसाइयों का महापर्व - क्रिसमस	६	३	१९५५	१२-१६
वर्मा में होली का त्यौहार	६	५	१९५५	३०-३२
नेमिचंद्र जैन				
पर्युषण : संभावनाओं की खोज	३०	११	१९७९	३-७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
नेमिचंद्र जैन				
समयसार सप्तदशांगी टीका : एक साहित्यिक मूल्यांकन	२९	१०	१९७८	३-८
सिद्धक्षेत्र बावनगजा जी	३७	३	१९८६	२-४
नेमिचंद्र शास्त्री				
व्रत का मूल्य	१३	१२	१९६२	२९-३४
मुनि नेमिचंद्र				
जैन सिद्धान्तों का समाजव्यापी प्रयोग	१८	४	१९६७	२६-३०
धर्म : मेरी दृष्टि में	१८	४	१९६७	२४-२८
धार्मिक एकता	१५	५-६	१९६४	६५-६८
धर्ममय समाज रचना की आधारशिला : क्षमापना	१३	११	१९६२	३२-३६
पर्युषण और सामाजिक शुद्धि	१२	११	१९६१	१९-२२
,,	४०	११	१९८९	६-१०
भगवान् महावीर और धर्मक्रांति	१४	८	१९६३	२१-२५
भगवान् महावीर और समता का आचरण	१५	१०	१९६४	३०-३४
भगवान् महावीर सामाजिक और आर्थिक क्रांति के जनक	१०	१	१९५८	९-१२
लोक शिक्षण के गुण व योग्यताएँ	१२	१०	१९६१	२४-२५
विकास के नये पहाड़े सीखिए	८	११	१९५७	२०-२३
शुद्धि प्रयोग की झांकी	१४	१०	१९६३	५-८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
,,	१५	४	१९६४	९-१३
साधु संस्था और लोकशिक्षण	१२	९	१९६१	३५-४०
श्रमणों का युगधर्म	१२	३	१९६१	८-९
हर क्षेत्र में अनेकान्तवाद का प्रयोग हो	१०	६	१९५९	२४-२८
क्षमापना	१३	११	१९६२	३२-३६
नेमिशरण मित्तल				
ग्रामदान से ग्राम-स्वराज्य	१०	५	१९५९	२०-२४
मानवसाध्य है या साधन	११	९	१९६०	९-११
श्राप क्या ? वरदान क्या ?	१२	५	१९६१	१३-१४
प्रकाशचन्द जैन				
आदीश जिन	२८	४	१९७७	३-८
प्रकाश मुनि जी				
जीवन विकास की प्रेरणा : सहयोग	१२	५	१९६१	३६-३८
संयममूर्ति गुरुदेव	१४	११-१२	१९६३	४८-४९
प्रकाश मेहता				
सिर्फ फैशन की खातिर	३३	२	१९८१	२३-२४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
प्रतिभा जैन				
अनेकांतवाद	३४	५	१९८३	२-९
समकालीन जैन समाज में नारी	४६	१०-१२	१९९५	३४-४१
हिन्दू तथा जैन राजनैतिक आदर्शों का समीक्षात्मक अध्ययन	३९	८	१९८८	१८-२०
प्रतिभा त्रिपाठी				
ऋग्वेद में अहिंसा के सन्दर्भ	४२	४-६	१९९१	४४-६२
प्रीतेशचन्द्र जैन				
क्या आप स्वीकार करेंगे	१४	१०	१९६३	२२-२३
प्रद्युम्नकुमार जैन				
क्या जैनधर्म रहस्यवादी है ?	२८	८	१९७७	११-१७
प्रभाकर गुप्त				
धर्म निरपेक्ष या ईश्वर निरपेक्ष	८	१०	१९५७	४-८
प्रभुदास बालूभाई पटवारी				
बाल संन्यास दीक्षा प्रतिबन्धक बिल उचित है	७	४	१९५६	१८-२३
प्रमिला पाण्डेय				
जैनदर्शन में कर्मवाद की अवधारणा	२३	३	१९७२	२२-२७
जैन धर्म में भक्ति का स्थान	२३	५	१९७२	२८-३३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
प्रमोद कुमार				
जैन कर्म-सिद्धान्त	२५	५	१९७४	३-९
जैन दर्शन में मोक्ष का स्वरूप	२६	४	१९७५	१४-२०
साध्वी (डॉ०) प्रमोद कुमारी				
ऋषिभाषित का सामाजिक दर्शन	४३	१-३	१९९२	६९-७९
प्रमोदमोहन पाण्डेय				
आगमों में राजा एवं राजनीति पर स्त्रियों का प्रभाव	२४	९	१९७३	३-८
प्राचीन भारत में अपराध और दंड	२४	६	१९७३	१७-२१
प्रवासी				
धर्म करते पाप तो होता ही है	३	१२	१९५२	३५-३७
वे आपको कितना चाहते हैं ?	११	२	१९५९	१५-१७
प्रवीण ऋषि जी				
शान्ति की खोज में	३१	१२	१९८१	१७-१९
प्रवेश भारद्वाज				
प्रबन्धकोश का ऐतिहासिक वैभव	४१	४-६	१९९०	८९-१००
साध्वी प्रियदर्शना जी				
जैन साधना पद्धति में ध्यान योग	३७	१०	१९८६	१८-२७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
प्रिंस क्रोपाटकिन				
ज़िन्दगी किसे कहते हैं ?	६	१२	१९५५	१७
प्रेमकुमार अग्रवाल				
जैन एवं न्याय दर्शन में कर्म सिद्धान्त	२४	१	१९७२	१२-१९
जैन दर्शन में अहिंसा	२२	८	१९७१	१३-२२
जैन दर्शन में योग का प्रत्यय	२४	७	१९७३	८-१२
जैन धर्म में उपासना	२३	२	१९७१	१२-१७
जैन धर्म में शक्तिपूजा का स्वरूप	२२	१२	१९७१	९-१२
जैन मूर्तियों का क्रमिक विकास	२३	४	१९७२	१८-२१
जैनेतर दर्शनों में अहिंसा	२२	१०	१९७१	२०-२८
श्रमण संस्कृति में मोक्ष की अवधारणा	२३	६	१९७२	३-९
प्रेमकुमारी दिवाकर				
नारी जागरण	३	२	१९५१	२६-३१
विवाह और कन्या का अधिकार	२	१२	१९५१	२५-३०
प्रेमचंद जैन				
अपभ्रंश कथाकाव्यों का हिन्दी प्रेमाख्यानों के शिल्प पर प्रभाव	१९	१-२	१९६७	४३-५३
जैन रासरासक - परिभाषा, विकास और काव्यरूप	२१	८	१९७०	३-९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
प्रेमचन्द्र जी महाराज				
चरणारविन्द में	१४	११-१२	१९६३	९१-९३
पुराण बनाम कथा साहित्य : एक प्रश्न चिन्ह	२१	१०	१९७०	१३-१९
भारतीय प्रतीक परम्परा में जैन साहित्य का योगदान	२१	५	१९७०	३२-३७
मुनिराम सिंह कृत 'पाहुडदोहा' एक-अध्ययन	१८	६	१९६७	२-९
मूलाचार	२१	३	१९७०	१८-२४
रहस्यवादी जैन अपभ्रंशकाव्य का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव	१६	४	१९६५	२६-३१
,,	१६	५	१९६५	१२-१७
,,	१६	६	१९६५	१२-१७
,,	१६	७	१९६५	१५-१९
समाज में महिलाओं की उपेक्षा एक विचारणीय विषय	३१	१	१९७९	८-१९
प्रेमचन्द रांवका				
कालिदास के काव्यों में अहिंसा और जैनत्व	२७	७	१९७६	२३-२६
हिन्दी काव्यों में महावीर	२६	९	१९७५	१४-२०
प्रेमजी				
संसार की चार उपमाएँ	७	५	१९५६	१३-१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
प्रेमलता गुप्त				
घृणा, प्रेम और स्वास्थ्य	९	४	१९५८	२
प्रेमलता जैन				
पुष्पदन्त का कृष्ण काव्य : एक अनुशीलन	२७	४	१९७६	३-९
,,	२७	५	१९७६	३-९
पुष्पदन्त की रामकथा की विशेषताएँ	२८	१	१९७६	५-१२
प्रेमसुमन जैन				
आचार्य हरिभद्रसूरि : प्राकृत के एक सशक्त रचनाकार	१८	१२	१९६७	१९-२६
कुवलयमालाकहा का कथा-स्थापत्य-संयोजन	१८	१०	१९६७	३-८
कुवलयमालाकहा में उल्लिखित कडंग, चन्द्र और तारद्वीप	२३	८	१९७२	१३-१८
जैन भौगोलिक स्थानों की पहचान	३४	७	१९८३	६-११
जैन संस्कृति और परिवार व्यवस्था	१७	१-२	१९६५	३८-५१
पश्चिम भारत का जैन संस्कृत साहित्य को योगदान	२४	८	१९७३	३-१६
महाकवि स्वयंभू और तुलसीदास	१८	९	१९६७	३-१४
पृथ्वीराज जैन				
आचार्य कालक और 'हंसमयूर'	२	१	१९५०	३९-४०
तलाक	२	२	१९५०	२९-३४
नारी और त्याग मार्ग	२	३	१९५१	१४-२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
नैतिक उत्थान और शिक्षण संस्थायें	३	११	१९५२	२७-३०
भगवान् महावीर की धर्म-क्रांति	८	६	१९५७	२६-३०
भगवान् महावीर और जातिभेद	१	६	१९५०	११-१६
मानव जीवन का आधार	१	३	१९५०	२५-२७
युगपुरुष भगवान् महावीर	२	६	१९५१	२४-२७
श्रमण संस्कृति और नया संविधान	१	५	१९५०	९-१५
श्री आत्मारामजी और हिन्दी भाषा	५	१०	१९५४	११-१५
साम्प्रदायिक कदाग्रह	१	२	१९४९	२७-३०
साम्यवाद और श्रमण विचारधारा	१	१	१९४९	२२-२७
हजरत मुहम्मद और इस्लाम	१	८	१९५०	२५-३१
प्यारेलाल श्रीमाल				
ख्याल का भविष्य	१४	२	१९६२	२९-३३
जैनगीतों की परम्परा	१०	४	१९५९	९-११
जैनधर्म और युवावर्ग	३४	३	१९८३	३५-३९
जैन पदों में रागों का प्रयोग	२३	७	१९७२	११-१४
जैन वांगमय का संगीत पक्ष	३१	१	१९७९	२५-२७
समाज का कोढ़-जिम्मनवार	१०	९	१९५९	१९-२२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
मुनिश्री पद्मचन्द्र जी शास्त्री				
कृपालु गुरुदेव	१४	११-१२	१९६३	३०-३२
जीवन की सच्ची क्रान्ति	१३	४	१९६२	२५-२७
पद्मनाभ जैनी				
स्वामी समन्तभद्र जी	३	३	१९५२	१७-२३
पन्नालाल धर्मालंकार				
जैन समाज और वैशाली	३	७-८	१९५२	३६-३८
परमेष्ठीदास जैन				
आचारांग का दार्शनिक पक्ष	३८	१२	१९८७	१-११
आचारांग में समाज और संस्कृति	३८	११	१९८७	२०-३२
पारसमल 'प्रसून'				
आत्म निरीक्षण	१८	५	१९६७	९-१०
आधुनिक विज्ञान, ध्यान एवं सामायिक	४७	७-९	१९९६	३४-४३
क्षमा शांति के ये सुशीतल स्रोत	१५	११	१९६४	२७-२८
पीटर फ्रीमैन				
कौन भूखे मरेंगे	६	२	१९५४	१४-१७
पी० एल० वैद्य				
असाम्प्रदायिक जैन साहित्य	४	७-८	१९५३	७-२४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
पी०एस० कुमारस्वामी राजा				
जैनधर्म की देन	१	४	१९५०	३३-३५
पुखराज भण्डारी				
डॉ० ईश्वरदयाल कृत "जैन निर्वाण : परम्परा और परिवृत्त" लेख में आत्मा की माप-जोख शीर्षक के अन्तर्गत उठाये गये प्रश्नों के उत्तर	४४	१-३	१९९३	२८-३४
मुनिश्री पुण्यविजय जी				
उत्सर्ग और अपवाद	१७	६	१९६६	३०-३३
जैन ज्ञान भण्डारों पर एक दृष्टिपात	५	२	१९५३	१-७
जैसलमेर भण्डार का उद्धार	४	७-८	१९५३	६३-७०
निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थी संघ	१७	१०	१९६६	३२-३७
पूनमचन्द मुणोत जैन				
भगवान् महावीर का आदर्श जीवन	३६	७	१९८५	२२-२३
पुष्पमित्र जैन				
जैन संस्कृति के प्रतीक-मौर्यकालीन अभिलेख	२४	८	१९७३	१७-२५
पुष्पा				
अपरिग्रह ही क्यों ?	१०	९	१९५९	१०-११
मानव	६	५	१९५५	२४-३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
फूलचन्द जैन 'प्रेमी'				
आचारांग के शस्त्र परिज्ञा अध्ययन में प्रतिपादित षट् जीवनिकाय सम्बन्धी अहिंसा	३९	१२	१९८८	८-१५
कुरल काव्य	२३	१	१९७१	२४-२९
मूलाचार में मुनि की आहार-चर्या	२६	९	१९७५	३-१३
फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री				
क्या धन-सम्पत्ति आदि कर्म के फल हैं	२	९	१९५१	३८-३९
जैनधर्म और वर्ण व्यवस्था	२	६	१९५१	१५-२३
,,	२	७	१९५१	२०-२६
जैनधर्म में एकान्त नियतिवाद और सम्यक् नियति का भेद	१३	७-८	१९६२	६-८
जैन पुराण साहित्य	४	७-८	१९५३	३५-३८
संस्कृति का अर्थ	१	८	१९५०	३३-३४
फूलचंदजी 'श्रमण'				
धर्म पुरुष और कर्म पुरुष	६	१०	१९५५	२१-२२
पर्युषण पर्व की आराधना	६	११	१९५५	१४-१६
भद्रबाहु का कालमान	६	१	१९५४	६-८
शास्त्रीय पैमाने	५	११	१९५४	२५-२८
श्रमण भगवान् महावीर की शिष्य संपदा	७	१	१९५५	३०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
बद्रीप्रसाद स्वामी				
नया विहान-नया समाज	१०	१०	१९५९	३२-३५
बरट्रेन्ड रसल				
अतीत धर्म और साधु संस्था	२	३	१९५१	३१-३४
बृजकिशोर पाण्डेय				
आधुनिक सन्दर्भ में जैन दर्शन	३०	१२	१९७९	१८-२२
बृजनन्दन मिश्र				
तपोधन महावीर	१२	६-७	१९६१	५६-५७
पंचयाम धर्म : एक पर्यवेक्षण	१५	९	१९६४	२०-२३
ब्रजनारायण शर्मा				
प्राणातिपात विरमण : अहिंसा की उपादेयता	३८	५	१९८७	६-१५
ब्रृजेश कुमारी				
घरों में बच्चे	८	३-४	१९५७	५४-६०
बलवन्तसिंह मेहता				
परम्परागत पावा ही भगवान् महावीर की निर्वाण भूमि	२३	६	१९७२	२१-३०
बंशीधर				
पर्युषण पर्व का मतलब	१२	११	१९६१	१३-१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
,,	४०	११	१९८९	४-५
महावीर जयन्ती का अर्थ	१३	६	१९६२	१९-२०
सभ्यता का संघर्ष	१२	१	१९६०	१७-२०
बशिष्ठनारायण सिन्हा				
अन्तरालगति	२८	५	१९७७	८-१३
अहिंसा : एक विश्लेषण	१८	१-२	१९६६	७३-७७
,,	१८	६	१९६७	१०-१५
आचार्य कुन्दकुन्द और उनका साहित्य	१९	११	१९६८	१५-२१
जीवन धर्म	११	३	१९६०	२३-२६
जैनधर्म की प्राचीनता -क्रमशः	२०	६	१९६९	२२-२९
,,	२०	७	१९६९	२७-३२
,,	२०	८	१९६९	१९-२७
,,	२०	९	१९६९	२३-२७
जैन धर्मानुसार जीव,प्राण और हिंसा	१९	७	१९६८	१८-२२
जैन दर्शन में प्रत्यक्ष का स्वरूप (विशेष शोध निबन्ध)	३३	३	१९८२	१-२४
जैन दर्शन में प्रमाण (विशेष शोधनिबन्ध)	३२	८	१९८१	१-३४
जैन व्याख्या और विचार	११	१२	१९६०	२१-२४
जैन समाज व्यवस्था	१७	७	१९६६	३२-३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
भगवान् महावीर का ईश्वरवाद	२६	१०	१९७५	९-१२
भगवान् महावीर का समन्वयवाद	१०	७-८	१९५९	४६-५०
भारतीय दर्शनों में आत्मा	१०	४	१९५९	१९-२६
महाभारत का आचार दर्शन	१४	१	१९६२	२७-३६
मल्लिषेण और उनकी स्याद्वादमञ्जरी	२६	६	१९७५	३-६
विवाह-भारतीयेतर परम्परायें -क्रमशः	१६	८	१९६५	२४-३२
,,	१६	९	१९६५	१९-२८
सर्वोदय और हृदयपरिवर्तन	१०	५	१९५९	३२-३४
बसन्तकुमार चट्टोपाध्याय				
श्रमण संस्कृति के मौलिक उपादान	९	४	१९५८	९-२१
मुनि बसन्तविजय				
भगवान् महावीर की देन	१५	१०	१९६४	३७-४०
बालचन्द सिद्धान्तशास्त्री				
सावयपण्णति : एक तुलनात्मक अध्ययन -क्रमशः	२१	१	१९६९	५-१२
,,	२१	२	१९६९	५-११
,,	२१	३	१९७०	५-१३
,,	२१	४	१९७०	२२-२८
,,	२१	५	१९७०	२४-२९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
,,	२१	६	१९७०	२०-२७
श्रावकप्रज्ञप्ति के रचयिता कौन ?	१६	७	१९६५	३-७
बीना निर्मल				
धर्म और युवा पीढ़ी	३३	१२	१९८२	७-८
बी०सी०जैन				
तीर्थंकर	३२	७	१९८१	८-१०
बुद्धमल्ल जी मुनि				
पुद्‍गल : एक विवेचन	२५	१०	१९७४	१४-१८
बूलचन्द जैन				
विश्व अहिंसा संघ और प्रवृत्तियां	१४	८	१९६३	६-८
बेचरदास दोशी				
अंग ग्रंथों का बाह्य रूप	१६	२	१९६४	१५-२२
अनन्य साथी का वियोग	३२	५	१९८१	५४
अब कहाँ तक	७	१	१९५५	८-१४
अस्पृश्यता और जैन धर्म	६	११	१९५५	३४-३८
आगमों के सम्पादन में कुछ विचार योग्य प्रश्न	४	७-८	१९५३	२५-२९
आचारांग में उल्लेखित 'परमत'	१७	७	१९६६	२१-२४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
आध्यात्मिक खोज	११	११	१९६०	१३-१५
आर्षप्राकृत का व्याकरण	१७	८	१९६६	१९-३६
,,	१७	९	१९६६	१२-१४
,,	१८	३	१९६७	२९-३१
,,	१८	८	१९६७	३-६
क्रांतिकारी महावीर	१२	६-७	१९६१	४१-४४
जीव और जगत्	१२	१	१९६०	१३-१५
जीवन दृष्टि	११	१२	१९६०	१८-२०
जैन त्यागी वर्ग के सामने एक विकट समस्या	१०	११	१९५९	४०-४५
जैन धर्म विषयक भ्रातियां	८	१२	१९५७	१९-२७
जैन संस्कृति और मिथ्यात्व	५	३	१९५४	४०
डॉ० नेमिचन्द्र जी शास्त्री और 'अरिहा' शब्द	२०	३	१९६९	३२-३६
तप क्या है ?	१९	१-२	१९६७	१४-१९
नालन्दा या नागलन्दा	२५	१०	१९७४	११-१३
पुलिस	१८	७	१९६७	७-८
भारतीय वाङ्मय में प्राकृत भाषा का महत्त्व	१९	१०	१९६८	६-१६
महाराष्ट्री प्राकृत	१९	११	१९६८	५-८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
रूढ़िच्छेदक महावीर	३	६	१९५२	३२-३७
रोटी शब्द की चर्चा	१८	९	१९६७	१५-१९
वनस्पति विज्ञान	१२	३	१९६१	१०-११
विश्व विज्ञान	१२	२	१९६०	१६-१९
वैदिक परम्परा का प्रभाव	१२	४	१९६१	९-१४
स्थानांग और समवायांग	१५	९	१९६४	२-६
,,	१५	१०	१९६४	२-८
श्रमण भगवान् महावीर	२३	११	१९७२	३-९
,,	२६	१-२	१९७४	१०-१७
मदनलाल जी महाराज	१४	११-१२	१९६३	६५-६६
बैजनाथ शर्मा				
मानव और शांति	५	११	१९५४	३१-३२
भगतराम जैन				
हरिजन मंदिर प्रवेश	७	६-७	१९५६	५८-६१
भग्न हृदय				
दान की आत्मकथा	९	११-१२	१९५८	३३-३६
भगवानदास केसरी				
भगवान् महावीर की जन्मभूमि	४	२	१९५२	२८-३५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
भगवानदीन जी				
अपने को पहचानिये	३२	१२	१९८१	१-६
"ॐ"	१४	८	१९६३	२६-२९
जवाहर और विनोबा : दो धाराएँ	९	१०	१९५८	२२-२४
पंडित कौन ?	३२	१	१९८१	१-४
ममता	३२	२	१९८१	३-४
समाजोन्नति सोपान के ग्यारह डंडे (क्रमशः)	८	१०	१९५७	१०-१५
,,	८	११	१९५७	३५-४०
होली	१४	५	१९६३	१८-१९
भगवानलाल मांकड़				
जीवन रहस्य	५	६	१९५४	३१-३४
भरतसिंह उपाध्याय				
निगण्ठनातपुत्त	११	१०	१९६०	२१-२३
मानवता के दो अखंड प्रहरी	११	७-८	१९६०	१४-२०
भ्रमर कुमार				
पक्ष से ऊपर उठकर सोचें	१०	३	१९५९	२७-३०
महामानव महावीर	१२	६-७	१९६१	५०-५१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
भ्रमर जी सोनी				
उपजीवी समाज	११	११	१९६०	३३-३५
भँवरमल सिंघी				
जैन एकता	१०	११	१९५९	३५-३७
मैं मुक्ति चाहता हूँ	७	२	१९५५	१३
सार्वजनिक जीवन की शव परीक्षा	९	१०	१९५८	९-१२
भँवरलाल नाहटा				
आनन्दघन जी खरतरगच्छ में दीक्षित थे	४०	४	१९८९	२-१२
ओसवाल और पार्श्वापत्य सम्बन्धों पर टिप्पणी	४०	१०	१९८९	८-१३
कल्पप्रदीप में उल्लिखित 'खेड़ा' गुजरात का नहीं राजस्थान का है	४०	११	१९८९	२५-२८
कवि छल्ल कृत अरडकमल का चार भाषाओं में वर्णन	४३	७-९	१९९२	५३-५८
चण्डकौशिक उपसर्ग स्थान योगीपहाड़ी	२२	१२	१९७१	५-८
थुल्लवंश की एक अपूर्ण प्रशस्ति	१८	१-२	१९६६	२१-२५
पश्चाताप	३९	८	१९८८	२३-२४
पश्चाताप : एक विवेचन	३९	११	१९८८	२२-२४
मंगल कलश कथा	१९	७	१९६८	२६-३४
महोपाध्याय समयसुन्दररचित कथा-कोश	२८	१	१९७६	२४-२७
राजस्थानी एवं हिन्दी जैन साहित्य	३९	६-७	१९८८	२-४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
संप्रतिकालीन आहाड़ के मंदिर का जीर्णोद्धार-स्तवन	२९	४	१९७८	२३-३०
सूडा सहेली की प्रेमकथा	४२	७-१२	१९९१	२५-३४
भाई लाल जैन				
अलबर्ट स्वीट्ज़र	८	९	१९५७	८-११
भागचन्द जैन				
जीवन संग्राम	९	३	१९५८	२६-२७
बौद्ध एवं जैन अहिंसा का तुलनात्मक अध्ययन	३२	९	१९८१	१-१६
भगवान् महावीर के समसामयिक आचार्य	१४	९	१९६३	९-१६
महाकवि हस्तिमल्ल	११	७-८	१९६३	४७-४९
विदेशों में जैन साहित्य : अध्ययन और अनुसंधान	३३	६	१९८२	१६-२८
श्रमण संस्कृति में अहिंसा के प्राचीन संदर्भ	२१	७	१९७०	३-९
,,	२१	८	१९७०	१०-१७
श्रमण-साहित्य में वर्णित विविध सम्प्रदाय	२६	८	१९७५	३-१३
भारती कुमारी				
प्रद्युम्नचरित में प्रयुक्त छन्द- एक अध्ययन	४८	७-९	१९९७	६८-८०
भिखारीराम यादव				
जैन तर्क शास्त्र के सप्तभंगी नय की आगमिक व्याख्या	३९	१०	१९८८	१-२६
जैन दर्शन में अनेकान्तवाद का स्वरूप	३२	१०	१९८१	१-९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
स्याद्वाद: एक भाषायी पद्धति	३३	३	१९८२	३३-३८
ज्ञान-प्रमाण्य और जैन दर्शन	३३	६	१९८२	३४-३६
भुजबलि शास्त्री				
भारत का सर्व प्राचीन संवत्	३१	१	१९७९	३५
भूपराज जैन				
महावीर और क्षमा	४	५	१९५३	३०-३४
भूपसिंह राजपूत				
ज्योतिशास्त्र और सन्मति वर्धमान महावीर	२९	१२	१९७८	३-११
भूरचन्द जैन				
उपरीयाली का विख्यात् जैनतीर्थ	३२	८	१९८१	२६-२८
ऐतिहासिक जैन तीर्थ नांदिया	२८	४	१९७७	२७-२९
कुम्भारिया जैनतीर्थ	२८	१०	१९७७	२५-२८
चित्तौड़ का जैन कीर्तिस्तम्भ	२९	१	१९७७	३४-३५
जैन तीर्थ राता महावीर जी	२७	८	१९७६	२६-२८
जैनतीर्थ शंखेश्वर पार्श्वनाथ	२९	९	१९७८	२५-२९
जैन रक्षापर्व: वात्सल्य पूर्णिमा	२९	१०	१९७८	१९-२२
धार्मिक एवं पर्यटन स्थल : गिरनार	३०	५	१९७९	२६-२९
पालनपुर का प्राचीन प्रहलविया जैन मन्दिर	२९	१२	१९७८	२४-२७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
प्राचीन ऐतिहासिक नगरी : जूना (बाड़मेर)	२५	११	१९७४	१७-२१
प्राचीन जैन तीर्थ ओसियाँ	२९	२	१९७७	३०-३२
प्राचीन जैन तीर्थ : करेड़ा पार्श्वनाथ	२८	६	१९७७	२६-२९
,,	३०	१०	१९७९	३०-३४
प्राचीन जैनतीर्थ श्री गांगाणी	२८	८	१९७७	२१-२३
पुरातत्त्वविद् स्व० श्री अगरचन्द जी नाहटा	३८	३	१९८७	२०-२३
बैंगलोर का आदिनाथ जैन मन्दिर	३४	९	१९८३	२२-२३
भगवान् श्री अजितनाथ	३३	४	१९८२	१७-२०
भगवान् महावीर की साधना एवं देशना	२९	७	१९७८	२१-२७
भांडवा जैन तीर्थ	२८	९	१९७७	२९-३२
मरुधरा का ऐतिहासिक जैनतीर्थ : नाकोड़ा	२६	५	१९७५	१०-१५
मालपुरा की विख्यात जैन दादावाड़ी	२९	५	१९७८	२२-२३
मेड़ता-फलौदी पार्श्वनाथ तीर्थ	२६	९	१९७५	२९-३३
मांडाली का गुरुमन्दिर	३०	२	१९७८	३२-३६
राणकपुर के जैन मन्दिर	२७	७	१९७६	१३-१५
लोद्रवा का कलात्मक कल्पवृक्ष	३३	३	१९८२	१०-१३
लोद्रवा-जैसलमेर तीर्थ पर श्री घण्टाकर्ण महावीर मन्दिर	३२	९	१९८१	२०-२६
वर्धमान जैन आगम-मन्दिर	२८	१	१९७६	२१-२३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
विख्यात जैन तीर्थ : प्रभासपाटन	२७	३	१९७६	२३-२६
शिल्पकला एवं प्राकृतिक वैभव का प्रतीक : जैसलमेर का अमरसागर	२६	११	१९७५	२४-२७
सिरोही के प्राचीन जैन मन्दिर	२६	७	१९७५	९-१२
सौराष्ट्र का प्राचीन जैनतीर्थ तालध्वज गिरि	२७	१०	१९७६	२४-२८
हुबली का अचलगच्छ जैन देरासर	३६	५	१९८५	२६-२८
हुबली का श्री शान्तिनाथ मंदिर	३४	३	१९८३	४३-४५
मदनलाल जैन				
अहिंसा	६	६-७	१९५५	५५-५६
भगवान् महावीर	७	६-७	१९५६	५५-५६
मुनि मणिप्रभ सागर				
प्रेम की सरिता प्रवाहित करने वाला पर्व	३५	११	१९८४	४-६
मधुकर मुनि				
पर्युषण	३१	११	१९८१	२-६
वंदन हो अगणित	१४	११-१२	१९६३	७७-७९
मधुप कुमार				
दुविधा	११	१०	१९६०	३०-३१
मनुभाई पंचोली				
कला का कौल	५	४	१९५४	१-३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
मनोहरलाल दलाल				
पुराणों में ऋषभदेव	२५	९	१९७४	११-१४
भारत का प्राचीन जैन केन्द्र : कसरावद	२४	१०	१९७३	२८-३१
मनोहर प्रभाकर				
बोलने की कला सीखिए	१०	४	१९५९	३०-३३
मन्नूलाल जैन				
जैन मुनि क्या कुछ कर सकता है ?	३३	९	१९८२	१५-१८
मनोहर मुनि जी				
अन्तर्दृष्टा महावीर	१२	६-७	१९६१	३८-४०
ऋषिभाषित का अन्तस्थल	११	३	१९६०	७-८
ऋषिभाषित का परीक्षण	१५	४	१९६४	२६-३०
जमाली का मतभेद	९	६-७	१९५८	६६-६८
जीवन में अनेकान्त	१०	१२	१९५९	२६-२८
जैन दर्शन का शब्द विज्ञान	१२	८	१९६१	२८-३१
पंच सूत्री कार्यक्रम	११	५	१९६०	७-८
विज्ञान राजनीति के चंगुल में	१२	१२	१९६१	२१-२२
श्रमण संस्कृति की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि	८	७-८	१९५७	३५-३८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
ममता गुप्ता				
जैन दर्शन और अरविन्द दर्शन में एकत्व और अनेकत्व सम्बन्धी विचार	३५	७	१९८४	१६-२०
मशरूवाला				
आत्मा का बल	५	३	१९५४	१-२
युवाचार्य महाप्रज्ञ				
अंहिसा कीं समस्याएँ	३४	९	१९८३	२-४
जैन साहित्य में चैतन्य केन्द्रों का निरूपण	३८	४	१९८७	२-५
प्रतिक्रिया है दुःख	३३	९	१९८२	२-६
मन की शक्ति बनाम सामायिक	३४	२	१९८२	१८-२२
शुद्ध-अशुद्ध भावधारा	३८	३	१९८४	२-६
शुद्धि चिकित्सा और सिद्धि का महान् पर्व संवत्सरी	३५	११	१९८४	२-३
स्वभाव-परिवर्तन	३६	७	१९८५	१२-१८
महावीर चंद धारीवाल				
सर्वोदय और जैनदृष्टिकोण	१५	९	१९६४	३३-३६
महावीरप्रसाद गैरोला				
मनुष्य की परिभाषा	३१	१२	१९८१	१४-१६
महावीरप्रसाद 'प्रेमी'				
वैशाली और भगवान् महावीर का दिव्य सदेश	५	४	१९५४	१४-२३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
सन्मति महावीर और 'सर्वोदय'	६	६-७	१९५५	५१-५३
महेन्द्रकुमार जी				
चक्षुष्मान् पं० सुखलाल जी	३२	५	१९८२	१४-१५
महेन्द्रकुमार जैन				
विश्व कैलेण्डर	६	४	१९५५	३३-३७
श्रमण : एक व्याख्या	१३	२	१९६१	११-१३
महेन्द्रकुमार 'न्यायाचार्य'				
जैन अनुसंधान का दृष्टिकोण	४	७-८	१९५३	१५-१६
जैन इतिहास की एक झलक	७	४	१९५६	३-८
जैन मन्दिर और हरिजन	२	१२	१९५१	२५-३०
जैन संस्कृति	५	१२	१९५४	३-१३
दीपावली की जैन परम्परा	६	१	१९५४	९-११
महावीर के उपदेश	९	११-१२	१९५८	२५-२७
मंगलमय महावीर	३	६	१९५२	२३-२४
शास्त्र की मर्यादा	३	३	१९५२	२५-२९
सफेद धोती	२	१०	१९५१	२१-२४
संस्कृति का आधार व्यक्ति-स्वातंत्र्य	१	९	१९५०	३३-३६
हिन्दू-बनाम-जैन	६	४	१९५५	३८-४०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
महेन्द्रकुमार फुसकुले				
एक महान् विरासत की सहमति में उठा हाथ	३६	८	१९८५	११-१४
धर्म परिवर्तन-श्रमण धर्मों की भूमिका और निदान	३३	७	१९८२	५-११
महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज'				
अष्टपाहुड़ की प्राचीन टीकाएँ	४३	१०-१२	१९९२	४५-४८
महेन्द्रकुमार जैन 'मस्त'				
जैनों में साध्वी प्रतिमा की प्रतिष्ठा-पूजा व वन्दन	४८	७-९	१९९७	८२-८५
महेन्द्रकुमार शास्त्री				
तीर्थंकर और उनकी शिक्षायें	१५	५-६	१९६४	७-१०
भगवान् महावीर का निर्वाण	१४	१	१९६२	९-१३
मुनि महेन्द्रकुमार				
नागदत्त	३६	१	१९८४	२-७
पाप का घट	३६	३	१९८५	११-१३
भाग्यवान अन्धा पुरुष	३५	१	१९८३	१४-१६
आनन्द	३४	७	१९८२	१२-१७
मुनिश्री महेन्द्रकुमार 'प्रथम'				
श्रावक गंगदत्त	३६	९	१९८५	१४-१५
दृढ़ प्रतिज्ञ केशव	३६	८	१९८५	१५-२१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	**वर्ष**	**अंक**	**ई० सन्**	**पृष्ठ**
सुबुद्धि और दुर्बुद्धि	३६	४	१९८५	९-१३
पावा कहाँ ? गंगा के उत्तर या दक्षिण में	२१	११	१९७०	२३-२४
अपना और पराया	३५	८	१९८४	१०-१४
क्षमा की शक्ति	३४	११	१९८३	३३-३८
बन्दर का रोना	३६	२	१९८४	८-१०
वसुराजा	३५	४	१९८३	९
समताशील भगवान् महावीर	३०	९	१९७४	२७-३०
ब्रह्मदत्त	३४	३	१९८९	४०-४२
नन्दीसेन	३४	४	१९८३	१२-१६
अभी तो सबेरा ही है ?	३४	६	१९८३	१०-३०
मुनिश्री महेन्द्रकुमार जी 'द्वितीय'				
डॉ० जैकोबी और वासी चन्दन कल्प-क्रमशः	१७	५	१९६६	२७-३४
,,	१७	६	१९६६	२३-२८
,,	१७	७	१९६६	१४-२०
,,	१७	८	१९६६	१३-१८
वास्तविकतावाद और जैन दर्शन	१९	१२	१९६७	५-१७
महेशदान सिंह चौहान				
दिवाभोजन ही क्यों ?	६	१०	१९५५	३३-३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
महेन्द्रनाथ सिंह				
उत्तराध्ययन में मोक्ष की अवधारणा	४०	७	१९८९	३५-३८
धम्मपद और उत्तराध्ययन का एक तुलनात्मक अध्ययन	३७	८-९	१९८६	१-९
धम्मपद और उत्तराध्ययनसूत्र का निरोधवादी दृष्टिकोण	३९	१२	१९८८	२८-२९
महेशशरण सक्सेना				
महात्मा कन्फ्यूशियस	६	४	१९५५	१४-१७
महेन्द्र राजा				
अध्ययन : एक सुझाव	८	१	१९५६	१२-१४
अपने व्यक्तित्व की परख कीजिये	६	२	१९५४	२७-२९
आधुनिक पुस्तकालय	६	१०	१९५५	३७-४०
आधुनिक पुस्तकालयों में पुस्तकसूची	७	२	१९५५	३७-३८
,,	७	४	१९५६	२७-२९
,,	७	९	१९५६	२५-२६
जैन लोककथा साहित्य : एक अध्ययन	४	११	१९५३	१३-२८
पुस्तक की व्यवस्था	६	१२	१९५५	३८-४०
भगवान् महावीर	१३	६	१९६२	४७-५३
मारिआ मॉन्तेसरि	८	३-४	१९५७	१८-२१
बालक की व्यवस्था प्रियता	८	३-४	१९५७	४९-५३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
वहाबी विद्रोह	८	७-८	१९५७	३१-३४
संसार का इतिहास-तीन शब्दों में	३	९	१९५२	२२-२४
महेन्द्रसागर प्रचंडिया				
प्राणी मात्र के विकास का आधार जैन धर्म	३२	२	१९८१	१६-१८
मनुष्य प्रकृति से शाकाहारी	३२	६	१९८१	३२-३४
दर्शन और ज्ञान जब चारित्र में आया	३६	७	१९८५	१८-१९
माँ (अरविन्दाश्रम)				
विचार शक्ति	१२	८	१९६१	१२-१४
पैसों का मूल्य	११	१२	१९६०	१०-११
त्याग का मनोविज्ञान	१६	३	१९६५	२९-३३
माईदयाल जैन				
आत्म शुद्धि और साधना का पर्व	१०	१२	१९५९	२०-२१
जैन साधु और हरिजन	३	१२	१९५२	१४-१६
जैन साधुओं का संस्थारूपी परिग्रह	१२	८	१९६१	९-१०
नई राहें	१३	६	१९६२	४३-४५
प्रकाश पुंज महावीर	१०	६	१९५९	९-१०
पंजाबी में जैन साहित्य की आवश्यकता	१२	५	१९६१	२२-२३
मूक साहित्य-सेवी श्री पन्नालाल जी	४	९	१९५३	७-११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
राष्ट्र निर्माण और जैन	११	६	१९६०	४९-५६
समाज सेवी स्व० नन्हेमल जी जैन	१४	४	१९६३	३५-३६
मांगीलाल भूतोड़िया				
ओसवाल और पार्श्वापत्य सम्बन्ध	४०	८	१९८९	२४-२५
महाकवि माघ ओसवाल थे ?	४०	५	१९८९	१०-१४
मानक चन्द				
सुख की मूर्ति : दु:ख की परछाई	१२	९	१९६१	१३-१४
मानकचंद पींचा "भारती"				
आज का युवक धर्म से विमुख क्यों ?	३४	१	१९८२	२६-२८
मायारानी आर्य				
आष्टा की परमारकालीन अप्रकाशित जैन प्रतिमाएँ	२९	११	१९७८	२३-२४
मारुतिनंदन तिवारी				
उत्तर भारतीय शिल्प में महावीर	२१	१२	१९७०	१८-२३
उड़ीसा में जैन कला एवं प्रतिमा-विज्ञान की राजनैतिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि	२५	१-२	१९७३	१४-२१
जालौर में महावीर मन्दिर की शिल्प सामग्री का मूर्ति वैज्ञानिक अध्ययन	२७	२	१९७५	९-१७
जैन यक्ष गोमुख का प्रतिमा निरूपण	२७	९	१९७६	२९-३६
जैन साहित्य और शिल्प में रामकथा	२८	४	१९७७	१९-२१
जैन साहित्य और शिल्प में वाग्देवी सरस्वती	२८	२	१९७६	३०-३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	**वर्ष**	**अंक**	**ई० सन्**	**पृष्ठ**
दक्षिण भारतीय शिल्प में महावीर	२२	१	१९७०	१२-१७
मूर्त अंकनों में तीर्थंकर महावीर के जीवन-दृश्य	२७	६	१९७६	२१-२५
शिल्प में गोम्मटेश्वर बाहुबलि	३२	३	१९८२	१०-२०
मिश्रीलाल जैन				
उत्तराध्ययनसूत्र	३५	५	१९८४	२-२६
समणसुत्तं	३५	५	१९८४	२७-४१
समयसार	३५	५	१९८४	४२-५९
मीना भारती				
अपभ्रंश का विकास कार्य तथा जैन साहित्यकारों की देन	२३	८	१९७२	२९-३४
मीनाक्षी शर्मा				
आचार्य सोमदेव का व्यक्तित्व तथा कर्तृत्व	३७	४	१९८६	३-८
मुन्नी जैन				
अणगार वन्दना बत्तीसी	४८	१-३	१९९७	६०-७०
पंचेन्द्रिय संवाद : एक आध्यात्मिक रूपक काव्य	४८	७-९	१९९७	५१-६७
मृगावती श्रीजी एवं साध्वी श्री सुव्रता श्री जी				
सदा जाग्रत नरवीर	३२	५	१९८२	३६
मृगेन्द्रमुनिजी 'वैनतेय''				
अपरिग्रहवाद का यह उपहास क्यों ?	१०	१२	१९५९	८-१०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
मोहिनी शर्मा				
बंधन से अलंकार	४	४	१९५३	३-५
भारतीय त्यौहार	३	१२	१९५२	१४
मोतीलाल सुराना				
रिश्ता भावना का	३७	१[illegible]	१९८६	१६-१७
मोहनलाल दलाल				
दर्शाण में जैनधर्म	२४	१[illegible]	१९७३	२०-२४
मोहनलाल मेहता				
अकलंकदेव की दार्शनिक कृतियाँ	२८	३	१९७७	३१-३४
अन्तरायकर्म का कार्य	२३	७	१९७२	३-५
आकाश	२०	६	१९६९	५-७
आगम साहित्य में कर्मवाद	२२	७	१९७१	४-१२
आगमिक प्रकरण	२९	२	१९७७	३-१३
आगमिक व्याख्याएँ	३०	१२	१९७९	३-१७
उच्चगोत्र और नीचगोत्र	२२	१२	१९७१	३-४
उपासक प्रतिमायें	१७	१-२	१९६५	८९-९२
कर्म का स्वरूप	२२	३	१९७१	३-११
कर्म की मर्यादा	२३	२	१९७१	३-५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
कर्मप्राभृत अथवा षट्खण्डागम : एक परिचय	१६	१	१९६४	२०-२७
,,	१६	२	१९६४	२९-३२
,,	१६	३	१९६५	२३-२८
,,	१६	४	१९६५	३२-३७
,,	१६	५	१९६५	१९-२२
,,	१६	६	१९६५	२३-२९
कर्मवाद व अन्यवाद	२२	५	१९७१	११-२०
,,	१६	१०	१९६५	१६-२१
,,	१६	११	१९६५	२२-२६
कषायप्राभृत की व्याख्यायें	१८	५	१९६७	१५-२२
काल	२०	७	१९६९	७-९
क्या महावीर सामाजिक पुरुष थे ?	११	६	१९६०	१५-१६
क्या व्याख्याप्रज्ञप्ति का १५वां शतक प्रक्षिप्त है ?	२१	९	१९७०	१२-१९
गणधरवाद	१०	२	१९५८	३-६
गुणव्रत	१७	९	१९६६	२२-२७
चूर्णियां और चूर्णिकार	६	१०	१९५५	१०-१४
जैन आगमों में निर्युक्तियाँ	७	५	१९५६	९-१२
जैनकला एवं स्थापत्य	३०	३	१९७९	३-९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैनागम पदानुक्रम	२६	३	१९७५	२६-३३
,,	२६	४	१९७५	२६-३०
,,	२६	५	१९७५	२८-३१
,,	२६	६	१९७५	२१-२५
,,	२६	७	१९७५	२२-२६
,,	२६	८	१९७५	३०-३२
,,	२७	१	१९७५	२९-३१
,,	२७	२	१९७५	२४-२७
,,	२७	३	१९७६	२७-३०
,,	२७	४	१९७६	३१-३३
,,	२७	५	१९७६	३१-३४
,,	२७	६	१९७६	२९-३१
,,	२७	७	१९७६	२७-३०
,,	२७	८	१९७६	२९-३०
,,	२७	९	१९७६	३७-३८
,,	२७	१०	१९७६	२९-३१
,,	२७	११	१९७६	३०-३२
,,	२७	१२	१९७६	३३-३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैनागमों में ज्ञानवाद	६	२	१९५४	५-९
जैन दृष्टि से चारित्र विकास	१५	११	१९६४	१७-२३
,,	१५	१२	१९६४	१३-१८
जैनधर्म की प्राचीनता तथा इतिहास	३०	२	१९७८	३-१६
जैनधर्म दर्शन का स्रोत-साहित्य	३०	५	१९७९	३-१४
जैन परम्परा	३	११	१९५२	१३-१७
जैन श्रावकाचार	३०	६	१९७९	१६-२२
,,	३०	७	१९७९	१६-२३
,,	३०	८	१९७९	२१-३२
जैन सिद्धान्त	२९	८	१९७८	३-१३
दो प्रेमियों की यह दीक्षा	२	७	१९५१	२७-२९
धर्म की उत्पत्ति और उसका अर्थ	३	४	१९५२	९-१४
धर्म और अधर्म	२०	५	१९६९	५-७
निर्युक्तियाँ और निर्युक्तिकार	५	११	१९५४	९-१५
निह्नववाद	७	३	१९५६	५-१२
परमाणु	२०	११	१९६९	५-७
पुण्य और पाप	२२	१०	१९७१	३-७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
पुद्गल	२०	९	१९६९	२०-२२
भारतीय विचार प्रवाह की दो धाराएँ	११	५	१९६०	१३-१९
भाष्य और भाष्यकार	६	४	१९५५	४-१२
महावीर का तप : कर्म	१५	५-६	१९६४	३७-४१
महावीर क्षत्रिय पुत्र थे या ब्राह्मणपुत्र ?	२६	१-२	१९७४	३४-३८
मृत्युञ्जय	१	७	१९५०	१४-१८
माणिक्यनन्दीविरचित परीक्षामुख	२८	५	१९७७	२३-२४
रूपी और अरूपी	२०	४	१९६९	५-७
शतावधानी रत्नचन्द्र पुस्तकालय	२	१२	१९५१	३१-३६
शास्त्रों की प्रामाणिकता	२१	५	१९७०	३८-४०
शिवशर्मसूरिकृत कर्म प्रकृति	१५	९	१९६४	७-१५
श्रमण धर्म	२५	७	१९७४	३३-३८
श्रमण संघ	२८	११	१९७७	१८-२९
संन्यास का आधार अन्तर्मुखी प्रवृत्ति	२	३	१९५१	२३-२६
समता और समन्वय की भावना	१०	६	१९५९	३९-४४
सम्यकत्त्व की कसौटी	१	३	१९५०	२८-२९
सर्वज्ञता : एक चिन्तन	२१	७	१९७०	३४-३८
स्वप्न : एक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण	४	२	१९५२	११-१५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
सौन्दर्य का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण	२	२	१९५०	२५-२८
हिंसा-अहिंसा का जैनदर्शन	३१	४	१९८१	१२-१४
हेमचन्द्राचार्य की साहित्य साधना	२८	७	१९७७	२७-३१
मोहन रत्नेश				
तर्क प्रधान संस्कृत वाङ्मय के आदि प्रेरक : सिद्धसेन दिवाकर	२९	१	१९७७	१५-२६
महाकवि जिनहर्ष और उनकी कविता	२९	५	१९७८	२४-२६
मुकुलराज मेहता				
जैनधर्म : निर्जरा एवं तप	३८	११	१९८७	४-८
मुनिलाल जैन				
महातपस्वी श्री निहालचन्द जी	१२	१०	१९६१	३३-३८
बैलून में - मैक्स एडालोर	६	४	१९५५	२१-२८
एम० के० भारिल्ल				
यह अगस्त का महीना	७	१०	१९५६	७-९
मंगलदेव शास्त्री				
जैन दर्शन की देन	७	४	१९५६	१३-१४
भगवान् महावीर : एक श्रद्धांजलि	७	६	१९५६	३-८
भगवान् महावीर की महामानवता	१४	६-७	१९६३	९-११
भारतीय संस्कृति	६	३	१९५५	१८-३१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
भारतीय संस्कृति का दृष्टिकोण	६	९	१९५५	३-१६
मंगल प्रकाश मेहता				
भगवान् महावीर : जीवन सम्बन्धी प्रमुख घटनाएँ	३६	७	१९८५	१२-१५
शान्तरस : जैन काव्यों का प्रमुख रस	३६	२	१९८४	१-३
मंगला सांड				
पातंजल तथा जैन योग : स्वरूप एवं प्रकार	३०	७	१९७९	३-१५
मंजुला भट्टाचार्या				
जैन दार्शनिक साहित्य में ईश्वरवाद की समालोचना	४३	१०-१२	१९९२	६७-६९
मंजुला मेहता				
जैनधर्म की प्राचीनता और विशेषता	२४	५	१९७३	८-१५
धर्म एक आधार : स्वस्थ समाज रचना	१७	१२	१९६६	२८-३०
क्या भगवान् महावीर के विचारों से विश्वशांति संभव है ?	३१	१०	१९८१	१७-२२
भगवान् महावीर का तत्त्वज्ञान	२६	१-२	१९७४	६३-६७
महावीर सम्बन्धी साहित्य	२५	४	१९७४	२७-३२
त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित में गणधरवाद	२८	६	१९७७	११-१६
त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित में महावीर चरित	२७	७	१९७६	१६-२२
त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित में रसोद्भावना	२८	३	१९७७	१५-२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
मंजूसिंह				
सूत्रकृतांग में प्रस्तुत तज्जीव तच्छरीरवाद	३५	८	१९८४	१५-२३
यदुनाथप्रसाद दुबे				
बसन्तविलासकार बालचन्द्रसूरि : व्यक्तित्व एवं कृतित्व	४२	४-६	१९९१	२१-३२
यमुनादेवी पाठक				
पारिवारिक जीवन सुखी कैसे हो ?	१	७	१९५०	२९-३३
यशपाल जैन				
गुणों के आगार	३२	५	१९८१	४१-४३
यशोविजय उपाध्याय				
सच्चा जैन	७	२	१९५५	२५-२६
यू० ए० आसरानी				
जैन मिस्टीसिज्म	२४	६	१९७३	२७-३८
,,	२४	७	१९७३	३२-४१
योगेश कुमार मुनि				
अध्यात्म आवास-पर्युषण	३५	११	१९८४	७-१६
अन्त: प्रज्ञा-शक्ति	३६	५	१९८५	२-४
आचारांग में सोऽहम की अवधारणा का अर्थ	३५	७	१९८४	१-१०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
आत्म परिमाण (विस्तार क्षेत्र) जैन दर्शन के सन्दर्भ में	३५	१२	१९८४	२८-३६
नारी उत्क्रान्ति के मसीहा भगवान् महावीर	३५	६	१९८४	२४-२६
मानव जाति के अभ्युदय का पर्व 'दीपावली'	३५	१२	१९८४	११-१४
युवाचित धर्म से विमुख क्यों ?	३८	७	१९८७	२०-२२
मुनिश्री रंगविजय जी				
सदाचार ही जीवन है	१	१२	१९५०	३५-३७
रंजन सूरिदेव				
आचार्य दिवाकर का प्रमाण : एक अनुशीलन	१७	१-२	१९६५	३-६
आचार्य वादिराजसूरि	१९	८	१९६८	१२-२५
ईश्वर और आत्मा : जैन दृष्टि	३१	६	१९८१	१०-१४
उत्तराध्ययन का अनेकान्तिक पक्ष	२८	१२	१९७७	३-१०
कवि रत्नाकर और रत्नाकरशतक	१९	१०	१९६८	१७-२४
जनजागरण और जैन महिलायें	१२	४	१९६१	२७-३१
जिनसेन का पार्श्वाभ्युदय : मेघदूत का मखौल	१८	११	१९६७	२८-३२
जैन दृष्टि में चारित्र	३४	४	१९८३	१७-२१
जैन दृष्टि में नारी की अवधारणा	४३	७-९	१९९२	२५-२८
जैनधर्म और विहार	२०	९	१९६९	५-१९
जैनधर्म : एक निर्वचन	७	१	१९५५	३१-३३

Jain Education International 	For Private & Personal Use Only 	www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैनधर्म : वैदिक धर्म के संदर्भ में	२३	८	१९७२	८-१२
जैन वाङ्मय में आयुर्वेद	२०	१	१९६८	१४-२२
जैन शिक्षा-उद्देश्य एवं पद्धतियाँ	१९	५	१९६८	१९-२३
णायकुमारचरिउ की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि	२३	१	१९७१	१४-१८
दीपावली : एक साधना पर्व	८	१	१९५६	३३-३५
पारसनाथ	६	५	१९५५	३-५
पार्श्वाभ्युदयकाव्य : विचार-वितर्क	१९	१-२	१९६७	३९-४२
प्रमेय : एक अनुचिन्तन	२३	३	१९७२	११-१४
प्राकृत और उसका विकास स्रोत	२२	६	१९७१	३-९
प्राकृत की बृहत्कथा "वसुदेवहिण्डी" में वर्णित कृष्ण	४५	७-९	१९९४	२३-३०
प्राकृत के प्रबन्ध काव्य : संस्कृत-प्रबन्ध काव्यों के सन्दर्भ में	२५	३	१९७४	३-१०
प्राकृत के विकास में बिहार की देन	२१	९	१९७०	४-११
,,	२१	१०	१९७०	२०-३६
प्राकृत 'पउमचरिय' : रामचरित	२२	२	१९७०	१४-१९
भगवान् महावीर जन्मकालीन परिस्थितियाँ	१३	६	१९६२	२२-२६
भारतीय साहित्य : की रमणीय काव्य रचना : गउडवहो	२४	७	१९७३	३-७
महावैयाकरण आचार्य हेमचन्द्र	२२	१०	१९७१	८-१३
महावीर और गाँधी का अहिंसा दर्शन-जनजीवन के संदर्भ में	२०	१२	१९६९	५-१२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
महावीरकालीन वैशाली	३३	१	१९८१	२०-२५
मुनि वारिषेण का सम्यक्त्व	१५	५-६	१९६४	४२-४७
योग का जनतन्त्रीकरण	२९	४	१९७८	३-७
विपाकसूत्र की कथाएँ	९	४	१९५८	२९-३४
,,	१०	२	१९५८	१७-२०
,,	१०	३	१९५९	२०-२६
विपाकसूत्र की कहानियाँ	१०	१	१९५८	१८-२०
वीर हनुमान : स्वयभूं कवि की दृष्टि में	२५	१२	१९७४	९-१५
विश्व का निर्माणतत्त्व : द्रव्य	१८	३	१९६७	३२-३६
वीरसंघ और गणधर	८	६	१९५७	३५-३८
सन्देशरासक में उल्लिखित (वनस्पतियों के नाम) पर्यावरण के तत्त्व	२८	२	१९७६	२७-२९
,,	४६	१०-१२	१९९५	२४-२७
संस्कृत और प्राकृत का समानान्तर अध्ययन	२७	२	१९७५	३-८
हिन्दी जैन कवियों का आत्म-स्वातंत्र्य	१४	५	१९६३	२७-३०
त्रिरत्न : मोक्ष के सोपान	२४	३	१९७३	२२-२६
रघुवीरशरण दिवाकर				
अपरिग्रहवाद -क्रमशः	३	२	१९५१	१८-२०
,,	३	४	१९५२	३४-३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
,,	३	७-८	१९५२	२५-२९
,,	४	२	१९५२	३-८
,,	४	३	१९५३	८-१२
,,	४	४	१९५३	१०-१५
,,	२	७	१९५१	९-१४
,,	२	१०	१९५१	१२-२४
परिग्रह मीमांसा	२	५	१९५१	९-१४
महावीर का संदेश	६	६-७	१९५५	२४-३४
यह धर्म प्राण देश है	२	९	१९५१	२८-३०
शीलव्रत ग्रहण	२	८	१९५१	१२-१३
आचार्य रजनीश				
धर्म और विज्ञान	१७	५	१९६६	१८-२१
रज्जन कुमार /सुनीता कुमारी				
जैनधर्म में मानव	४१	१-३	१९९०	१०
रज्जन कुमार				
जैनधर्म में समाधिमरण की अवधारणा	३९	८	१९८८	३-८
ज्ञानीजनों का मरण : भक्तप्रत्याख्यानमरण	३८	७	१९८७	१४-१९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
मरण के विविध प्रकार	३८	१२	१९८७	२५-३१
वैदिक एवं श्रमण परम्परा में ध्यान	४७	१-३	१९९६	४७-५९
समाधिमरण का स्वरूप	३९	५	१९८८	१२-१७
समाधिमरण की अवधारणा : उत्तराध्ययनसूत्र के परिप्रेक्ष्य में	३८	३	१९८७	१३-१८
सल्लेखना के विभिन्न पर्यायवाची शब्द	४०	१२	१९८९	१६-२०
रतनचन्द जैन				
जैन आचार में इन्द्रियदमन की मनोवैज्ञानिकता	३२	८	१९८१	१-१६
पंचकारण समवाय	४८	१०-१२	१९९७	७३-८०
बन्ध के कार्य में मिथ्यात्व और कषाय की भूमिकाएँ	३४	६	१९८३	२-८
रत्नचन्द जैन शास्त्री				
क्रांतिकारी महावीर	१५	११	१९६४	१३-१६
रत्ना श्रीवास्तव				
कर्म की नैतिकता का आधार-तत्त्वार्थ सूत्र के प्रसंग में	४५	७-९	१९९४	१-९
स्याद्वाद एवं शून्यवाद की समन्वयात्मक दृष्टि	४३	१-३	१९९२	९१-१०२
रतनकुमार जैन				
कानों सुनी सो झूठ सब	३३	२	१९८१	१२-१५
चमत्कार को नमस्कार	३२	७	१९८१	११-१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जीवन का सत्य	३२	११	१९८१	२१-२५
भिगमंगा-मन	३३	४	१९८२	२१-२८
रतनसागर जैन				
हमारा आज का जीवन	१	५	१९५०	२७-३०
रतन पहाड़ी				
एक दु:खद अवसान	१०	९	१९५९	३६-३९
ठोकर	१२	४	१९६१	२०-२२
व्यक्ति और समाज	१	८	१९५०	२०-२४
रत्नलाल जैन				
कर्म की विचित्रता-मनोविज्ञान की भाषा में	४०	४	१९८९	३५-४१
जैन कर्म सिद्धान्त और मनोविज्ञान	४३	७-९	१९९२	६५-७०
जैन-बौद्ध दर्शनों में कर्म की विचित्रता	४०	११	१९८९	२१-२४
भारतीय दर्शनों में अहिंसा	३६	११	१९८५	२३-३१
संस्कार साहित्य में कर्मवाद	३८	९	१९८७	१०-१६
रत्नेश कुसुमाकर				
एलाचार्य मुनिश्री विद्यानन्द जी का सामाजिक दर्शन	३१	२	१९७९	२३-२७
रमाकान्त झा				
श्रीमद्भागवत में ऋषभदेव	१२	६-७	१९६१	१७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
रमेश कुमार जैन				
भगवान् पार्श्वनाथ का निर्वाण पर्व	३८	१०	१९८७	२-५
रमेशचन्द्र गुप्त				
जैन धर्म में अरिहन्त और तीर्थंकर की अवधारणा	३४	४	१९८३	५-९
तीर्थंकर, बुद्ध और अवतार की अवधारणा का तुलनात्मक अध्ययन	३६	१०	१९८५	२७-३७
सर्वोदय	९	६-७	१९५८	१२-१६
रमेशचन्द्र जैन				
आदिपुराण में राजनीति	२७	८	१९७६	३-१३
जैन दर्शन में पुद्गल द्रव्य	२५	४	१९७४	८-१५
जैनधर्म और बौद्धधर्म	२८	१०	१९७७	३-११
जैन न्याय दर्शन : समन्वय का मार्ग	२६	५	१९७५	२३-२७
जैन राजनीति में दूतों और गुप्तचरों का स्वरूप	२७	४	१९७६	१६-२४
द्विसन्धान महाकाव्य में राज्य और राजा का स्वरूप	२५	८	१९७४	३-१२
प्राकृत भाषा और जैन आगम	३८	५	१९८७	१६-२२
प्राकृत साहित्य में श्रीदेवी की लोकपरम्परा	२८	६	१९७७	२१-२५
पद्मचरित और पउमचरिउ	२४	५	१९७३	३-७
पं० जोधराज कासलीवाल और उनका सुखविलास	२५	६	१९७४	१४-१७
पद्मचरित और हरिवंशपुराण	२३	८	१९७२	३-७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
पद्मचरित : एक महाकाव्य	२५	७	१९७४	३-६
पद्मचरित की भाषा और शैली	२३	११	१९७२	१०-१८
पद्मचरित में वस्त्र और आभूषण	२५	९	१९७४	३-१०
पद्मचरित में शकुन विद्या	२५	११	१९७३	२५-२९
पार्श्वाभ्युदय में प्रकृति-चित्रण	२८	३	१९७७	२५-३०
पार्श्वाभ्युदय में शृंगाररस	२८	७	१९७७	९-१५
भट्टारक सकलकीर्ति और उनकी सद्भाषितावली	२५	१-२	१९७३	२९-३४
भारतीय कथा साहित्य में पद्मचरित का स्थान	२४	१०	१९७३	३-११
राजस्थानी के विकास में अपभ्रंश का योगदान	२०	३	१९६९	२३-३१
वर्ण विचार	२४	१	१९७२	७-११
वराङ्गचरित में अठारह श्रेणियों के प्रधान : एक विश्लेषण	२६	७	१९७५	३-८
वराङ्गचरित में राजनीति	२५	११	१९७४	८-१६
श्रावक में षट्कर्म	२६	१२	१९७५	७-१३
सांख्य और जैन दर्शन	२८	९	१९७७	१४-१९
रमेशमुनि शास्त्री				
आगम साहित्य में क्षेत्र प्रमाण प्रणाली	२९	५	१९७८	१८-२१
आचार्य : स्वरूप और दर्शन	२८	१२	१९७७	११-१६
आचेलक्य कल्प-एक चिन्तन	२९	२	१९७७	१८-२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
कुन्दकुन्दाचार्य की साहित्यिक उद्भावनाएँ	२७	१२	१९७६	३०-३२
जैन आगम साहित्य में जनपद	२९	९	१९७८	२०-२२
जैन दर्शन में प्रमाण का स्वरूप	२६	३	१९७५	९-१३
,,	२६	४	१९७५	९-१३
,,	२६	५	१९७५	१६-२२
,,	२६	६	१९७५	७-९
,,	२६	७	१९७५	१५-१८
,,	२६	८	१९७५	२३-२९
जैन दर्शन में पुद्गल स्कन्ध	२८	११	१९७७	१०-१२
जैन दृष्टि से ज्ञान-निरूपण	२९	११	१९७८	२९-३५
जैन दार्शनिक साहित्य में अभाव प्रमाण-एक मीमांसा	३०	४	१९७९	२३-३५
जैन साधना पद्धति में सम्यग्दर्शन	२६	११	१९७५	९-१२
,,	२६	१२	१९७५	३-६
निक्षेपवाद : एक परिदृष्टि	२५	५	१९७४	१०-१५
प्रज्ञामूर्ति				
मन और संज्ञा	२८	९	१९७७	२५-२८
लेश्या : एक विश्लेषण	२७	८	१९७६	१४-१७
व्युत्सर्ग आवश्यक	२८	६	१९७७	१७-२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
शब्दों की अर्थ मीमांसा	२८	४	१९७७	२२-२६
श्रमण-आचार : एक परिचय	२७	६	१९७६	३-७
श्रमण परम्परा : एक विवेचन	३०	१	१९७८	३-१०
श्रमण-धर्म : एक विश्लेषण	२७	३	१९७६	१५-१८
षड्द्रव्य : एक परिचय	२४	१२	१९७३	१३-१५
सेवा : स्वरूप और दर्शन	२८	१	१९७६	३-४
स्याद्वाद एक पर्यवेक्षण	२५	१-२	१९७३	२२-२८
मुनिश्री रामकृष्ण जी				
पर्युषणपर्व पर एक ऐतिहासिक दृष्टिपात	७	११	१९५६	१७-२१
भारत की अहिंसक संस्कृति	७	८	१९५६	२१-२५
,,	७	९	१९५६	२०-२३
रसिक त्रिवेदी				
महाभिनिष्क्रमण	३	५	१९५२	१९-२२
रविशंकर मिश्र				
अहिंसा परमोधर्मः	३३	५	१९८२	१७-१९
जैन कवि विक्रम और उनका नेमिदूतकाव्य	३२	१०	१९८१	९-१४
मेरुतुंग के जैन मेघदूत का एक समीक्षात्मक अध्ययन	३२	५	१९८१	७०-७७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
श्रमण भगवान् महावीर के चारित्रिक अलंकरण	३५	६	१९८४	१-२
,,	३३	६	१९८२	१-२
सच्ची सनाथता	३६	५	१९८५	१०-१२
संस्कृत दूत काव्यों के निर्माण में जैन कवियों का योगदान	३३	६	१९८२	१-१५
रवीन्द्रनाथ मिश्र				
कर्म का स्वरूप	३५	३	१९८४	५-७
जैन कर्म सिद्धान्त का उद्भव एवं विकास	३६	१०	१९८५	१९-२६
जैन कर्म सिद्धान्त का क्रमिक विकास	३६	९	१९८५	१६-२१
राकेश				
यह मनमानी कब तक	३	७-८	१९५२	३१-३३
राजकमल चौधरी				
बढ़ते कदम	११	४	१९६०	७-८
राजकुमार छाजेड़				
स्वाध्याय : एक आत्म चिन्तन	३२	६	१९८१	३५-३६
राजकुमार जैन				
जैन विद्वानों के कुछ हिन्दी वैद्यक ग्रन्थ	२७	११	१९७६	१५-२४
जैनाचार्यों द्वारा आयुर्वेद साहित्य में योगदान	३२	५	१९८१	७८-८६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
महत्तरा श्री जी का महाप्रयाण	३७	११	१९८६	१६-२०
महावीर का धर्म : सर्वोदय तीर्थ	२५	५	१९७४	१६-२०
रामकुमार वर्मा				
भगवान् महावीर का विचार तथा कृतित्त्व समस्त विश्व के लिये अनुपम धरोहर	३१	१	१९७९	३६-३७
राजकुमार जैन 'भारिल्ल'				
अहिंसा	७	१२	१९५६	२४-२९
राजदेव त्रिपाठी				
अद्भुत भिखारी एवं महान् दाता	१३	३	१९६२	२९-३१
राजदेव दुबे				
चारित्र निर्माण में आचार-पद्धति का योगदान	३४	७	१९८३	२६-३२
जैन आचार-पद्धति में अंहिसा	३५	२	१९८३	१३-२०
प्राचीन जैन साहित्य में शिक्षा का स्वरुप	३६	१२	१९८५	१६-२४
वैदिक वाङ्मय और पुरातत्त्व में तीर्थंकर ऋषभदेव	३८	८	१९८७	२-६
राजदेव दुबे एवं प्रमोद कुमार सिंह				
जैन संस्कृति में सत्य की अवधारणा	३५	४	१९८४	१२-१५
राजबली पाण्डेय				
महामानव की मानसिक भूमिका	४	५	१९५३	३-६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
राजमल पवैया				
आचार्य मानतुंगसूरि विरचित भक्तामरकाव्य	३३	७	१९८२	१-४
ज्ञानद्वीप की शिखा	३३	१	१९८१	१९
सफल हुआ सम्यक्त्व पराक्रम	३२	११	१९८१	१
राजलक्ष्मी				
अहिंसक भारत हिंसा की ओर	१०	७-८	१९५८	५१-५५
राजीव प्रचण्डिया				
भारतीय दर्शन में मोक्ष की अवधारणा	४५	१०-१२	१९९४	१-९
राजेन्द्रकुमार श्रीमाल				
एकता ? एकता ? एकता ?	३६	८	१९८५	२२-२६
राजेन्द्रकुमार सिंह				
सत् का स्वरूप: अनेकान्तवाद और व्यवहारवाद की दृष्टि में	४१	७-९	१९९०	१७-२५
राजेन्द्र प्रसाद				
सेवाग्राम कुटीर का संदेश	१	४	१९५०	३६-३८
राधेश्याम श्रीवास्तव				
जैनदर्शन में कर्म का स्वरूप	२४	५	१९७३	३१-३५
रामकृष्ण जैन				
अस्पृश्यता का पाप	८	६	१९५७	५४-५५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
रामकृष्ण पुरोहित				
आचार्य शाकटायन (पाल्यकीर्ति) और पाणिनी	३२-५		१९८१	५२-६१
जैन व्याकरण शास्त्र में शोध की संभावनाएं	३०	४	१९७९	१३-२२
रामकृष्ण शर्मा				
ये मूल्य बदलें	१०	५	१९५९	२५-२८
राजाराम जैन				
क्या यही शिक्षा है ?	४	१	१९५२	३०-३२
ग्वालियर के तोमरवंशीराजा	२०	१	१९६८	६-१३
राजाडूंगर सिंह तोमर	२०	१०	१९६९	३०-३६
सच्ची साधना का प्रभाव	४	५	१९५३	२८-२९
राजेन्द्रप्रसाद कश्यप				
जैन एवं बौद्ध धर्मों के वैदिक सन्दर्भ	३९	५	१९८८	१८-२४
मुनि राजेन्द्रकुमार 'रत्नेश'				
अर्न्तयात्रा	३९	१२	१९८८	१९-२१
धर्म एवं दर्शन-एक गवेषणात्मक विवेचन	३६	१०	१९८५	१६-१८
प्रलय से एकलय की ओर	३९	५	१९८८	२-४
प्लेटो तथा जैनदर्शन	३८	५	१९८७	२४-२७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
संवेदनहीनता से सुलगती सभ्यता	३६	४	१९८५	१४-१९
मुनि रामकृष्ण				
अपरिग्रहवाद	७	१२	१९५६	२१-२२
धर्म कल्याण का मार्ग	९	१	१९५७	१६-१९
ज्ञान भी सम्पदा है	३३	२	१९८१	७-११
दार्शनिक पुरुष	३२	५	१९८२	३४
पर्युषण : आत्मा की उपासना का पर्व	३२	११	१९८१	२६-३०
सबसे बड़ा प्रश्न-मैं कौन हूँ ?	२	११	१९५१	९-१४
रामचन्द्र महेन्द्र				
गाँधी सिद्धान्त	९	११-१२	१९५८	२८-२९
रामदेव राम यादव				
जैनधर्म में आत्मतत्त्व निरूपण	३३	४	१९८२	१-९
जैनधर्म में अहिंसा	३३	२	१९८१	१६-२२
मुनिश्री रामप्रसाद जी				
गुरुदेव की जीवन-रेखाएं	१४	११-१२	१९६३	१७-२८
रामप्रवेश कुमार				
"जैन चम्पूकाव्य"- एक परिचय	४८	१-३	१९९७	७१-७५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
रामप्रवेश शास्त्री				
गांधी जी और अहिंसा	१२	१२	१९६१	९-१३
सत्य और बापू	१२	३	१९६१	१९-२१
स्वार्थी तो हम भी हैं।	११	११	१९६०	२४-२७
रामजी सिंह				
जैनधर्म में तप का स्वरूप और महत्त्व	२५	११	१९७४	२२-२७
जैनधर्म में नीतिधर्म और साधना	२५	५	१९७४	२५-३०
जैन दर्शन में ज्ञान का स्वरूप	२४	३	१९७३	२७-३२
जैन दर्शन में मोक्षोपाय	२४	१०	१९७३	३२-३६
जैन दर्शन में स्याद्वाद और उसका महत्त्व	२३	१०	१९७२	१८-२२
भारतीय मनीषा के उज्ज्वलतम् प्रतीक पं० सुखलाल जी	३२	५	१९८१	४४-४६
रामदास पाण्डेय 'गंभीर'				
जैन दर्शन में मुक्ति की अवधारणा	३१	१०	१९८१	२-१२
नैतिक आचरण विधि : सोरेन क्रिकेगार्ड और जैनदर्शन	३३	५	१९८२	३-१२
प्रातिभज्ञानात्मक चिन्तन : सापेक्ष चिन्तन	३४	२	१९८२	५-१७
सर्वपल्ली राधाकृष्णन्				
कर्त्तव्यबोध	११	११	१९६०	७-८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जीवित धर्म	८	१०	१९५७	३४
रतिलाल दीपचंद देसाई				
दो क्रान्तिकारी जैन विद्वान्	६	५	१९५५	७-१३
श्रीमद्राजचन्द्र का परिचय	१३	१०	१९६२	१३-१८
ज्ञान तपस्वी मुनिश्री पुण्य विजयजी	१८	६	१९६७	३४-३८
रतिलाल म० शाह				
गर्भापहरण-एक समस्या	२३	९	१९७२	२१-२५
गर्भापहरण-सम्बंधी स्पष्टीकरण	२३	१२	१९७२	२४-२७
जैनधर्म में तांत्रिक साधना का प्रवेश	२४	१२	१९७३	२५-३०
तीर्थंकरों की निश्चित संख्या क्यों ?	२८	७	१९७७	२१-२६
दिगम्बर रहना क्या महावीर का आचार था ?	२७	५	१९७६	२६-३०
धर्म को छानने की आवश्यकता	२८	१०	१९७७	२९-३५
भगवान् महावीर की निर्वाण-भूमि : कौन सी पावा	२६	८	१९७५	१४-१८
महावीर विवाहित थे या अविवाहित	२६	६	१९७५	१२-१६
राष्ट्रभाषा के आद्यजनक भगवान् महावीर	२४	४	१९७३	२८-३१
रामदयाल जैन				
जैन और वैष्णव काव्य परम्परा में राम	२३	११	१९७२	१९-२२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	**वर्ष**	**अंक**	**ई० सन्**	**पृष्ठ**
महावीर विवाहित थे या अविवाहित	२६	६	१९७५	१२-१६
राष्ट्रभाषा के आद्यजनक भगवान् महावीर	२४	४	१९७३	२८-३१
रामदयाल जैन				
जैन और वैष्णव काव्य परम्परा में राम	२३	११	१९७२	१९-२२
रामप्रसाद त्रिपाठी				
जैन-बौद्ध सम्मत कर्म सिद्धान्त	२२	१	१९७०	२३-३६
रामस्वरूप जैन				
पंजाब में स्त्री शिक्षा	१	१२	१९५०	३८-४०
रामहंस चतुर्वेदी				
जैनागमों में वर्णित नागपूजा	३७	१०	१९८६	१-७
रिखबचंद लहरी				
जैनधर्म की आचार संहिता	१६	२	१९६४	२६-२८
रीता विश्नोई				
अपभ्रंश के जैनपुराण और पुराणकार	४२	७-१२	१९९१	४५-५६
पाण्डवपुराण में राजनैतिक स्थिति	४२	१-३	१९९१	७५-८६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
रीता सिंह				
जैन साहित्य में कृष्ण-कथा	३९	१०	१९८८	२७-३२
मुनिरूपचंद				
जैन एकता संभव कैसे ?	३४	३	१९८३	२८-३२
जैन समाज द्वारा काव्य सेवा	१७	६	१९६६	२०-२२
रूपलेखा वर्मा				
जब आप घर से अकेली निकलें	७	१०	१९५६	१९-२०
रेणुका चक्रवर्ती				
क्या आप असुंदर हैं ?	६	१	१९५४	३४-३८
लल्लू पाठक				
जैन हरिवंशपुराण-एक सांस्कृतिक अध्ययन	३३	११	१९८२	१५-२२
ललितकिशोर लाल श्रीवास्तव				
ईश्वरत्त्व : जैन और योग-एक तुलनात्मक अध्ययन	४१	१०-१२	१९९०	७१-८४
जैन दर्शन में सर्वज्ञता का स्वरूप	२५	७	१९७४	२३-२८
जैन धर्म-मानवतावादी दृष्टिकोण : एक मूल्यांकन	४०	३	१९८९	३४-४५
मिथ्यात्व इन जैनिज्म एण्ड शंकर ए- कम्परेटिव स्टडी	२४	२	१९७२	३५-४१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
महासती श्री ललितकुमारी जी				
श्रुत और सेवा के प्रतीक : आचार्य श्री	१३	५	१९६२	२७-२९
ललितप्रभ सागर				
जैनधर्म में भक्ति का स्वरूप	३४	९	१९८३	५-७
शांति का अमोघ अस्त्र-क्षमा	३४	११	१९८३	२९-३१
ललिता जैन				
शांतिदूत महावीर	१२	६-७	१९६१	५८
मुनिश्री लक्ष्मीचन्द्र जी				
आचार्य चण्डरुद्र	११	३	१९६०	१८-१९
लक्ष्मीचंद जैन				
अज्ञात प्राचीन जैनतीर्थ : कसरावद	२९	६	१९७८	२५-२७
महर्षि अरविन्द : जैन दर्शन की दृष्टि में	१७	१०	१९६६	२८-३१
समयसार सप्तदशांगी टीका में गणितीय न्याय एवं दर्शन	२९	९	१९७८	६-१०
लक्ष्मीनारायण 'भारतीय'				
अहिंसा की कसौटी का क्षण	१०	६	१९५९	७-८÷४४-४६
जैनधर्म और उनका सामाजिक दृष्टिकोण	१-५	१	१९६३	९-१८
जैनधर्म और नारी	१८	३	१९६७	३-९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैनधर्म भगवान् महावीर की कसौटी पर	१४	६-७	१९६३	६-८
भगवान् महावीर के उपदेश युगानुकूल हैं लेकिन ?	९	६	१९५८	५८-६२
भगवान् महावीर के निर्वाण दिन का क्या संदेश हो सकता है ?	११	१२	१९६०	१३-१७
भगवान् या सामाजिक क्रांतिकारी	११	६	१९६०	२५-२७
पर्युषण : एक चिन्तन	१०	११	१९५९	९-१०
पर्युषण और नई प्रतिमाएँ	१२	११	१९६१	२४-२५
प्रेरणादायी महावीर	१२	६-७	१९६१	२१-२५
समता के संदेशदाता : भगवान् महावीर	१५	७-८	१९६४	२५-२८
समाज शास्त्र की पृष्ठभूमि में जैनों के सम्प्रदाय	१७	३	१९६६	११-१९
श्रमण संस्कृति का हरि	१६	५	१९६५	२-११
क्षमापना दिन	१३	११	१९६२	१-४
लक्ष्मीबाला अग्रवाल				
संगीत समयसार का आलोचनात्मक अध्ययन	४०	१०	१९८९	२०-२९
लालचन्द्र जैन				
क्या जैन दर्शन नास्तिक दर्शन है ?	३०	६	१९७९	३-१५
जैन तर्क शास्त्र में बौद्ध प्रत्यक्ष प्रमाणवाद	२७	३	१९७६	३-८
,,	२७	४	१९७६	१०-१५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
,,	२७	५	१९७६	१५-१९
,,	२७	६	१९७६	१२-२०
जैन तर्क शास्त्र में 'सन्निकर्स प्रमाणवाद	२३	१२	१९७२	८-१५
जैनदर्शन में ब्रह्माद्वैतवाद	३०	९	१९७९	११-२६
पंचास्तिकाय के टीकाकार और टीकाएँ	३०	४	१९७९	३-१२
ब्रह्माद्वैतवाद का समालोचनात्मक परिशीलन	३०	१०	१९७९	३-१३
,,	३१	२	१९७९	९-२२
लालजी राम शुक्ल				
अहिंसा का व्यापक अर्थ	१	२	१९४९	३३-३६
विचारों पर नियन्त्रण के उपाय	१	१०	१९५०	३१-३५
लुइस वैस				
एक महत्त्वपूर्ण भेंट	१४	११-१२	१९६३	९४-९६
वाल्टर शुब्रिंग				
जैन साहित्य का नवीन संस्करण	४	७-८	१९५३	१३-१४
वासुदेवशरण अग्रवाल				
अहिंसा का महान् नियम	४	९	१९५३	१-२
अहिंसा की युग वाणी	६	६-७	१९५५	३-४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
ईमानदारी के वातावरण	७	१२	१९५६	३१-३५
एक दिव्य विभूति मालवीय जी	१३	२	१९६१	९-१०
जैन साहित्य का नवीन अनुशीलन	४	७-८	१९५३	११-१२
जैन साहित्य के इतिहास-निर्माण के सूत्र	५	१	१९५३	११-१६
जैन साहित्य निर्माण की नवीन योजना	३	७-८	१९५२	९-१२
तप के प्रतीक महावीर	३	६	१९५२	८
प्राचीन मथुरा में जैन धर्म का वैभव	४	१०	१९५३	७-११
बत्तीस प्रकार की नाट्यविधि	५	१०	१९५४	३-९
मातृभाषा और उसका गौरव	१३	७-८	१९६२	९-१३
वैशाली और दीर्घप्रज्ञमहावीर	७	१०	१९५६	२६-३५
विश्व मानव महामना मालवीय	१३	३	१९६२	९-१३
'सत्यं स्वर्गस्य सोपानम्'	६	१	१९५४	३-४
सरस्वती का मंदिर	११	१	१९५९	५-९
साध्वी रत्न श्री विचक्षण श्री जी				
प्रज्ञा पुरुष	३२	५	१९८२	३५
विजय कुमार				
अनेकान्तवाद और उसकी व्यवहारिकता	४७	१०-१२	१९९६	१३-३५
जैन आगमों में धर्म-अधर्म (द्रव्य) : एक ऐतिहासिक विवेचन	४८	१०-१२	१९९७	५३-७२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	**वर्ष**	**अंक**	**ई० सन्**	**पृष्ठ**
जैन दर्शन में जीव का स्वरूप	३७	१	१९८६	९-१५
जैन दर्शन में बन्धन-मोक्ष	३७		१९८६	१०-१९
विजय कुमार जैन				
संयुक्त निकाय में जैन सन्दर्भ	३३	१२	१९८२	१६-२३
विजयमुनि शास्त्री				
आलोचक	४	४	१९५३	६-७
इन्द्रभूतिगौतम	८	६	१९५७	४३-४८
उपाध्याय कवि श्री अमर मुनि	१४	१	१९६२	१५-२३
घर न लौटा	९	६-७	१९५८	६३-६५
ज्योतिर्मय जीवन	१३	५	१९६२	१७-२१
जैन संस्कृति और महावीर	१३	६	१९६२	३३-४२
जीवित साहित्य की वाणी	२	९	१९५१	३६-३७
निशीथचूर्णि पर एक दृष्टि	११	६	१९६०	५४-५७
मेघकुमार का आध्यात्मिक जागरण	८	९	१९५७	२५-२७
योग और भोग	९	४	९५८	७-८
वाणी का जादूगर	१४	११-१२	१ ६३	८३-८५
श्री कृष्ण की जीवन झाँकी	९	३	१९५८	६-९
श्री रत्न मुनि : जीवन परिचय	१५	७-८	१९६४	१९-२८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
क्षमापना का आदर्श	८	११	१९५७	१५-१६
भारतीय दर्शनों का समन्वयवादी स्थितप्रज्ञ पुरुष	३२	५	१९८२	१७-२७
मुनि महाप्रभ विजय जी महाराज				
मानव कुछ तो विचार कर	७	२		२३-२४
विजयेन्द्र 'दर्शी'				
मील का पत्थर	१५	९	१९६४	२४-२७
आचार्य विजयेन्द्रसूरि				
महावीर विहार मीमांसा	३८	१	१९८६	१४-१६
विजयराज				
सामुद्रिक विज्ञान	६	५	१९५५	२७-२९
,,	६	८	१९५५	३८-४०
विजया जैन				
महावीर की साधना और सिद्धान्त	१३	२	१९६१	२४-२६
विद्याभिक्षु				
अद्भुत दान	१६	११	१९६५	१५-१६
अपूर्वरक्षा	१७	६	१९६६	१२-१३
विद्यानन्द मुनि				
विद्वत् रत्नमाला का एक अमूल्य रत्न	३२	५	१९८१	५३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
विद्याभिक्षु 'आधुनिक'				
पुनरुत्थान	१६	६	१९६५	३०-३१
विद्यावती जैन				
हिन्दी जैन साहित्य का विस्मृत बुन्देली कवि : देवीदास	४३	१०-१२	१९९२	२९-३९
मुनि विद्याविजय जी				
सेवा का अर्थ	१	३	१९५०	३५-३८
विधुशेखर भट्टाचार्य				
कलकत्ता विश्वविद्यालय में संस्कृत का उच्च शिक्षण	३	५	१९५२	२४-३२
,,	३	६	१९५२	२७-३१
मुनि विनयचन्द जी				
हृदय का माधुर्य-करुणा	१६	११	१९६५	२७-३३
विनयतोष भट्टाचार्य				
जैनमूर्तिकला	४	१०	१९५३	१३-१९
महो० विनयसागर जी				
अविद पद शतार्थी	५	६	१९५४	२६-३०
विनोद कुमार तिवारी				
आज के सन्दर्भ में जैन पंचव्रतों की उपयोगिता	३८	३	१९८७	८-१२
,,	३८	७	१९८७	२-६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन दर्शन की पृष्ठभूमि में ईश्वर का अस्तित्त्व	३६	७	१९८६	९-११
जैन दर्शन के अन्तर्गत जीव तत्त्व का स्वरूप	३३	१२	१९८२	१२-१५
जैन दर्शन में अजीव तत्त्व का स्थान	३४	७	१९८३	१८-२१
जैनधर्म में मोक्ष का स्वरूप	३३	९	१९८२	७-१०
जैन पर्व दीपावली : उत्पत्ति एवं महत्त्व	३७	२	१९८५	२-५
तीर्थंकर पार्श्वनाथ : प्रामाणिकता और ऐतिहासिकता	३८	२	१९८६	२-७
तीर्थंकर महावीर की शिक्षाओं का सामाजिक महत्त्व	३६	१०	१९८५	१२-१४
पार्श्वकालीन जैनधर्म	४०	५	१९८९	३-९
श्री विनोद राय				
चन्द्रावती की जैन प्रतिमाएँ : एक परिचयात्मक सर्वेक्षण	२९	११	१९७८	३६-३८
दुर्बलता का पाप	७	४	१९५६	३०-३४
आचार्य विनोबा भावें				
अध्यात्म साधना कैसी हो	११	११	१९६०	१०-१२
अहिंसा और शस्त्रबल	१	२	१९४९	२४-२६
जैन समाज और सर्वोदय	१०	५	१९५९	३८-३९
प्रेम का अभ्यास	१	३	१९५०	२२-२३
संन्यास की मर्यादा	११	२	१९५९	१३-१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
साहित्य और साहित्यिक	१५	३	१९६४	१५-२७
स्त्री जागृति और समन्वय की साधना	९	९	१९५८	३७-४०
विपिन जारोली				
जैन दिवाकर मुनि श्री चौथमल जी म०	३७	२	१९८५	६-९
विमलचन्द शुक्ल				
शम्बूक आख्यान (जैन तथा जैनेतर सामाग्री का तुलनात्मक अध्ययन)	३२	५	१९८१	४६-५१
विमल जैन				
भगवान् महावीर और नारी जाति	१५	१२	१९६४	३५-३८
विमल जैन 'अंशु'				
स्वामी श्री मदनलाल जी	१४	११-१२	१९६३	५६-५८
विमलदास कोंदिया				
जैनधर्म का वैशिष्ट्य	५	९	१९५४	३-१०
महावीर महान् थे	८	६	१९५७	५०-५२
विमलदास जैन				
जैनत्व या जैन चेतना	२	५	१९५१	२१-२६
तर्क का क्षेत्र	३	३	१९५२	३१-३६
पर्युषण पर्व	१	११	१९५०	३१-४०
पार्श्वनाथ विद्याश्रम	३	७-८	१९५२	१३-२३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
विकास की तीन सीढ़ियाँ	११	७-८	१९६०	३२-३७
श्रमण महावीर का युग संदेश	१०	६	१९५९	२९-३२
संस्कृति का प्रश्न	१	७	१९५०	२३-२७
ज्ञान सापेक्ष है	३	९	१९५२	५-११
वीरेन्द्र कुमार जैन				
दुर्दान्त दस्यु दया का देवता बना	३३	६	१९८२	३९-४०
विश्व बन्धु				
जीवन दृष्टि	१३	१	१९६१	२५-२६
विश्वनाथ पाठक				
तरंगलोला और उसके रचयिता से सम्बन्धित भ्रान्तियों का निवारण	४६	१०-१२	१९९५	१५-२३
ध्वन्यालोक एवं दशरूपक की दो प्राकृत गाथाएं : एक चिन्तन	३०	७	१९७९	३२-३६
दशरूपक की एक अण्याख्यात गाथा	३३	५	१९८२	२०-२१
वज्जालग्ग की कुछ गाथाओं के अर्थ पर पुनर्विचार	३१	२	१९७९	३-८
वज्जालग्ग की कुछ गाथाओं पर पुनर्विचार	३१	७	१९८०	३-७
श्रीविज्ञ				
जैन ज्योतिष तिथि-पत्रिका	७	१२	१९५६	११-१५
संवत्सरी और आचार्य श्री सोहनलाल जी म०	६	११	१९५५	३०-३३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
वीणा निर्मल जैन				
धर्म और आधुनिकता	३८	१	१९८६	१२-१३
वी० वेंकटाचलम्				
विश्वकैलेण्डर क्यों नहीं अपनाया जाय ?	६	८	१९५५	१४-१८
बेचरदास दोशी				
हमारा क्रान्तिवारसा	५	७	१९५४	१-८
,,	५	८	१९५४	६-१५
वेदप्रकाश सी० त्रिपाठी				
चक्रवर्तियों के चक्रवर्ती श्रमण महावीर	३२	६	१९८१	३१
शंकर मुनि				
पूज्य श्री जिनविजयेन्द्रसूरि जी	१५	२	१९६३	२८-३०
शंकर राव देव				
महावीर का कार्य	११	७-८	१९६०	१९-२१
शकुन्तला मोहन				
महिलाओं की मर्यादा	१२	४	१९६१	३२-३३
शरदकुमार 'साधक'				
अहिंसा से कोई विरोध नहीं	१४	९	१९६३	३६-३९
उतार-चढ़ाव के बीच उभरती अहिंसा	३१	४	१९८१	१५-१८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन चेयर की आवश्यकता	१३	१२	१९६२	४-५
मुलाकात महावीर से	३६	७	१९८५	२-६
मूक सेविका : विजयाबहन	४३	१०-१२	१९९२	४०-४१
शरबती देवी जैन				
आत्म निरीक्षण	६	९	१९५५	२०-२३
काश : मैं अध्यापिका होती ?	४	४	१९५३	२९-३२
भगवान् महावीर और अहिंसा	७	६-७	१९५६	४०-४५
पर्युषण : परिचय और व्याख्या	१२	११	१९६१	९-११
पर्युषण पर्व और आज की नारी	७	११	१९५६	३४-३५
शरद्चन्द्र मुखर्जी				
'अगस्त' की ऐतिहासिकता	५	१०	१९५४	३०-३२
शशिप्रभा जैन				
शांति के अग्रदूत-भगवान् महावीर	१४	६-७	१९६३	४९-५२
शान्ताराम भालचन्द्र देव				
जैन संस्कृति और श्रमण परम्परा	४१	४-६	१९९०	२९-४०
साहू शांतिप्रसाद जी				
जैन समाज के लिये नई दिशा	३	५	१९५६	३-७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
मुनिश्री शान्तिप्रिय शास्त्री				
प्रथम और अन्तिम दर्शन	१३	५	१९६२	३०-३२
शांति जैन				
निर्वाण : उपनिषद् से जैनदर्शन तक	२७	११	१९७६	२५-२९
शांतिलाल मांडलिक				
जैनधर्म की प्राचीनता	१९	१२	१९६८	१८-२४
भगवान् महावीरकालीन वैशाली में जैनधर्म	१९	४	१९६८	६-८
मांडव : एक प्राचीन जैन तीर्थ (क्रमशः)	२१	६	१९७०	५-१४
,,	२१	७	१९७०	२४-३०
शादीलाल जैन				
अब साधु समाज संभले	९	११-१२	१९५८	२१-२२
मेरी कुछ अनुभूतियाँ	१४	११-१२	१९६३	८८-९१
मोक्ष	९	९	१९५८	१-८
स्व० पंडित जी एक चलते फिरते विश्वकोश	३२	५	१९८१	५१
शिवकुमार नामदेव				
उत्तरप्रदेश में मध्ययुगीन जैन शिल्पकला का विकास	२८	७	१९७७	१६-२०
कलचुरी-कला में जैन शासन देवियों की मूर्तियाँ	२५	१०	१९७४	२४-२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
कलचुरीकालीन जैन शिल्प-संपदा	३०	१	१९७८	२३-३२
कलचुरीकालीन भगवान् शांतिनाथ की प्रतिमाएँ	२३	१०	१९७२	१४-१५
कर्णाटक में जैन शिल्पकला का विकास	२७	१०	१९७६	१४-१८
कलचुरि नरेश और जैनधर्म	२५	७	१९७४	१९-२२
कारीतलाई की जैन द्विमूर्तिका प्रतिमाएँ	२६	११	१९७५	१५-१९
जैन कलातीर्थ : खजुराहो	२५	१२	१९७४	२२-२७
जैन वास्तुकला : संक्षिप्त विवेचन	२८	२	१९७६	१६-२१
जैन सरस्वती हंसवाहना या मयूरवाहना	२६	१२	१९७५	१८-२०
तीर्थंकर-प्रतिमाओं की विशेषताएँ	२५	४	१९७४	२४-२६
धुबेला संग्रहालय की अद्वितीय जैन प्रतिमाएं	२५	८	१९७४	२४-२७
भारत में प्राचीन जैन गुफाएँ	२७	१२	१९७६	१५-२२
भारतीय पुरातत्त्व तथा कला में भगवान् महावीर	२६	१२	१९७५	३८-४६
राजस्थान में मध्ययुगीन जैन प्रतिमाएँ	२८	९	१९७७	२०-२४
विदिशा से प्राप्त जैन प्रतिमाएँ और रामगुप्त की ऐतिहासिकता	२५	६	१९७४	१८-२३
शुंग-कुषाणकालीन जैन शिल्पकला	२७	८	१९७६	२२-२५
शिवनाथ				
रवीन्द्रनाथ के शिक्षा सिद्धान्त और विश्वभारती	६	१०	१९५६	३-७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
शिवनारायण सक्सेना				
अण्डे खाना भी हिंसा ही है	१६	२	१९६४	२३-२५
धर्म का मूल आधार-अहिंसा	१६	१२	१९६५	२०-२३
शिवप्रसाद				
अड्डालिजीयगच्छ	४८	१०-१२	१९९७	८१-८२
उपकेशगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	४२	७-१२	१९९१	६१-१८२
कल्पप्रदीप में उल्लिखित भगवान् महावीर के कतिपय तीर्थक्षेत्र	४०	६	१९८९	२०-२९
कोरंटगच्छ	४०	५	१९८९	१५-४३
जालिहरगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	४३	४-६	१९९२	४१-४६
जीरापल्लीगच्छ का इतिहास	४७	७-९	१९९६	२३-३३
धर्मघोषगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	४१	१-३	१९९०	४५-१०४
नागेन्द्रगच्छ का इतिहास	४६	७-९	१९९५	२०-६५
नाणकीयगच्छ	४०	७	१९८९	२-३४
पश्चिमी भारत के जैनतीर्थ	४१	७-९	१९९०	४५-७८
पिप्पलगच्छ का इतिहास	४७	१०-१२	१९९६	६५-८२
,,	४८	१-३	१९९७	८३-११७
पूर्णिमागच्छ का संक्षिप्त इतिहास	४३	७-९	१९९२	२९-५१
पूर्णिमागच्छ-प्रधान शाखा अपरनाम ढंढेरिया शाखा का संक्षिप्त इतिहास	४३	१०-१२	१९९२	४९-६६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
पूर्णिमागच्छ-भीमपल्लीयाशाखा का इतिहास	४४	४-६	१९९३	२२-३५
फलवर्द्धिका पार्श्वनाथ तीर्थ : एक ऐतिहासिक दृष्टि	३२	१२	१९८१	२७-३१
भावडारगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	४०	३	१९८९	१५-३३
ब्रह्माणगच्छ का इतिहास	४८	७-९	१९९७	१४-५०
मडाहडागच्छ का इतिहास : एक अध्ययन	४५	७-९	१९९४	३१-५१
मध्य प्रदेश के गुना जिले का जैन पुरातत्त्व	३३	९	१९८२	१९-२३
सार्धपूर्णिमागच्छ का इतिहास	४४	१-३	१९९३	४२-५९
हर्षपुरीयगच्छ अपरनाम मलधारीगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	४७	४-६	१९९६	३६-६७
हारीजगच्छ	४६	१०-१२	१९९५	२८-३३
शितिकण्ठ मिश्र				
पुरानी हिन्दी (मरु-गुर्जर) के प्राचीनतम कवि धनपाल	४०	४	१९८९	१३-१७
शीतलचन्द्र चटर्जी				
स्वामी विवेकानन्द	६	१२	१९५५	३४-३५
शीतलचंद जैन				
अनेकान्तवाद की व्यावहारिक जीवन में उपयोगिता	३१	१०	१९८१	२३-२७
शीला सिंह				
द्रौपदी कथानक का जैन और हिन्दू स्त्रोतों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन	४६	७-९	१९९५	७६-८२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
श्यामधर शुक्ल				
पाणिनीय व्याकरण का सरलीकरण और आचार्य हेमचन्द्र	४७	४-६	१९९६	३-१०
श्यामवृक्ष मौर्य				
भगवान् महावीर की व्यापक दृष्टि	३५	६	१९८४	२९-३१
श्रीनारायण दुबे				
जैन लेखों का सांस्कृतिक अध्ययन	४०	४	१९८९	१८-२६
श्रीनारायण शास्त्री				
अंगविज्जा	२१	८	१९७०	२८-३२
श्रीनारायण सक्सेना				
अहिंसा की महानता	१६	१०	१९६५	१२-१५
वीरों का शृंगार : अहिंसा	१६	६	१९६५	३-८
हमारे पतन का मुख्य कारण : हिंसा	१६	८	१९६५	१६-१९
श्रीप्रकाश दुबे				
अरविन्द का अनेकान्त दर्शन	१३	१२	१९६२	६-८
कर्म और अनीश्वरवाद	१४	८	१९६३	९-१२
गाँधी जी : व्यक्तित्व और नेतृत्व	१३	१२	१९६२	१-३
तुलनात्मक दर्शन पर दो दृष्टियाँ	१५	७-८	१९६४	१७-२१
पुण्डरीक का दृष्टांत	१५	५-६	१९६४	१२-१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
डॉ० भयांणी के व्याख्यान	१५	२	१९६३	१९-२०
मेरी पंजाब यात्रा	१५	४	१९६४	१४-२३
स्वामी विवेकानन्द	१५	१	१९६३	७-८
श्रीप्रकाश पाण्डेय				
आचारांग में अनासक्ति	४२	४-६	१९९१	७३-८८
जैन आगम और गुणस्थान सिद्धान्त	४७	७-९	१९९६	३-१४
समयसार के अनुसार आत्मा का कर्तृत्व-अकर्तृत्व एवं भोक्तृत्व-अभोक्तृत्व	४२	१-३	१९९१	५७-७०
सूत्रकृतांग में वर्णित दार्शनिक विचार	४१	४-६	१९९०	५७-७६
पं० श्रीमलजी म० सा०				
अहिंसा का व्यावहारिक रूप	११	६	१९६०	२८-३१
अहिंसा की तीन धारायें	९	३	१९५८	३४-३७
आचरण या शोधपीठ	९	६-७	१९५८	४१-४६
पाप क्या है ?	११	११	१९६०	१९-२१
प्रेमयोगी महावीर	१२	६-७	१९६१	१५-१६
श्रमण भगवान् महावीर का दीक्षा दर्शन	१४	६-७	१९६३	४४-४८
संस्मरणात्मक श्रद्धांजलि	१४	११-१२	१९६३	४१-४५
सम्यक् दृष्टिकोण सत्य पारखी दृष्टि	११	७-८	१९६०	२५-२१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
स्मृति पुरुष : श्री पूज्य गणेशलाल जी महाराज	१४	४	१९६३	३०-३२
श्रीराम यादव				
संस्कृत व्याकरण शास्त्र में जैनाचार्यों का योगदान	३३	८	१९८२	११-२०
श्रेयांसकुमार जैन				
काव्यशास्त्रियों की दृष्टि में श्लेष	२९	८	१९७८	२६-३१
मेघविजय के समस्यापूर्ति काव्य	२९	१	१९७७	१७-२२
सप्तसन्धानमहाकाव्य में ज्योतिष	२८	१२	१९७७	१७-२१
श्रेयांसप्रसाद जैन				
पुरुषार्थ के प्रतीक पं० सुखलाल जी	३२	५	१९८१	४८-४९
संगीता झा				
धर्म और दर्शन के क्षेत्र में हरिभद्र का अवदान	४०	११	१९८९	३०-४०
मुनि श्रीसंतलाल जी				
आत्मबली साधक और दैवीतत्त्व	१५	११	१९६४	९-१२
दुर्भाग्य में से सौभाग्य प्राप्त करें	१५	२	१९६३	९-१४
प्रतिज्ञा	९	६-७	१९५८	७३-७४
समन्वयकार : आचार्य श्री	१३	५	१९६२	२३-२५
संन्यासी राम				
तत्त्वसूत्र	३९	४	१९८८	१-८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
आत्म-अनात्म द्वन्द्वात्मिकी	३८	११	१९८७	९-१९
सच्चिदानन्द				
सात शत्रु सात मित्र	१२	१०	१९६१	३१-३२
सतीश कुमार				
अधूरा समाजवाद	१०	७-८	१९५९	५९-६१
अन्न और संकट	१०	२	१९५८	१२-१४
अहिंसक शक्तियों का ऐक्य	९	९	१९५८	२०-२५
जैन साधु की भिक्षा विधि	९	११-१२	१९५८	६४-६५
दया दान की मान्यता	८	२	१९५६	३३-३६
प्रणयी महावीर	१२	६-७	१९६१	१७-२०
संसार की हिंसामय परिस्थिति और हम	१४	४	१९६३	२६-२९
समन्वय आश्रम	९	११-१२	१९५८	१७-२०
सर्वोदय और राजनीति	१०	५	१९५९	२९-३१
साहित्य भवन के निर्माण का शुभारंभ	११	१	१९५९	२४-२७
(कु०)सत्य जैन				
श्रमण	३	५	१९५२	२३
(कु०) सत्यभामा				
यशस्तिलकचम्पू और जैन धर्म	३५	३	१९८४	१५-२८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
स्वामी सत्यभक्तजी				
प्रतिक्रमण	६	११	१९५५	३-१२
सत्यदेव विद्यालंकार				
इतिहास बोलता है	१०	१२	१९५९	११-१६
जीवन की अंतिम साधना	७	१	१९५५	३१-३३
(कु०)सत्यवती जैन				
विजय	२	२	१९५०	३५-३८
नारी का स्थान घर है या बाहर?	५	६	१९५४	३५
सत्य सुमन				
शांति की बुनियाद	१०	७-८	१९५९	५७-५८
स्वामी सत्यस्वरूप जी				
स्वामी केशवानन्द	२	८	१९५१	२६-३१
सनत्कुमार रंगाटिया				
अज्ञात कविकृत शीलसंधि	२०	७	१९६९	२१-२६
अभयकुमार श्रेणिकरास	१९	१०	१९६८	२५-३०
,,	१९	११	१९६८	२२-२८
पेथड़रास के कर्ता कौन ?	१९	३	१९६८	१६-२०
मुनि श्री देशपाल : जीवन और कृतित्व	३२	५	१९८१	६२-६९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
विद्याविलासरास	१९	८	१९६८	१२-२५
सप्तक्षेत्रिरासु	१९	६	१९६८	२३-२८
सनत् कुमार जैन				
अनेककान्तवाद की व्यावहारिक जीवन में उपयोगिता	३२	१	१९८१	१८-१९
पुराण प्रतिपादित शीलव्रत	३०	५	१९७९	१५-१९
शीलव्रत : एक विवेचन	३०	३	१९७९	१०-१८
श्रावक के मूलगुण	२९	११	१९७८	३-१८
सोमदेवकृत उपासकाध्ययन में शीलव्रत	३०	११	१९७९	३४-३८
,,	३०	१२	१९७९	२३-२८
सन्तोषकुमार 'चन्द्र'				
नारी जीवन का आदर्श	३	१२	१९५२	३१-३४
मुनिश्री समदर्शी				
अपरिग्रह और आज का जैन समाज	११	६	१९६०	४१-४३
उपाध्याय श्री अमरमुनि जी : एक ज्योर्तिमय व्यक्तित्व	३४	१	१९८२	२१-२५
मुनि समदर्शी आईदान				
एक निवेदन	९	११-१२	१९५८	१४-१६
क्या अणुव्रत आन्दोलन असाम्प्रदायिक है ?	१०	९	१९५९	२३-२४
क्षमा का पर्व	१०	११	१९५९	३८-३९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
भगवान् महावीर का निर्वाणोत्सव	११	१२	१९६०	३१-३३
साधना की अमर ज्योति	१४	५	१९६३	४१-४७
सेठ रत्नलाल जी	१४	५	१९६३	२०-२५
समन्तभद्र				
वीरावतार	३७	६	१९८६	१-६
समीर मुनि				
क्रोध और क्षमा	१५	१०	१९६४	१८-२१
श्री व्याख्यान वाचस्पति जी महाराज	१४	११-१२	१९६३	५४-५५
समीर मुनि 'सुधाकर'				
जल में लागी लाय	१६	८	१९६५	९-१०
जैन समाज का धर्म प्रचार	१७	१२	१९६६	१२-१४
भगवान् महावीर और हरिकेशी	१४	६-७	१९६३	२९-३१
भगवान् महावीर के बाद	१५	५-७	१९६४	७२-७५
विचारणीय प्रश्न	१३	१	१९६१	१९-२१
संवत्सरी	१२	११	१९६१	३१-३५
सम्पूर्णानन्द				
निरामिष भोजन : एक समस्या	९	३	१९५८	२८-३३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
सरदारचंद जैन				
धर्म का स्वरूप	३६	२	१९८४	५-७
सरदारमल जैन				
आज का फैशन-धूम्रपान	१३	९	१९६२	२२-२५
आत्म शुद्धि का पर्व -पर्युषण	१६	११	१९६५	३४-३५
रक्षाबंधन	१४	१०	१९६३	११-१४
महासती श्रीसरलादेवी जी महाराज				
सच्चरित्रता क्या है ?	६	१०	१९५५	२५-२६
हमारा उत्थान कैसे ?	८	९	१९५७	२१-२३
(कु०) सविता जैन				
महावीर का संयम और उनका साधनामय जीवन	३२	६	१९८१	२७-३०
,,	३३	७	१९८२	१९-२३
आचार्य सर्वे				
यह नई परम्परा करवट ले रही है	९	११-१२	१९५८	३०-३२
सागरमल जैन				
अध्यात्मवाद और भौतिकवाद	३१	६	१९८१	१-६
अध्यात्म और विज्ञान	४०	६	१९८९	९-१९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
,,	४८	४-६	१९९७	२०-२९
अर्धमागधी आगम साहित्य	४६	१-३	१९९५	१-४५
अर्धमागधी आगम साहित्य में समाधिमरण की अवधारणा	४५	१-३	१९९४	८०-९३
असली दूकान/नकली दुकान	३३	१०	१९८२	२०-२१
अहिंसा का अर्थ विस्तार, संभावना और सीमा क्षेत्र	३१	३	१९८०	३-२१
आगम साहित्य में प्रकीर्णकों का स्थान, महत्त्व, रचना काल एवं रचयिता	४८	४-६	१९९७	१४७-१५६
आचारांगसूत्र : एक विश्लेषण	३९	२	१९८७	१-१९
आचार्य हेमचन्द्र : एक युगपुरुष	४०	१२	१९८९	३-१५
,,	४८	४-६	१९९७	६०-७०
आत्मा और परमात्मा	३१	५	१९८१	१
उच्चैर्नागर शाखा उत्पत्ति स्थान एवं उमास्वाति के जन्मस्थल की पहचान	४२	७-१२	१९९१	१७-२४
ऋग्वेद में अर्हत् और ऋषभवाची ऋचायें : एक अध्ययन	४५	४-६	१९९४	१८५-२०२
खजुराहो की कला और जैनाचार्यों की समन्वयात्मक एवं सहिष्णु दृष्टि	४५	४-६	१९९४	१७३-१७८
गुणस्थान सिद्धान्त का उद्भव एवं विकास	४३	१-३	१९९२	२३-४३
,,	४३	४-६	१९९२	१-२६
जैन अध्यात्मवाद : आधुनिक संदर्भ में	३४	१०	१९८३	१-१७
जैन आगमों की मूलभाषा : अर्धमागधी या शौरसेनी	४८	१०-१२	१९९७	१-२८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन आगमों में मूल्यात्मक शिक्षा और वर्तमान सन्दर्भ	४५	४-६	१९९४	१६२-१७२
जैन आगमों में हुआ भाषिक स्वरूप परिवर्तन : एक विमर्श	४५	४-६	१९९४	२३९-२५३
जैन एकता का प्रश्न	३४	३	१९८३	१-२७
जैन एवं बौद्ध धर्म में स्वहित एवं लोकहित का प्रश्न	३१	१२	१९८१	२-१०
जैन एवं बौद्ध धर्म में स्वहित एवं लोकहित का प्रश्न	३१	१	१९८१	५-१३
जैन एवं बौद्ध पारिभाषिक शब्दों के अर्थ निर्धारण और अनुवाद की समस्यायें	४५	४-६	१९९४	२३४-२३८
जैन कर्म सिद्धान्त : एक विश्लेषण	४५	१-३	१९९४	९४-१२७
जैन दर्शन में नैतिकता की सापेक्षता	४६	४-६	१९९५	१२३-१३३
जैनधर्म और आधुनिक विज्ञान	४३	१०-१२	१९९२	१-१२
जैनधर्म और सामाजिक समता	४५	४-६	१९९४	१४४-१६१
जैनधर्म और हिन्दूधर्म (सनातन धर्म) का पारस्परिक सम्बन्ध	४७	१-३	१९९६	३-१०
जैनधर्म का एक विलुप्त सम्प्रदाय-यापनीय	३९	९	१९८८	१-१६
,,	३९	११	१९८८	१-१८
जैनधर्म का लेश्या-सिद्धान्त : एक विमर्श	४६	४-६	१९९५	१५०-१६५
जैनधर्म के धार्मिक अनुष्ठान एवं कलातत्त्व	४२	१-३	१९९१	१-३९
जैनधर्म-दर्शन का सारतत्त्व	४५	१-३	१९९४	१-१३
जैनधर्म में अचेलकत्व और सचेलकत्व का प्रश्न	४८	४-६	१९९७	७७-११२
जैनधर्म में आध्यात्मिक विकास	४८	४-६	११९७	१५७-१६०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैनधर्म में तीर्थ की अवधारणा	४१	४-६	१९९०	१-२८
जैनधर्म में नारी की भूमिका	४१	१०-१२	१९९०	१-४८
जैनधर्म में भक्ति का स्थान	३१	५	१९८१	१४-१७
जैनधर्म में भक्ति की अवधारणा	४५	१-३	१९९४	१८-३६
जैनधर्म में सामाजिक चिन्तन	४८	४-६	१९९७	१-१९
जैनधर्म में स्वाध्याय का अर्थ एवं स्थान	४५	१-३	१९९४	३७-४३
जैन परम्परा का ऐतिहासिक विश्लेषण	४१	७-९	१९९०	१-१६
जैन, बौद्ध और हिन्दू धर्म का पारस्परिक प्रभाव	४८	४-६	१९९७	३०-५९
जैन विद्या के निष्काम सेवक-लाला हरजसराय जैन	३७	८-९	१९८६	२१-२४
जैन साधना के मनोवैज्ञानिक आधार	३०	११	१९७९	८-१४
जैन साधना में ध्यान	४५	१-३	१९९४	४४-७९
साहित्य में गोम्मटेश्वर बाहुबलि	३२	३	१९८२	१-९
डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री सम्मानित	३८	१	१९८६	२२-२४
तीर्थंकर और ईश्वर के सम्प्रत्ययों का तुलनात्मक विवेचन	४६	१-३	१९९५	८७-९२
दशलक्षण/ दशलक्षण धर्म के	३४	११	१९८३	१३-२८
धर्म और दर्शन के क्षेत्र में हरिभद्र का अवदान	३७	१२	१९८६	१-२०
धर्म क्या है ?	३१	४	१९८१	१-८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
,,	३१	५	१९८१	२-५
,,	३१	७	१९८१	२-७
,,	३४	४	१९८३	२-४
नई पीढ़ी और धर्म	१३	१	१९६१	३१-३४
निर्युक्ति साहित्य : एक पुनर्चिन्तन	४५	४-६	१९९४	२०३-२३३
पं० महेन्द्रकुमार 'न्यायाचार्य' द्वारा सम्पादित एवं अनूदित षड्दर्शन समुच्चय की समीक्षा	४८	४-६	१९९७	१४१-१४६
पर्युषण पर्व क्या, कब और कैसे ?	३३	१०	१९८२	१-११
पर्यावरण की प्रदूषण की समस्या और जैनधर्म	४५	४-६	१९९४	१३५-१४३
पार्श्वनाथ जन्मभूमि मंदिर, वाराणसी की पुरातत्त्वीय वैभव	४१	४-६	१९९०	७७-८८
प्रमाण-लक्षण निरूपण में प्रमाण-मीमांसा का अवदान	४८	४-६	१९९७	१३३-१४०
प्रज्ञापुरुष पं० जगन्नाथ जी उपाध्याय की दृष्टि में बुद्ध व्यक्ति नहीं प्रक्रिया	४६	४-६	१९९५	१६६-१६९
प्रवर्तक एवं निवर्तक धर्मों का मनोवैज्ञानिक विकास एवं उनके दार्शनिक एवं सांस्कृतिक प्रदेय	३०	८	१९७९	१४-२०
प्राचीन जैन आगमों में चार्वाक दर्शन का प्रस्तुतीकरण	४६	१-३	१९९५	४६-५८
बालकों के संस्कार निर्माण में अभिभावक, शिक्षक एवं समाज की भूमिका	३१	३	१९८१	२६-३८
भगवान् महावीर का जीवन और दर्शन	४५	१-३	१९९४	१४-१७
भगवान् महावीर की निर्वाण तिथि पर पुनर्विचार	४५	४-६	१९९४	२५४-२६८
भाग्य बनाम पुरुषार्थ	३६	९	१९८४	२-६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
भारतीय संस्कृति का समन्वितरूप	४५	४-६	१९९४	१२९-१३४
भेद विज्ञान : मुक्ति का सिंहद्वार	३१	९	१९८१	३-११
मन-शक्ति स्वरूप और साधना : एक विश्लेषण	४६	४-६	१९९५	९७-१२२
महापण्डित राहुल सांकृत्यायन के जैनधर्म सम्बन्धी मन्तव्यों की समालोचना	४५	४-६	१९९४	१७९-१८४
महायान सम्प्रदाय की समन्वयात्मक दृष्टि : भगवद्गीता और जैनधर्म के परिप्रेक्ष्य में	४४	७-९	१९९३	१-१०
महावीर का दर्शन-सामाजिक परिप्रेक्ष्य में	३२	६	१९८१	२-९
महावीर का जीवन दर्शन	३७	६	१९८६	७-९
महावीर के समकालीन विभिन्न आत्मवाद एवं उसमें जैन आत्मवाद का वैशिष्ट्य	४६	१-३	१९९५	५९-६८
महावीर के सिद्धान्त-युगीन संदर्भ में	३३	६	१९८२	३-२७
मूल्य और मूल्यबोध की सापेक्षता का सिद्धांत	४३	१-३	१९९२	१-२२
युगीनपरिवेश में महावीर स्वामी के सिद्धांत	४६	७-९	१९९५	१-६
व्यक्ति और समाज	३४	२	१९८२	३-४
श्वेताम्बर मूलसंघ एवं माथुर संघ-एक विमर्श	४३	७-९	१९९२	१५-२३
श्वेताम्बर साहित्य में रामकथा	३२	१२	१९८१	७-११
श्वेताम्बर साहित्य में रामकथा का स्वरूप	३६	१२	१९८५	२-६
षट्जीवनिकाय में त्रस एवं स्थावर के वर्गीकरण की समस्या	४४	४-६	१९९३	१३-२१
संयम : जीवन का सम्यक् दृष्टिकोण	३१	८	१९८१	२-१३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
सकारात्मक अहिंसा की भूमिका	४६	१-३	१९९५	६९-८६
सदाचार के शाश्वत मानदण्ड	४६	४-६	१९९५	१३४-१४९
सदाचार के मानदण्ड और जैनधर्म	३२	४	१९८२	२२-२७
समाधिमरण की अवधारणा की आधुनिक परिप्रेक्ष्य में समीक्षा	४२	४-६	१९९१	९९-१०१
सम्राट अकबर और जैनधर्म	४८	४-६	१९९७	७१-७६
स्याद्वाद और सप्तभंगी : एक चिन्तन	४१	१-३	१९९०	३-४४
स्त्रीमुक्ति, अन्यतैर्थिकमुक्ति एवं सवस्त्रमुक्ति का प्रश्न	४८	४-६	१९९७	११३-१३२
हरिभद्र की क्रान्तदर्शी दृष्टि-धूर्ताख्यान के सन्दर्भ में	३९	४	१९८८	२१-२५
हरिभद्र के धर्म दर्शन में क्रान्तिकारी तत्त्व 'सम्बोधप्रकरण' के सन्दर्भ में	३९	४	१९८८	९-२०
हरिभद्र के धूर्ताख्यान का मूल स्रोत : एक चिन्तन	३९	४	१९८८	२६-२८
साधक				
युगदृष्टा महावीर	१२	६-७	१९६१	३१-३७
साधुसंतों की सेवा में	९	६-७	१९५८	२५-२७
सिद्धराज ढड्ढा				
जीवनकला की शोध करें	९	६-७	१९५८	५२-५५
जैनधर्म	९	११-१२	१९५८	६०-६३
हम सँभलें	९	९	१९५८	३३-३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
सीताराम दुबे				
स्याद्वाद की अवधारणा : उद्भव एवं विकास	४८	७-९	१९९७	१-१३
सीताराम राय				
चौबीसवें जैन तीर्थंकर भगवान् महावीर का जन्म स्थान	४०	१०	१९८९	१-७
सुखलाल जी संघवी				
अहिंसा का क्रमिक विकास	११	४	१९६०	९-१५
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति	४	७-८	१९५३	३-१०
जैन व्याख्या पद्धति	४	७-८	१९५३	७१-७३
जैन साधना	१	८	१९५०	९-११
धर्म और पुरुषार्थ	११	१०	१९६०	१४-१७
धर्म और विद्या का विकास मार्ग	१४	३	१९६३	९-१७
धर्म का बीज और उसका विकास	२	१२	१९५१	९-१४
पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान की कार्य दिशा	१६	३	१९६५	३४-३६
भगवान् महावीर के जीवन की विविध भूमिकायें	३	६	१९५२	९-१६
भगवान् महावीर की मंगल विरासत	२६	१-२	१९७४	३-९
,,	४०	६	१९८९	१-८
मानवमात्र का तीर्थ	४	६	१९५३	१-२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
मुनिश्री पुण्यविजय जी के जैसलमेर भण्डार के उद्धार कार्य की रूपरेखा	३	१	१९५१	२८-३८
लखनऊ अभिभाषण	३	१	१९५१	३-२८
विकास का मुख्य साधन	१	११	१९५०	११-१३
,,	१	१०	१९५०	१३-१८
शास्त्र और शस्त्र	१	२	१९४९	१३-१५
शास्त्र रचना का उद्देश्य	५	१	१९५३	२४
स्वरूप और पररूप	३	११	१९५२	५-१०
शास्त्र और सामाजिक क्रान्ति	१२	५	१९६१	९-१२
सुखलाल मुनि				
स्वप्न और विचार	३४	९	१९८३	२०-२१
सुदर्शन मुनि जी				
भावविभोर श्रद्धांजलि	१४	११-१२	१९६३	९९-१०६
सुदर्शनलाल जैन				
आचार्य हरिभद्र और धर्मसंग्रहणी	२०	१०	१९६९	२१-२९
,,	२०	११	१९६९	१६-२२
आहार-विहार में उत्सर्ग अपवाद मार्ग का समन्वय	४०	९	१९८९	११-१५
जैन दर्शन में मोक्ष का स्वरूप : भारतीय दर्शनों के परिप्रेक्ष्य में	३५	१	१९८३	१८-२४
जैन दर्शन में शब्दार्थ सम्बन्ध	४३	४-६	१९९२	२७-३९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
प्रमाण स्वरूप विमर्श	२४	२	१९७२	३-१५
,,	२४	३	१९७३	३-११
यज्ञ : एक अनुचिन्तन	१७	१२	१९६६	१५-२७
,,	१७	११	१९६६	३१-३८
वेदान्त दर्शन और जैन दर्शन	४०	८	१९८९	१०-१६
सांख्य दर्शन और जैनदर्शन : एक तुलनात्मक अध्ययन	४०	९	१९८९	१-१०
सुधा जैन				
जैनधर्म में सरस्वती	२६	७	१९७५	१३-१४
जैन मंदिर व स्तूप	२४	१२	१९७३	१६-१९
जैन शिल्पकला और मथुरा	२३	१२	१९७२	१६-१९
जैन साहित्य और संस्कृति का जनजीवन पर प्रभाव	२५	९	१९७४	१५-१८
प्राचीन भारत में जैन चित्रकला	२५	५	१९७४	३१-३४
सुधा जैन				
तनाव : कारण एवं निवारण	४८	१-३	१९९७	१-२०
सुधा राखे				
जैन और बौद्ध आगमों में जननी-एक पहलू	१८	८	१९६७	१४-१७
बौद्ध और जैन आगमों में जननी	१९	१-२	१९६७	२०-२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
सुनीतकुमार चाटुर्ज्या				
प्राकृत का अध्ययन	१९	९	१९६८	१०-१२
सुन्दरलाल जैन 'वैद्यरत्न'				
आरोग्य	४	४	१९५३	२३-२५
किसके साथ क्या न खायें	८	१०	१९५७	३५-३६
ग्रीष्म ऋतु का आहार-विहार	५	८	१९५४	३४-३६
,,	१५	७-८	१९६४	५९-६२
चलिए और खूब चलिए	६	१०	१९५५	२७-२९
टमाटर	८	२	१९५६	२९-३१
महावीर का साम्यवाद	५	९	१९५४	२८-३१
वर्षा ऋतु का आहार-विहार	५	१०	१९५४	१६-१९
,,	७	१०	१९५६	२३-२५
बसन्त ऋतु का आहार-विहार	६	४	१९५५	१९-२०
,,	१५	४	१९८४	३४-३५
शीतऋतु का आहार-विहार	६	२	१९५४	१९-२०
,,	१४	१	१९६२	२४-२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
सुपार्श्वकुमार जैन				
भरतेश वैभव में प्रतिपादित सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था	२६	१०	१९७५	३-८
,,	२६	११	१९७५	३-८
सुबोधकुमार जैन				
उड़ीसी नृत्य और जैन सम्राट खारवेल	२२	५	१९७१	२१-२२
गजेटियर ऑफ इंडिया में जैनी और जैनधर्म	२१	६	१९७०	२८-३५
धर्म का मर्म	४	९	१९५३	२४-२९
प्रयाग-एक महान जैन क्षेत्र	२२	११	१९७१	१७-१९
प्रवृत्तिमार्ग और निवृत्तिमार्ग	२२	१	१९७०	३४-३६
हेल्मुथ फोन ग्लासनप और जैनधर्म	२१	१२	१९७०	१३-१७
पुरुष और नारी	११	७-८	१९६०	३०-३१
साधु शिक्षक बनें	१२	६-७	१९६१	७०-७२
सुभाष कोठारी				
उपासकदशांगसूत्र का आलोचनात्मक अध्ययन	३८	२	१९८६	८-१३
जैन श्रमण साधना: एक परिचय	४२	१-३	१९९१	३३-५०
सुभाषचन्द जैन				
जैनधर्म में शुभ और अशुभ की अवधारणा	३०	६	१९७९	२३-३२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
सुभाषमुनि 'सुमन'				
जैन और बौद्धदर्शन : एक तुलनात्मक अध्ययन	३८	१०	१९८७	६-१७
महावीर और बुद्ध	३७	७	१९८६	१२-१६
सर्वधर्म समभाव और स्याद्वाद	३७	१०	१९८६	१०-१५
सुमन मुनि				
जैनाचार्य श्री कांशीराम जी	११	९	१९६०	३०-३३
सुरेखा जी (साध्वी)				
पंचपरमेष्ठिमन्त्र का कर्तृत्व और दशवैकालिक	४२	७-१२	१९९१	१-१०
श्रमण एवं ब्राह्मण परम्परा में परमेष्ठी पद	४३	१-३	१९९२	५५-६७
सुरेन्द्रकुमार आर्य				
जैन रास की दुर्लभ हस्तलिखित प्रति : विक्रमलीलावतीचौपाई	२६	११	१९७५	१३-१४
झारड़ा की जैन देवियों की अप्रकाशित प्रतिमाएँ	२७	११	१९७६	१३-१४
सुरेन्द्र वर्मा				
जैन दर्शन में पुरुषार्थ चतुष्टय	४७	१-३	१९९६	२१-४६
द्वन्द्व और द्वन्द्व निवारण (जैन दर्शन के विशेष प्रसंग में)	४७	१०-१२	१९९६	१-१३
गाँधीजी के मित्र और मार्गदर्शक : श्रीमद्राजचन्द्र	४६	१०-१२	१९९५	१-४
सुरेशचन्द्र गुप्त				
अपभ्रंश का काव्य सौन्दर्य	५	८	१९५४	२३-३०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
मुनिश्री सुरेशचन्द्र जी शास्त्री				
अपने को परखिए	६	११	१९५५	३९-४१
अहिंसा का अवतार	११	६	१९६०	१३
एक नया पुरोहितवाद	७	६-७	१९५६	२७-३१
नया और पुराना	७	२	१९५५	२०-२२
प्रधानाचार्य या आचार्य	११	९	१९६०	२३-२५
मंजिल अभी दूर है	४	१	१९५२	२४-२६
महावीर के ये उत्तराधिकारी	६	६-७	१९५५	५७-६०
श्रमण संघ की शिक्षा-दीक्षा का प्रश्न	७	१२	१९५६	१६-१७
श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों से	१३	५	१९६२	४३-४५
हमारे जागरण का शीर्षासन	३	६	१९५२	१७-२२
सुरेश सिसोदिया				
चन्द्रवेध्यक (प्रकीर्णक) एक आलोचनात्मक परिचय	४३	१-३	१९९२	४५-५३
मुनिजी सुशीलकुमार				
मिथिलापति नमिराज	६	९	१९५५	३६-३७
हरिकेशिबल	५	१२	१९५४	१५-२४
धर्म और दर्शन	८	१	१९५६	२०-२३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
,,	८	२	१९५६	२३-२८
बुझती हुई चिनगारियाँ	३	११	१९५२	३५-३७
मानवतावादी समाज का आधार-अहिंसा	११	२	१९५९	७-११
सुशीला जैन				
विद्यालय से माता-पिता का सम्बन्ध	८	३-४	१९५७	२९-३२
आचार्य हरिभद्रसूरि का दार्शनिक दृष्टिकोण	२३	१	१९७१	१९-२३
लेश्या-एक विश्लेषण	२३	५	१९७२	२०-२४
सूरजचन्द्र 'सत्यप्रेमी'				
ध्यान-योग की जैन परम्परा	१०	९	१९५९	१७-१८
नमस्कारमंत्र का मौलिक परम अर्थ	६	१२	१९५५	१८-२०
महावीर का अन्तस्तल	१२	१०	१९६१	१७-१९
वर्धमान और हनुमान	६	६-७	१९५५	२३
सोहनलाल पाटनी				
सिरोही जिले में जैनधर्म	३३	१०	१९८२	३२-३७
सौभाग्यमल जैन				
अपनी परमात्म शक्ति को पहचानो	३३	२	१९८१	२-६
अहिंसा की सार्थकता	३५	२	१९८३	८-१२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
कल्पना का स्वर्ग या स्वर्ग की कल्पना	३२	४	१९८२	१७-२१
क्षमा से विश्व बन्धुत्व	३७	१	१९८६	२-४
जैन आगमों में विद्वत् गोष्ठी	३५	८	१९८४	६-९
तीर्थंकर महावीर जन्मना ब्राह्मण या क्षत्रिय	४२	१-३	१९९१	५१-५५
नर्क का प्रश्न	३३	१	१९८१	२६-२९
भारतीय संस्कृति और श्रमण परम्परा	४०	८	१९८९	२-९
युवा-दृष्टिकोण	३८	२	१९८६	१७-२०
वाल्टेर शुब्रिंग की जैनविद्या सेवा	३८	१	१९८६	१९-२१
श्रमण संस्था और समाज	३८	८	१९८७	१४-१९
साधु मर्यादा क्या ? कितनी ?	३३	७	१९८२	१५-१८
साधुओं का शिथिलाचार	१५	३	१९६४	९-१३
सौभाग्य मुनि 'कुमुद'				
आडम्बर प्रिय नहीं धर्म प्रिय बनो	३६	३	१९८५	२-४
आभूषण भार स्वरूप है	३६	८	१९८५	२-४
ध्यान साधना का दिशाबोध	३५	७	१९८४	११-१४
पर्वाधन की एकरूपता का प्रश्न	३६	१२	१९८५	१४-१५
सद्विचार हेतु मौलिक प्रक्रिया	३५	४	१९८३	१०-११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
सूर्यदेव शर्मा				
एक आश्चर्यमय ग्रन्थ	६	४	१९५४	२९-३२
हजारीप्रसाद द्विवेदी				
अपभ्रंश के जैन साहित्य का महत्त्व	४	११	१९५२	१-३
हजारीमल बांठिया				
जर्मन जैन श्राविका डॉ० शार्लोटे क्राउझे	४८	१०-१२	१९९७	८३-९२
पुरातत्त्वाचार्य पद्मश्री स्व० मुनि जिनविजय जी	३९	१२	१९८८	१-७
वैराग्य के पथ पर	१	१२	१९५०	१७-२५
हरजसराय जैन				
एक मधुर स्मृति	१३	५	१९६२	३३-३५
त्यागपत्र का स्पष्टीकरण	१४	११-१२	१९६३	८१-८२
दौरे के संस्मरण	४	५	१९५३	२३-२६
परमार्थनिष्ठ महावीर	१२	६-७	१९६१	११
महावीर : आत्मविश्वास	८	६	१९५७	४१-४२
महावीर का व्यक्तित्त्व	२	६	१९५१	१३-१५
सुहृदय श्री मुनिलालजी	१५	७-८	१९६४	६६-६८
पार्श्वनाथ विद्याश्रम	७	६-७	१९५६	६३-८०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
हमारी यात्रा के कुछ संस्मरण	४	६	१९५३	२८-३३
हर्षचन्द				
जैनत्व का गौरव और हम	३४	७	१९८३	२-५
हरिशंकर पाण्डेय				
भक्तामरस्तोत्र : एक अध्ययन	४६	७-९	१९९५	७-९
हरिशंकर वर्मा				
महावीर का मंगल उपदेश	१३	७-८	१९६२	४९-५०
हरिहर सिंह				
कुंम्भारिया का महावीर मन्दिर	२६	१-२	१९७४	४७-५२
कुंभारिया के जैन अभिलेखों का सांस्कृतिक अध्ययन	२८	११	१९७७	३०-३६
,,	२८	१२	१९७७	२५-३८
जैन साहित्य में स्तूपनिर्माण की प्रथा	२१	११	१९७०	१६-२२
तारंगा का अजितनाथ-मंदिर	२९	६	१९७८	३-१३
तीर्थंकर प्रतिमाओं का उद्भव और विकास	२५	१-२	१९७३	४३-५२
तीर्थक्षेत्र शत्रुंजय	२२	७	१९७१	१९-२५
सोलंकी-काल के जैन मन्दिरों में जैनेतर चित्रण	२८	६	१९७७	३०-३२
हरिओम सिंह				
जैन दर्शन और मार्क्सवाद, सत् का स्वरूप	३२	१०	१९८१	१६-२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
महावीर संदेश-दार्शनिक दृष्टि	३१	५	१९८१	१८-२१
जैन दर्शन में बंध और मुक्ति	२७	४	१९७६	२५-३०
हरिवल्लभ भयाणी				
दशरूपकावलोक में उद्धृत अपभ्रंश उदाहरण	३३	१०	१९८२	३८
हस्तिमल जी 'साधक'				
अहिंसा की प्रतिष्ठा का मार्ग	१०	७-८	१९५९	४३-४५
जैन समाज में फोटो प्रचार	१५	१२	१९६४	२५-२९
ब्रह्मचर्य की गुप्ति	१७	१-२	१९६५	७-१३
हीरा कुमारी				
जैनदर्शन	३	३	१९५२	९-१५
हीराचन्द्र सूरि 'विद्यालंकार'				
पर्युषण की सही आराधना	१०	११	१९५९	६-८
हीरालाल जैन				
आचार्यसम्राट पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज : एक अंशुमाली	४५	१०-१२	१९९४	२६-३२
हीरालाल रसिकलाल कापडिया				
संवेगरंगशाला-एक स्पष्टीकरण	२०	१२	१९६९	३२
हुकुमचन्द्र संगवे				
अजीवद्रव्य	२२	९	१९७१	१७-२२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
चिन्तन : सम्यक् जीवन दृष्टि	३३	११	१९८२	२८-३१
मृत्यु एवं संलेखना	२५	३	१९७३	३२-३९
षड्ावश्यक में सामायिक	२२	११	१९७१	१६
हुकुमचंद सिंघई				
प्रतिज्ञा	३	२	१९५१	२१-२५
हेमन्तकुमार जैन				
भट्टअकलंककृत लघीयस्त्रय : एक दार्शनिक अध्ययन	४१	७-९	१९९०	८३-९०
त्रिलोचन पंत				
मेरे संस्मरण : मालवीय जी	१३	२	१९६१	३३-३५
त्रिवेणीप्रसाद सिंह				
मानव व्यक्तित्व का वर्गीकरण	४१	४-६	१९९०	४१-५०
ज्ञानचन्द				
जैन शास्त्रों में वर्णित १८ श्रेणियों के उल्लेख	२७	२	१९७५	१८-२१
ज्ञानमुनि जी				
अभिमान बुरा है	१२	१०	१९६१	२२-२३
अहिंसा की लोकप्रियता	१५	१२	१९६४	१९-२४
आचार्य प्रवर : आत्माराम जी महाराज	८	१२	१९५७	३२-३४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
आचार्यश्री मोतीराम जी	९	५	१९५८	२०-२२
आधुनिक विज्ञान और अहिंसा	८	६	१९५७	१०-१४
तृष्णा और उसका अंत	७	३	१९५७	१९-२०
दीपमाला : एक आध्यात्मिक पर्व	७	१	१९५५	२५-२८
भगवान् महावीर और उनका शांति संदेश	६	६-७	१९५५	५-१७
भगवान् महावीर के आठ संदेश	१५	९	१९६४	२८-३२
भगवान् राम से दीपमाला का क्या संबंध	१०	२	१९५८	२१-२४
महापर्वसंवत्सरी	६	११	१९५५	२४-२८
वीतराग की उपासना	१३	११	१९६२	२६-३०
वीतराग महावीर की दृष्टि	१०	६	१९५९	११-१३
स्थानकवासी समाज का दुर्भाग्य	१४	११-१२	१९६३	६२-६४
क्षमा का आदर्श	१०	११	१९५९	२९-३१
Amarchand				
Mahāvīra	48	4-6	1997	1-17
Ashok Kumar Singh				
Sādhnā of Mahāvīra as Depicted in Upa'dhānaśruta	46	10-12	1995	90-98
Metrical studies of Daśāśrutaskandha Niryukti in the light of its parallels	47	7-9	1996	59-76

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
Nirgrantha Doctrine of Karma : A Historical Perspective	48	7-9	1997	89-103
Aṣṭakaprakaraṇa : An Introduction	48	10-12	1997	107-118
A. Majumdar				
The Nature of object in Jaina philosophy	29	10	1978	27-32
Bashistha Narayan Sinha				
Concept of Ahimsā in the Śāntiparva	17	3	1966	33-40
Philosophical Aspect of Non-Violence	47	4-6	1996	84-111
Ṛṣabha deva : A study	17	5	1966	35-37
B.N. Tripathi				
Problem of suffering as conceived in Jainism	26	6	1975	26-29
Ibid	26	7	1975	27-32
Charlotte Krause				
The Heritage of Last Arhat Mahavira	48	4-6	1997	1-27
Dinanath Sharma				
'सिया and असिया' Two Prakrit forms And Pischel on Them	41	7-9	1990	79-82
Dulichand Jain				
Relevance of Non-Violence in modern life	47	10-12	1996	101-109

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
Dr. Harihar Singh				
Jainism in Gujarat	20	8	1969	28-34
Ibid	20	9	1969	28-34
Jaina Temple Sculptures of Gujarat	28	8	1977	27-34
Origin and Development of Tīrthankara Images.	29	3	1978	22-30
Sixteen Vidyādevis as Depicted in Temple at Kumbhāriā	28	5	1977	25-32
The Eight Dikpālas as Depicted in the Jaina Temple of Kumbhāriā	28	1	1976	28-31
Tīrthakṣetras in Jainism	21	2	1969	22-26
Indra Bhushan Panday				
Jaina Influence on Shree Rāmānujācārya	22	8	1971	26-30
Jaina Concept of Liberation	22	12	1971	30-35
Nature and Role of Devotion in Jaina Sādhanā	23	4	1972	22-28
J. P. Sharma				
Jaina and Buddhist Tradition Regarding the Origins of Ajātsattu's War with the Vajjins- A New Interpretation	25	9	1974	27-35
Ibid	25	10	1974	27-36

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
K. B. Shastri				
Jaina Temples in Karnataka	23	10	1972	29-30
K. D. Bajpai				
Jaina Archaeology and Epigraphy	47	1-3	1996	115-119
L. K. L. Shrivastava				
Jaina view of Kevalin	24	9	1973	20-30
L. K. Bharatiya				
Sociology in Jaina Literature	22	7	1971	31-37
Madhu Sen				
Jaina system of Education as Revealed from Niśīthacūrṇī	20	11	1969	35-41
Ibid	20	12	1969	33-37
M. L. Mehta				
Some Important Prakrit works	19	8	1968	32-39
Compendia of Dṛṣtivāda	20	2	1968	26-28
Prakrit Bhaṣyas	24	8	1973	35-36
Contribution of Jainism to Indian Philosophy	25	1-2	1973	53-58
Kundakunda's view-points in the Samayasāra	29	10	1978	23-26
The Pūrva	30	1	1978	33-35

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
Maruti Nandan Prasad Tiwari				
Sarasvatī In Jaina Sculptures	22	3	1971	27-34
Ibid	22	4	1971	25-28
The Iconography of the Jaina Yakṣṇī Cakreśvari	26	10	1975	24-33
Nandini Mehta				
Select Vyāntara Devatās in Early Indian Art and Literature	46	10-12	1995	99-103
Nathamal Tatia				
Progress of Prakrit & Jaina Studies	20	1	1968	24-35
Priya Jain				
Sādhaka, Sādhanā & Sādhya	47	7-9	1996	77-84
Rajjan Kumar				
Guṇavrata and Upāsakadaśānga	48	7-9	1997	104-108
Ramchandra Jain				
Ahiṁsā in the Ancient East	16	5	1965	23-28
S. C. Pande				
Ācārya Hemacandra and Ardhamāgadhi	48	1-3	1997	76-82
S. D. Sharma and S. S. Lishk				
Latitude of the Moon as Determined in Jaina Astronomy	27	2	1975	28-35

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेख	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
Yuacharya Shiv Muni				
Spiritual Practices of Lord Mahāvīra	47	10-12	1996	83-100
Shriprakash Pandey				
Navatattvaprakarana	48	10-12	1997	1-28
S. M. Jain & A.K. Singh				
The story of the origin of Yāpanıya Sect	47	4-6	1996	71-83
Yāpanīya Sect : An Introduction	47	1-3	1996	99-114
S. P. Narang				
Panis and Jainas	46	10-12	1995	87-89
Surendra Kumar Garga				
Sri Hanumāna in Padmapurāna	46	10-12	1995	104-117
Dr. Surendra Varma				
Meaning and Typology of Violence	46	10-12	1995	81-86

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पार्श्वनाथ विद्यापीठ का हीरक जयन्ती समारोह सम्पन्न

जैन विद्या के शोध, अध्ययन एवं प्रकाशन के क्षेत्र में पिछले छह दशकों से संलग्न पार्श्वनाथ विद्यापीठ की हीरक जयन्ती के अवसर पर विद्यापीठ के पूर्व निदेशक प्रो० सागरमल जैन एवं मंत्री श्री भूपेन्द्रनाथ जैन के अभिनन्दन, विद्यापीठ के नवीन प्रकाशनों का विमोचन, **जैन अध्ययन : समीक्षा एवं सम्भावनायें** विषय पर त्रिदिवसीय (५-७ अप्रैल १९९८) राष्ट्रीय संगोष्ठी तथा विद्यापीठ के सभी शोध छात्रों के पुनर्मिलन आदि कार्यक्रमों का भव्य आयोजन किया गया।

समारोह के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में विश्वविख्यात् कानूनविद् और ब्रिटेन में भारत के पूर्व उच्चायुक्त तथा वर्तमान सांसद डॉ० लक्ष्मीमल सिंघवी ने समारोह की गरिमा बढ़ाई। समारोह में प्रो० सागरमल जैन को जैन विद्या के अध्ययन एवं शोध के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान के लिये पार्श्वनाथ विद्यापीठ की संचालक समिति के तत्त्वावधान में पार्श्वनाथ विद्यापीठ द्वारा एक अभिनन्दन ग्रन्थ, प्रशस्तिपत्र, शाल, चन्दन माला आदि भेंट किया गया। इस सुअवसर पर विद्यापीठ के प्राण श्री भूपेन्द्रनाथ जी जैन की अविस्मरणीय सेवाओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए उनका भी अभिनन्दन करते हुए उन्हें भी एक अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया गया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० हरिगौतम इस समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने विद्यापीठ द्वारा प्रकाशित नवीन ग्रन्थों का विमोचन किया। कार्यक्रम का संचालन पूर्व राजनयिक श्री एन०पी०जैन ने किया। इस अवसर पर विद्यापीठ की संचालक समिति के श्री नृपराज जी जैन, श्री नेमनाथ जी जैन, श्री इन्द्रभूति बरार, श्री अरिदमन जी जैन, श्री शौरीलाल जैन, श्री मुलक राज जैन तथा स्थानीय जैन समाज के प्राय: सभी गणमान्य जन उपस्थित थे। इस अवसर पर डॉ० रमनलाल सी०शाह, प्रो० रमाशंकर त्रिपाठी, प्रो० हेमनदास नारायण सामतानी, डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव, प्रो० जुगलकिशोर मिश्र, डॉ० धर्मचन्द्र जैन, डॉ० दीनानाथ शर्मा, श्री हजारीमल बांठिया, श्री कन्हैयालाल बांठिया, डॉ० विजयकुमार जैन, प्रो० रमेशचन्द्र शर्मा, डॉ० मारुति नन्दन तिवारी तथा अन्य स्थानीय विद्वान् बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

आगन्तुक अतिथियों ने विद्यापीठ में कलामर्मज्ञ श्री सुरेन्द्र मोहन जैन (अवकाश प्राप्त अभियन्ता) के सहयोग से स्थापित पुरातत्त्व संग्रहालय का भी अवलोकन किया और इसमें प्रदर्शित विभिन्न जैन ग्रन्थों की दुर्लभ पाण्डुलिपियों, प्राचीन मुद्राओं, जैनप्रतिमाओं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तथा विभिन्न कलावशेषों के बारे में जानकारी प्राप्त की। ज्ञातव्य है कि पाण्डुलिपियों को छोड़कर इस संग्रहालय में प्रदर्शित अधिकांश कलाकृतियां श्री सुरेन्द्र मोहन जैन ने स्वयं इकत्र की थी और उन्हें लम्बे काल तक अपने संरक्षण में रखने के पश्चात् प्रो० सागरमल जैन की प्रेरणा से अब पार्श्वनाथ विद्यापीठ को समर्पित कर दिया है।

अभिनन्दन समारोह, नूतन ग्रन्थों के विमोचन आदि के पश्चात् जैन अध्ययन : समीक्षा एवं सम्भावनायें नामक राष्ट्रीय संगोष्ठी आरम्भ हुई। इसके प्रथम सत्र की अध्यक्षता बौद्ध दर्शन के विशिष्ट विद्वान् प्रो० रमाशंकर त्रिपाठी ने की। इस सत्र में डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव, डॉ० अजित शुकदेव शर्मा, श्री हजारीमल बांठिया, समणी सम्बोध प्रज्ञा जी आदि के शोधपत्रों का वाचन हुआ।

संगोष्ठी के द्वितीय सत्र में दि० ६-४-९८ को समणी कुसुमप्रज्ञा, समणी शुभप्रज्ञा, डॉ० कमला जैन, डॉ० सुदर्शन लाल जैन, डॉ० धर्मचन्द जैन, डॉ० मुकेश जैन आदि ने अपने-अपने शोध पत्रों का वाचन किया।

संगोष्ठी के तृतीय सत्र में उसी दिन पाटण (गुजरात) से पधारे डॉ० दीनानाथ शर्मा, श्री विश्वनाथ पाठक, डॉ० विजय कुमार जैन, डॉ० अरुण प्रताप सिंह, डॉ० अशोक कुमार सिंह, डॉ० बी०एन० सिन्हा, श्री अतुल कुमार आदि ने अपने-अपने शोध पत्र पढ़े।

दि० ७-४-९८ को प्राचीन शोध छात्रों के पुनर्मिलन का भव्य कार्यक्रम रहा। इसके अन्तर्गत माननीय श्री भूपेन्द्र नाथ जैन द्वारा प्रत्येक पूर्व शोध छात्र को शाल, संस्थान का प्रतीक चिन्ह एवं एक आकर्षक अटैची प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस समारोह में इन विद्वानों ने विद्यापीठ और स्वयं के सम्बन्धों पर प्रकाश डालते हुए अपने विकास में पार्श्वनाथ विद्यापीठ के बहुमूल्य योगदान का स्मरण किया।

संगोष्ठी के अंतिम सत्र में डॉ० फूलचन्द जैन 'प्रेमी' डॉ० मुन्नी पुष्पा जैन आदि के शोधपत्र पढ़े गये। इस सत्र की अध्यक्षता सारनाथ संग्रहालय के निदेशक महोदय ने की।

इस अवसर पर विमोचित होने वाले ग्रन्थों के नाम इस प्रकार हैं।

१-	**प्रो० सागरमल जैन अभिनन्दन ग्रन्थ**	
२-	**श्री भूपेन्द्रनाथ जैन अभिनन्दन ग्रन्थ**	
३-	**जैन साधना में तंत्र**	डॉ० सागरमल जैन
४-	**जैनधर्म का यापनीय सम्प्रदाय**	डॉ० सागरमल जैन
५-	**हिन्दी जैन साहित्य का बृहद इतिहास भाग ३**	डॉ० शीतिकंठ मिश्र

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६-	**पंचाशक प्रकरण (हिन्दी अनुवाद)**	डॉ० दीनानाथ शर्मा
७-	**दशाश्रुतस्कन्धनिर्युक्ति**	डॉ० अशोक कुमार सिंह
८-	**नवतत्त्व प्रकरण (अंग्रेजी अनुवाद)**	डॉ० श्री प्रकाश पाण्डेय
९-	**सिद्धसेनदिवाकर : व्यक्तित्व एवं कृतित्व**	डॉ० श्री प्रकाश पाण्डेय
१०-	**वसुदेवहिन्डी : एक समीक्षात्मक अध्ययन**	डॉ० कमल जैन
११-	**पंचाध्यायी में प्रतिपादित जैन दर्शन**	डॉ० मनोरमा जैन

इसके अतिरिक्त इस अवसर पर एक भव्य स्मारिका का भी प्रकाशन किया गया, जिसमें विगत ६० वर्षों के विद्यापीठ के विकास के इतिहास का लेखा-जोखा, विद्वानों के अभिमत, विद्यापीठ द्वारा तैयार कराये गये शोध प्रबन्धों के सार आदि का विस्तृत विवरण है।

सम्पूर्ण कार्यक्रम में नवयुवक मंडल, भेलूपुर और बुलानाला एवं जैन मिलन के कार्यकर्ताओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया और कार्यक्रमों को सफल बनाने में अपना सहयोग प्रदान किया।

विद्यापीठ के नवीन प्रकाशनों के प्रूफ संशोधन, सम्पादन आदि कार्यों में सभी अध्यापकों विशेषकर डॉ० अशोक कुमार सिंह, डॉ० श्री प्रकाश पाण्डेय, डॉ० सुधा जैन, डॉ० विजय कुमार जैन, डॉ० असीम कुमार मिश्र, श्री ओमप्रकाश सिंह आदि ने अथक परिश्रम किया जिससे अल्पकाल में ही उक्त ग्रन्थों का सुन्दर एवं त्रुटिरहित प्रकाशन सम्भव हो सका।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पार्श्वनाथ विद्यापीठ
हमारे विशिष्ट अतिथियों की दृष्टि में

05-4-98 It was my privilege and honour it have participated in the Diamond Jubilee Celebration and national Seminar on April 5th. The quality of Research done at this institution is admirable. The contribution made by this academic institution in Jainism has landed credit to the Banaras Hindu University with whom it is academically affiliated. I pray God that this establishment provides even greater and laudable output.

Dr. HariGautam
Vice. - Chancellor
Banaras Hindu University

०५-०४-९८ किन शब्दों में विद्यापीठ की प्रशस्ति कहूँ ? जैन परम्परा के अध्ययन-अध्यापन-अनुसंधान का यह विद्यापीठ एक कीर्ति स्तम्भ है। यह विद्यापीठ अर्हत् पार्श्वनाथ भगवान् के नाम के साथ जुड़ा हुआ है। वाराणसी चार तीर्थंकरों की जन्मस्थली के रूप में मान्य और समादृत है। स्वयं भगवान् महावीर एवं भगवान् बुद्ध के चरण इस धरती पर पड़े थे।

पार्श्वनाथ विद्यापीठ की हीरक जयन्ती के मंगलमय अवसर पर मेरी विनम्र शुभकामनाएँ। डॉ० बी० एन० जैन, डॉ० सागरमल जैन एवं अन्य पदाधिकारियों तथा सहयोगियों की निष्ठा से समाज उपकृत एवं अभिभूत है।

डॉ० लक्ष्मीमल सिंघवी,
पूर्व उच्चायुक्त, इंग्लैण्ड

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैन-जगत

प्रधानमंत्री द्वारा समवसरण रथ का प्रवर्तन

नई दिल्ली ९ अप्रैल : महावीर जयन्ती पर परमपूज्या गणिनी प्रमुख श्रा ज्ञानमती माता जी से शुभ आशीर्वाद प्राप्त कर नई दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम से प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी ने भगवान् ऋषभदेव समवसरण श्री बिहार रथ का भारत भ्रमण हेतु प्रवर्तन किया। इस पुनीत अवसर पर आर्यिका चन्दनमती माता जी, क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज तथा जैन समाज के प्रमुख व्यक्तियों ने अपने उद्गार व्यक्त किये। कार्यक्रम की अध्यक्षता सांसद श्री धनन्जय कुमार जैन ने की।

डॉ० फूलचन्द जैन 'प्रेमी' सपत्नीक सम्मानित

लखनऊ १८ मई : पार्श्वनाथ विद्यापीठ के पूर्व शोध छात्र एवं वर्तमान में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के श्रमण विद्या संकाय में जैन दर्शन विभाग के उपाचार्य एवं अध्यक्ष डॉ० फूलचन्द जैन 'प्रेमी' और उनकी विदुषी धर्मपत्नी डॉ० मुन्नी पुष्पा जैन को प्राकृत मूलाचार (संस्कृत आचार वृत्ति और भाषा वचनिका सहित प्रकाशित) नामक बृहद् ग्रन्थ के श्रेष्ठ सम्पादन कार्य पर उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ द्वारा आयोजित भव्य पुरस्कार वितरण समारोह में अनेक गणमान्य अतिथियों और विद्वानों के समक्ष राज्यपाल श्री सूरजभान ने ११ हजार रुपये की सम्मान राशि व प्रशस्ति पत्र द्वारा सम्मानित किया। पार्श्वनाथ विद्यापीठ परिवार द्वारा डॉ० फूलचन्द जैन एवं डॉ० मुन्नी पुष्पा जैन को हार्दिक बधाई।

अर्हत् वचन पुरस्कार (वर्ष ९-१९९७) की घोषणा

इन्दौर १९ मई : कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर द्वारा वर्ष ९-१९९७ के अर्हत् वचन पुरस्कार की घोषणा की गयी है जो इस प्रकार है।

प्रथम पुरस्कार : The Existence of Soul and Modern Science. 9 (2). April 97, 9-24, **Dr. Parasmal Agrawal,** Prof. of Physics, Vikram University, B-220, Vivekanand Colony, Ujjain

द्वितीय पुरस्कार : Eco-Rationality and jain karma Theory. 9 (3), July 97, 53-68, **Mr. Krivov Serguei,** Fellow Dr. H. Skolimowski, International Centre for Eco-philosophy, A-15, Paryavaran Complex, South of Saket, New Delhi- 110030

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तृतीय पुरस्कार : Kalpavrksas- The Benevolent trees (Scientific Interpretation), 9 (2), April 97, 63-73, **Sri S.M. Jain,** 7-B, Talawandi, Kota-324005

पुरस्कृत लेखकों को क्रमश- ५००१/ ३००१/ एवं २००१/- रूपये की नकद राशि एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जायेगा।

प्राकृत भाषा और साहित्य सम्बन्धी ग्रीष्मकालीन अध्ययनशाला सम्पन्न

नई दिल्ली १४ जून : भोगीलाल लहेरचन्द इन्स्टीटयूट ऑफ इन्डोलाजी, दिल्ली द्वारा प्रतिवर्ष मई-जून माह में प्राकृत भाषा और साहित्य के अध्ययन के लिये एक कार्यशाला का आयोजन पिछले १० वर्ष से किया जा रहा है। इसमें समग्र भारत के विश्वविद्यालयों-महाविद्यालयों के ४० वरिष्ठ अध्यापकों एवं शोध छात्र-छात्राओं को पूर्णकालिक अध्येता के रूप में प्रवेश दिया जाता है। इस वर्ष इस अध्ययन शाला का उद्घाटन २४ मई को केन्द्रीय पर्यटन एवं संसदीय कार्यमंत्री श्री मदनलाल खुराना ने किया। अध्ययनशाला के समापन के अवसर पर दि० १४ जून को एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की शैक्षणिक निदेशक डॉ० कपिला वात्स्यायन और भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री एम०एन० वेंकटचलैया विशेष रूप से आमंत्रित किये गये थे। इस समारोह में अध्ययनशाला में तीन सर्वोच्च अध्येताओं को पुरस्कार तथा अन्य अध्येताओं को प्रमाण पत्रों का वितरण किया गया। इस अवसर पर प्राकृत भाषा और जैन विद्या के शीर्षस्थ विद्वान् प्रो० वामन महादेव कुलकर्णी को वर्ष १९९७ का हेमचन्द्रसूरि पुरस्कार डॉ० कपिला वात्स्यायन द्वारा प्रदान किया गया।

आचार्य सम्राट श्री देवेन्द्र मुनि जी म०सा० का इन्दौर में भव्य नागरिक अभिनन्दन

इन्दौर २८ जून : श्रमण संघीय आचार्य सम्राट श्री देवेन्द्र मुनि जी म०सा० का चातुर्मासार्थ इन्दौर पधारने पर स्थानीय वैष्णव विद्यालय के विशाल प्रांगण में आयोजित भव्यतम समारोह में विराट जनसमूह के समक्ष नागरिक अभिनन्दन किया गया। इस अवसर पर मध्यप्रदेश के राज्यपाल माननीय भाई श्री महावीर जी तथा मध्यप्रदेश शासन के कई मंत्री भी आचार्य श्री के सम्मानार्थ उपस्थित थे। इस अवसर पर प्रसिद्ध उद्योगपति एवं सुश्रावक श्री नेमनाथ जी जैन ने चार सूत्रीय कार्यक्रम की घोषणा की, जिसके अन्तर्गत व्यसन मुक्ति, रोग मुक्ति तथा समाज के कमजोर वर्गों के लोगों को पौष्टिक पोषण प्रदान करने एवं जैन दर्शन के मानवीय सिद्धान्तों के विशद् अध्ययन व प्रसारण हेतु पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी की एक शाखा इन्दौर में इसी चातुर्मास से प्रारम्भ करने की घोषणा की।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैन मुनि की निर्मम हत्या

श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन धर्मसंघ के वरिष्ठ सन्त पूज्य श्री सम्पत मुनि जी महाराज की विगत ३० जून को औरंगाबाद (महाराष्ट्र) स्थित स्थानक में निर्मम हत्या कर दी गयी। एक त्यागी की हत्या समाज और शासन के लिये कलंक है। पार्श्वनाथ विद्यापीठ परिवार मुनि श्री को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए राज्य सरकार से यह मांग करता है कि वह हत्यारों को अतिशीघ्र पकड़ कर उन्हें कठोरतम दण्ड दे ताकि पुनः इस प्रकार की घटना की पुनरावृत्ति न हो।

चेन्नई में द्विदिवसीय जैन विद्या संगोष्ठी सम्पन्न

चेन्नई ३ अगस्त : श्रमण संघीय मुनि श्री सुमन कुमार जी के पावन सानिध्य में स्थानीय जैन भवन के सभागार में दि० १-२ अगस्त को द्विदिवसीय जैन विद्या संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी के ६ सत्रों में श्री इन्दरराज मेहता, श्रीमती कमला मेहता, श्रीमती शकुंतला सकलेचा, प्रीति नाहर, श्री कृष्ण चन्द्रजी चौरड़िया, श्री दुलीचन्द जी जैन आदि ने अपने-अपने विद्वत्तापूर्ण शोधपत्रों का वाचन किया। संगोष्ठी के आयोजकों का यह दायित्व है कि इसमें पढ़े गये शोधपत्रों का शीघ्र प्रकाशन करें ताकि अन्य लोग भी उससे लाभान्वित हो सकें।

श्री ललित कुमार जी को हरिओम पुरस्कार

लालभाई दलपत भाई संग्रहालय, अहमदाबाद के प्रभारी, कलामर्मज्ञ श्री ललित कुमार जी को उनके शोध आलेख **"द हिस्ट्री ऑफ गुजराती पेन्टिग ऑफ द सिक्सटीन्थ एण्ड सेविन्टीन्थ सेंचुरी-ए रीप्राइजल"** पर वल्लभविद्यानगर स्थित सरदार पटेल विश्वविद्यालय द्वारा वर्ष १९९७-९८ वर्ष का हरिओम आश्रम पुरस्कार प्रदान किया गया है। पार्श्वनाथ विद्यापीठ परिवार द्वारा श्री ललित कुमार की उक्त महान् उपलब्धि पर उनका हार्दिक अभिनन्दन।

श्री हर्षचन्द्रजी को इन्टरनेशनल मैन ऑफ द इयर १९९७-९८ सम्मान

नई दिल्ली १३ अगस्त : कथालोक के यशस्वी सम्पादक श्री हर्षचन्द्र जी को इन्टरनेशलन बायोग्राफिक सेन्टर, कैम्ब्रिज (इंग्लैंड) की ओर से १९९७-९८ का "इन्टरनेशनल मैन ऑफ द इयर" सम्मान हेतु चयन किया गया है। पार्श्वनाथ विद्यापीठ परिवार की ओर से श्री हर्षचन्द्रजी को हार्दिक बधाई।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

योगाभ्यास एवं एक्युप्रेशर चिकित्सा शिविर का आयोजन

बड़ोदरा १५ अगस्त : अचलगच्छीय पूज्य मुनिश्री सर्वोदयसागरसूरि की निश्रा में बडोदरा में 'स्वयं स्वस्थ बनें' नामक एक दिवसीय चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। इसमें उपस्थित लोगों को योगाभ्यास, लौह चुम्बक चिकित्सा एवं एक्यूप्रेशर सम्बन्धी जानकारी प्रदान की गयी।

जयपुर में आचार्य श्री शुभमुनि जी का अविस्मरणीय वर्षावास

जयपुर १७ अगस्तः आचार्य कल्प श्री शुभमुनि जी म०सा० ठाणा ३ और महासती श्री चेतनाजी ठाणा ६ बिना किसी पूर्व सूचना के आडम्बर रहित रूप में स्थानीय लाल भवन में चातुर्मास हेतु पधारे। जयपुर श्रीसंघ ने भी इस चातुर्मास को अविस्मरणीय बनाने हेतु सभी प्रकार के तप को आडम्बरविहीन बनाने का संकल्प लिया है जो निश्चय ही प्रसंशनीय है।

शोक समाचार

श्रीमती चम्पादेवी जैन का निधन

पार्श्वनाथ विद्यापीठ के पूर्व अध्यक्ष लाला अरिदमन जी जैन की धर्मपत्नी श्रीमती चम्पादेवी जैन का विगत ११ जुलाई को निधन हो गया। सुश्राविका चम्पादेवी का जन्म स्यालकोट (वर्तमान पाकिस्तान) में हुआ था। आपके पिता श्री स्वतंत्रता सेनानी थे। आपका विवाह सन् १९३५ में श्री अरिदमन जी के साथ हुआ था। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गयी हैं। उनकी स्मृति में उनके परिवारवालों की ओर से पार्श्वनाथ विद्यापीठ को ११००/- रूपये दान स्वरूप भेंट किये गए। पार्श्वनाथ विद्यापीठ परिवार श्रीमती चम्पादेवी को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

साध्वी नानुकुंवर जी म०सा०का महाप्रयाण

श्री हुक्मगच्छीय साध्वीरत्ना श्री नानुकुंवर जी का ६२ वर्ष की आयु में चित्तौड़गढ़ में दि० २४ जुलाई को अल्प अस्वस्थता के बाद अचानक संलेखना संथारा के साथ निधन हो गया। महासती नानुकुंवर जी ने अपने ५६ वर्षों के दीर्घ दीक्षा काल में राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक, मध्यप्रदेश आदि प्रदेशों के विभिन्न क्षेत्रों में हजारों किलोमीटर की पदयात्रा कर जिन शासन की प्रभावना की है। पार्श्वनाथ विद्यापीठ की ओर से स्वर्गीय महासती जी को हार्दिक श्रद्धांजलि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्री रतनलाल जी मोदी दिवंगत

जैन धर्मदिवाकर आचार्य सम्राट श्री देवेन्द्रमुनि जी महाराज के शिष्य श्री दिनेशमुनि जी महाराज के संसारपक्षीय पिता श्री रतनलाल जी मोदी का पिछले २९ अगस्त को ८६ वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गये हैं। पार्श्वनाथ विद्यापीठ परिवार की ओर से स्वर्गीय श्री मोदी जी को हार्दिक श्रद्धांजलि।

साहित्य सत्कार

श्रीवाग्भट विरचितं नेमिनिर्वाणम् : एक अध्ययन

लेखक - डॉ० अनिरुद्ध कुमार शर्मा, प्रकाशक-सन्मति प्रकाशन, २६१/३, पटेलनगर, मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश, पृष्ठ १२+२२६+९, मूल्य- ३५०.००, प्रकाशन वर्ष १९९८ ई० स०

प्रस्तुत पुस्तक डॉ० अनिरुद्ध कुमार शर्मा के शोध प्रबन्ध **श्रीमद्वाग्भट विरचितं नेमिनिर्वाणम् : एक अध्ययन** का मुद्रित संस्करण है जिसे उन्होंने जैन साहित्य के युवा मनीषी, प्रसिद्ध विद्वान् डॉ० जयकुमार जैन के निर्देशन में पूर्ण किया और उसपर उन्हें मेरठ विश्वविद्यालय द्वारा पीएच०डी की उपाधि प्राप्त हुई। यह ग्रन्थ ८ अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्याय में ३ खंड हैं। पहले खंड में जैन चरित काव्य परम्परा के उद्भव और विकास का प्रारम्भ से लेकर २०वीं शती तक का सर्वेक्षण प्रस्तुत है। द्वितीय खंड में नेमिनाथ विषयक प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, गुजराती, मराठी, हिन्दी, कन्नड़ आदि विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्य का संक्षिप्त विवरण है। तीसरे खण्ड में रचनाकार के कुल, सम्प्रदाय, तिथि आदि की चर्चा है। द्वितीय अध्याय भी तीन खण्डों में विभक्त है। इसमें नेमिनिर्वाण की कथावस्तु का वर्णन है। तृतीय अध्याय में ग्रन्थ में प्रयुक्त रस, महाकाव्यत्व, छन्दयोजना, अलंकार आदि का विवेचन है। चौथे और पांचवें अध्यायों में क्रमश: भाषा शैली और वर्णन वैचित्र्य का चित्रण है। छठें अध्याय में ग्रन्थ में प्राप्त दर्शन एवं संस्कृति का विवरण है। सातवें अध्याय में रचनाकार पर कालिदास, भर्तृहरि, भारवि, वाणभट्ट, माघ, हरिचन्द आदि के प्रभाव को दर्शाने के साथ-साथ परवर्ती रचनाकारों पर वाग्भट के प्रभाव को भी दर्शाया गया है। आठवां अध्याय उपसंहार के रूप में है। प्रत्येक विषयों का प्रभावशाली एवं प्रामाणिक रूप से प्रस्तुतीकरण इस पुस्तक की विशेषता है। इसका प्रत्येक पृष्ठ लेखक के श्रम का साक्षी है। ऐसे प्रामाणिक ग्रन्थ के प्रस्तुतीकरण के लिए लेखक और प्रकाशक दोनों बधाई के पात्र हैं। ग्रन्थ का मुद्रण निर्दोष तथा साज-सज्जा चित्ताकर्षक है। यह ग्रन्थ जैन साहित्य का अध्ययन करने वाले प्रत्येक शोधार्थियों

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

के लिये निःसन्देह मार्गदर्शक सिद्ध होगा।

विद्यासागर की लहरें : प्रकाशक- श्री दिगम्बर जैन युवक संघ, केन्द्रीय कार्यालय, मनोरमा ट्रेडर्स, वर्णी कालोनी, सागर ४७२००२, मध्यप्रदेश, पृष्ठ १९५।

प्रस्तुत पुस्तक में श्रमण परम्परा के आदर्श, सन्तशिरोमणि आचार्य विद्यासागर जी महाराज के जीवन की उपलब्धियों का अत्यन्त प्रभावशाली ढंग से विवेचन प्रस्तुत किया गया है। इसमें आचार्यश्री की गुरु-परम्परा, जीवन परिचय, उनके द्वारा दीक्षित साधु, क्षुल्लक, आर्यिका आदि का परिचय, आचार्यश्री की साहित्य साधना, आचार्यश्री द्वारा सम्पन्न कराये गये विभिन्न धार्मिक, सामाजिक आदि कार्यों, आचार्यश्री द्वारा रचित साहित्य पर हो रहे शोधकार्यों आदि का बड़े ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुतीकरण किया गया है। इस पुस्तक के लेखक और मूल्य का इसमें संकेत नहीं दिया गया है इससे यही प्रतीत होता है कि वितरण हेतु ही इसका प्रकाशन हुआ है। पुस्तक की साज-सज्जा अत्यन्त आकर्षक और मुद्रण निर्दोष है। ऐसे सुन्दर और महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ न केवल प्रत्येक पुस्तकालयों बल्कि विद्वानों के लिये भी अनिवार्य रूप से संग्रहणीय है।

जैन आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज (अंग्रेजी), लेखक :श्री बारेलाल जैन, अंग्रेजी अनुवादक : श्री निरंजन जेतलपुरिया; प्रकाशक: के० एस० गारमेन्ट्स, २५, खजुरी बाजार, इन्दौर - मध्यप्रदेश, पृष्ठ - १४,प्रकाशन वर्ष १९९७-९८ ई०।

प्रस्तुत पुस्तिका में दिगम्बर जैन समाज के गौरव, युगपुरुष, संतकवि आचार्य विद्यासागर जी का जीवनचरित्र सरल और सुबोध अंग्रेजी भाषा में दिया गया है। सर्वोत्तम आर्ट पेपर पर मुद्रित यह लघु पुस्तिका अपनी आकर्षक साज-सज्जा के कारण सहज ही अपनी ओर ध्यान आकर्षित कर लेती है। पुस्तक सभी के लिये पठनीय और संग्रहणीय है।

अन्ययोगव्यवच्छेदद्वात्रिंशिका संस्कृत टीका हिन्दी भावार्थ युक्त, रचनाकार- आ० विजयसुशीलसूरि, सम्पादक, जिनोत्तमविजय गणि, प्रकाशक, श्री सुशील साहित्य प्रकाशन समिति, जोधपुर, पृष्ठ १२+२०८; प्रकाशनवर्ष वि०सं० २०५३।

कलिकालसर्वज्ञ आचार्य हेमचन्द्रसूरि द्वारा रचित **अन्ययोगव्यवच्छेदद्वात्रिंशिका** पर आचार्य विजयसुशीलसूरि ने **स्याद्वादसुबोधिनी** नामक टीका और उसका हिन्दी भावार्थ देकर जिज्ञासुओं का महान् उपकार किया है। पुस्तक के प्रारम्भ में दी गयी १२ पृष्ठों की प्रस्तावना भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। पुस्तक सभी जिज्ञासुओं के लिये पठनीय और संग्रहणीय है।

Jain Education International	For Private & Personal Use Only	www.jainelibrary.org

श्री जिनमन्दिरादि-लेखसंग्रह, लेखक, आचार्य विजयसुशीलसूरि जी म० सा०, सम्पादक - मुनि रविचन्द विजय जी म०, प्रकाशक- श्री सुशील साहित्य प्रकाशन समिति C/o श्री गुणदयाल चन्द जी भंडारी, राई का बाग, पुरानी पुलिस लाइन के पास, जोधपुर, पृष्ठ १२+१४८+५५, मूल्य ५.००, प्रकाशन वर्ष १९९७ ई० स० ।

इस लघु पुस्तक के लेखक आचार्य श्री विजयसुशीलसूरीश्वर जी महाराज इस युग के विशिष्ट विद्वानों में से हैं । उनके द्वारा १०८ पुस्तकें प्रणीत की गयी हैं । इस लघु पुस्तक में उनके द्वारा पूर्व में लिखे गये जिनमंदिर, जिनमूर्ति, जिनदर्शन, जिनपूजा, जिनभक्ति आदि लेखों का संग्रह है । उक्त लेखों को पुस्तकाकार रूप देने में मुनि रविचन्द विजय जी ने, जो इसके संपादक हैं, सफल प्रयास किया है । पुस्तक जैन उपासकों के लिये उपयोगी है ।

सौभाग्य देशना - प्रवचनकार-मालवकेशरी श्री सौभाग्यमल जी म० सा० अनुवादक: सम्पादक-मुनि प्रकाश चन्द्र 'निर्भय', प्रकाशक : श्री धर्मदास जैन मित्र मंडल, ८०, नौलाईपुरा, रतलाम (मध्य प्रदेश) ४५६००१, पृष्ठ २०+११२, मूल्य : १०.००, प्रकाशक वर्ष १९९७ ई० स० ।

प्रस्तुत पुस्तक मालव केशरी श्री सौभाग्यमल जी म० सा० के कुछ विशिष्ट प्रवचनों का संग्रह है जो पूर्व में 'श्री सौभाग्यमल अमृत बिन्दु' के नाम से गुजराती भाषा में १९७६ ई० में प्रकाशित हुआ था । इसका हिन्दी अनुवाद स्वर्गीय मुनिश्री के अन्तेवासी श्री प्रकाशमुनि जी ने किया है । इस अनुवाद की विशेषता यह है कि इसमें प्रवचनकार के भावों की यथावत रखते हुए उनकी मौलिकता को अच्क्षुण रखा गया है । पुस्तक जन सामान्य के लिये अत्यन्त उपयोगी है । इसकी साज-सज्जा आकर्षक और मुद्रण निर्दोष है ।

श्री सौभाग्य की काव्य कथायें -रचियता- आचार्य श्री सौभाग्यमल जी महाराज, सम्पादक- मुनिश्री प्रकाशचन्द्र जी निर्भय; प्रकाशक- श्री धर्मदास जैन मित्र मण्डल, ८०, नौलाईपुरा, रतलाम, मध्यप्रदेश (४५६००१), प्रथम संस्करण १९९७ ई०, पृष्ठ २१+२१४, मूल्य : २५.०० ।

श्री धर्मदास जैन मित्र मंडल, रतलाम द्वारा गुरु श्री सौभाग्यमल जन्म शताब्दी के अवसर पर उनके द्वारा रचित साहित्य के प्रकाशक की योजना को क्रियान्वित किया जा रहा है। प्रस्तुत पुस्तक उसी योजना की एक कड़ी के रूप में प्रकाशित हुआ है । इसमें विभिन्न पौराणिक और ऐतिहासिक चरित्रों के माध्यम से नैतिक, सामाजिक और धार्मिक चेतना को जनसामान्य में जागृत करने के लिये पद्य रूप से कथायें दी गयी हैं । पूज्य

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचार्यश्री की लेखनी से प्रसूत ये कथायें अत्यन्त प्रभावकारी हैं। आचार्यश्री के सुयोग्य शिष्य श्री प्रकाशमुनि जी 'निर्भय' ने अत्यन्त श्रमपूर्वक इन्हें सम्पादित किया है। पुस्तक की साज-सज्जा अत्यन्त आकर्षण और मुद्रण त्रुटिरहित है। ऐसे सुन्दर प्रकाशन के लिये सम्पादक और प्रकाशक दोनों बधाई के पात्र हैं।

महावीर की साधना के रहस्य : प्रवचनकार : मुनिश्री चन्द्रप्रभसागर, प्रकाशक: श्री जितयशा फाउंडेशन, ९ सी, एस्प्लानेट ईस्ट, रूम न० २८, कलकत्ता ७०००६८, पृष्ठ ६+९४; मूल्य १५.००, प्रकाशन वर्ष-अगस्त १९९७।

अब भारत को जगना होगा - प्रवचनकार : मुनिश्री चन्द्रप्रभसागर : प्रकाशक- पूर्वोक्त पृष्ठ, ४+१५५; मूल्य - २०.००; प्रकाशन वर्ष - अक्टूबर १९९७।

मुनि श्री चन्द्रप्रभसागर जैन समाज के प्रबुद्ध विचारक, अग्रगण्य लेखक और प्रखर वक्ता हैं। उनके द्वारा समय-समय पर विभिन्न स्थानों पर दिये गये प्रवचनों के अनेक संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। प्रस्तुत दोनों पुस्तकों में उनके द्वारा जोधपुर में चातुर्मास के अवसर पर दिये गये प्रवचनों का संग्रह है। इनमें विद्वान् वक्ता ने ऐसे समसामयिक प्रश्नों का उत्तर प्रस्तुत किया है जिसकी तलाश प्राय: हर व्यक्ति को दैनिक जीवन में घर और बाहर पड़ती रहती है। पुस्तकें पठनीय और मननीय हैं। ऐसे सुन्दर प्रकाशन के लिये लेखक और प्रकाशक दोनों ही साधुवाद के पात्र हैं।

अतीत (उपन्यास) लेखक - ब्रह्मचारी विवेक, सम्पादक- डॉ० यशपाल जैन, प्रकाशक - आचार्य श्री विद्यासागर शोध संस्थान समिति, जबलपुर १९९७ ई०, पृष्ठ १४+१५०; मूल्य - ३०.००।

ब्रह्मचारी विवेक द्वारा प्रणीत इस लघु उपन्यास में असार संसार का अत्यन्त सरल और सुबोध भाषा में चित्रण है। इसमें जीवन के वैराग्य की सीमा को चरम रूप में प्रदर्शित करते हुए वैराग्य की ओर जाने की प्रेरणा दी गयी है। पुस्तक एक बार हाथ में लेने के पश्चात् उसे खत्म किये बगैर छोड़ने की इच्छा नहीं होती। ऐसी सशक्त कृति के प्रणयन के लिए ब्रह्मचारी जी बधाई के पात्र हैं। पक्की बाइंडिग और प्लास्टिक कवर युक्त पुस्तक का मूल्य लागत से भी कम रखना प्रकाशक की सौहार्दता का परिचायक है। पुस्तक सभी के लिये पठनीय और संग्रहणीय है।

स्वराज्य और जैन महिलाएँ - लेखिका- डॉ० श्रीमती ज्योति जैन; प्रकाशक- श्री कैलाशचन्द्र जैन स्मृति न्यास, स्टाफ क्वाटर नं० ६, कुन्दकुन्द जैन महाविद्यालय, खतौली २५१२०१ (मुजफ्फरनगर) उत्तरप्रदेश, प्रथम संस्करण १९९७ ई०, पृष्ठ ८+४८; मूल्य-.००।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में पुरुषों और महिलाओं का समान रूप से योगदान रहा है। जहां पुरुषों ने आन्दोलन में प्रत्यक्ष रूप से भाग लेकर कुर्बानियां दीं, वहीं उनके घरों की महिलाओं ने न केवल उन्हें प्रेरणा दी बल्कि उन्हें सभी प्रकार की पारिवारिक जिम्मेदारियों से मुक्त भी रखा। अनेक शिक्षित महिलाओं ने तो घर की चारदीवारी से निकल कर पुरुषों के समान ही राष्ट्रीय आन्दोलन में अपनी पूर्णाहुति दी। श्रीमती जैन ने प्रस्तुत लघु पुस्तक में अत्यन्त श्रमपूर्वक ऐसी ही जैनधर्मानुयायी महिलाओं की शौर्यगाथा को प्रस्तुत किया है जिनके बारे में आज समाज को अत्यल्प ही जानकारी है। ऐसे गौरवपूर्ण प्रकाशक के लिये लेखिका और प्रकाशक दोनों ही अभिनन्दनीय हैं।

जैनधर्म एवं आत्मसाधना - लेखक, श्रीअमरचन्द छाजेड़, प्रकाशक, अमरचन्द अशोक कुमार छाजेड़, छाजेड़ चेम्बर्स, १९३ मिन्ट स्ट्रीट, पार्क टाउन, मद्रास ६०००० ३; पृष्ठ १४४, मूल्य-सदुपयोग, प्रकाशन वर्ष १९९७ ई० स०।

प्रस्तुत पुस्तक में जैनधर्म का संक्षिप्त परिचय, मंगलमय प्रार्थनायें, प्रेरणादायक गीत, मेरी भावना, लघु साधु वन्दना, भक्तामर स्तोत्र, आत्मसिद्धि शास्त्र, अर्थसहित सामायिकसूत्र आदि का अनूठा संकलन है जो नित्य स्वाध्याय के लिये उपयोगी है। हमें विश्वास है कि सरल भाषा में लिखी गयी इस लघु पुस्तिका का सर्वत्र आदर होगा। पुस्तक की साज-सज्जा आकर्षक एवं मुद्रण त्रुटिरहित है।

आत्मवैभव - लेखिका श्रीमती रतन चौरड़िया, प्रका०-कल्याणमल चंचलमल चौरड़िया ट्रस्ट, C/o चौरड़िया इलेक्ट्रिकल्स, चौरड़िया भवन, जालौरी गेट के बाहर, जोधपुर ३४२००३, पृष्ठ १६+११२, प्रकाशन वर्ष १९९८ ई० स०।

प्रस्तुत पुस्तिका में विदुषी लेखिका ने आत्मा के गुणों एवं क्षमताओं का दिग्दर्शन कराते हुए पंचपरमेष्ठी अरिहन्त, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय एवं साधु-साध्वी की विशिष्टताओं का विवेचन करते हुए उनकी शरण में जाने की प्रेरणा देते हुए बतलाया है कि आत्मा की अनन्त शक्ति को अज्ञानी मनुष्य पहचान नहीं पाता किन्तु यदि वह अनित्य, अशरण, संसार, एकत्व आदि बारह भावनाओं का चिन्तन करे तो निश्चय ही उसकी दृष्टि बदल सकती है। पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल और सुबोध है तथा यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए पठनीय है।

सर्वोदयी जैन तंत्र - लेखक, डॉ० नन्दलाल जैन, प्रकाशक, श्री कपूरचन्द जैन पोतदार, अध्यक्ष, पोतदार धार्मिक एवं पारमार्थिक न्यास, पोतदार निवास, टीकमगढ़, मध्यप्रदेश; पृष्ठ १८+८२; मूल्य २५.००, प्रकाशन वर्ष १९९७ ई०स०

प्रस्तुत कृति जैन विद्या के विशिष्ट विद्वान्, प्रबुद्ध चिन्तक और सुप्रसिद्ध लेखक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

डॉ० नन्दलाल जैन द्वारा पूर्व में अंग्रेजी भाषा में लिखित **जैन सिस्टम इन नटशैल** क हिन्दी रूपान्तर है। इस ग्रन्थ में विद्वान् लेखक ने जैन तंत्र को एकीकृत रूप में प्रस्तुत करने के साथ-साथ जैनधर्म से सम्बन्धित प्रत्येक विषयों का प्रभावी रूप में वर्णन किया है। यह पुस्तक शोधार्थियों और जिज्ञासुओं दोनों के लिये समान रूप से उपयोगी है। ऐसे सुन्दर प्रकाशन के लिये लेखक और प्रकाशक दोनों बधाई के पात्र हैं।

जिनोत्तम दोहावली - रचनाकार- उपाध्याय जिनोत्तमविजय गणि, प्रकाशक- श्री सुशील साहित्य प्रकाशन समिति, जोधपुर, राजस्थान, पृष्ठ १२+९६, मूल्य ११ .००, प्रकाशन वर्ष - वि० सं० २०५३।

जैन साहित्य के समुन्नायक, तत्त्वदर्शीपूज्य उपाध्याय श्री जिनोत्तमविजय जी द्वारा सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, नैतिकता, मातृभक्ति, पितृभक्ति, धर्म महिमा, समता, दया, मैत्री, विद्या, निर्ग्रन्थ वचन आदि विभिन्न विषयों पर रचित प्रस्तुत कृति को उन्हें आचार्य पद प्राप्त होने के उपलक्ष्य में प्रकाशित किया गया है। इस उत्तम कृति के अध्ययन-मनन से प्राणी निश्चय ही शांति की अनुभूति कर सकता है। ऐसे सुन्दर प्रकाशन के लिये प्रकाशक गण बधाई के पात्र हैं। पुस्तक की साज-सज्ज आकर्षक और मुद्रण त्रुटिरहित है।

साभार स्वीकार

१. **दृष्टांत रत्नाकर** - लेखक - श्री लक्ष्मीचंद सी० संघवी, प्रकाशक- फारवर्ड इण्टरप्राइजेज, २. धूतपापेश्वर बिल्डिंग, मंगलवाडी, २४०, शंकर सेठ रोड, मुम्बई ४००००४, प्रथम संस्करण १९९८, पृष्ठ ४८, मूल्य-१२.००।

२. **श्रीसुदर्शनमेरुविधान** - लेखक- श्री राजमल जी पवैया, संपा०, डॉ० देवेन्द्रकुमार शास्त्री; प्रकाशक - श्री भरत पवैया, ४४, इब्राहिमपुरा, भोपाल १९९८ ई०, पृष्ठ ४+६०; मूल्य-६.००।

३. **श्रीतीनलोकविधान** - लेखक, संपादक एवं प्रकाशक, पूर्वोक्त, पृष्ठ ४+७६; मूल्य- ८.००।

४. **जिनखोजा तिनपाइयां** - लेखिका, डॉ० साध्वी प्रियदर्शना श्री एवं डॉ० साध्वी सुदर्शना श्री ; प्रकाशक ----× ; प्रकाशनवर्ष वि० सं० २०५३; पृष्ठ १०+१५० ; मूल्य- सदुप्रयोग।

५. **यह है मार्ग ध्यान का**- लेखक - श्री चन्द्रप्रभसागर ; प्रकाशक - श्री प्रयागचन्द रजनीश सिंघवी एवं जितयशा फाउंडेशन, ९ सी, एस्प्लानेड ईस्ट, कलकत्ता ७०००६९; प्रकाशन वर्ष १९९७ ई०, पृष्ठ ५४, मूल्य - ३.००।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Statement About the Ownership & Other Particulars of the Journal

ŚRAMAṆA

1. Place of Publication	:	Parśvanātha Vidyāpītha I.T.I. Road, Karaundi, Varanasi-5
2. Periodicity of Publication	:	Quarterly.
3. Printer's Name, Nationality and Address	:	Vardhaman Mudranalaya Bhelupur, Varanasi-10. Indian.
4. Publisher's Name Nationality and Address	:	Parśvanātha Vidyāpītha I.T.I. Road, Karaundi, Varanasi-5
5. Editor's Name, Nationality and Address	:	Dr. Sagarmal jain Dr. Shivprasad As above.
6. Name and Address of Individuals who won the Journal and Partners or share-holders holding more than one percent of the total capital.	:	Parśvanātha Vidyāpītha Guru Bazar, Amritsar. (Registered under Act XXI as 1860)

I, Dr. Sagarmal jain hereby declare that the particulars given above are true to the best of my Knowledge and belief.

Dated : 1.4.98

Signature of the Publishers
S/d Dr. Sagarmal Jain

Computer Composing : ***Rajesh Computers***, PH. 220599

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

NO PLY, NO BOARD, NO WOOD.

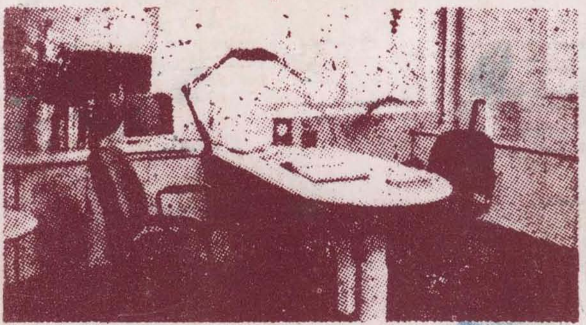

ONLY NUWUD.®

INTERNATIONALLY ACCLAIMED

Nuwud MDF is fast replacing ply, board and wood in offices, homes & industry. As ceilings,

DESIGN FLEXIBILITY

flooring, furniture, mouldings, panelling, doors, windows... an almost infinite variety of

VALUE FOR MONEY

woodwork. So, if you have woodwork in mind, just think NUWUD MDF.

Arms Communications

NUCHEM LIMITED

E-46/12, Okhla Industrial Area,
Phase II, New Delhi-110 020
Phones : 632737, 633234,
6827185, 6849679
Tlx: 031-75102 NUWD IN
Telefax: 91-11-6848748

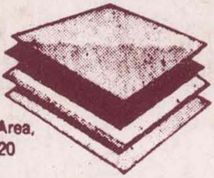

IS : 12406
ISI

NUWUD MDF

The one wood for all your woodwork

MARKETING OFFICES: • AHMEDABAD: 440672, 469242 • BANGALORE: 2219219 • BHOPAL: 552760 • BOMBAY: 8734433, 4937522, 4952648 • CALCUTTA: 270549 • CHANDIGARH: 603771, 604463 • DELHI: 632737, 633234, 6827185, 6849679 • HYDERABAD: 226607 • JAIPUR: 312636 • JALANDHAR: 52610, 221087 • KATHMANDU: 225504, 224904 • MADRAS: 8257589, 8275121

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org